

A rectangular metal object, possibly a book cover or a small box, with a green patina. It has a raised rectangular border. A small, rectangular, light-colored label is affixed to the left side of the inner border. The label has the text "DH-91" written on it in dark ink. The metal surface shows signs of wear and corrosion.

DH-91

विचित्रकर्णिकावदान

धर्मरत्न ब्रह्माचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH91.

विविध

१

ह्रिं तं जिनेश विविध कर्त्तृका ग्वा तं तं समाध दू म ह सि ॥ ॐ ति सं पार्थि न राजा सा ह्रिं जि ना त्मज १ सूधी १ उ प गु फं न व रुं तं स
मा ला क व मा दि भ त ॥ सा धु मृ म हा ना ज समा ध य ज ग वि भ य थ म गु वृ सा दि ह्रिं त थ भ व क्त न म या ॥ त थ थ ॥ अ नु वि
ह न ति रु ग वा न स म्ये क् वु वी ज न व न वि हा न् अ ना थ पि लु द स्या ना भ म ह ता हि क्त स ध न सा र्ध म र्ज न था द भ हि ह्रिं क्त भ न
ह्रिं १ की ला थ वै स्र पा यू क्त १ समा धि व मि ना पा के र्जि न ति ये १ ॥ त थ स न ह ले वा धि स ले १ उ व क्त म ह रि म हा थ व क्त ग ले १
अ न क्त अ धि व मि ना पा के १ अ प वे थ प रि वा ज क्त ग ले व न क्त य ना ना भा सु पा ० यू क्त थ ह्रिं १ य र्ध हि १ अ प वे थ म हा हा

२

लो १ उ वा वा स का यि के र्ध व पू जे व का वि क्त म ह थ वेश व रु म हा ना ज का यि के १ अ प वे थ ग न्ध र्व ग ले १ अ न क्त कि न्न व प र्ध
हि १ म हा ना ग ना ज म ति कि न्न भ न्ने र्ध दि य मा ने र्वि ना जि ने र्ध ह्रिं य क्त ग ले व प रि मि ने १ अ न के र्दि या ध ना प्प ना ग ले १ उ
व म व प र्ध हि १ प रि पू र्ण १ प रि पू र्ण १ ॥ त सि न्न म य रु ग वा न् अ क्त भा क्त वि व ना रु ह रु सि मा ला स मू त्त स र्ज ॥ त या जि सा ह
अ म हा सा ह्म ला क् ध रु म व हा स्य न्ने क सिं का क्त न पू वी म हा न ग र्थ वि मू ल द क्षा ना म गृ ह प ति १ प ति व स ति स व म हा ध ना
म हा श र्ग वि स्ती र्ध न ध न्य स म्य ना गृ ह क्त उ द या न दा सी दा स थ क्त क्त न स प न्न प रि वा व थ रु व न १ त स्य का क्त वि म ला ना म

विविध
३

सुभीलाभा कासूत्र्यामनःप्रसन्नाधर्मवतीवृत्तवती नवपत्रपूषवता स्वामिरुकीं दृष्टी विमलदहस्यसम्यक्तास्ती हव
ति ॥ तस्मिन्मयैरुगवता गरुक्षिमा लातस्मिन्पुदः सर्वगृहमकृष्टं वा कास्य कत्रमवरास्य नाना वरुणैः पवित्तिवृत्तः ॥
रुद्रतस्य गृहोदः शुभ्रकुवृकमकृष्टा इहं तं । सुवर्षं दुर्गं वृष्यपुत्रं मयूकस्य कसाविकादिसमापन्नं ॥ ॥ अथविम
लदहः प्रमोदुताध्वर्यपाकः काका मवती नु ॥ कस्य विषयं गरुक्षिमा ला आगतानरुमानरुविषयि ॥ कादुः ४ कः ४ प्रत्ययः ॥
को नाउवाच ॥ ॥ न ह्यनं स्वामिन्ममान्न ह्यनं ॥ कस्मिंश्चिदपि पृच्छतां ॥ यत्रमहं उता गरुक्षिमा ला मना ह वा आगता ॥ उव

३

गपनं वा विधूय ननं वा ॥ कादुः ४ प्रत्ययः ॥ ॥ अथतदा शुभ्रकुवृकस्मिन्मयूलविमलदहमकृष्टदवाचनं ॥ किंविस्मि
तत्पूषवर्षरुः स्वपूषविषाकदमा वीदमंदववृकं पा इहं तं विनापूषेनमारुवति ॥ ॥ तमाविमदहामेयुनभन
दवीवत ॥ साधुसाधुमयूत्रकस्या दोगतता गरुक्षिमा लाहं न विह्यतं मयूत्रवर्षरु ॥ ॥ अथविमलदहमयूत्रमकृष्टदवाच
न ॥ अकवेनमहाविहो न विहो नरुि रुगवान् सम्यक् वृक्षा विद्यावनसं पत्रः ४ सुगता ला कविदनु रु नः ४ पूषदम्यसात्रधिः ४
भोसादवानाचमनूषा नाचः वृक्षो रुगवान् न स्य गरुक्षिमा ला आगतानयावरास्य दववृकपा इहं तं ॥ अथविमदहामयू

विविध
४

नमस्तदवावत ॥ साधुसाधु रुगवक्तं कथं दर्शययं ॥ कथं पूजययं कथं गन्तव्यं कथं शुद्धाकर्तव्यं ॥ अथ मयूना विमल
दरु मस्तदवावत ॥ न संभय पाप कथं विमलदरु त्वं यथा भक्ति भा १ ध्यावमनीयं पुष्पधूपादि नृणां शुद्धवक्तं कर्तव्यं ॥
नमो विमलदरु १ पु ह धित १ पूजा पून सु त्रैलोक्यं विप्रद किंती रु सधूपं दायितवान् ॥ अर्घ्यं च पुष्पं पुक्ति कवान् ॥ अथ न
स्मिन् कलकृतवेन विहाय नूनं नाथ पिबुत दस्या गमं मरुति पर्व दि रुगवता १ ए विविधेना नो धूपं पुवाहितं ॥ पादयो १ यय
१ पुवाहितं ॥ मित्रसि पुष्पमाला पुर्ल विता पुष्प विमानं विविध मना नमं पुद भितं ॥ नमो पर्व दिका न्ध धाना मरि कुरु गव

न १ पादो भिन्न साव न्दित्वा रुगवक्तं नमस्तदवावत ॥ रुगवनका रु १ क १ पु स्यय १ का धूपितं त्रिदि वाधूप पुका १ धूप दायितं
नव पादयो १ यय १ पुवाहितं ॥ कन पुष्पमाला पु नाहिता त्रि दि न सि पुष्प विमानं अ कृ दितं यत्र मा न्ध र्या रु तं संपा र्क वदत्तं य न
मं नृन ॥ रुगवानाह ॥ का न्ध य यत्र मान द रु तं स्य पु रा ष या मि ॥ १ पु संध भ क र्त्त का च न पूनी महान ग र्या त्रिव सु ति विम
ल द रु ना मे १ पु री गृ ह य ति महा ध ना महा र्का र्ग वि स्ती र्ण गृ ह कृ ष न धा न्य स म्य त्रा दा सी दा स क र्म के न पु क क रु न संध ना रु
वति ॥ यम अमी न न्ध य रु क का च न पूनी नाम न ग र्या क स्य गृ ह म व रा स य ति ॥ अ व रा स्य अ न्ध व रु क म कं पा र्क र्त्त सो व र्ध द

विविध ७
 लुं नृप्य पञ्च पञ्च नल मञ्जु वीपुष्यं हा नार्द्ध हा नरु ड घष्ठिका सूवर्ध नाना वल ख वितं न ह न मयू नलु क सा विका स कि व नि ॥ तत्स
 कल ह नु मयू ना प द भ कं गु ला म न न द धृ लु वृ कं पूजा पू व ४ स न ल म यि पूजा क र्त्त हा व न या पूजा क र्त्त वान । न न ह नु ना त स्य पूजा स
 क र्त्त म यि व ह नि ॥ तत् ४ का न्ध पा रु गु व न म न द वा व न ॥ रु ग व न का ह नु ४ क ४ प ल य ४ घ व मा ध र्य पा फो दं का क न पू नी म हा न ग र्था ७
 पू र्ण मा न पूजा स क र्त्त म स्या त्सा ना त्स र्व व ह नि ॥ का ह नु ४ क ४ प ल य ४ ध र्म ह नु ना त स्य ०० लु म नू र्त्त क थ य त्व व द प र्था ॥ ॥
 अथ रु ग वा न्का न्ध प म न द वा व न ॥ मृ लू का न्ध प क थ या मि तत्स क लं स वि म ल द ह ४ पू र्व जे न नि को भा स्वी म हा न ग र्था ह म हा वि

कम नू ष्य ज न्धा व रू व ॥ म हा इ ४ र्वा म हा क र्मी ग ल ग लु का वि ह त्स नृ प स स्य प त्री स र्गी ला ना म स्या मि रु की मो द वि ड ला त् ॥ अ भ क
 ला त् प व स्य न र्दी पु नू धो स क्ता वि मो त उ र्त्त उ वा व ॥ ह का न्ध आ व था ४ किं क र्त्त वं म हा द वि ड ह मो आ वां ना सि कि चि ड वं र्वा द नी
 र्थ मो ज नी र्थ पा व नी र्थ म स्य वि ही रू ल मू ल न सं वि धं ॥ दि न दि न ह ल हा वि ला त वि की न ला दा हा न्ध पा फो न ना यि मू न क र्त्त ना उ
 स्य न थो कि म र्थ म मे क मि र्त्त मृ लू ॥ मा ता सि पि ता सि रु ग ता सि न न त्त्त व मा न वि गे र्त्त ॥ अ थ का न्ध उ वा व ॥ हा पू नू ष किं व क र्त्त ००
 लं वा व न व क र्त्त म मे क मि र्त्त मृ लू ॥ ध र्म रु र्त्त उ र्त्त रु र्त्त जी व आ त्या न र्थे व व ॥ स र्वा लं का व का रु र्त्त न मू र्त्त या यि स स्ति य ४ ॥ पू न ॥

विविध

३

नीचावापिसभावापिउच्चरूतस्तथेवव।सदधर्मकभाहर्लानमूचरतिसूखुनी॥यूनश्च॥विपरोदयथाथर्षाननालांइश्व
सागत्र।मूचरतियास्त्रिधास्त्रिभिर्वेद्यासारुवतिसदा॥तस्मात्स्वामित्रमूचरमितवसंसर्गतामम।इश्वरवाहसूखुवाहयथाक
मीरुविष्यति॥रुर्लुडवाव॥हकाभतवळूमनूरुर्तकिंवकनाउकंमयाइश्वरलंकथंतिष्ठाव॥आवातस्मात्सूखुगृह
पतिर्महाधनामहाशरणविकीर्णसम्यक्सिमायनासिन्हासकीगच्छव॥हृष्टुष्टुप्रमुदिभाहृत्यातिष्ठावश्रागच्छ॥अथका
काहर्लानमनदवावत्॥पुलास्तदककार्यमाकूदूश्रवथा॥कीदृशज्ञारुविष्याव॥लाकाकिंवकया॥रुर्लुडवाव॥ळूमनव

३

कर्वकाभ॥नकपुकात्रलनासि साधनीयंजीवनार्थस्वानयानस्वार्थचलज्ञात्यकया॥अथवाचनवकवां॥काकाउवाव॥पुला
नेवथाग्यासोकार्यमलंतस्यान॥धिकऊनधिकजीवधिकमानवथवांपनार्त्रयववासपुनवस्तुपनाधीनमंवांनहलाकनापिपन
लाकपिव॥रुर्लुडवाव॥काभे॥सोकिंवकवांलेयाहिकुर्नेपत्रिवाऊकानांउकवावीलांवेष्टवानांसन्यासीनांअन्यतीर्थिकानांकि
कहवा॥नवांपनार्त्रयववासपुनवस्तुपनाधीनमंवांनहलाकनापिपन
वावीलांवेष्टवानांसन्यासीनांअन्यतीर्थिकानांपनार्त्रयवक्तुपनवासभवहवकि॥नवांथाग्यानीमोकथितमसिपुलास्तनाभव

विधिः
१

मात्रा न किं कसिन्नक ॥ रुहो उवाच ॥ सुतीक्ष्णं वचनं वायुनूषासां वा किमवमं मुखलवाच क किमर्थमूरुववादिनाश्नकृपकात्र
पुत्रितायमत्वं ॥ काका उवाच ॥ प्रशाना नो वं वक्यं यक यक मयसु पुनूषासां वचनं वादेव पुनूषासां वचनं पुमासं ममेकसंद
हं भूत् ॥ नानो वेधकं किं त्वमाह यवानं य न वक्तुं य न वा संप्रनाधीनं श्रुत्वा मिह की श्रुत्वा य न पुनूषे कामाशकं न गृह्णत
हि स हि र्भक्तं वा श्रुत्वा किं पुनः ॥ रुहो उवाच ॥ उवमस्तु न मरुमन्यत व वचनमूरु मत्वदिह ० कमन्यं सहिष्णुं न भकाह तव
वचनं पुमासं मयि निश्चयं यमक मूपायं कुर्वे ॥ काका उवाच ॥ प्रशाना न्यमवं कर्तव्यं हं क मस्मि विलेधं मभव यथा भक्तं कर्तव्य ॥

ना

रुहो उवाच ॥ किं धर्म किं विधिं चापि नास्ति वस्तु कथयमानं कथय काश्चन न ह्यतः ॥ काका उवाच ॥ नान्यस्मिन् कर्तव्यं पुनः तस्यां को भ
व्यं महान गयी धर्म धारु पुना कृत मस्ति नान्य न कृत मभक्तं पानीय माशु भस्त्रानं कर्तव्यं ॥ तदा काले न किं विरुल माशु संविद्यत
॥ रुहो उवाच ॥ पूषां नास्ति दीर्घ नास्ति गन्धधूयादिमवचने विद्यं द किं तानेव किं रूपाय मधूना ॥ काका उवाच ॥ वर्ष वा मास पक्ष
वा शि माशु च दुर्दिने शुक्ल या किल पूषा मिश्रं धैव रूपाय म ॥ रुहो उवाच ॥ हसति वा हसति ० ० ० काका वचनमूपश्रुत्वा हृष्ट
हृष्ट इति मना वदुर्दुर्दिने शुक्ल विद्यालीय गृहीत्वा तानं कृतवन् ॥ त्रिपदं कृत्वा ० ० ० मासं यक कृत ॥ उ कस्मिन् समर्थ पालीय गृ

किं

विविध
८

हीनघटसूत्रार्ककल्पपापवान्मुखपुत्रालनतदनसहसागत्यासासूभीलारुर्कानमाहूयाउवाच॥पुत्रायवमाहुतपापाहं
पानीयघटसूत्रार्ककल्पपापैर्गृह्णत्वम्॥अथरुर्कान्तद्विष्टपुत्रसमनाहूयकवान्मूहालाग्नमूहालासनदृष्ट्वाभूतवाध
र्मधुस्नानकृतपूर्यनहूमं सोवर्ककल्पपापैर्नाभ्यनहृन्ना॥तदाकाकाभनूतिष्ठतिष्ठत्युक्तासूत्रुगृहपतीगत्वानिव
दितवान्॥हागृहपतं हूमं सूत्रार्ककल्पकतिमूल्यहृतं ननाहमागतः॥तदासूत्रुगृहपतिस्तुमत्तदवाचत्॥हापूत्रुषणी
हर्षसूत्रार्ककल्पकृष्टगृहासि॥मनात्रमर्दनीयंमूत्रमूल्यं सहस्रं तुल्यं दातव्यं मयागृहकृतसूत्रार्ककल्पं हूतिस्मृतं कृत्वा

सहस्रमूल्यंदत्तवान्॥ ततस्तुलावकसं कृषितग्रामकूपजातः सनस्वगृहंगतवान्गत्वाकाकायाहूयतामत्तदवाचत्॥
काकपत्रमूलाग्नं दोनीमावथास्तनवकुम्भयाभयेनासनाच्छदनमूत्रपानकृतं कुम्भं न्यादिवीहिसर्वावकंप्रसाधकृतामुखमनूह
यसूत्रितिसंज्ञायसर्वविषयकृद्भ्यानिप्रसाधितवान्॥काकाउवाच॥पुत्राहूदोनीं पूर्वमहाइस्वीनिन्दनीयत्वमहं हूतं कृत्वा
महसूत्रुगृहपतीदासकाहृत्वास्वादनीयमितिसंज्ञाकृत्वापुत्रासंजमनकिंस्वस्वकर्मस्मृत्वाधीवर्माकुर्यादवमंभनेऽकार्यंभ
नेर्धर्मंभनेऽकुरुन्नादितस्तुर्वभनेऽभनेऽसाधनीयकालं हूत्रं तत्रैवदाप्यत॥अथवक्त्रवक्त्रं॥पुत्रालाहंनकुर्यात्पिपुर्नन

विशिष्ट
२

कुर्यात्कृगतिं न दद्यात्तथा पालनं च दयत्स्वल्पमपि ॥ वरुत वं गृहवहंति अन्ननवादनं न कर्तव्यं स्वल्पमात्रं गृहवहंति अ
न्ननवादनं कर्तव्यं ॥ हर्षोऽवाच ॥ साधुसाधुकां गत्व वचनं सर्वं यथा ॥ दानिं कर्तव्यं ॥ कांताडवाच ॥ पुत्रा ॥ दानिं किं कर्तव्यं धर्म
आहुकं कृतस्त्रानह लहं नाल्यदित्वा ग (धर्म) हर्षं अस्माकं नान्य ॥ दानी धर्म धर्म वचनमात्रा धिक्पे देयं स्त्रानं कृत्यात्तथा क
र्तव्यं ॥ ॥ निसम्मर्तकत्वा पूर्ववत्तु धर्म धर्म स्त्रानं कृत्यात्तथा वचनं न लिप्यं स्त्री पूर्वो ॥ अथ वरुथदिन पूर्वो कनयिगं मुहिका रात्रे क
गृहीत्वा हलसत्रकं आगतवान् न विहवर्तु मति स्त्रात्वा सुभी लात्तं पूर्वमाह ॥ कृगम्य भूवृषतं मुहिका विजि भवामं कंद

हि ॥ मुहिका रात्र पूर्वमाह ॥ हर्षो गिनि गृहमा मर्त्रं पाकव्यं ॥ ततः सुभी लात्तमाह य मुहिका नमं कं स्व गृहकाष्टकस्त्रययुति स्त्रा
ययित्वा उक्ता पुनर्दययित्वा नृगं कृति च विनवान् ॥ तस्य ध्यात्त मुहिका सुवर्धना सिपा इहं तं सर्वं ॥ ततः स्त्री पूर्वो न सुवर्ध
ना सिह द्वाप नमा आर्य पाकवान् ॥ तभा हर्षोऽवाच ॥ वदकां गको हर्ष ॥ सुवर्धना सिव कृत नमस्ति ॥ कांताडवाच ॥ पुत्रा ॥ यमह
काध्वर्य पाकाहं कंड पूर्व ॥ कृषिके न ॥ स पूर्वो कनयिगं मुहिका गृहीत्वा गता ॥ कलमात्रं सुवर्धना सिपा इहं तं ॥ अहाराग्या नि
भयहर्षमिति पुनर्दिन हृदयाहत्वा स्त्री पूर्वो वरुन भक्त आयायमान हत्वा स्ति ॥ हर्षोऽवाच ॥ अहर्षु न हर्षु कं न वलि

विद्विग
१०

कवृत्तिकुर्यात् ॥ नान्यगृहो नवृत्तिना कुर्यात् न पत्रविह ० न कुर्यात् मकसा न ह्यसम्पत्ति ४ पाद्वर्त ॥ कांता उवाच ॥ पशुना न्यवां प
हो वं श्रीधर्मधरु कृत पूषा नां हूलं मन्त्र ॥ एषु शसुख मन्त्रय सत्त्वं गृह कृत सर्वापक न ल कुरु वा श्रसा धय सर्वः ॥
अथ हर्षा सर्व सा धय तिसर्वापक न ल गृह कृता दिय विपु श्री निक ना तिसुख न ह ह ह ह ह प्र मुदिता समजा ता सि ह ति ॥ तत ४ पु ह ।
तिसर्व भरी नाव यव सो न्यस्य सू वृ प व को व ह व कृ मो द म्य लो । तत ४ क्रिया को न सर्व सु प त्रि सु कां का च न पू वी महान गयी विमल द
हाना म ॥ एषु शसुख मन्त्रय सत्त्वं गृह कृत सर्वापक न ल गृह कृता दिय विपु श्री निक ना तिसुख न ह ह ह ह ह प्र मुदिता समजा ता सि ह ति ॥ तत ४ पु ह ।

धर्मधरु

पञ्चत्वमपगत ४२

१०

शानं पूजा सकलं मयि वहंति शका य नान्यथा हत्वा श्रयी ॥ अथ का य पा ह ग वं त म न द वा च न । साधू साधू पवा ॥ हं ह ग व न् प वा ।
॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥ हं ह ग व न् प वा ॥
वा ना श्र पा ह र्ता ४ ॥ गृह या सा द कृता दिसु न्म न्म न्म क उ या न ह ल मूल पूषा य विपु श्री लि ह र्ता ४ ॥ अ न क कृ य पू कि त्रि मी स म चा ग ता
ह व कि । गृह का य का ह ग व न ना नाल का न पा ह र्ता ४ ॥ अ न का नि अ न पा न व सा व सा य पा ह र्ता ४ ॥ अ न का नि नी ल क धू ल का उ व ध
या दि अ पू वी का दि पा ह र्ता ४ ॥ अ न का नि ए त म धू द धि इ ध स र्वा प क न ल नि पा ह र्ता ४ ॥ अ न का नि व वी र्य र्ग व नि ला जा न वृ प न

विविध
११

जनसुखार्थदिद्वयानियत्रिपूर्वनिर्हवन्ति। रणमहिषाश्वमूजभवादिपसवः सम्यन्नाश्वरुवन्ति। शुक्रसालिककपातादि सुवचन
राषिभीपक्रिसमापनाश्वरुवन्ति। ७ मे विमलदहस्य सर्वविषयसम्यन्नाश्वरुवन्ति। मूथविमलदहः ४ पत्रमाश्वर्यपाकाश्व
वमाह ॥ अहममहागर्धर्यकोरुहकस्यपुत्रावस्य प्रवृत्तमहाविरुवसेमापनाश्वरुवन्ति। नदृष्टं मूत्रं वां वृत्तं ममेव निर्मितं ॥ ११
तस्मिन्समर्थविमलदहस्यपूज्यमाह ॥ १ श्वरुवकः ४ पुकम्यमानं विमलदहमंतदवाचत ॥ नान्यविमलदहकाहमाः ४ काश्वर्य
तवपूर्वकमलकर्महमाश्वर्यमयि मूर्धादिपूजासकलं जनवनविहाय नमस्कृत्य मूर्तोपवाहितं ॥ मनेयून्यनतवमहाविरुवाः ४ सम्यन्ना

११

श्वरुवन्ति। नान्यन। तथा विमलदहश्वरुवकमूवाच ॥ धन्यासि भाव्य मूर्ति। लादववृककीदृशीं सुत्री वंकुविनाजयमानं नजानाम्य
हं कथं दर्शययं। दववृक उवाच ॥ विमलदहभाक् मूनः ४ वर्धनामया किंवकवी। तदपितस्य कनकवर्धं वज्रकायमस्य यकार्य
निवृत्तकार्यं वाहिं भत्पुनूषलकसमन्वागर्तं दवेर्नारे वसूनेर्गवृत्ते ४ किन्नवेर्महावर्गेर्मनूष्यामनूष्ये ४ पूजितामानितः ४ सत्कृता
पुनूकृता हि कृगलयनिवृत्तं वृत्तं जनवनविहाय विजयकृतिरुति ॥ तथा विमलदह उवाच ॥ लादववृक कथं दर्शययं रगवर्कम
महर्षारूपानीय दृष्ट्वा यथा ममाहिला वरुर्तदर्शनं भाव्यं गवर्तं। दववृक उवाच ॥ विमलदह तवाहिला वं पूनयामियच्चिद्विर्त

विधि

११

तत्सर्वं पूजयाम्यहं अहं किं विंतामलिकल्पवृक्षनेव । विमलदहवाच ॥ हा देववृक्षमूगहं कुरु मूवकाभं ददस्व परुगवंतं
दर्भयममालिलासहृत् । देववृक्षावाच ॥ गुरुत्वं विमलदहमहं विंतामलिनी पूर्वगुरुं ति । देववृक्षादहवान् ॥ तमा विमल
दहः ४ पीति सोमने सजा मारुत्वा देववृक्षमहं ददोच ॥ हा देववृक्षतस्यानसा सनं कथं विधानं कथमाच विंतामलिनी येन स्यात्तदहं
देववृक्षावाच । विमलदहकथं न ह्यतय कार्याभिं साधेनी यमं वा तावनी यमनसा य निविशस्युत्वा कसिं भिन्नं तव्यं । उवमूय
दहहृत् । तमा विमलदह देववृक्षं प्रियद किं ली कल्यस्व मं गृहमनूगतवान् । तस्मिं गृहं पूजयौ जादिसकल पविजनं समूदि

१२

असम्यगहंत्वा कांतामाराय पूजा पूषा धूपादिकं गृहीत्वा विमलदहं संपूजां कुरु लिंकत्वा रुगवंतं सत्त्वा विंतामलिनी पूर्वपाद धी
र्हत्वा गतवान् ॥ तमा कलमा पुनः आकाशगंगाया फवान् । वमलीया दर्भलीया अमृतेजलमिव यावनी समूहता समं ततः ४ सूवर्षवा
लूकासमायुक्तो विमलदहः ४ हृत्मी मनु दर्भितवान् । तदो विमलदहः ४ स्वकांता विमलामेवाच ॥ अहा कांता मूहा राग्य अहा विस्मय
दर्भली । स्वप्ने वा पिडपूर्वः ४ हृत्मी दर्भली वरी । दर्भलीया मत्रा वम्या सूवर्ष कसुमा कर्ली ॥ सूवर्षवा लूकायुक्तान् हतान् रु विव्यति ॥
कांता उवाच । देववृक्ष उसा दाच तव राग्य विरभयतः ॥ ह्यात्वा स्वा मिव नत्र या कुरुत्वा ना सि आवया ४ । ततः सो सं राग्यत्वा न कृतवर्णो ।

विविध
१३

यदासूनदीर्घिकायां विभक्तिः तदा कलमां ललाक मुनिरुगवंतं पुदभिर्नवंतं हि कर्षं धनपत्रिवृतं अन्नकधवनागयकग
श्वर्वासूनगदू किन्नरमहात्रगादिहिः यत्रिवृतमलिमयसिंहासूनसिंहं ता वागलमरुध्वददियमानमिव अथविमलदह
दकिल्लान्ममलुलधवर्णां यतिशयसंपूजं लिंकुत्वा पूजापूत्रस्तनचक्रकृत्वा मुनिपूषीपुस्तुतवं भो ॥ रुगवच्युचवीनेभवूचनोथ
नभासुभारुवेगेवाधिमनानीता वलंभाकदसदा ॥ भावने सर्वसत्त्वानां इष्टवसागनमकुर्तुमवर्तमानाथरुतानां वागलमाकविनाम
नी ॥ तव पादपुसादनं मम हाग्य विरलघतः ॥ भाकददहिमनाथ सर्वरावेनमोस्तुत ॥ रुगवानाह ॥ साधूसाधू मुनिपूषीपूवथाः ॥ पू

नष्टि २

१३

वकोमलादिकं मन्त्रपाय वीतव पूजा सकलं मयि प्रवाहितं ॥ न पूर्यन्तं विमलकीर्तिना मतथागमाहं न सम्यक् वृक्षा विद्याः
वत्रलसम्यत्र ॥ सुगमालोक विदमूरुन ॥ पूत्रवदम्यसात्रधिः ॥ सास्त्रादवा नाच मन्त्रा नाच वृक्षा रुगवान् रुवे ॥ तव कांतातवाधि
ककोमलान विमलमंशाना मतथागमाहं न सम्यक् वृक्षा विद्या वत्रलसम्यत्र ॥ सुगमालोक विदमूरुन ॥ पूत्रवदम्यसात्रधिः ॥ सास्त्राद
वानाच मन्त्रा नाच ॥ तदा कांथा पाह गवतं मत्तदेवावत् ॥ रुगवन् विमलदह तिअर्यै पूत्रवसाधू ॥ रुगवानाह ॥ लोकां यअर्यै
विमलदह पूत्रकुमलह मां ॥ तस्मादिकवः सर्वतः पूत्रसाधनीयः ॥ ॐ दमवावरुगवानाह मनास्तवहिकवः ॥ सा

विचित्र
१४

वसुवतिपर्वसुंदरमानुषासुनगधर्वशुभाकारुगवताहावितमसुनैदनिति॥ ॥ इतिविचित्रकर्त्तिकावदानपु
थभाध्यायः॥ ॥ अथरुगवाकालांतत्रकसिन्धुसमथगृहकूटपर्वतरुगवान्निहन्तिस्मरिहसंधनयत्रिवृतशु
नकधवनागयकगधर्वकिन्नरमहावगादिसकृतवानुगुनकृतवानमानितवानपूजितवानतसिन्धुसमथवधूमती
नामनगत्रीशुक्तिवह्जमनूष्यानिवासिता। अनेकवाक्कोविदिज्जनयेविपुर्ज्ञोभीसुवहासोलाभादिनटनाकज
नाशकीर्त्तिः॥ तस्मिन्महानगर्यावैधुनागनामराजापुनर्वसति। तस्यध्वीसुवनागत्रीनामासमायन्नानाभासुधृतवान् वि

१४

वकवाननीतिमार्गदिहमवाननावकुसुसंस्कृताधनधान्यमहाविस्तीर्णविरुवधुनंगवलसमाकीर्त्तिः॥ हस्तभाज
उकादिपुगमसमायुक्तः॥ अनेसराजावहवतस्यमंजीवलसहमानामेकवृद्धिसहमानामेकराजवहवराविभजनव
सहस्रमानान्यवृद्धिसहस्र॥ तस्यानगर्यामहाधनामहासारागविक्रयकानाममहर्षिकगृहपतिपुनिवभेति। तनः॥ कदा
स्यकाकासस्यभीलानामाकाकि। तमाकासिनवसुत्रवृद्धिसहमानाममहर्षीसहस्रभीलायाइतिपुषयति। सुवहकीजाहना
॥ तमाकादिविज्जिवात्रयनिकाइतिपुषयति। सासस्यभीलानपुवाधिता। अथवृद्धिसहमाविक्रयति। कथंस्त्रीयकानपुवाधितं

विचित्र

विशिष्ट
 दत्तमहात्म्यं स नमो हि त्रिभिः नव दश वरा वतः । किं कर्तव्यं ॐ नमो ॥ महा राज किं वक्तव्यं यथा त्वमिष्टमा दत्ति ।
 स्वकानां च यथा त्वं वदस्व । भवती ननु लोभमवदस्व । सुखं दुःखं च सर्वं वा कथं न ज्ञायमानं नृप ॥ मम ज्ञानं ह न त्वं हि किं वक्तव्यमन्यथा न वद
 त्वत्पुत्रा नमो भवती ननु मम ज्ञानं गमिष्यति । मम राज गन्धं महा राज न वदस्व नृप । मम सुसमागमा यवै न वदस्व विदुषा दत्तः । म
 नुर्लभं वदस्व राज न मम लं न वदस्व सर्वदा । ज्ञानमात्रा हि मे ॐ नमो ॥ सह सा गृह्यते च नृप । मूढा राजा विना यथा वा वदस्व ननु वदस्व । किम
 र्थं मा गमा हं वदस्व नृप । ज्ञानं महा या न कं पार्थ किं वित्तं गमा ॐ नमो ॥ वदस्व राजा वदस्व । न त्सर्वं सत्यं ॐ नमो ॥ किं कर्तव्यं मया पुत्रा नि

[illegible]

विधिः

सकलं सत्यवचनं वक्ष्ये मन्त्रिभ्यो धिक्कृत्य मन्त्रं ब्रूयुः स्फातकं लनाश्च मातृकयुक्तं कस्मिं विही र्थं गत्वा मृगहा न कं पापं द
योमीति विंशत्यमहावर्गन गतवान् । तत्र मुक्तिर्नो राजपृष्ठभागे गतवती ॥ तत्र उक्तं नवलसंक्रमन राजानो गच्छन् न भर्तुः । वृद्धि
संक्रमन उक्तं मन्त्रिना राजा सह गच्छेत् । तत्र उक्तं दक्षप्रयागं वानराणां । तत्र उक्तं मन्त्रिणा गृह्येति निर्वृत्तयति राजानमदृष्ट्वा ।
अथ वृद्धिसंक्रममन्त्रि राजानं निवाचयति । उवाच । महा राज कुरु गंतव्यं मा गच्छ सि किं त्वं त्वं कथं न ह्यं न राजा त्वं त्वं
सह ४ विवकवान् महाप्राज्ञा गवसि त्वं महा राज यमुमा उवाच न वा कल त्वं कथं नृप । राजा प्राह । मन्त्रिर्न भूत्वा मृगमिति

११

वदति । नाथ राध मम काय राधप्रयाग ४ अनाथ राधयां हनसि महा राज तव वनं मृगस्य न सहिष्णुमि । मन्त्रि उवाच । महा रा
ज किमाज्ञायसि राजधर्मं यवान् हन्यन्त यन्तु हन्यन्त माया वृद्धिस्तु यत् । भक्तुं हन्यन्त यत्र नार्कं गच्छन्त ग्रामन गवादिन गच्छ
न कथं महा राज मृगमकथा तस्य केथं सा विनये ॥ राजा वाच ॥ नेव मन्त्रिन् श्रुत्वा तु लंजीवतु लंजीवतु स्व ४ स्व सर्वं वीर्यं वेत्स्ये त्वं
किं न समन्तं ता सि मन्त्रिन् धर्मैव नार्कं कान्तं न भक्तुं त्वं त्वं घातयन्त भक्तुः ४ ग्रामन गवादिग्रहयन् । कनापि विनाथ राधन किं ह
कथं । तं मृगं न भक्तुं त्वं नापे राधी ४ दृष्टं ह कथं तेन मया कली त्वं । मन्त्रु वाच । महा राज कमस्व मे वचनं भूत्वा सिंहन राजान ह

विचित्र

मं. वा. ॥ नव राजान हारं. कम विव वाहन राजान हारं. म. कन उ वं न हारं. तस्मिन् दूर्ग वन त. थेवरु विषय मान ॥ कथं जी
वित वीं अ. त. उ व स्व गृह विजयी त वीं. अ. क. पू. न. प. जा. सर्वना वा दिक ह वीं. पुन म. की. राजान म व मा ह. ॥ महा राज त वा न
म. की. अ. स्त्री. नि. कृ. ग. क. वीं. ली. द. यि. ला. म. मे. क. म. लि. त. व. य. म. ता. व. ल. स. ह. मा. म. की. ॥ दानी कृ. र्ग. त. वीं. यू. क्ता. यू. क्त. म. हा
राज हार वीं. ॥ राजा म. की. न. म. व. मा. ह. ॥ उ व म. की. न. त्व. द. व. न. यू. क्त. म. वीं. कि. म. न्य. य. थ. म. वा. हि. ला. र्ष. क. मा. मि. ॥ नित द. व. न. यू. ला. म
ला. स्व. गृह. म. व. य. नि. नि. र्व. ह. य. नि. राजा. अ. थ. सर्व. ज. ना. राजा. ग. र्ग. यू. ला. राजान मा. लि. मू. र्था. र्थ. म. न. व. ॥ म. कि. प. ह. त. य. ॥ म. हा. ना. स

१८

का न विनय यूक्तं कृत्वा स्वस्वजातिप्रमाननसंवावंदनादिसम्पत्कृत्वा राजा मूर्खकी न पाक व्यं पुत्रं च कृतमपि सहांका
विनवान् । कृत्वा च मूर्खपूत्रं पुत्रविभक्तिः पादपुत्रा न संकृत्वा च न च निका पादयार्नि पत्युर्कां ता सुवनागरी दवी राजानं पुत्रा मि
नवान् । ते मा राजानं सुवसा ग्रथनमाहा नं दुष्कामयनका कृक गन्धर्व्यं मूर्खकां ता सुवनागरी राजानं पतदवा वनः कथं महा ना
जुविर् विनं हं नं वनजीजाममातिवा क्लीरुताः राजा पाहः का कर्हं वरुना किं वरुर्कर्म मृगे कस्य कथा मार्ज मूर्खं वनजीजाम
नसमथः मूर्कस्मा न् मृगे का गमं स वनहित्रमि मृर्तः । मन मृगन पात्ता कसमथ नाना प्रकारं विलापन विमिष्टं सत्य वा

विद्विज्

[illegible]

वा सर्ववर्त्तनयत्रिजगत्सर्वयथाज्ञानवर्त्तनवाधिकारं। तन्मा मंतिना जानमं वमाह। नमस्तं महा राज सर्ववर्त्तनममयथा पूर्वज
वं। राजा प्राह। मस्तिनत्वं वनमलं उवमावद। मंत्तुवाव। महा राज किं वदुना उक्तं मया यथा ह्य सर्वमस्तु। तन्मा वृद्धि सल्लभं
जी सर्वमधीकृत्य सुखं न हितवान्। तस्मिन्नेक कलमस्ती वृद्धि सल्लभं पूर्व विज्ञान विज्ञ दह गृह्य न ४ का कार्यं पूनर्दत्ती मं कथ
षयति। तन्मा इती गत्वा सत्यं नीलामो वा वयति। सा सत्यं नीलं मये क वा र्वं भूना न्येवं पूर्व ल भित्तान नि मिनि वृद्धि सल्लभं न मंति
नात्ययिषवादिना हं। महा पूनर्वायं वृद्धि सल्लभं गत्वा न सकल मस्ती सर्वमहर्षि का धिना यक नाह ४ सकल गच्छा धिका न गृह क

विशिष्ट

जानामधिकर्त्तु सर्वजनपत्रिजनयोः जनानां विवाहकन्याया न्यायकनक्तु कानकशुल्यं थाग्यपूवृष्यपूवृष्यगमिष्यतीतिश्रु
हमन्ती॥ नदासुखमीला इतीका मवमाह॥ ला इति काथा ग्यनाहं ॐ कृमावा ननकर्त्तु वीथनापिननकमिच्छन्ति स्वर्गभव ॐ कृन्ति
मिच्छावापूवृषाथवा स्वर्त्तु पूवृषावापिका पूवृषाथवाप्तीयासह नमंत॥ ममस्वपूवृषनसुसंतुक्षा हं स्वामिरुक्ती ॐ निवच
नंदत्वा इति पुत्रादयति॥ नतो इति का ॐ निवचनमाक श्रवृक्षिसुरुमहर्त्तु मवगच्छति गत्वा सर्ववृत्ता न निवदयति मन्ती
नतामन्तीवतिकाया ४ वचनवृत्ता न अत्वा कृ पितशक्ति मर्थ ममवचनमन्यत अथवृक्षिसुरु मजा धनविक्रमदहृगृह

२०

पतिवधाय कला नमाहूयवा कृवान् कला नगच्छत्वं विक्रमदहृमाहूयवा आलहृत्तददसुखं गच्छ॥ नत ४ कला नक
विक्रमदहृमाहूयवदिर्गत्वा कला नावाव॥ विक्रमदहृत्वं वा आलहृत्तदहृत्ति वा च दत्ता अदिभा हं वृक्षिसुरु मम मन्ती
नाश्रु गच्छ गच्छ॥ अथ विक्रमदहृगृह पति कला नक मूवाव॥ ला कला नक किं हृदु कं किमर्थं कानिमिरु कं काय बाधमम
हा देव गति॥ कला नका वाव॥ नलाभा हं नवकाय बाधमि ॐ निरा विक्रमदहृ विनाय नाध किमर्थं क विषयति॥ विक्रमदहृ
वृदित्वा ॐ दानी किं क विषयामि अहं नाज निश्रुय नाधमि वाधमि अहमस्ती निवृत्ता किमूक्तनमम विनाय नाधननडा हनति

विधि

उवं ॐ नमो नमो ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ विक्रमदह विलं विमन किं वरुना आगच्छ गच्छ ॐ सुखा वाञ्छा लाहय वाञ्छा
हस्तदह वान ॥ अथ विक्रमदह वाञ्छा लहस्त नकाल गमा ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥
उपदिष्टवान्नेपुमीत्य ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥
लाउ वाच ॥ कथं मम कुरु ॥ काय नाध ॥ काजा ह ॥ का निमिह मम कुरु ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥
ववस्तिना नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥

२१

ॐ दानी किं वरुनाउ कुरु नमः ॥ ॐ दानी ॐ सुवधूस्तय ॥ आगमा ॥ विवा न संवा न यकि ॥ कथं सुखभील अयू कुरु मिदं नाय नाध
विक्रमदह स्य न दाधिकं हा हा ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥
हंसह गमिनी वरुना नमः ॥ अथ सुवधूस्तय ॥ सुखभील नव कुरु ॥ सुखभील नव कुरु ॥ सुखभील नव कुरु ॥ सुखभील नव कुरु ॥
आलहस्त नकाल गमा नव सुखभील नव कुरु ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥ नमः कुरु नमो वाच ॥
यनि ॥ दास्या या नि सां लला न वय नया नादिनि ॥ कवि सुलक्षित वरुना ॥ अथ सुवधूस्तय ॥ सुखभील नव कुरु ॥ सुखभील नव कुरु ॥ सुखभील नव कुरु ॥ सुखभील नव कुरु ॥

विधि

वाधयति सर्वयथा ॥ ॐ दानी किं कर्तव्यं ह्यीति ॥ न तस्मिन् दिवस मा न ह्यदिनं सकाशं धाति नि सत्य नीला ॥ तभा दभा ह
रुन कर्मादि विं कृत्वा न द क र्क नान्ना प्राय विर्ह यथा विधिना सर्व कृत्वा स्ति नवान् ॥ तभा दिना निधन यामा स ॥ तउ जिमा सम
गता ॥ सत्य नीला या ह र्क मु व र्ण ॥ अथ सत्य नीला निल्य क मा रू य का कृ पति मा स पू नू यो का न स कृ तवान कृत्वा व निल्य क म न द
वा व न ॥ गच्छ २ निल्य क जू सो पति मा भ्य भान म र्ध स्य पयित्वा गच्छ नि पू नू य व र्ण ॥ पा व ह्य भ्य भान म र्ध वा दितवान् ॥ तभा नि
ल्य क ॐ ति व व न मा क र्ध भ्य भान म र्ध स्य पयित्वा पति निर्वृ ह यति ॥ निर्वृ ह्य च सत्य नीला मा वा वि र्ण ॥ हा सत्य नील ये था त्व व

२२

न प्रमान ना हं स्य पयित्वा गता हं ॥ तत ४ सत्य नीला निल्य क मान यित्वा व क्रा दिकं दत्वा दितवान् ॥ अथ सत्य नीला पु ह नित व द
ना पीति सो मन स्य जा ता स्ति त्या पूर्व ला विनी म की न व ति का मा रू य न त द वा व न ॥ व नि क लं पूर्व ला वि नं सर्व ह्य भा सि प्र सो व डि
सू रु म म की ना रू या गच्छ ति आ ना वा वा दितवान् ॥ तत ४ व ति का पु ह र्ण म कि ने ४ गृ हं गत्वा सर्व यथा व व र्ण वि ह्य पितवान् ॥ अथ
म की ह स ति वा व ह स ति पूर्व क थां स्य स्य ॐ स्य कृ वान् ॥ ॐ दानी म य क्रिया ४ समय मा ग न ह्यु का सम की सत्य नीला यां गत वोन ग
त्वा व र्ण नी सत्य नीलां ह ह्य पु ह नित व द ना उ कृ वान् ॥ सत्य नील कि म हिला ष ह न त व व द सि ॥ अथ सत्य नीला पु ह र्ण यं क ऊ मि

[illegible]

नामया श्रीधर्मसूखं पापं श्रीधर्मवृत्तसम्भन ॥ अथ नमः ॥ श्रीभक्तवित्तुखं पापं इव पापं नथेव न ॥ सूखं इव विभक्त
वृत्तधर्मस्य हलाहलं ॥ अन्यच्च ॥ नृपा नृपश्रीनां वराणां गणं नथेव न ॥ अकलीकलीश्रीनां वृत्तधर्मस्य हलाहलं ॥ पुनश्च
महामंजिन ॥ उक्तं श्रीनृपाणां वृत्तधर्मस्य वराणां गणं नथेव न ॥ अथ नमः ॥ कालवत् श्रीवित्तु
पावविहसंगलकलकाका नाकजावनिन्दाविश्रीधर्महृदकस्य वै ॥ उवमममहामंजिनवत् श्रीमहाजननश्रीममिमहा
वाहनववावहयाकुलान् ॥ क्रमस्यमहामंजिनमागन्तव्यं नमः ॥ यि पापाजलमहाधा नमः ॥ वृत्तिसहस्रविम्बा

विविध नक्षत्रं विज्ञानं भवति ॥ ननकं गच्छन्तं कापिनसं दक्षामहजनः ॥ महामहिममाकृदयसिममकार्यभक्तं सानिधं कुरु ॥ अहं
 सहगमिनिं कनामि सर्वतः साजुवाजं कुरु मम पूव्यपुति मां भवन्तं विनं संपूर्णं ॥ ॥ नमो मन्त्री अहं नया फालगुणाव
 कुरु नभः ॥ सूर्यदीप्तं नखगृहं पुजा कुरु ॥ ॥ अथ सासत्यभीलायाः सहगमिनी वार्त्ता श्रुत्वा सर्वाः क्रियः किल किला यमा
 नागताः ॥ नमो गच्छी वाधवयथामर्तं साजं कृत्वा सर्वजनाहाहाकारं तस्य सहगमिनी गच्छति ॥ यथामर्तं भवन्तं सत्यपूव्य
 काष्ठपुतिमासहयथामर्तं अग्निसत्त्वा गदि कृत्वा सासत्यभीला गच्छी वाधवायलाकृत्यः श्रीभीर्वचनं कृत्वा कालगतमिति ॥

२४

अथ मन्त्री सगृहं विनायकाव्यवस्थितं नक्षत्रं धिक्कजन्ममं अविष्टकार्यं कर्तव्यं ॥ सत्यभीलायवदितियथा सर्वसत्यं भवं किमर्थं स
 त्वभीलाया रक्षां नञ्नायवाधदं घातव्यं मम महायातकी कुरु किं कर्तव्यं ॥ तदा राजा वधूनागना सहगमिनी वार्त्ता श्रुत्वा वृद्धिस्त
 रुममधदं घातव्यं मम महायातकी कुरु किं कर्तव्यं ॥ तदा राजा वधूनागना सहगमिनी वार्त्ता श्रुत्वा वृद्धिस्त रुममं निनिद्रं पुष
 यित्वा अहं यस्तस्मात्पितवान् मन्त्रिन् विज्जमदहस्यकथां कथं त्वं वधूनायनायवाधनिलाकाः पुवेदं किं नवान्यवादहं नमिति ॥
 अथ मन्त्री राजानं तदवाच ॥ अहं नममहा राजा मन्त्री मकार्थं नममायवाधहं नमिति सर्ववृत्ता नमपदं नक्षत्रं कुरु ॥

विभिन्न

विच्छिन्न
मना राजा वाच ॥ त्वं या पीठं अहं या पीमस्मिन्नवदाम्यहं ॥ कनायाथनमूयकमृगहिंसकपातकं ॥ अथ वं ॥ अनापनाधं त्व
यायं मानवहिंसकस्य व ॥ मृगहिंसां वमत्यायं कनायाथनदम्यहं ॥ अथ मंजी राजानमवमाह ॥ साधु साधु महा राज ॥ दानी त्व
द्वामृत्तं यद्वक्तुं त्वया सर्वं सत्यमेव नृप नव ॥ आवथापि महा राज उवाचास्मिन्नवदाम्यहं ॥ गृध्रकूटमहालेखगवान्मृनिपू
वः ॥ हिंस्रसंघेन सार्धं वेमहं हि यत्रिवा न के ॥ बाधिसत्त्वैर्महासत्त्वैः ॥ सत्कृत्मानि न सदा ॥ गच्छी नरु गवान्मासा गुप्तसागवसान
दः ॥ पूष्यवान् पूष्यकायास्तैस्तैः ॥ श्वनासकः ॥ महाकद्रुमाधवः ॥ श्रीमान्कादिभूलमहाबलः ॥ नृगोत्तमहा राज नत्सर्वः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ राजा वाच ॥ साधू साधू मदि कथा सु ॥ निसंमतं कृत्वा समुत्थी राजा त्व गच्छामि सर्वमूषदं यथा मत्तं संलग्नं
कृत्वा गृध्रकूटपर्वतगतवान् ॥ यत्र ह गवाक्षनाम्नैः स विनयं प्रियदक्षिणी कृत्य रुगवत्तमं तदवावत ॥ समुद्र नञ्जुन कर्मा
ऊर्ध्वमूर्ध्व गवन्तया पलनाम ॥ सुमिरुगवन् ॥ सुमिरुगवन्तकथा मकं ॥ मिदं भय ॥ रुगवानाह ॥ किंपृच्छसि मत्ता गजक
संदहदत्वं नृपे सरुम ॥ राजा वाच ॥ रुगवन् ॥ सुगुप्तममया लंकथया मि ॥ कस्मिन् विरुगवन् वनजी गम्य मानं शुक
स्मात् ॥ गेका गत ॥ नृपे सुमादनमन कथयाम्यहं ॥ यत्र मृगा दनं विव्रतनतदा मृगनया वत्प्राप्तन गच्छति तावदनं के

विधि

विलायननीतिमार्गनमयिवदति। तदा हं वक्तुं न भक्तं न तदद्यापि मम व्याकूलो हूँ न मही हूँ न वधस्य कति पाया ४७
वर्तुं ॥ रुगवानाह ॥ मायुक्तुं सिमहा राजहिसा मार्गं विविकित्वा नात्ययमवा ॥ तदा मं युवाव ॥ एवमिह गवनं एवमि
सूगत ४। ममेकका कूलमस्ति कथयामि शृणु नान्येवं रुगवनं ७ कस्मिन्दिनं जीज्य म ह म कोन्दिर्य इतीकां प्रययित्वा युवा
दयति ७ कवा नवा विवा न विवा नवानयवा धिता तदा हं कृपितवान् न ममाह मनु विविह्ये दानी नान्यय च वयत्नं तस्या रुहा
नैव धं क वा नैमी विआल हस्तक दहवान् मूय नाधपि १ तदनु तया मीयापि पूर्व ह निकां वा दयित्वा हं किर्यांगत्वा सहा धित

२७

अनकनीतिमार्गनमीधर्ममार्गनमयि सँद भितवान् तदा हं वक्तुं न भक्तं न तदद्यापि मम व्याकूलो हूँ न मया न
वँ विनाय नाधन वधस्य कति पायं पययन रुगव रुक्ते वद ॥ रुगवानाह ॥ मायुक्तुं सिमहिन त्व मयि किं प्रयाज न हिंसा मा
गं भू तयस्य विविकित्वा मापयन ॥ रुगवा नून ववाव ॥ शमहा राजहमस्ति न मया किं व रुवा क विक्क नापिवन मरध कति पा
नियधं कुर्वन्ति न गववा मवा मूय पवद ७ वा कति पा नियधं कुर्वन्ति का विवा वयति ॥ अथवा विवा न मस्ति पवला कवि
वा न त्वं नाज रुत ४ लं मदी रुत ४ ॥ राजा वाव ॥ शषु सुगत रुषु रुगवनं ॥ रुगवानाह ॥ शमहा राजमस्ति न वा हिला म

विचित्र

रुमंश्रुतिमथन॥ राजा वाच॥ निश्चयमंरुगवनपुलाषय॥ रुगवानारु॥ मृगमहा राजमहिनुस्व आत्मा यन आत्मा वस्व मनी नयन
स्वव, स्वइश्वयनइश्वं वाकुल्यमन कि इर्वधशे स्ववधयनवधवस्व रुधवयनस्व वे वस्व कोस्य रुनयर्षा रि न कार्य स्वकर्म
न॥ पाप पुन्य वि (मधन जायन मधन मोप ०) वरुथानिषूम (नन रु यमन महा त्य रि ॥ वरुध क घा ट क (वे वरुध वि मति वा
कं) रि रुभा या न क (वे व पा धं वन मा वन न॥ सन्या सुव क घा न क श्र द द न मू व्यन॥ रुति या घा न क या धा द म व र्ष ल मू व्यन
॥ वे ग्ध श्र घा न क ४ क श्रि द धू व र्ष ल मू व्यन॥ मू ड श्र घा न क श्र पि व द र्ष ल रु मू व्यन॥ निय मा व ना य वा (मन का य क धं न मू व्यन

५५३

२१

बहुवर्धवधनाच्छ्रयं नृपसूरुमः। सूर्यवधवधं दुर्लभं मृगवेधवधं समं। सिंहकृतीवधं तद्वत् निनायनाधुवच॥ ना
हं मया महा राजन् मूनायां प्राप्तिनां मतं। एतच्छ्रयं विष्णोः साक्षात्कृतं वदामि॥ मूनाय नाधकृत्तुं यत्नं न ददाय संदंति। अप
नाधकृत्तुं यत्नं न ददाय संदंति॥ अथ राजा मंजिनीरुगवता वचनं श्रुत्वा दीनमना दुष्प्रसूतः सितो॥ तदनन्तरं राजा वाच
कथं रुगवनकथं सुगतमृगघातकयातकं पवित्रमात्रं नामाधिक्यं तदभयं दुर्लभं रुगवन॥ रुगवानाह॥ अस्मि महा राजा सुहृदा
व्यक्तं सर्वपातकं किमुपवच्छावतमावच्छ्रयं नृपसूरुमः। नन्यत्थं न सर्वपापं विनश्यति। यन्नमनिर्वाणमाप्नुवन्ति सर्वदा।

विविध

तदा राजा मंजिरोपमुदिनोपीनिमनस्यजामोरुगवन्मुदेते वाचतां ॥ साधूरुगवन्साधूसुगतं निश्चयमपवममृतं वनं
कथाम्यहं ॥ ॐ निसर्वसम्पत्कृत्वा पुत्रकावर्तका विमवभो यथा विधिना ॥ कृत्वा रुगवन्मुदकिलीकृत्य सित्रसायुतम्यसि
नवभो ॥ रुगवाननयमयति यत्र निष्ठापयदं दमनिष्ठापयदं तदा तास्यां यत्र लिहं पाश्र्वं ॥ यत्र मयदगमि नो वैहे न
॥ ॥ ॐ दमवावरुगेवानारुमना सुवहिकवः सावसर्वावती पर्वसुधवमानुवा सुवगन्धर्वधलाकारुगवभासा विरमः
सुनन्दत्रिति ॥ ॥ ॐ निविविधकश्चिकावदानद्वितीयः ॥ ॥ अथ एकस्मिन् समथरुगवान् अवस्थां महानगर्यां विह

२८

वतिस्मा ॥ जतवनमहाविहा वं अनेक लिहृगतसमाधिकी ॥ अनेकवाधिसत्त्वगले ॥ सार्धं ॥ अनेक अवकगतसमाकी ॥ अनेक
दवनागयकगन्धर्वसुवग कूडकिन्नरमहा वगादि लिहृसत्त्वगागुवृक्षामानि न ॥ पूजितस्मिन् समथक पर्ववतीनामनगरी
आसीत् ॥ आठमथाजनेयूमासफपाकावमलितासफलिश्चयविवालिश्चनानावृकलताकी ॥ १ ॥ नानाविद्वज्जनायूक्ता नानासूज
नवासिना अनेक नारी गतसमायूक्ता अप्सवसमिषपुनिस्यर्चिनी नानासुवसमाकी ॥ सुहिकावद्वलाकाफामधिसूतामनाव
मा ॥ तस्यान्नगर्यां यत्र कुरुर्नामनाजावहव ॥ तस्य पूजाविमलकुरुर्नामयूवनाजावहव ॥ तस्य काकाय इमावतिदवी द्वितीयासूता

विक्रि

वनीदवी तथा ४ पत्रस्य न विना धिना ४ पत्रस्य नथा वरु वरु ४। नस्या ४ पद्म न्या ४ पूजा युव वाज ४ सम्य न विनी यार्था सुला
व न्या ४ पूजा नास्ति ५ का न स्या सुला व न्या ४ पत्रम सुन्द विन स्या न पुन वा सिनी न स्या व न्या विविक्त संपत्ता ४ पूजा पत्रम सुन्दनी
विविक्त संपत्ता ४ न स्या मंजी हन कं न वीना म वरु व ५ व म व सुख म न हय न ५ अथ क दा वि सु म थ न स्या वा रु द्वितीया का का ना
जान म वा व ५ महा नाज म मे क वा ली ५ अथ कं कि रु म मा धा व न स्या न्या पूज म पि न सं पत्ता मं द र ५ अथ पूजा मा न स्या न्या दं न या
किं क र्त्तव्य ५ अस्या ४ पद्म न्या ४ पूजा युव वाज ५ ना स्त्री ग विषय सर्वा धिका र्थ पद्म न्या रु व ति ५ म म सर्व कार्य म ल क र्थ म हा ना ज्ञा

२२

नाजा वा व ॥ का न कि म नू ५ विन र्थ न र्थ न र्थ म म ना ज ल क्ती विषय ल म व सर्व ना न्य म र्थ ल म का ॥ का ना उ वा व ॥ महा नाज किं व
रु र्थ मां न व व ल क थि न स्या म व वा ॥ नाजा वा व ॥ का न म म व ल ल ल द र्थ ना स्ति स्या म व ॥ का ना उ वा व ॥ सा धू सा धू म हा ना ज न
द व र्त्त नं व न्य म क म क र्थ ज नू ॥ नाजा वा व ॥ का न किं वा व स कि म हि ला व स कि म नू ५ व स व द का न पू न या म्य दं म र्थ ॥ का ना उ वा
व ॥ महा नाज स्या म व किं वा स र्थ क नू ॥ नाजा वा व ॥ का न स र्थ स र्थ क ना म्य दं वि स र्थ ध व ली स र्थ व न्न न व स र्थ नि ध य म व क र्त्तव्य
न ना का ना सु ला व नी पु म्दि ता पी ति सो म न स्या ना ना जान म व मा ह ५ ना न्ये वं म हा ना ज न व पु न्ना दं मा स म क म र्थ न व सर्व ना ज्ञा ५ म

विधि

मवाचं पुमान् कृत्न धनं न वक्तुं नालं कालं न वान्यमव सर्वममवाचमकं पुमानि कर्तव्यं ॥ राजा वाच ॥ का न किं न कर्तव्यं तद्वचन
माजं मासमकं किं किं कार्यं न दद्यापि कर्तव्यं भवं निश्चय न वाधिका न नि ॥ तमादिना निधुनया मासमकं दिनका का सुलावनी
राजानमवमाह ॥ महा राज नव पुंयुव राजं द्या नयत्वं मम रुगि न्यास रुधर्म कृत्वा विलं विनं कृत् ॥ मां नव वत्त रुव रुतं कर्त
व्यं ॥ तदा राजा रुसा र्थां शौक र्त्त पि धाय धृत्याह ॥ का न किं वक्तव्यं अकार्यं भवं ॥ कर्तव्यं मा वक्तव्यं ॥ तमा का का कुपिते न राजानमवमा
ह ॥ महा राज किं मा र्त्ता पि नं म क म धिका न दत्ता रुतव्यं त्वं महा राज सत्यं कृत्वा रुतव्यं ममे वाचं पुमानीय नैव कथं ॥ राजा वाच ॥

३०

का न रुं सत्यं कर्तव्यं भवं तद्ववाधिका न विनि न क्ता र्थं भवं माज न ॥ का न उवाच ॥ सत्यं सत्यं कथं राज न ममा र्थ क थितं त्वया
॥ राजा ज न न रा रु ता क थं सत्यं पु हान य ॥ पु नश्च ॥ सत्य न पृ थि वी ध र्त्त सत्य न म ना सि ता ॥ ल क्शो सत्य न नि षु न्नि क थं
सत्यं पु हान य ॥ पु नश्च ॥ य दित्वं नृ प सा र्त्त ल ख मं गी का न म व च ॥ महा र्त्ता द्या ट पि ष्या मि न कर्तव्यं क दा व न ॥ अथ राजा वा
च ॥ का न रु द क क र्त्त मा कृ न् ॥ रु व रु गि न्या स रु ध र्म म रु ता स क्ता न ग र्त्त रु क्त्वा कर्तव्यं ॥ त न ८ का न सु ला व नी स रा ध र्त्त रा
क्ष व च न म क्त्वा रु न क र्त्त वि ना म र्त्त र्त्त रु क थं य पि त्वा अ म र्त्त सत्यं र्त्त ग त रु क ॥ स र्त्त र्त्त राजा र्त्त य नि प ह्य पु न ८ सु ला व नी द

विधि

वीमूवाच ॥ मरुतिनः शूलं कथं न ह्यतः मरुतं न राजा सर्वनाम्नां ग सर्वधिकारं दहैवमिति वा किं मंजिनः अथ मन्त्री सुला व
नीदवी मूवाच ॥ अं देवी यथा ह्यपि न तथा सर्वमव राजा सर्वधिकारं दहैवमिति ह्यता हं किमाहो ययसि विदित्वा किं
जातं वद ॥ सुलावनी आह ॥ मन्त्री न नान्यैर्वपुः पूव राज विमलकं रुनात्मानं घातय मम पूषे सहधर्मकृन्ति सहसा ॥ म
मूवाच ॥ न विस्मता हं महादेवी नाहं विस्मयिमाहं ॥ तन्नामं मन्त्री राजानमव मूवाच ॥ महा राज कथं न द्वा र्त्तन विस्मयिमाहं ॥
राजा वाच ॥ यवमविलायनाश्च निपयूक्तं न ॥ कथं मरुति न्यमेक पूव राजं घातयित्वा स्वपूषे सहधर्मकृयादिति ॥ तथा न

३१

कर्तव्यं ममात्मानं घातं कुर्यादिति ॥ कथिर्नंदवी कमुयायं क नाम्ना हं ॥ तज्ज मंजीव कुं न भक्त ॥ तदा स पूव राज सु दार्त्तं भूत्वा
स्वमातन मूवाच ॥ मात ४ भूभिर्न भर्का किं रुमां घातयित्वा रुगि न्ये सहधर्मकृयादिति वे मा ता स्व सा कथिना ॥ तज्ज माता य इमनी
देवी तद्वचनं भूत्वा निभयन विलायन पूव राज मूवाच ॥ हा हा थर्क पूव मम किं गति ४ क ४ य नाय र्त्तं द्वा र्त्तन विस्मता हं काय
नाध सुव मम का रुकुका व र्त्तं नि विलाय अतिभयन वादिति ॥ तन्ना पूव राजा वा व्यपट लप विपूरु न ग रु द क षु स विलाय
सुधै र्थं न व स्वमातन मूवाच ॥ मा वादि सि मा त र्त्तं विलाय य सि विनाय नाध र्मां घातयिष्यति ॥ दानी किं क विष्णामि ॥ तत्सम थ

विशिष्ट

इत्थं प्रयतिवे माता। लयुव राजमाह स्वसाहस्यि तमागच्छु किमाह पितमिति। सह साहस्ययुमन सार्द्धगच्छति॥ पुनश्च॥
तमायुव राजः स्वपितरं वमंजीमाह स्वसां यन्मिति। स्वपितरुः ४ गच्छुः ४ दीनवदनं मंजिनः ४ दीनमुखं वेमातायाः ४ आटमुखं ४ तं
जयानं वदनं ४ हृदयं स्वपितरया दया ४ पुनिपत्यमाह स्वसां या दया ४ पुनिपत्यं संवाव विद्यानयति। तज राजा वक्तुं न भक्तम्। मंजो
युवराजं या दया निपतिरवान॥ तदा सुलावनीमाह स्वसा राजानं उच्चन भयं न वार्चं दापितवान्। कुरु राजन् तव अस्त्यं वासत्यं
वा॥ तदा राजा बाध्य न पतिपूर्व गनगठक १४ न वक्तुं न भक्तम्। युवराजं हृदयं हवसान्। तदा मंजो गच्छुः ४ वदनं ४ हृदयं सुलाव

२२

नीदवीसूवाच। महादवी कमल कमल कार्यमाकुरु। पुनश्च महादवी॥ कमलसं पदिर्यं सुदुर्लभं पतिलब्धं पुनर्वा र्थसाधनी॥
यदिनाजु विशिष्टं मंदिनं पुनवय स समागमं कुरु॥ अहिंसा पत्रमा धर्म अहिंसा पत्रमा न पत्र अहिंसा पत्रमा हनं अहिंसा।
पत्रमंगतिः॥ पुनश्च॥ तदनाग्रभावा दं १॥ वाहस्य अदिव्य वकुलं कालना नाड्या दीन गृहान न दकं माकुरु। तमा सुलाव
नीदवीसूवाच १॥ मंजिन किं वक्तुं न वा धिका न भवं वा किं वक्तुं न वक्तुं न वान ममा धिका न भवं वा तय अथ मंजो वक्तुं
न भक्तम्॥ अथ राजा विंता पत्रा वेहव १॥ दानां किं कर्तुं न युवराजं ममेक युक्तं अति भयं न हव न वाल हथा कथं घाटयिष्या

विविध मिश्रुथवागंनकर्तृव्यममसुखं कथं ह निष्ठा मि॥ पुनश्च ॥ म्हीरुथायातर्ककथं पायव्यं न ह्यमाह मिति स्मृत्य नादितीति ॥
 अथ युवराजा विविधकयामास ॥ दानां किं क विष्णामि, किं सुखं पूनयामि, इह ख विना वरं भाधयिष्णामि, माह स्वसाया ४ य
 हर्षयिष्णामि, पिता मां वधयि कुं नास्ति यितं, मंजीव मां वधयि कुं न भक्ति दया न स्य न त निगुं स संसा न ह्द भं गुं स क विष्णामि
 मीति, विविध स्वस्व अंगुहीत्या स्वयं स्वमिलं यात यित्वा मृतवान्, तदा राजा मंद ह्वा नायमा इह ख त ना वरुव, मंजिनश्च मूनय
 उच्य इह ख त ना वरुव, तदा सुलावनी दवी प्रमुदिता पीति सो मनस्य जाता वरुव ह्वा, तदा स्वमं ह्वा माता युव राजस्य नूदि

३३

ला अतिमय विलापन रुदय वधन यित्वा अगतानं ह्वा नूना दत तं ड ह्वा अगत्तु ॥ राजा मंजिनो मून पूनयथो ॥ तदनूस्
 लावनी स्वाग्रमंगता, काश्चिन् ह्वा पून ह्वा पून मिका विज्ञाया त पा र मिति, का विज्ञा लानं वेधनया नादिति, क विष्णु मान नू सित्वा
 नादिति, का वित्पूल किन्न वृ क्त्वं नादिति, का विष्णु व राज वद नं प्रथयित्वा नादिति, का विष्णु व राज स्वमं ह्वा पयित्वा ना
 दिति, का विष्णु व राज स्वा ह्वा वद नं ह्वा पयित्वा नादिति, का विष्णु व राज स्व ह्वा वरुव स्व ह्वा दय धृत्वा नादिति, का वित्वा नायन नाम
 ग्रह रत्न नादिति, का वित्पु ह्वा द व नाम ग्रह न न नादिति, का विष्णु आगत नाम ग्रह रत्न नादिति, उव मंजान कय का व न नू दित्वा

विधि

स्वपूजनिर्वाहयित्वा सावेन न्ययथो तथा गतनामग्रह (मनहसूगता) अथ तदा जनवनविहानस्त्रिभारगवान्माकर्ष्य
गवः ४ भूमिः कृत ४ मया गतस्तथा गतमि ३ वस्तु स्यथा सर्वं ह्येता नदा भा कदायका नाम गस्त्रिभालापुमाव रुगेवान्मदा
गरुक्षिमा लाया ४ दिगविदिगत्रवरास्य कथ्युनवती नाम नगरी समन्तादवरास्य तस्मिन्मृतकस्तनधववरास्यमिति ॥ तदा
गरुक्षिमा लाया पूज्या विमाननिर्मायमाणा पूजो मुखो वाधिसत्त्वमूपसंक्रम्य महता सत्कावेन भुवि ताडुवर्ननीयम् ॥ तदा का
यनामहिरुहगव रुमं तदवावत् ॥ काहुरुहगवन्कपुलय ४ लंगरुक्षिमा लापुमाविरु ॥ रुगवानाह ॥ कायपकिंनविहपि

३४

मंकथ्युनवती नाम नगर्या तस्य नाह ४ कथ्युनं द्वितीयका नायायनस्य वविनाधित ४ कनिष्ठिका कांता पूजं घाटयति ॥ तस्य मा
तामूनकपुका नमविलापनमादिति ॥ महेश्वनादिमूनकधवनामग्रह (मनवादिनि) ॥ पूनश्च तथा गतनामग्रह (मनवादिनि) ॥
बृहर्ग ४ स्वतवमहं डसुं नमकिं नं ननरुमुजा विनाहं ॥ कायपावाव ॥ साधुरुगवन्साधूसूगमं तिस्रमाश्रमतिकृति ॥ तदा धर्मा
काना नाम दवपूजा कायपमं तदवावत् ॥ साकायपरगवान्किमुक्तं ॥ कायपडवाव ॥ दवपूजुरुगवान्नेकधर्माधिकावदयास्यक
महाकावुलिकतस्य गुभानू संसाकथं वक्तव्यं ॥ दवपूजावाव ॥ कथं कायपरावय ॥ कायपावाव ॥ सादवपूजना न्येवं कथ्युनवती ॥

विचित्र

नामनगरीयप्रकृतु बाहूः कनिष्ठिकायाः काकाया इवूदनपायास्नामूयमहीषया पूजशवमार्जघाटयति। तदा तस्य मातुः
मृतिमथनविलायनमहंशुनादिजूनकदवनामग्रहः। नतथागतनामग्रहः। नतस्वपूजमृतकंगृहीत्वा मृतिमथनमिति
॥ तनकनापिनड्यावितर्कतदा तद्दृष्ट्वा मिमथमसुहमानाहत्वा रुगवानस्वपूरांयत्रिमूयदमदिकमृवरास्यतदकतांनग
त्रीमवरास्यमृतकसमातनमवरास्यपूरायापूष्यविमानमहिनिर्मयस्वेगभाषापजायमानारुवति। तथागतनामाचात्रल
नः॥ दवपूज॥ दवपूजाह॥ काकाभयमंरुगवर्कशाघनीयंकर्णववर्तीमहानगत्रीकसज्जनवनमहाविहानः॥ ककथं

३७

जानाति। कथं नामग्रहसंभूतं॥ दृष्टं कथमूचाविन्दवपूजसुगतवनिर्तनविहानाहं॥ काकाभावात्॥ किंकर्तव्यन्दवपूज
तथागतवनिर्तं॥ दृष्टं सर्वरूपयच्छिह्नुः॥ दयावान्स्वदृष्टस्वसिद्धिः॥ यत्र॥ स्वमसिद्धिः॥ का॥ इ॥ स्वीहृत्॥ कादीनः॥ कामम
नाप्राप्तावित॥॥ मित्रिवावित॥ सदा॥ उच्चनीवादि सर्वपानिजुहिंसकः॥ उवकथागतवनिर्तं किंवदूनावकूयन्दवपूज॥ तदा
कर्णववर्तीमहानगरीयकविहानादिविमानमावूकदवगहनसार्धस्वर्गलार्कगर्भयपम्भक्तिः॥ तदा रुग्णस्वसर्वजनाहाहा
कावयकता॥ कादाय॥ घाटन॥ नाभेर्वकाकायवस्यवविनाधनः॥ तमिमिसर्वजनाकथयति। मृथवाजामक्षिभादीनमनाय

विधि

हा राज साधु साधु नरु नर्य यथा त्वमा ह्य पितं तथा क वाम्प हं ॥ राजा वाव ॥ सूत्राव नि सत्य मं व मिति किं ॥ सूत्राव नी उ वा व ॥ म
हा राज सत्यं सत्यं तिस्रं न वा ह्य लं धन किं कर्तव्यं ॥ नभा नभा ॥ सूत्राव नृत्तं ह्य नृत्तं ॥ अथ नृत्तं सत्यं स वाज मं तिन
मा मरु यमं स ॥ नदा मं जी सत्य न मा गत्य राजान मं व मा ह ॥ महा राज कि मा ह्य प य सि ॥ राजा वाव ॥ नेव मं तिन मूति मय हं
हं स मा ह ॥ स ह व र्त्त मान मा ना यू व राज दिव्य विमाना नृत्तं स्वर्गं गति सर्व ज ना कथय कि ॥ सत्यं वा ॥ सत्यं वा ॥ उर्व किं हं
हं क स्य विषय पुरा व ॥ अथ वा स्य पुरा व हं मूथ वा क ना पि द व ना वा नि तं वा कि म् ॥ नभा मं जी राजान मं व मा ह ॥ न ह्य मा हं

३१

महा राज मूति हं क विज्ञ ना क थिता मया मूति मिति ॥ न स्यि न स मय धर्मा क ना ना म द व पूज ४ का न्य प स्य व व र्त्त सत्यं वा ॥ स
त्यं वा प विज्ञ मर्थ ॥ अ न व न विज्ञ ना क थ्य व र्त्त ना म न ग नी मू प र्त्त जा कि ॥ नभा वा स वा न य नि ॥ महा राज मं न र्त्त हं क हं
व द ह्य मं नृत्तं नृत्तं न म म् ॥ अथ राजा द व पूजा ये न द वा व र्त्त ॥ स पृ व म क स्या दा ग न कि मर्थ मा ग न का हं क का जा ति ह्य ॥ द
व पूजा राजान मं व मा ह ॥ ना न्ये वं महा राज ४ अ न व न महा विज्ञ वा सी ध र्मा क ना ना म द व पूजा १ हं ॥ म मे क हं क हं न वा दि हा
ग न ॥ राजा वाव ॥ द व पूजा का हं क ४ प स्य य ॥ द व पूजा वाव ॥ स महा राज न व पूजा यू व राज का व ग न ति कि न्वा ॥ पू न न र्त्त स्य

विविध

नगरीं गरुडि माला निरुद्धा ॥ इहं लघयत्वं दवपूज ॥ तमा दवपूजा वाच ॥ नैव महा राज्ञः न्य दवस्य विषयपुत्रवं ॥ दानी
पुनीता ॥ तथागतस्य पुत्रवं ॥ अतिशयपुत्रवं ॥ राजा वाच ॥ दवपूज तच्छु सकलं लघय ॥ दवपूजा वाच ॥ भूममहा राज्ञः
वका काष्ठथायनस्य विना धनमवपूजयुव राजघाटयति ॥ तदा तस्य माता स्वपूजवधवा र्त्ती ॥ अति संजमना तिभय वि
लायनमृत्कस्य मरुत्स्य तथागतनामग्रहलकपुका नमनादिति ॥ तदारुगवान् विक्रयति ॥ ममनामग्रहलनविलायन
स्ति ममि लुक्का सरुगवान् दयातस्य नत्वा न्यन ॥ ४४ ॥ ममसहमाननास्य पुत्रा निर्मयदिव्य विमानमहि निर्माय मूक्षे वाधिसुखस

३८

हिमनभा कपूत्रस्य पितृना न्यन महा राज ॥ इहं लघयत्वं दवपूज ॥ तमा दवपूजा वाच ॥ नैव महा राज्ञः न्य दवस्य विषयपुत्रवं ॥ दानी
पुनीता ॥ तथागतस्य पुत्रवं ॥ अतिशयपुत्रवं ॥ राजा वाच ॥ दवपूज तच्छु सकलं लघय ॥ दवपूजा वाच ॥ भूममहा राज्ञः
वका काष्ठथायनस्य विना धनमवपूजयुव राजघाटयति ॥ तदा तस्य माता स्वपूजवधवा र्त्ती ॥ अति संजमना तिभय वि
लायनमृत्कस्य मरुत्स्य तथागतनामग्रहलकपुका नमनादिति ॥ तदारुगवान् विक्रयति ॥ ममनामग्रहलनविलायन
स्ति ममि लुक्का सरुगवान् दयातस्य नत्वा न्यन ॥ ४४ ॥ ममसहमाननास्य पुत्रा निर्मयदिव्य विमानमहि निर्माय मूक्षे वाधिसुखस

विविध वाच॥ उवमसु दवपुण्ड्रसूक्तानिमरुनायपुण्ड्रमकसिखित्वापुण्ड्रपथितवान्॥ रुगवान् वृद्धवीर्यवान् वृद्धनाथं नमस्कृतम्॥ वृद्ध
 कायं नमस्कृत्य संभक्त्युक्तं नमस्कृतम्॥ आसक्त्या मम हं महानाथपूजयापि यदपेक्षं॥ हिरुगलनसार्धवेष्टोदिवसमाग
 म॥ आगच्छतु त्वत्सपार्षद्याममहागधविराषतश्च वृद्धमार्गनविराषं॥ आगच्छ रुगवान् नमः॥ ॐ सूक्तासनाजादवपुण्ड्रं प्रयति
 ॥ अथ दवपुण्ड्रं हर्षयन् रुगवान् नमः॥ यत्संजगत्वा सनरुक्तेन रुगवर्कनाजानिवर्दिनं पुण्ड्रं नमः॥ सर्वकृत्वा रुगवर्कनिवर्दया
 मास॥ अथ रुगवान् दवपुण्ड्रं निवर्दिनं पुण्ड्रं हृष्ट्वा पुण्ड्रं हृष्ट्वा रुगवान् दवपुण्ड्रं नमः॥ दवपुण्ड्रं साधुसत्यं भवं॥ दव

३२

पूजावाच॥ रुगवनसत्यं भवविजयतां॥ सपुण्ड्रकुरुनामनाजातवानिमयलावटं द्वावनामयहममाशुनसहसाभाक्तायगा
 वक्ति॥ निसर्वथोयेपविविराषितंगच्छुरुगवनपुण्ड्रयथासाविर्गमिति॥ नमादवपुण्ड्रस्यमाश्रममिति॥ अथ राजामंति
 नमवमाह॥ मरुतिन्यथा मया कूलीकुरुं उर्वकनामिति॥ किमकं यायात्सामक्तानासूलावर्नीदवीयावत्सामिति मरुह॥ ना
 वत्सर्वकार्यं भविनासं हविष्यति न नरुहनासा मां व्याकूलीकनामिति॥ तथा हर्कविषयितं कनामिति॥ गच्छ मरुतिनकुरु मयि क
 उनिश्च दयावक मनुमानीयतस्ते दातव्यतां॥ अथ समरुडवाच॥ महाज सर्वजथागच्छ भवं॥ नमा मरुति कर्पूनेवती महान

विविध गन्तव्यं नवा मा र्गवाञ्छु न्यपु दल वा श्रुत्वा २ दर्भयति ॥ कस्मिन् विदग्धि आ लायां कृडया च कं पा य दही गलगु कं विरुत्सू य
कं पा दे क पं शु च क क विदिन य भति मरुती ॥ तथा हूय ॥ याव क मू वा च ॥ याव क न वा र्थ कि म पि किं विद्या न वं इ ४ रवी हू त्वं
आ गच्छ ॥ याव का वा च ॥ हा म हा पू नू ष क ना पि ने व दा त वी ॥ त्वं हा घ नी य लू का स ह सा स्म य त स्य म रु ति ना नू ग च्छ ति ॥ य ने वा जा
हू ना प सं क म्य म रु ती वा जा न मू वा च ॥ हे गे म हा वा ज या व का ग त ४ ॥ वा जा वा च ॥ उ व मं व म रु ती न् श्रु त्वा पू न म ल्का ना सू ला च नी द वी
आ हू या ग च्छ त्वं ॥ त मा म रु ती नि व च नं श्रु त्वा क पू नं ग त्वा सू ला च नी मा हू या वा च ॥ ॥ हा म हा द वी आ ग च्छ म हा वा जा आ हू पि तं ॥ सू

गवनीदव्यवाच॥ ॥ मन्त्रीन्किमास्तुपयसीत्युक्तास्तुसास्तुयवानीश्रुगतामस्तिनास्तु॥ तथासूत्रावनीदवीनाजानमास्तु॥
 ॥ किमास्तुयिर्गमस्तुवाज॥ वाजावाच॥ नैवान्यकाङ्क्षमहायापूर्वराघितकवास्तुसंस्तुविनाहंसंस्तुक्रयथास्तु॥ काकाउवाच॥
 कथंमहावाजकवास्तुनैवकर्तव्यं॥ श्रुथवाजापस्तिनमास्तुयिर्गम॥ मन्त्रीनयावनकमानीय, श्रुत्रयानदत्वास्तुलावनीयावनकायद
 त्वाविसर्जयश॥ श्रुतमास्तुपय, तस्यापूर्वनदर्शनीयं, पाथेवसा, त्वनिर्गवेत्ताममास्तुयालय, पुनिनस्तुमित्युक्ताविमूर्खीस्तुय॥ वाजा
 कपूत्रगच्छति॥ श्रुथमन्त्रीखानयानदत्वादवीमास्तुस्तुधत्वायावकायदातव्यंसंजमन॥ तथासूलावनीमन्त्रीनमूवाच॥ सास्तुकिम

विविध वसंतिन किं कर्तव्यं ॥ मम स्तुतं कृतं ॥ मं शुवाव ॥ न स मा हं सुलावनी नाजा यथा स्य पितं सर्वं यूवथा ॥ सत्यं मूक्तं मया किं कथयितुं गच्छ ॥ तमा यावका विरुय किं ॥ अहा किं दृष्टं वा ॥ न वा तन म मला गंधं कृतं ॥ तूष्णा वाजामं जी गृहीत्व वा म ह स्तं विधाय ह ॥ न कृतियावक ॥ सा सुलावनी यावक स्यात्स गति ॥ अति सथ न द्रुदित्वा अति मथ विलाप्य कनाति स्य ॥ त दोरु माहिनी ख ॥ अनिष्ट वा र्त्तं ॥ लास्वस्वामि राज निर्गत्वा अति वाजली हय स विलापना वा वयति ॥ स स्वायी म हा नाज कथं म मयाव काय दातव्यं ॥ हा ऊ गंतव्यं ॥ नाजा वाव ॥ ह स्ति मा क दं ऊ न ॥ आ वथा ॥ सत्यं कृतं ख न स तव्यं दृष्टी निष्ठा मू थ सर्वं धो वजना कथयति य वस्य ना ॥ य व मा ना नू गत मिदानी

कथं राजा स्वका नां याचकाय दहृमिक विरुथयति देहं निश्चयं सायाया स्वास्वकर्म विपाक न क विदितं भूत उव ददहृ सर्वजना ॐ
हं वदहि ॥ अथ राजा सर्व विनाय निषेध मन्त्री न माहूय उव माह ॥ नान्येवं मन्त्रि मिदानीं मया द भिन्नं तथा सर्जी कीयतां सुगत पूजना
य स्वादनीयं राजनीयं स्वादनीयं वसवसा ग्रथतां यथा मर्त मना वम कूटा गत्र सुययिनिस्म ॥ तमा मंजी राजायथा ह्यपि नं सर्व सा
मायी सर्जी कृत्तं तमा दिवस मागत ॥ अथ राजा मन्त्री न माहूया वाच ॥ मन्त्रिन् अथ दिवस हूतं गवात्रा गमिष्यति आगमिष्य
ति वा ॐ सुखास राजा पंच पूषा राजा कृत्तं कन पूट निधाय विना गृहस्ये उच्च कर्म भीषं स्त्रिवा विरुपित वा नृगवन्

विविध

मधुचायूक्तं न विनिर्माहं यथा दव पूषं न निवेदितां तथा सर्वं आ गच्छुः पूषं वलाहं न मिषुक्ता पूषां जं लिपुतिर्यं ॥ न
सामानि पूषा नि गच्छुः सामानं काटि पूषा पुमानं न वक्तुं न रत्ना पूषा वर्षमिव रुग वक्तुं न सिपुच्छुः कवसं कलिकु स
धत्त ॥ न दारिद्र्यं वा रुग वक्तुं न दवा वक्तुं ॥ किं त्वं कस्मात् पूषा वर्षं वर्षति ॥ रुग वानाह ॥ कालार्थं हि कवदव पूषं नादि
तं ना न्येव पयकं तु नाह पूषा ॥ लिपुतिर्यं आ गच्छुः गच्छुः सर्वं सुक्ता रुग वा सुहसा ख्यमद्विवलन विनयति गत वा
न् ॥ सार्धं हि रुग लन सार्धं यन्न गे स न व ॥ न न रुग मन कर्षु न वती महा न गनी पाफवान् ॥ गृथ प्राय ॥ गृथ स राजा मरुति

४२

पविजनसंगलेशः ॥ पुपुदिताः पीनिसो मनस्य जातारुग वक्तुं सर्वं हि रुग न मरुति न दृष्ट्वा नाना वा यपु वादि न न महता सुक्ता
न मरुति पुदकिली कृत्य नाज वा न मनो वक्तुं कूटा गतं नाना ॥ लंका न पु न मरुति न विना न विन नूत दिव्या सनया यादि पूषं सु न मरु
पितवान् ॥ गृथ स राजा सर्व पूजा यक न लेश पूजितवान् रुल मूलाय नू पटी कि नवान् संपूर्ण वसु वसा ॥ अथ ता न्या हा न म पू वयि
त्वा क माये यित्वा पार्थ या मास ॥ न जा मिरु ग वन न जाना मिसु गतु मार्गं अक्षय मरुति नो यन रुग धर्म मना वर्थ पू वतां निर्गु न संसा
नं माया मयं माया ॥ ४४ ॥ व मूलं क्लमहा उरु तं लं द हि म था रु रं य दं ॥ न दारु ग वा नाह ॥ दानं नै पू नां रु ग दानं न न पति रु ना ॥ दान ना
वि

विविध

नूरुं यदा ॥ दानं न सुखं सम्य दौ नो न न पूजितान वा ॥ दानं न सर्वसौख्या निदानं न सुहृदा गमा ॥ महा राज साधू २ नृप साई न
पभा रुमाना मरु था गता रु विष्णु नि निधिर्न त्वं म मरु वन सुखं पाप ॥ ॐ निरु ग वा न्य नि निर्दग्ध स गत् ४३ त्व य यथा गता
न था र्ज न वन विहा नं यथो ॥ ॥ मृथ नाजा मरुि नो य वं स्य र्न स म्पत्तं य व मान न्द क थां य रा घा रु ष्ठी रु न्ति मो ॥ न मा या
व क सि ता सू ला व नी ज ज वा नं म न्न ल वा र्क य त्वा ॥ मृन कं वि ला य न नू दि ना व्या कू ली ना का ल ग त ति ॥ सा न व क र्ण ज म ॥ न द नू स
ला व न्या ४ रु ग्मा ना ज कू मा ना जा न ४ न न ४ प रु न य ४ कि या का र्ण य था म नं कृ त्वा मा स व र्षा त्म नं कू मा व ४ पु व र्च मा ना रु व ति ॥

४३

मृथ नाजा मरुि ना स मा नं कृ त्वा ना र्क रि ष कं द रु वा न ॥ न मा दि ना दि थ न या मा स ॥ न ज स ना जा मं जि नो पु ह र्ष सु ग न व र्ज न र्ना र्क
ष र्ण कृ त्वा सि मो ॥ न दा सू व ज्ञा का न पू ष्य वि मा नं वा ह यि ता हा का न न वा धि स त्त्व ग म मृ प र्ण क म्प ना जा मरुि नो य वि ज न वा सी पु
रु न य म ह ना सू का नं स नू व ला क वा धि स त्त्व रु व न नी य क ॥ ॐ नि हि रि वा य रु न य म्भं क र्ण वी ॥ उ प गु का वा च ॥ ना ज नू ३ ४ वा
वा सू खा वा क ना पि ष क र्म व सा त्पा य न ॥ ॥ ॐ द म वा च न रु ग वा ना र्क व रि क वा वा धि स त्वा सा च सर्वा व नी य र्ष स दे व मा नू
वा सू व ला का रु व ग व ना रा धि त म स्य न न्द नि ति ॥ ॥ ॐ नि षी वि वि रु क र्ण का व दा न ह नी था ध्या य ४ ॥ ॥ मृ था र्ण क ना

विचित्र जावावा अथ कस्मिन्समयं रुगवानविह्वलितम् ॥ कथिलकमुनिमहानगमसंस्कृतागुनकृतामानिकृतः पूजितः महर्षि
केः राजर्षिः सर्वेः यो न जनेः कुरुर्हि धृष्यर्षदेः मधिरिध्वरः ॥ ४४ ॥ दवनागयकगन्धर्वादिर्हिः पूज्यमाना रुवन्निः ॥ तस्मिन्
नवसन्नागवानामजनपदमंकमासिन् ॥ अनेकवनिफपूजावर्गनि ॥ ततः कश्चिरुस्यवनिफपूजोद्धोधर्माकनधनकनोप
मोघवस्य नो ॥ ततः कस्मिन्दिनोद्धोवनिजोव्यालंघयोः तनादिनानिधुनयामास वासनरुक्कनदधग्रामादिर्लंघनननकस्मिन्
नदीतीरहिरुनानकनवानपुष्टनसंस्क्रानिकवेत्यभकमस्ति ॥ ततः मोवेत्यंघ्र्यन्तुकनधनकनतविक्रयित्वा सखायं ध

विविध
 मां कनमूवाच॥ सखधर्माक नञ्जुव था नञ्जेखंडं गृहीत्वा व्यापारं कुर्याव ४ वरूत नलञ्जु पतिलञ्जय न दाधर्माक नावाच॥
 सखनेव था गंधं दवता डयं विषा पमं वे लुडयं अग्नि घटा यमं॥ न दाधनक नावाच॥ सखधर्माक न किं कर्हं व्यं क नापि दव
 ता पसा दाज्ञ क्री पतिलखन॥ दवता मर्क पा य किं वि कार्यं पसा धयति॥ दवता पू र्णं नि व सि स्म य क वि श्वा का म ना न थं पू
 वयति॥ न स्मात् सख वे लुडयं न वा व सा य म हा वि रु र्वं पतिलहाव॥ पू न व पि त्व म हं पु ति नि र्व र्ण स्य ड वा द धि कं स्म य थ न॥ ७
 व म व म हं नि श्र य म व क र्हं व्यं॥ धर्माक नावाच॥ सखमाक ना म हं ७ व रु व य थ सर्वं न ना जू र्हं क ना मि न न सा ध नी र्यं द वे ताः

आसादादित्युक्तावेत्यगुरुगृहातिधनकन॥ नमोऽहोकिंविदुःपुदः (अपार्कं) ननुदोपनस्य नोक्तत्वां विविंय कलहात्यादि
 नतत्यापा न॥ नमो धर्मा कना वाच॥ हा सख किमर्थं कलहात्यादि नमिति अनिष्टं माकृ न॥ नमो धनकना वाच॥ सखनेर्वत्ययास
 हस्त नव्यं निश्चय मत्तस्या र्गनाहं गच्छामि त्वत्पार्गनगच्छ सित्वमित्युक्ता सवाधनधनकना स्वविषयं गृहीत्वा मोर्गकनगच्छ
 सि॥ नमो धर्मा कनदी नमना नानाविं नयित्वा अन्यपुदः (अगमवान्) ॥ नमो धनकन किं वित्युदः (अवना कर्त्तव्यार्कं) ॥ ॐ दानीं ऊतुः
 गच्छ मिममेका कस्तु ज्ञा समापय न॥ ननु तस्मात्सहा म कं का गता नंद द्वा धनकनसंज्ञमन प नाफिहुं नमक म॥ स्वविषयस

र्वं कस्तु उवादिं पुमाविनं नतः मस्तु न पु हा निहुं पु मावति ॥ मस्तु न दनु हस्त न पु हा विनं हस्तो स्वादति ॥ नमो या धनपु हा वि
 नं पा दो स्वादति ॥ नमो नम किनं पु हा निहुं ननु यतिनं मृतक मिव ॥ नमो मस्तु न मृतको हस्तं मिनि विविंय वना क न पु विमति
 ॥ ननु अनक पु का नम विनाय न ना नृय न धनकन मृति सय न वदनी वदय कि ॥ अक स्मा हि कन का की आग न ॥ ननु नमो आ ऊ
 दि नम र्दं कुला गत्य नं पन्थति ॥ नमो धनक ना वाच ॥ क४ पू नृष ह्यं मां न क न क ॥ हि क नृ वाच ॥ ॐ कथं ह्य नव्यं लं क४ पू नृष ४
 धनक ना वाच ॥ नान्यर्व हि क्षाम मम मन्दरा ग्धं नाग नाना मजन यदस्य वनिक् नृ धा हं नाना वत्त हि नं प्पा दि सा म ग्री ग्रह र्नाग

विविध

माहं ॥ ननु महाभक्तवत्तनवाग्यस्वादनिर्मायथाभक्ताहंपुननिर्मायमाहसुयादादिखादित्वापुनयित४ममसर्वकर्तुं श्रु
पुमाविर्मायं ननु ममसा मयी ॥ न माहिकवत्तानिजमयं नृद्विभक्तयति ॥ अहममद्वयं नर्त्तवत्तैयगर्हसुपिमाहं ॥ ननक
मविपाकनासोपुनृषुनर्वपयति ॥ पुनहि कृत्वा च ॥ शावातिजपुनृषुनर्वपयति ॥ कृत्वा गृहीतं वै स्युदवत्तनं ॥ ननयाकननत्वमित्
हं ॥ वनिकपुनृषावाच ॥ शाहिकवत्तनमवत्तैयुदवत्तनं कथं ह्यनर्थं ॥ हि कृत्वा च ॥ ममद्वयं ननवत्तनसुत्रिधो नदीनीन
सुपिमाहं वै स्युदवत्तनं ॥ नसिंत्तया गृहीतं निश्चयमर्थं ॥ वनिकपुनृषावाच ॥ साधूश्चिक्ताहं नृद्वयं ननवत्तनदवत्तनपुसादनमहता

४७

लाहंपुनिल्लार्थं नृद्वयं मार्गमाहं विपनितादिरविष्यति नृद्वयमाहं ॥ अहं किं कर्तुं मायमायमाधत्तं ॥ हि कृत्वा च ॥ शाव नि
कपुनृषुनृमा किं कर्तुं नान्यवमर्थं ॥ नमावृत्ताय नमाधर्माय नमः ४ स्याय नामेति अहं लिहावनया ऊनृत्तं सहसा किल ॥ नृ
नितमृपदं कृत्वा हि कृत्वा नृद्वयं गतवान् ॥ नमाधनकवनि कृत्वा नृद्वयं नमावृत्ताय नमाधर्माय नमः ४ स्याय नृद्वयं नृद्वयं
वनामग्रहसमाप्तं नस्य हस्यं पादहर्तुं मे नृद्वयानिका नृद्वयं ॥ नमायु सन्नमनाहं पुनर्पुनः ४ नस्य दननस्वाजं लिं कृत्वा यं
वपुत्तामं कृत्वा ननपुत्ताममाप्तं पुनः ४ पादवर्षं पादहर्तुं मायनृद्वयानिका नृद्वयं ॥ धनकवावलिकपुनृषुनृदिनमनायी सोपनस्य
नमा

विविध

विविध ज्ञाननयनमाश्चर्यपाकल्लुक्कवान् ॥ मूहाधर्मनिधानहन्तं कल्याणाय हन्तं सर्वजगलमूलाकवहन्तं । वत्तजयंस्म वलमाधुन
ममकवववंवेका नीहन्तं लमीहं संपूर्णहसुपादांगपुलंगानियनमाश्चर्यपाकल्लुक्कवाहं ॥ अद्य नीयहन्तं तथागतत्वं तमा
स्वडव्यपग्नितिसर्वडव्यगृहीत्वा पूर्वमार्गमपुननिर्वृत्य न चैत्यपदमं पाकवान् ॥ ततः स न दृष्ट्वा पुनरिदमनापुनम
निस्य ॥ न मां मुमहा वाहानस्मान् महामहाकपः । कमस्वहा सदानंदसर्वलवनमानमः ॥ त्वत्पुसादात्महा लं पाकयमिविविक्तय
वापालं सहसा गत्वा विडीहन्ता उन्नागता ॥ ॐ ह्युक्ता उपद किंभी कृत्वा पूर्वगृहीतडव्यपदोक्तिमवान् ॥ सांजलीहिः स्वडव्यद

४१

किं तांदायितवान्। अथ तस्मिन् समर्थस्य सखि रुद्रया फवान महालारुन॥ ततः यत्र स्थितं दर्शितवान् संवाच विवाचयति॥ ऊच
लं गंधर्वाकवकुले रुद्रमहाराज्यं सह सायार्थं कियलार्हे कथं वद॥ धर्माकनावाच॥ सख धनकव महालारुं मम हाग
यमस्मिन् तव कथं धनकव वदत्यथाहृतं॥ धनकनावाच॥ सख किं वदना कृतं त्वत्वनम कृत्या ममेक मार्गं नान्ययुधमग
माहं महाधना विक्रीहृतं मम॥ सर्ववृत्ता कं निवेदितवान्॥ धर्माकनावाच॥ धनकव सत्यं भवं ॐ ह्रा ह्रा जू वधी वयं ॐ दा
नीं किं कर्ह्वी तस्मिन् धर्मभागो यार्थितं कुरुत स्य विषयं सर्वे उपपाषय॥ धनकनावाच॥ यदा किं माहं सख सर्वं पूर्णं किं किं दपि

विधि

अधिकंदापिनाहं॥ ननाधर्माकनावाव॥ साधूरधनकनसुखावेत्यसमूहमालेकंदापिनवानधर्माकन॥ अथकनमाजकंस्ति
लापनस्यनसमहास्यस्वगृहंपुकांनो॥ ननाधनकनसुगृहमातापिनमोपत्तीसहितंसंवावेविवावयति॥ यथायाग्यविवा
र्यननामोनाजिभयित॥ ननुपत्तीउवाव॥ हास्वामिकथंविर्लविर्नहर्न॥ व्यापार्लनकथंभुर्नवाभुर्नवांति॥ रुर्नउवाव॥
काभाकिमूक्तनवरुनापूर्ववृत्तकसकलउवितवान॥ ननाकाकाउवाव॥ ॐस्वामिसत्यभवॐस्वभवगृहमनूपापमहा
हागंममयथावदसिहृन्मितिममकिंगतिहविष्यतिऊगमिष्यति॥ साधूरमहावृद्धधर्मवश्यथसंघकं॥ यस्यस्यन

४८

नमाजसमूहवनिमानव॥ कांनसत्यभवमहापुत्रवमति॥ वृद्धंनमामिभननं॥ सननवेवपून॥ पून॥ यस्यअवममा
जसयायागकृत्तिसंकयं॥ नदाहगवाकपिलवकुनिमहानगवस्तिनयववकसमंवागत॥ सम॥ संपुजानकननाक
मानामनस्यय॥ समूहसर्ज॥ नवस्यय॥ जिसाहसमहासाहसलाकधाकुमवरास्यनसिंनागनामजनयदवरास्य
ति॥ नदाधनकंयनमविस्मयमापनाताजसिन्दुकाहृपुत्यथाहृहृवाभनवा॥ समनूहपिनमित्पूकासमूहय
स्तिनवान्॥ नदावस्यय॥ वृ॥ यमानवावृद्धमनूहवनि॥ वृद्धति॥ तथागतति॥ ॐववाकंसमूदीवयति॥ विनाहि

विचित्र

[illegible]

गन्धनेवधविधापकवत्तवसवसाप्रथमं सुजीकृतवान्। अथ धनकभारुगवर्कनिमंजुलायकपिलवम्बुनिमहानगर्यासहा
यवान्धवपुत्रस्त्वन्गनवान्॥ सफथाजनविस्तीर्णसफथाकावमश्रित। सफलिः यविस्वाहिश्चसफलिः मालपंक्तिहिः॥
लाहिनवृकसंकीर्णः विहगेविविधेवृक्षे। नानाद्रुधद्रुलायननानाकुसुमवासित॥ यविस्वाहिश्चसमायुक्तं यनावीधवि
लाहिन। नानावीनक्षिज्जवाकीर्णः नानासूजनसविन॥ नास्मात्प्रवलेयुक्तेः बहुवीगवलावृक्षे। हस्त्यश्चमहिषाहिश्च
अनकेयवृक्षः॥ नानास्वसमायुक्तं नटनात्यवसेयुक्त॥ गीतवाद्यसमायुक्तं महहिः सूजनैः यवैः। अत्रलाप्रवलायुक्तं

विशिष्ट

पुत्रवसुः ॥ लिखितः ॥ सुखि कृष्णसंकीर्णः ॥ नानाशुभादनालयः ॥ नानाधनुस्माकीर्णः ॥ उक्तदवावनालयः ॥ तन्मात्रमनः ॥ ध
नकवः ॥ पाकवाननगरी कुरुगवर्कददर्शकनकादिमिव कालं काजिभत्युनूपलकः ॥ १॥ समलंकताभीतिर्विजनालंकृत
गात्रः ॥ लिखितगमये विवृतं समुपदं ॥ प्रसूदितापीति सोमनस्यजोतः ॥ रुगवर्कजिपुदकिभीकृत्य दक्षितजानुमलुलंकृत्य
गवर्कविष्णुपितवानसमन्वाहकुरुगवान् सपर्वदः ॥ रुगवचूचवीवभवूचनाथं नमस्तुभ्यं ॥ आमरुया म्यहं नाथं पूजामं
मनसि विद्यतः ॥ पर्ववायेहावकं वाहं पूषा मा गार्हया म्यहं ॥ न विष्णुममहा नाथ विष्णुमात्रपुवर्हन् ॥ कुरुर्थक्रिममासेवोनाग

७०

नृजनपदवः ॥ साविधं कुरुहं नाथ ॥ ॐ नमो मनसि वर्हन् ॥ ॐ नमो समस्तं विष्णुपुनस्तुपुदक्षितीकृत्य भिवसापुतम्यदक्षिती
दत्तास्वगृहं पुनिनिर्वृत्त्यमानवा ॥ तदा रुगवानाह ॥ वनिजसाधूरुयथा मर्कजवृगकथाहं ॥ तन्माधनकनावलिजपुमूदिनम
नास्वनिवर्णपाकवान् ॥ तन्मादिवसमागमकृतागवयथाया गालकावमलंकृत्य ॥ १॥ रुगवनरुलागविष्णुपितवान् ॥ तन्माधन
कवसमयमागमा रुगवर्कविष्णुपुनस्तुपुदक्षितीकृत्य ॥ १॥ रुगवनरुलागविष्णुपितवान् ॥ तन्माधन
कवसमयमागमा रुगवर्कविष्णुपुनस्तुपुदक्षितीकृत्य ॥ १॥ रुगवनरुलागविष्णुपितवान् ॥ तन्माधन
कवसमयमागमा रुगवर्कविष्णुपुनस्तुपुदक्षितीकृत्य ॥ १॥ रुगवनरुलागविष्णुपितवान् ॥ तन्माधन

विविध

नमोऽस्ति कृष्णाय ॥ साधु रूपाय साधु रूपाय ॥ विष्णु यतां ॥ तिस्रं शेषं सूर्य गवान् रिकु गलन सार्द्धं मन्त्रि वलन गगन क
ला नृकंति ॥ अनेक मनी विष्णु लय का मयं कमल ॥ नाग र्नाम जन यदं पा फ वान ॥ नमो धन क व ॥ प्रमृदित मनो रूपाय वरु
ह द्वापति पयसा दधार्पाद्यादि पूज ॥ स वल यथा मरुं कमल ॥ पूजना द वल विष्णो य विस्मृति न वान ॥ नमो रूपाय वन समुत्प
यानु गतं समर्थं ॥ त्रिमिरु मरुत् ॥ ववा वष्टी अचल सम का च्छलान सा चि व व म सम नान ॥ महो र्ध्व व र्ध क रिके सहर्षा
वती स व लं प स सा न सा ग वान् ॥ हो हान ना द गि वि पा र्ध न स्रुत् पूष्यं यथा त विष न समं न ॥ ७ ह र्धिता सा ७ ह र्धिता वि

५१

नाथ मया प्रपलाय का मिति ॥ अथ च ॥ गृह न्य पूर्व ति म ना व मा नि व रु न ध माला नि वि ना जि ता नि ॥ अलं कृ ता किं कि निजा
ल का नि स रू ड य धा नि पु र्ण वि ता नि ॥ म ना ह न म द म ना ह का नि पा र्ध व रु व द म न स्य ल क्ति ॥ सूर्य वी र्ज अ व ला य ना थ व
रु व ल श्री पु व ला पु धा ना ॥ अनेक न ला य नि पू र्ण जा ता अनेक व र्मा व ल संपू र्ण क्ता दि वा य तां शु व न रू क न यू क्ता नी ला मि ता पी
त ह नि सून क्ता ॥ पू न ध्रु वा न्या दि स मू रू व कि मा वा ति ला न दू ल का थ क वि नू ॥ र ग धू म माली व ह वा थ क वि सूर ग रू पु ला वा वि रु
व ७ पु का म ७ व स न सा य पू न रू व कि दि वा न पा ना पु व ना सूर ग धा ॥ स स र्पि म ल व ना थ क वि स धू म र गे उ व रु संपू का म ७

विविध

कविहस्यस्यूननरुवकि॥ सोवर्धपाजअथनूपापाजसूकांभपाजवरूपाजताजातदनयकविद्विद्विधश्रपाज॥ पाइह्वंतिः
अथधनकाशोअजेदकाशमहिषाश्रमपा॥ यथावगेहोव॥ सुलकलीयासूजानियूक्तापुवमापमला॥ वहिगृहायूक्तनिनीपजा
नाउद्यानरुमिपुवमापयूक्ता॥ विविधपूष्यानिसमूहतामिउमउमनामधूपापयूक्ता॥ सुकउकविद्वहवश्रपाकाजलेसूवर्धसू
विनीर्धका॥ संपूर्धपूष्यविहवपजाता॥ वृद्धस्यपूष्यातूलमीदृशाकृत॥ अथधनकवर्धसूवर्धविहवदृष्टासूवर्धपा
पनमलक्रीपाक॥ पनमविस्मयमापन॥ अहाधर्मनिधेनैहदहाइ॥ खशेनामक॥ अहाअमृतनिकननमनूलाहपनमम

७२

लागधयमिति॥ तदनूनसवसायउक्तनकीडितनवकुपविवृतनवर्षाकवतसूखमनूहयत॥ अथतस्मिन्मयतस्यधनकवस्य
सखागन॥ संवावविवावयति॥ लासखधनकवकिंकर्हव्यंऊमलंनअहाआश्रयोडुतपाकाह॥ सखत्वहृदं॥ कं॥ कं॥ कथं॥ कं॥
पूक्तनिनीकसिंकर्हव्यंपूननूद्यानरुमिकथंकनामि॥ ममानिभयाडुतपाकाह॥ धनकवाह॥ ऊगगनसूखकथंनजाना
सिपविरुमाउंनगनसू॥ धर्माकवावाच॥ नग्याताहंवापालंगस्यमि॥ धनकवावाच॥ सखममलागधयंरुगवननूलाकपूज
वसगनरिहंउतिपूजयित्वायथाभक्तिरुजयित्वाहं॥ तन॥ कं॥ कलमाउतसूवापमनमममहाविहवमेनूपाका॥

विदिष

धर्माकवावा॥ साधुसाधुसखसुखीरुवर्त्तसुतनमिति॥ समचाहर्नहुसुगतायनमानम४ पृथिव्यां भिन्नसाधुतामतिभक्त
धा॥ तदाकपिलवस्तुनिमहानगवस्तिताहगवार्थवाहिसुहसुति॥ तदाहिकवाहगवर्तमवमाह॥ हगवर्तनरुहुनाहस
स॥ हगवानाह॥ हिकवानेवनागवानोमजनयधधर्माकवानामवलिज४ स्वसखाधनकवस्यसंपूर्णविरुवयार्थदृष्टाहुरुह
तत्वादीनमनाममनामग्रहननपृथिव्यां भक्तधायतामिति४ काग्रमनाउभयहवननरुहुनाहिकव४ पुहसिनाहंतस्यमना
वर्थपूनयामि॥ तस्यधर्मवीजमस्तिवेद्यमूकमालांयुधकिर्त॥ हिकवावा॥ अवमवरुगवनवधवंसुगतहगवानवमूर्त्त॥

१३

तदनागवानामजनयधधर्माकवतभक्तधायतामतिभक्तसुनपुववत्रिकामनिकल्पवृक्षधर्माकवाइहर्त॥ विविधार्थकावपलीवितद
र्तनीर्यमनात्रमंथियारियूक्त॥ तदाधर्माकवर्त्तदृष्टायवमाहुतपाय्यपुमूदितमनापीतिसोमनस्यजात४ पुसन्नविरुनकल्प
वृक्षं प्रदक्षिणीकल्पभक्तधायतामयतिस्म॥ दिननाजोक्तनिकृति४ पुमिदिर्नआसर्ननपार्थ॥ ततश्चदुर्दिनानिपुनयामा
स॥ तदाकल्पवृक्षपुकम्यित४॥ तताधर्माकवावलिज४ हुरुहत्वात्यविविकयामास॥ अहाआश्चर्याहुहोमाहंकनरुहुना०० म
कल्पवृक्षपुकम्यिता॥ तताकल्पवृक्षावाव॥ त्रिकामलीतिनामाहमानवानात्रपाथनकर्थनरुयननिकृति४ सिद्धुर्दिनपत्नीय

विविध

नमः नमो धर्मक नावाव ॥ ममात्रं न संविद्युतं अत्र लोदं भयनं संकुलं जातं ॥ कल्पवृक्षमूलाव ॥ विनामभीतिनाम्राहं कथं न
ह्ययसंखया ॥ यद्यत्रिंशत्तव सुनिर्गुणं सर्वं भद्रं यत्र भद्रं ॥ अत्र यानादिकं वस्तु नाना लंका वक्रं वनं ॥ नाना वलादिकं सर्वं यावय ॥
मनसा रुमं ॥ सोवर्धुनता नापादि अशोधन व ॥ सुखं ॥ गृह कृतादिकं मन्त्राद्या वया मिहिला विन ॥ नवरात्रि विन धान पा
फवानयादि नुक्त ॥ वेष्टु मूला वली दानादी दर्म पाप सतव ॥ नमो धर्मक नाप नम विस्मय माप नृप मूदि न पीति सो मनस्य
जाता सोधु ॥ अत्र मराग धर्म मिष्ट कला कल्पवृक्षं विष्ट दक्षिणी कृत्य भि न साप सभा वाव ॥ नमो नमो मरावृक्ष विनामभिनि

५४

मिष्टमं ॥ सर्व वस्तु समापत्रं लानं मस्या मिष्टमं ॥ पार्थया मिष्टमं वृक्षं दानीं यावया म्यहं ॥ दहि मना वथं भवं कुर्वृक्ष
त्वदवता ॥ वृक्ष ॥ ला गृहं दहि हिल्ला त्वं मध्या रागक ॥ ममाधिका वक्रं न वना न्यया मधिका वक्र ॥ अत्र यानं न संपूर्वना
नाना त्व समाकुलं ॥ धन धन्यादि संयुक्त कला दहि म विष्ट ॥ नमो धर्मक वव मूक्त वृक्ष दवता यथा पार्थय नित्य यथा वि
नं धर्मक वव न सर्व वृक्ष ॥ लादि सकल विष्ट वय विष्ट ॥ दला वृक्ष ॥ ला गृह मध्या निष्ट ॥ नमो धर्मक वय मूदि न
पीति मनस्य जात ॥ संपूर्व विष्ट वृक्ष वृक्ष वृक्ष वृक्ष पनम सुख न निष्ट ॥ नमो धन क वना मस्वि न स्य वार्हा ॥ लास

विविध

फलाकावपयं कपावृताश्चमनाहवेगानगर्थावच्छांतावदवीवञ्जवतीभुहां। वरुवगन्धवत्त्वावेमहीपालयतापवान्॥
दयावानुसवाभीमानपुजापूजेवयानक॥ राजकुजमलिनीमानमूहिदर्यविनामक॥ अथरुगवानरिहंसंघानामोमे
उयमस्म॥ हिकवधर्मोद्गमाधिसत्त्वनसंस्कारितवेत्यंजीर्त्तमीर्त्तमग्रहृतं तद्वा नयं दुयूर्यरुग्ननेस्तु नव्यसा निधंज
र्वकुंति॥ तमाहिकवाडवृ॥ रुगवनिमंवेत्यंकनमकासधर्माद्भनवाधिसत्त्वनसंस्कारितंकनहनुनाकर्तव्य॥ रुगवा
नाह॥ अथरुहिकवासंभयंयूष्माकंपुव आमि॥ हतपूर्वरिकवाधर्माद्भमाधिसत्त्वापहासत्त्वापुष्पापानमितादर्भना

३७

यज्जागतस्तु॥ तदादर्भनंनभक्त्तनहनुनांतिधर्मधातुंसंस्कारितंच। काभयस्यतथागतस्यसमय॥ हिकवावावता
हारुगवनकागुन॥ क॥ पुष्पविद्याक॥ वदत्तुगुनसागव॥ रुगवानाह॥ यत्रमपुष्परिकव॥ जी॥ अर्थावयसत्त्वावेत्यं
पुतिमांवावृद्धपुतिमांवावाधिसत्त्वपुतिमांवा॥ पुत्यकपुतिमांवा॥ पुत्यकपुतिविर्ववा॥ आवकपुतिविर्ववा॥ आगमपुतिविर्ववा
दवतापुतिविर्ववा॥ देवमपुतिविर्ववा॥ जूनकपुतिविर्ववा॥ पुस्तकवा॥ पुनामवा॥ सधर्मवा॥ महायानस्तु॥ वाग्रवयाखलुजी॥ अ
थार्नवाजर्वकि॥ नयत्रमसौराण्यारुवकि॥ सर्ववागेर्विमुक्तारुवकि॥ सर्वपापकृष्णादिविनामितारुवकि॥ महाधनामहा

विधि

हागव नाहवकि नाजाहवकि अत्र सा नजे नन्दयदं पा प्रवकि ॥ हिक वा उवू ॥ हगवन कथमा हि धानं कथं पूर्व
॥ हिका अत्र यदहं वदत्तं मुनि सुरु मः ॥ हगवा नाह ॥ यथा नवता हदयं ध्यात्वा क्रियायुक्तेन क्षमं नवपू वयित्वा घा
टविना सा वृषमायां न हू नाग्र क विधानतः ॥ तमा यथा मतं स जी कृत्य नवका पू क मा पर्यक्तं मुनि विरुत सर्व यथा य
मान नस्तु यनं का वयत् ॥ पूर्वपमाना किं विदधिका वयत् पूर्वपमान नपुति कृत्वा यथा हि धानतः क्रिया कार्णकत्वा
हगव नं विप्रद कि ली कृत्य कृता व नाह यत् सर्व प वा स ॥ उव हिक वा ॥ लूम न नपुमान नय क्वर्वकि ॥ द्विपुल पूत्थ रु

गग

हसं पा प्रवति ॥ अथ हिक वा हगव नं मव माह ॥ साधू हगव नु वा रक्ष हं सुगतः ॥ लूम हगव नं विप्रद कि ली कृत्य हि
क संधा लय सह सा हं जी र्ध्वे र्थं आ वा र्य पूजा पूर्व कृत्या यथा हि धानतः कृता या को र्ण कृत्या समुद्रा विरुतान ॥ पूर्वप
मानतः क्षमजा र्ण कृत्या पुति सा दिक कृतवान् ॥ पुता क कृता व नाह नव यथा यदि र्ध्वं कृतवान् ॥ हगव नं सर्व संस्कारं
कृत्या अक्क मुनो गतवान् ॥ तत्र हिक वा वाचनं ॥ हगव नं पू र्णं समा कार्यं सुगतः यथा ह्यपि र्ण लेया ॥ हगवानाह ॥ साधू
हिक वा महापुत्रा व महापूत्थ मधुलं महापूत्थ धर्म महापूत्थ निधिः महापूत्थ कर्ण न कवलं ॥ य ह काटि सहसा तिः

विविध कन्याकाटिभनेत्रपि। काटिगवपुदानन। हृत्सुंवरुलमासिन॥ जीर्णश्चावकवेत्यानीसूगमानाक। थेवच। काटिजम
 पतिंरुत्वा। संवृद्धत्वंपुजायम॥ तत्तारिकवावाच॥ हगवकिनभाईवसाधुआध्यासियद्विशा। कनसंववमपृथांवदत्तं
 गुलसागना॥ हगवानाह॥ हिकवाहंपुवक्तामिलाकानीहिनहत्तव। कनवित्कीयमथनजीर्णश्चावपर्ववर्न॥ ॐ ह
 स्काहृष्टीहृत्सुताहगवान। तदाविद्युदिवगरुष्टि। लाजगत॥ तदाहिकवावाच। हगवनयवमाहृतय॥ कस्यगरुष्टि
 मालाकस्यादागत॥ अत्रविद्युदिव॥ हगवानाह॥ नान्यवहिकव॥ नत्रध्वजा नामनगनाधिपस्यविमानस्यगरुष्टिमा

मार

लाश्रागच्छति॥ हिकवावाच॥ हगवनयवमाहृत॥ कस्यगरुष्टिमालाकस्यादागतात्रविद्युदिव॥ हगवानाह॥ नान्यव
 हिकवानत्रध्वजा नामनगनाधिपस्यविमानस्यगरुष्टिमालागतकनहृदना॥ हगवानाह॥ हिकवाऽपुदानींयूर्यदभयि
 यति। अनूस्मत्तव्यं तदात्रध्वजा नामवाजानं वत्तपुलाविविधविमानमावृक्षमूचवात्ससुखार्थांश्रागच्छतिनाशो। सना
 जाकमत॥ हगवकृपाकवान। तदासवाजाहगवकृपाकिंमत्तुवृषलकले॥ समचागतं सुवर्णवर्णं सहस्रसूर्यातिवक
 विनाजितगात्रं हगवकृदृष्ट्वा विमानात्रिभुमपिउदकिनीकृत्यपादोभिनसाहिवन्दिताउकाकस्मिन्वान्॥ हगवानाह॥

विविध

कनकं नमस्तु राज्ञः पूजा गच्छ कृमलं क॥ राजा वाच॥ कृमलं भरुगवनं त्वा दर्मनाय वन्दनाय नमिः पूजा गत तमा सुवत्
प्रविवा नयति तमा राजा वाच॥ रुग वन्दन यत्तु सुगतं किं विदुर्म॥ तमा रुग वाना ह॥ सुभू राज नमस्तु वा हा ना ह धर्म वा
ना ह म॥ राज धर्म व न ल क नीति मार्गं पु सा ध य॥ यथेव वृ कं ह लि तं स पू र्णं स व क य त्यो र्ज नान र्ज आ धा व रू ना नृ प
त श्रु तां हृ पा ल मि त्कं कृ नू सर्व त स्या त्॥ यथेव या क ह ला व सा द यं गु ल सि ष्ठा द श्व न स क्थे व व ला ज य श्री सु ह वं न
न (॥ ॐ कृ पित व पु व राजा नां॥ पु न श्व म हा राज॥ ह ला न य का ह ला नि ग्र ष्ठं व स न स्वा द नं गु र्ग व व र्थ॥ न (॥ ज य श्री

७२

नरु व न न (॥ ना हं नृ प स्या त्सु त तं पु मा लं॥ न्या थ न ना र्कं पु ति या न य कि नृ पा श्व थ र्मां गु ल मा व ह कि न्या थ न धो र्ज ना स
र्वान र्मां पु जा नां पु व ह कि दा र्थ॥ पु न श्व म हा राज॥ स्व इ ४ स्व इ ४ र्व य न था श्व रु र्ण स्व सो र्व सो र्व य न था स मा न॥ ॐ कृ नृ पा थ
सु त तं व ह कि ध र्म ग ला का सर्व गु ल रु व कि॥ पु न श्व म हा राज॥ ध र्म ग ल क्री सु त तं व ह कि ध र्म ग ल र्ग स ह सा पु या कि॥ अ
थ व म हा राज ध र्म ग ना र्कं कृ नृ राजा वाच॥ उ व भ व रु ग व न व भ व सु ग त ॥ ॐ सु ह्मा रु ग व त ४ पा दो भि न सा व न्दि त्वा वि मा न मा
नृ क पु जा क ४ त दा रि क वा रु ग व क म त द वा व नृ रु ग व क न पू र्ण न कृ म ल मूल न स राजा हि नृ पा द र्म नी य क न वि त्प ह श्व

विविध

थं नागनागनयूथं गृहीयात् तदा उक्तं ननदिती वयं कनलीमकासि पायमन उक्तं नरि कलास्व निष्पन्नं पञ्चका
कनस्य वैद्यमं कसि तं वैद्यमप्यगम्यो नका की उया या या ना वा ॐ हिका वा च विं नरु प्रिके ता वै था द नं तस्मिन् समथ
सना विषा का अणमन सा यली लयान् विव नमानन वै लं द ह्वा सं वा न वि वा न य नि ॥ ॐ ह्वा क वा क न या या त्प ना ॐ द वै लं
रु ग्री क रु ४ न दा सना वि क अ (भा रु न मि दं वै लं ॐ ह्वा न स न वा मि नि वि वि स या या ना वा ॐ हिका वा य उ य रु ग्री क रु नं
वि नं व रु रु रु या वा रं वा ॐ हिका नं वा सं स य म हिका या उ नि ल य य नि । सना विषा क ४ पूर्व व ल्य नि (भा रु न रु न वा न् । अ

७१

थ सना वि क ४ स्व का थ म न दी मा (ग ग रु वा न । क थं न पा र्कं सना वि क म ना १ हं मि नि ह्वा की रु न स्मि न ४ तस्मिन् समथ क वि व नि
जा रु य म ना ग ना ४ म हान दी पा ल ना य स्व क ४ स्व का नि विष य रु ना नि वा ह यि त्वा रु न न दी मा गे ग ना ४ व नि जा ना वि क मा रु
या व रु ना वि क व यं म हा स म्पु डं पा ल यि ष्य रु ॐ नि । न ना ना वि का ह्वा रु वा नि जा क टि पु मा न यू र्यं पु मा न न व प ल्धं न द म्पु म कं
१ व नि जा रु मा रु । रु ना वि क व यं रु य म ना ना ग ना ४ य था म न रु न व यू थं गृ क्त्वा अ स्मा त्प ह्वा ल यि ष्य रु । म हान दी मि लू क्ता
ना वि का य न व यू थं द द कि । क वि व नि जा व रु द द कि क वि दा म न तां द द कि क वि व रु द द ता नि । न दा ना वि क सं न र्प य नि । न

[illegible]

यनिः सर्वलाका कीर्तिभदं भृत्त्व किमस्य बाहूः ॥ न्यायं विना कार्य न कृतं स्व नाशं पूय न दत्तं वाग्रा मवाका न संन कृतं । दाना
निमर्थि सादरुवान् । ॐ ह्रीं ह्रीं कृवा स नाजा स्वया यनं कृतवान् । पुनश्च ह्रीं कृव ॥ भृत्त्व कृत्तु क मवं । ७ क सि समयस नाजा सहा
का विनवान् । तत्स होयाइ ॥ भील ह्रीं कृ ॥ खं ज पा द ॥ कृष्ठा विष्ठ ॥ निन्दनीय विरुत्स रूप ॥ सहि कृत्तु का गत ॥ बाज कीर्तिभदं भृत्वा
कृत्तु नाज दान आगच्छति । आग ल्य व नाहू आभीर्ववन मववीत् । तन्ना नाजाइ ॥ भील ह्रीं कृ विवान संवा वयति । शहिका क स्या दा ग
त क थं स्व ऊपा द । ह्रीं कृत्तु वाच । मूहं ह्रीं कृ क द भ द भ । क व या वे यित्वा त्व कीर्तिभदं भृत्वा तजा गताहं महा बाज मम पूर्वकर्म वि

विभिन्न पावनस्वर्गं पादकृष्णविष्टम् ॥ राजा वाच ॥ हि कायव कात्वं ग्रहणमपि कथं भवी नरुतं ॥ १४ ॥ नीलावा सुभीलावा हनु हनुतं ॥ हि
कायात्वं नरवदलु पायं ॥ हि नूवाच ॥ महा राजमंदलु पात्वं नपायं तवान् ग्रहं ॥ तमा राजा वाच ॥ हि कादकिं नीयायथा
॥ नीलाव सुभील युक्तं ननु नूव नसि ॥ १५ ॥ सुक्ता सु राजा दलु पात्वं दत्वा दिव्यान्नयानंदरुवान् ॥ तमा हि १४ राजा दर्शनमात्वं
स्वर्गं मूर्त्तीरुवति सुपादहृतं ॥ किं किं कृष्णाय मात्वं प्रविष्टं १५ मुदिनमनाय हस्तं नराहं ग्राभिषेत्तुं तापका १४ ॥ तमा सर्वज
नाम्ना श्रेयं जाया १५ वमा १४ तदा राजा विनयनि ॥ किं हनु माया हनुतं वा स्वच्छं वा तस्य हि कायमसंदह हनुतं न हमा हं ॥ अथ

[illegible]

विविध निःश्वसितः इवूँधिः ४ वाषंवाश्रुधर्मिः ४ तस्य मातृकमस्ति । सकाष्टुहात्रिकनित्यं मातृवंदिः ४ धितः ४ काधितनित्यं मा
 तुखानपानं किंचिद्वत्वास्वकः ४ वरुतं वरुकिं । तदनकनकसिं समथसकाष्टुहात्रिकस्वमातृवंवामदक्षनश्व
 यित्वा पादनवयं तवो न । न दामाता व्यथया पूजयमाह । कायनाधमका ॥ कर्तृका १ कर्म इवूँधिः ४ धितः ४ काधितनित्यं मा
 तुंवादिंहात्रिकं कर्तृव्यं ॥ त्रुक्ताः १ निमयनमादिति विलापयति । तमाकाष्टुहात्रिकः ४ स वाषंवाश्रुधर्मिः ४ वरुतं वरुकिं
 गच्छ गच्छ मूणगृहं नस्तु तव्यमिति । यशुपि नंगच्छ तवस्वमाश्रमंगच्छति ॥ माता उवाच ॥ ऊरुगच्छ वरुतं वरुकिं ममाकाः

३४

नरुतं नाकुनित्त्वमि । पूजयमापिनी ॥ त्रुक्ताः १ वरुतं वरुकिं ममाकाः ४ धितः ४ काधितनित्यं मा
 क्ताष्टुकाः ४ तमासकाष्टुहात्रिकाः १ नूवित्रिकयति सायापिनी ममाता स्वमाश्रमंगच्छति । सुखनाहमका कीनिष्ठा मिच्छति ।
 ततः ४ उरुतिदिना निधुनया मास । तमा तस्य गृहवात्रका विप्रदीनाहत्वा ४ स्वमनूतं ४ तस्य पादविकवाहृतस्वंगयादाहव ।
 निकृष्टा विष्टः ४ तदानकनव्यायालादिनमकिं तमम कृत्वा त्यपेवमदविशहवति । त्रिकापवावहवस ॥ दानी किं कर्तृव्यं म
 यामाता मस्वमाश्रमंगच्छति । अगच्छाहमिति विविधयावकाहवति हि कृवहमिति वच्चापीति स्वगृहात्पुकाः ४ उर्वरिहृवा

विविध

तस्यायावका इ० श्रीलक्ष्मि कनमा हृदा धनपातकनखं जपादकृष्णविष्ठा रुवति ॥ मायानरुवति तस्य स्वच्छन्देव । तदाहिकृ
वारुगवकमवमाह ॥ उवमवंगवगवन्पुवा ॥ धा हं ॥ दृक्कापलतन ॥ लूमनूतनं ॥ रुगवानाह ॥ हिकवा सुवत्तक्षणा नाम ।
नाजाय वमपूषवान् । पून० वत्तक्षजगोहमनू विविक्तयति ॥ अगह मिदानी ह्युक्तवानेव यश्चिमाया न्दिमिवनख ॥ उवृक्षक
उमकमसि ॥ ति ॥ तेजवगच्छम्यहं । तत० पूजपूजादिसम्पत्कृत्वा सुकलमूयदधस राजा वृक्षकृत् संपुष्टि ॥ त० वत्तपुहा
विमानमानूक्तकृत्कद ॥ मनुपायं । तत० राजातपानीयनपुवा हितं यनार्यमकन्दमिहवान् सवानविवावति । स राजाय

नालीदर्शनमाशुतपानीयं पुवाहितं ॥ जलनिर्गमा रुवति तत० राजा विस्मयमापन्न० का हुरुवयं यनारीं पाकपानीयनपुवाहि
तं ॥ दानीयं ० पुवाहिमारुवति वटहा । तदा यनारीतमूवाच । पूषवाँलं महा राजममाखकवरु ग्रीरूपपानीयागतं न सुकिनं । त्वं द
र्शनमाशुनरुयं पुमावितं सुगमनपानीयपुवाहितं रुवति । मनधर्ममवीवत्तं महा राज ॥ राजा वाच ॥ न ह्यभाहं यनार्य उवमवाहं
। तमा राजा वाचि मकनिवा स्यात्तात्तु ह्यकानदन्यपुद ॥ गकृति । तमा वनख ॥ उमनुपाय ० स राजा महाकल्पवृक्षदमिहवान् । म
नानमंरुल्लुहसमापन्नं तदन्यमहाकल्पवृक्षमकं मूलात्पदनरु ग्रीरुतं स राजा सवानविवावत्तदर्शनमाशुतमहाकल्पवृक्षं

[illegible]

गङ्गायुक्ता कलाप्राप्तवति ॥ शिखरावाच ॥ साधूरुगवन्साधूसुगङ्गायुक्ता ॥ अहं यन्मयूखवान्महावाजन्तु ॥ अङ्ग ४ कल्याणमथाह
तद्धर्मनिधानाय ॥ ॐ सुकारुगवन्त ४ पादोभिनसा शिखरे स्वकस्वकपूवूक्क ५ पूयका ४ ॥ रुगवान्साधोसिद्धवानिति ॥ ॥
ॐ दमवाचरुगवानाहमनाहं वरिखवासावसर्ववर्ती यत्तत्सद्वमान्साधुनगङ्गायुक्ता ५ अर्धश्रुतिमस्य नन्दनिति ॥ ॥ ॐ नि
शीविविक्तकर्त्रिकावदाने यत्तुमाधाय ॥ ॥ ॐ यगुफावाच ॥ अथैकस्मिन्समयं रुगवान्वा नागस्यां महानगर्यां विद्वन्निष्ठा ॥ शि
खराहोस्सार्धं महाबाधिसत्त्वगलेन यन्निमित्तमहाश्रवकगलेर्द्वानागयकगध्वसूत्रगङ्गाकिन्नरमहा नगस्य विद्वत्त ४ पूजित ४ मा

विविध॥

वसुमिर्लववक्ता। मरुगज्जुदिवदस्युज्जवहसं वाज्जहमाननपतीदममवगत्त॥ पूजवतस्य नृपस्य सुकलाचर्यो वाजासु।
पुजासूनपतिः सपितवकुल्य। स्वात्मपनासुं ककुल्यसुखच॥ इ॥ स्वं ॥ नी हनु (नयनिपूर्व) न वाधिया सो।। प्रासादिकाहिनु
याश्च दवीवसुहगीस्यता। वाजलेकीसमापेना नृपजीवनमंशिता॥ अ॥ पुसुताविसालाकीसस्यवादीपतिवता॥ अथसन्निध ३२
नानामगृहस्यतिस्सुसिं वाजगृहगतवान्॥ ककुनगर्यामनूपाक वाजानंदनिर्तवान्॥ समुपदर्शयादथापुसिपत्यवाजा
नविहायितवान्॥ महावाजानूयहं ककुनेवचकीहवायहं॥ कभावाजावाच॥ हापूनेषकेस्मादागत॥ काजानिधनानूहा।

माहं॥ कभानिधनागृहपतिवाह॥ नान्यामहावाजवानसी ककुसूपदानामग्रमादागमाहं॥ (अष्टीजानिधनापतिः महा वा
जमवकीर्तिमदमुपयुक्त्य ॥ हागमाहं॥ कभावाजावाच॥ साधूमहापूनुषगच्छतिष्ठतियथासर्वधर्मा॥ जयजयमहावाजनल
पमेकसनापतिर्हवामितदथापितवसवाकवायहं॥ ॥ सुकानवसवाकवाकुसुखनतिष्ठतिसुपतीक॥ कभाचकुर्दिनम
यथावाजगृहउरुमासिर्वीहृहायथावाहोकालगतो॥ कन॥ पुनश्चकुर्थदिनउरुमावाजमूनुकोकालगतो॥ कभापूनुश्चकु
र्थदिवससुविनिष्ठुहृत्तवापूक्तामालिकानर्ष॥ कदावाजानूविविक्रयति॥ वटकिंकावमंममहिषोकालगतो॥ पुनश्चकुर्थ

विविधः॥

दिवसं प्रियतमाश्च कोकालगमो॥ पुनश्च तथैव मूर्त्तानां लिखितं नष्टं मय्युनश्च राजा वा नपालकमाहूया कृतवान्॥ बालपालक
राक्षसिर्विदमं कमान्नीयतां गच्छतुं हृदयं मया॥ तदा सहसा बालपालका गत्वा क्षान्तिकमाहूया वाच॥ क्षान्तिकमहावा
जपूष्यकं तु नाह्वयितुं सत्त्वं गच्छतुं॥ तदा क्षान्तिका वाच॥ क्षा राजपूष्यकिमाह्वयितुं राजा आगमाहूति राजनिगतवान्॥ त
त बालपालका राजानं विह्वयितवान्॥ महा राज आगमाय क्षान्तिकपूष्य४॥ तदा क्षान्तिका राजानं पादधारिण्यथा वाच॥ महो ना
जकिमाह्वययसि आगमाहूतं न वर्यहो॥ राजा वाच॥ क्षान्तिषकना नूहा वनकना निष्कन वमयथा वा हो महिषो मूकस्मात्कालगमो॥

१०

पुनश्चाश्वमगुरुतमो कालगमो॥ पुनश्च मय्युवगारुमा मूर्त्तिमाला मकं नष्टमिति॥ कस्मात्क्षान्तिष्यदसत्त्वं मय्यविप्रतिपत्ति
निपुनतवे क्षान्तिषमा (गोपयता) मिति॥ तदा क्षान्तिवचनं निमग्न क्षान्तिषानिपुनन उपदर्शयित्वा राजानं विह्वयितवान्॥ तान्
वमहा राजग्रहनवा महा राजपापपूष्यकं तव राजगृहप्रविष्टास्ति नका वलन विप्रतिहृतं॥ तदा राजानं मानयित्वा क्षा
न्तिषपूष्यमूवाच॥ कथं क्षान्तिषपूष्य उपाकारकं वद सर्वयथा॥ क्षान्तिषा वाच॥ महा राजने वं ग्रहपूजनं दानश्च॥ तं पापपू
ष्यवदित्वा वसिना भव कर्तव्यं॥ तदा राजा श्रय पापपूनीमाहूत्वा क्षान्ति सा दर्शयित्वा दृष्टपण्यं दत्त्वा क्षान्तिवान्॥ तदा राजा

विचित्र॥

महिनामा रूपावाव॥ मंजी शूकथा मकं सपत्नीकः पूनूषे कमपि उविष्ठासि सुपूनूषः लयासा दवसवहिर्गमनं कीयसु॥
नस्य माखदयति॥ मंलुवाव॥ कथं महा राजानान् ह्माह॥ नमा राजावाव॥ मंजी शूकथा मकं सपत्नीकः पूनूषे कमपि उविष्ठासि सुपूनूषः लयासा दवसवहिर्गमनं कीयसु॥
कालगमो॥ पूनूषा शूककोलगमो॥ ह्ययमपि मूक्तिमात्रिकानहं॥ नमां विप्रतिपदि स्यापपूनूषतिह नयन॥ नस्य निमिरुनस
वविनासि नन कानिषपूनूषसव कनसर्वयथा शूकं मया कथं ह्माह॥ शून्य राजानहं शू विनाशुर्वीत स्मान् न राजगृह नस्य न
व्यं॥ खद विनाशस्य शून्य नयतिर्वी॥ नमा मंलुवाव॥ महा राजानान् ह्माहं नवा ह्माहं यनं नकिं॥ तथा वासु निधययक वाप्यहीन

११

थमशुं निधनानामगृहयति सपत्नीकमा रूपावाव॥ शगृहयनक स्यादागमति॥ नदनिधनानामगृहयति नाह॥ नान्यवमजी
वा नामस्यां कुरुसूयदानामग्रमादागमाहं (प्रहीजानि सनापतिः॥ मंजी नूवाव॥ लमी दधीयू नूषसु (येवनग कर्वा (प्रहीरुन
लंकिमर्थमन्यवां वकी ह्माह नस्य नव्यं॥ न्तिमा खदसि न्तिमा किं वित्तुली नन्दला सा दवसवहिर्गमनं कीयसु॥ शून्य निधनानामगृह
यतिः सपत्नीकः कनकवती महानगर्यपिका कः॥ नमा निधनानामगृहयतिः मा (विनाश वाव ह्माह॥ शून्य मंदरा गंधं मयद
पि मना वहिर्गमनं सिद्धमका ककिं क वापि॥ न्दानी नान् ह्माहं॥ का कडवाव॥ स्वामिं मया किं कर्तव्यं शून्य मं॥ नमा निधनाना

[illegible]

पुष्पांलं वनिर्दया। अरु निर्जनमार्गं वैक्रमस्त्वसर्वतः किल ॥ पुष्पानां च वं वक्रव्यं। स्वमाश्रमं सहसा गंतव्यं श्रुगच्छगच्छति ॥ अथ
मुनिपुत्रोपकाशोत्तमात्सुनात् ॥ तत्रैकपदं (असूर्याष्टसमयवृक्रमं कमस्ति तस्मिन्निष्ठतः निवागयतः तत्र नाजोपहन्यते स
मयसहस्रं विविक्तयति अनेवं स्रुतव्यं नयागं श्रुलक्रमं मुनिपुत्रयानि मिह नभसर्वविनाशितं सर्वतः श्रुत्रयानादिपं (अपि
तं निश्चयमयासां मुन्यस्का-यपदं (अगक्रव्यं मिहूस्का निजा समयसमूह्य गतवान् ॥ ततानंतं वक्रं (अपातः कालसमयमह
त् ॥ सापातः कालसमयहर्तुमदर्शयित्वा उकांतं हत्वा विलापनां कृतवान् ॥ किं कर्तव्यं महर्तुं कृगच्छमिततश्च महर्तुं हर्तुं ति

विविध॥

निसृष्टमिदं कथं दयसि पुनः॥ नान्नायक नाना नाना वस्तुना पिपासता॥ हर्ष हर्ष निसृष्टं कथं दयसि पुनः॥ दीनापि नि
धनापि निन्दनीयापि मानवः॥ हर्ष हर्ष निसृष्टं कथं दयसि पुनः॥ मधुहा (ग) हं मनाथ कस्याप्यापाव इच्छताम्॥ भिज्ज
मायवलाजानि सर्वमवनिवर्धकं॥ कविज्ञातमादाय कविद्वयमर्दयत्॥ मूलकित्तवट्ट कश्चिन्नसंवेपथुनः॥ केवव
लं वमूल्या लहस्योदध्वघर्षयन्॥ वृद्धिस्तु स हमाननः॥ लं साजवमूर्च्छिता॥ मूथतसि समथय विज्जक मक म्नागता॥ स
तां हृष्टा संवा व विवा वयति॥ म्नामोति वृत्तवट्ट हृष्टा सि निज नवनमार्गः॥ लं लूका य विज्जक तां पुवा धिगवान्॥ उल्लिख कि

१३

मर्थमृत्तकमिव निवृत्तिकात्वा॥ तमासापवृत्ता जागर्हि ता उवाच॥ लप विज्जक वरुना कि मूर्त्तं नाना हं निधना नाम गृह्य मथ
कांति॥ मूथ निज समथ हर्ष म्ना दसि मां क गति म क ग म्ना मि किं क वा मि मार्ग न्द र्भय य विज्जक ॥ तमाप विज्जक उवाच
॥ मूवलकनका वलन हर्ष निसृष्टं कथं दयसि पुनः॥ तमा मूवल उवाच॥ नाना वं य विज्जक य न म द विज्जक ता य व साय स रू
त्वात् पूषा कुरु नाज निग तव मो म्ना वी त सि समथः॥ लं लूका म म निज समथ द ग दिना न्य त्या डा जा नि हं लूता म्ना वी त विज्ज
नूत स्मा क न क व मी महान ग र्थी म्ना गता॥ तमा लं इ धि नि त म्नी म ल क (ल) लूका म म निज समथ मां दयित्वा गच्छति न ह्यमा हं य नि

विशिष्ट॥

वाजकस्त्रं कस्मादागतं कुरुममिति॥ ततः पवित्राजका वाच॥ श्रुत्वा वाचा तस्यां महानगर्यां गेतमं विहवति स्या॥ ततः सहायां
स्त्रिणाहं॥ श्रुत्वा उवाच॥ श्रुत्वा निर्जनमागमिह र्हास्यस्मा गच्छति॥ किंप्रति क्रिया मश्रुत्वा ग्रहं कुरुत्वा मुखे न सिमां पवित्राजकः॥ ततः
पवित्राजका वाच॥ श्रुत्वा त्वदाश्रमं कुरुमिति माता कापिता श्रुत्वा तिकिंवा॥ श्रुत्वा उवाच॥ माता स्त्रियपिता स्त्रिणाहं स्त्रियमिह
वांधवां सर्वं संस्पृश्यामि त्वमाश्रमं चलन्त्या॥ पुनश्च॥ र्हाहीनन किं जीवं जीवन किं तथेव॥ किं कुरु व नयायी मयच्छ
लं॥ अहं न हं॥ पवित्राजका वाच॥ श्रुत्वा उवाच कार्यं कुरु निश्चयं न क वा म्यहं॥ यदीच्छसि र्हा वन्द्यामि पुरुषं॥ श्रुत्वा उ

१४

वाच॥ उवाच न्यहं न पूर्वहं न कं विना॥ कर्म मम न सा वाचा पवित्राजकं पवित्रा॥ पवित्राजक उवाच॥ श्रुत्वा उवाच तत्ताहं सा
धुसाधु सुखवला॥ आगच्छ गेतमं गच्छ भूतं सिंयदीच्छया॥ अथ पवित्राजक न क वृत्ता विह्वन सा वला वा नान सिंय महान गत्री नी
यकं॥ ततः कर्म न वा नान सी मनुष्या फलं यन रुगवतः सहाया मका र्हास्यता॥ अथ पवित्राजकः काश्वपमं दवाच॥ तकाश्व
पवाच मक भूत॥ नान्यवं तस्या वलायाः य व म इह स्वमनुष्या का सर्व यथा मया श्रुतं॥ तस्या पूर्ववृत्ता न निवदिता॥ पुनश्च॥ काश्वप
रुगवान् गेतमो निममय तस्या वलाया नृणां सुनी॥ ततः काश्वप रु वचनं श्रुत्वा आसनात् समुत्थाय समुत्थाय सर्गं कृत्वा दक्षिणं

विशिष्ट॥

विचित्र॥ नृमधुरं पृथिव्यां पृथिव्या यथ नरुगवा नृनो भूतिरुत्तरा नृगव नृपा दो निवसा हिवं घं नृगव नृम नृद वा वन ॥ कथं नृगव नृकथं नृ
गन ॥ अस्या वला या ॥ १४ ॥ स्वम नृनृ नृ नृ नृ वद वा दिना नृ ॥ नृगवाना नृ ॥ कथं का नृ पन स्या वला या ॥ किं ॥ १४ ॥ स्वपार्थ वला नृ वद ॥
नृना का नृ या वा व ॥ नृगव नृ नृ स्या वला नृ नृ उवा हं विस्तये यामि ॥ सूप दाना मय मवा सि निध नाना मगृ ह्य नि नृ सि ॥ नृ स्या का नृ सा व
ला प वम द विडा नृ नृ ॥ अ नृ क नृ या पाल व व सा य ना पि अ नृ नृ पा पि नृ नृ नृ नृ ॥ नृ स्या १४ ॥ स्व नृ किं विस्त व म नृ क नृ क नृ क व नृ म हान
ग र्या पृथ क नृ नृ म नृ जाम हृ दि क म क म सि म हा धना म हा हा (ग वि स्त्री भु वि नृ लाल क्री द या वा नृ स्या ग वा नृ नृ सि नृ नृ नि स व नार्थ

सनापतिवितिसमराषसावलासीपूनुषोगतवान्॥तदासंमत्संवावविवावयतिसंवायविवायनिवासित॥सगृहपतिर
स्यंसमयवहुर्दिनवाह॥यथावाहोमहिषोकालगतो॥ततश्चतुर्थदिनश्रुत्वाकालगतोवाह॥ततश्चतुर्थदिनमूक्तिमालान
र्हतेत्सर्वमनिर्हन्नाजाल्वातस्यावलाया॥पूनुषनिधनानामगृहपति॥कालपूनुषतिराजगृहपुविष्टनविप्रतिपदिः॥ति
क्षातिषसंराषसासीपूनुषोनाजाल्वावितवानतदनंतत्रपवितिवृत्तिनिर्जनमार्गसूर्यास्तसमयतस्यावलाया॥रुक्मिपूनु
विविंशत्यकाकादलश्रीरुगतिरतस्मात्समविप्रेतिपरिरुतनाशेनयापहवतामवलायस्कापनायनं॥कथंरुगर्व

विविध॥

न सर्वरूः सर्वरूः रूः कनया न कनवदत्तं पत्रमश्ववः॥ नदा रूगवानाह॥ मृशूकाभयका रूः कः पुत्रयना न्यवकाभ
यउकसि नमथं कथाना नामजनयद विषरूडमाना मवनिजासि नथा मातापित नोवृद्धरूगो अस्मि॥ सविषमवनिज व
उनमाह सिकाधनवान् वृद्धिनासि मातापिशा मुखसकलनायकाह॥ नमाउकसि नमथं निजपुत्र तत्तामातापित नोवि
द्विषित॥ उवमाह॥ हमातापित नोममवसायनवनिज नृयल कविह वंश फय्युर्वीकः पुनृषार्थ कर्ह वंसाधनीयं॥
नहृहं सर्वमविषयं पूर्व मुखनखानयानं कृत्वा सि मो अः किं॥ नदापिता उवाच॥ पुनृपिह माध्व नहृव पुनव कृत्वा वृद्धरूग

ने

हं वृद्धमिदानीं पुनृषार्थ कर्ह वं कमस्वति॥ पुनृवाच॥ पितृनवखानन ऊर्ध्वपुसाहि ननमक्राहं॥ नमापिता नाहवान्॥ नमाह
माता पुनृमवाह॥ किं व कृत्वा पुनृहृव वीषिगुरुवाच कं वृद्धमन वं वाचं पिता भूवादमिह सि॥ नमा पुनृवाचा इवाच॥ मात कि
पूतं मुखल वाच कं वं पिह वधिकं वाह वी कटि विह वसाधयी नव्यं॥ माता उवाच॥ वृद्धीरूता हृदानीं मपुनृ किं व वन नवयापाष
यिष्णामिवात्तां नमिष्णामि वः ४ खनः पुनृदानीं किं पूतं न ४ ख सर्व अदनीं माख दं कू वृह पुनृपाप पुत्तं व विन्दति॥ सर्वधा
मभूपिता मातामनुष्णात्मा वृद्धवता र कथं पुनृन विहृत्तं मावां पुनियालय॥ पुनृ ॥ पिता धनं वपुतात्तां पुनृधा वं व पिह मां॥ क

विविध ॥ थं न ह्ययं पूज्य आश्रयं न स्य तं ॥ पूजा वाच ॥ मा मा ता मा पिता वे व अ नू जा दि स्तु (थे व व अ म कं पा ष पि षा मि व व सा यं त व
 कुं छ सि ॥ ॐ ह्युक्ता मा ता पिता व व नं कृत्वा सर्व धन आ न्या दि अ नू या ना दि गृ ही त्वा का ष कानि ता उ य क य कृ न व क सि ॥ त मा मा मा ३४
 वि त दी न म ना अ अ पू (रु न य ना हृ त्वा सि मो ॥ त दा पि ता पू ज म व मा ह ॥ त व अ अ ष या पू ज किं क र्ह वं म या धू ना य दी कृ सि य दा अ
 वा न दा सि नो वृ कृ कि मो ॥ त मा मा ता पि त वो उ अ सं अ न यि त्वा वा ष ट ला नि प त्रि पू र्ण नि प न स्य व वि ला य न सि मो ॥ त मा व सूरु डा
 ना म अ नू ज मा ता पि त वो ॐ कृ म मो द ह्य वि ष मं ना म अ न व म व मा ह ॥ किं क र्ह वं अ न व मा ता पि त वो नू दि नो मा क वा सि ॥ अ धि मा नी

११

यं ॥ त मा वि ष रु ड ना म अ लु वा व ॥ अ नू ज किं व कृ वं न व मा ता पि त वो पा ष पि षा सि त्वं अ स क्ता हं त म का की नि ष सि य दी कृ सि त्वं उ व
 कृ नू ॥ म म य दी कृ सि उ वं क वो पी नि ॥ त मा व सूरु डा ना मा नू जा ना कृ वा न ॥ उ व म रु वि त्रि क य नि व कृ ना कि म कृ न मा ता पि त वो क थं
 ह्य कृ वं मा ता पि त वो अ या क वं नि अ य ना हं पा ष पि षा पी नि वि त्रि स नि ष नि स्र का ष क ॥ त द व धि व ४ वि ष मा ना म पू ज मा ता पि त्वा
 अ नू या ना दि किं वि त्र द दा नि ॥ त दा मा ता पि त वो अ नू म ना सा य दी न म ना नि ष त ४ त मा मा ता पि त वो य व स्य न म व मा ह ॥ का क उ वा व ॥
 क थं य स क नि षा मि क न वा या न क न वा अ नू म पा फि त म य किं वि द र्त्र प सा ध य ॥ पू नू वा वा व ॥ का वा पार् ल क नि षा मि वृ त्ता ह म म कृ

विविध॥

वान्॥ पूरुषुषयाहीनं श्रुधुना किं कथाम्यहं। स्त्रीयाया लज्जुकां न किं विदत्रव्याकथनाउक्तन कथं का कतिष्ठं नम वल (भाह नं
रुवन्॥ का नाउवाव॥ याया लव कथं ऊर्या नृवृद्धी हतमहं पुला॥ चक्रु नगनामं नम वल (भाह नं रुवन्॥ तदा कनेषु पुषा वसुह
डा मातापित नो म्रु नृस्य पित निम्रा गत्युवेमाह॥ किं कर्तव्यमत्र पाथो वा कथं॥ तमापिता म्रु पूरु नयनो वाव॥ पूरु किं कर्तव्यं किं
व्यं न वलाह सर्वधनधान्यस्वानयाना दीपा वृत्ति॥ त्वमकमस्तीति विविं त्यतिष्ठाव॥ न वमातापित नो नेव मिनि। किं पूरु म्रु हं याया
लं नम क्राहं वृद्धा वत ४ माता वृद्धी हता त्वमकन पूरु मात्य कर्तव्यं आर्वा॥ तमापुन ४ यनम दीनमना नृदिता माता उवाव॥ मा विवाव

१८

कथं पूरु त्वमकास्तीति विविं त्यो आर्वा नातनस पूरु कथं मनिर्दया रुवन्॥ अदिनं कुरु पूरु न किं व कर्तव्यं पून पून ४॥ त्वमव श्राभया
आर्वांतिष्ठाव त्वं समुच्च वन्॥ तमा कनृ स्या विष्टमना कनृ पूरु उवमाह॥ तमातापित नो नरु कर्तव्यं किं कर्तव्यं वृं दानीं महं किडापिमा
तापित नो नरु कर्तव्यं॥ मम स्वानयाना स्त्रियदियुवया ४ दद्यास्तीति किमूक्तन वरु नाश ह मसाधना उरुत्वं वृं दानी मात ४ माश्व दय ४॥
तमा मातापित नो वाव॥ साधू पूरु वृं दानीं न वरुषुषया श्राभया आर्वा जीवाव॥ उवमवंपनस्य न ४ यसममं कर्त्वा ददिवधि न ४
यथा मर्त्तस्वानयाने नडय जीवकालं निनाय कि॥ उवमव का म्भयन न पूरु धन कनृ पूरु वसुहडा कन कवलीना मम हान गयी

विविध॥

पूष्यकृदु नाम राजा वरुव सुना आडरुयः॥ तस्य कं पूषा विषरुडा नाम महावनिजा निधनाना मगृह्य मित्तु मा वरुव॥ त
स्यात्मा नापिन नो पवम खद कृमन पातकन ॥ दविडा रुमनजा यम शूनक वाया लरुम नापिन लर्ज हवति॥ काल पूनूष मि
पुवाद सकाल गम ना कसुज मा रु विष्यति॥ का ॥ यसा वला मस्य विषरुडा नाम वनिजस्य कांता रुवति॥ पूनश्च निधनाना मगृ
ह्य म ॥ पूर्व कांता रुम निधनस्य पातकन कांता विषा (ग) रुवति॥ उव मव का ॥ य म स्यात्मा म न पिम न मा खद य क्रिय पि॥ म ॥ ४
का ॥ यारु गव रु म दे मे वा व न्॥ सा धू रु ग व न् सा धू रु ग म ॥ न रु मा हं ॥ १६ ॥ न पाय कर्म ना निधन गृह्य म ॥ ४३ ॥ स्व म नू रु न ॥ १० ॥

१२

विषय का ॥ य स्यात्मा न सि रु वान्॥ म ना व ला रु ग व ना व व न् पु मि ॥ त्वा वि ना य ना व रु व ॥ १० ॥ दानी किं कर्तु या हं रु ग व म ना न् मि
॥ म दि वा घान शून क रु म पु मि मे सि रु पूषा नि गृ ही त्वा रु ग व रु डि पु द कि ती रु त्वा रु ग व ना (य) ध व न् मां नि व सा द म धा पु ल म् रु
ग व रु म व मा रु ॥ सा धू रु ग व न् वा म रु ला व ती पी मा हं स स रु ला व ती ॥ मा हं य व म रु ग्वा मा म ॥ कर्म भु न् य म रु ग व न् ॥ १० ॥ कर्म विषा
कन म म रु रु वी द म ॥ १३ ॥ स्व म नू रु न् ॥ रु ग व न् म र्म स्या मि म म का दा ष विषा क म सि ॥ रु ग वा ना रु ॥ मू व ल न व रु रु न् पूर्व ज म् व मा
नापिन नो खद न कर्तु य मि ति व व ने क न व रु वी ॥ म स्या द व ल पू नूष स-सर्ग ना म व ॥ १३ ॥ स्व म नू रु न् रु रु त्वां च दि नं किं विषा य म सि

विशिष्ट॥

नात्र मम नाहं ॥ हगवान्मूनिना ईनस्मिन्वान् स ह्यार्षदश ॥ पुनश्च कस्मिन्समयं कपुद (असंगमानामजनपदमस्मिन्सिन्धु
व. मनसुर्मा विरुसर्मानामवा क्र (लो) निवसन्तः ॥ जहावतीसमापत्रः अनूजः वदहः मंजीतलहः नहः कया विद्या समायेत्र
॥ उकस्मिन्समयं कुरुमादिविषयकान (लो) विना धिनी कुरु कस्य नूजस्य विनापवा वरुव ॥ अनित्यकार्यं विषयं अनित्यं
अनित्यनाहं धनजीवनम् ॥ अनित्यपूजस्य कलुषहृत् संतः जीवन्तः कस्य अनित्यसर्व ॥ ॥ ह्युक्ता जगत्स्वक्यामा विनवान् ॥ स विरु
सर्मानामवा क्रमः ॥ तदा वनं वाजः ॥ ततः सती (थ) वादवालयवाग्रामाद (अ) वा वनं वा वृक्षं वा वज्रम ॥ ततः कस्मिन्निर्जने

८१

वनपर्वतगकक अनक मृगजलसंमिलितान् नूदिता नूददर्श ॥ तदा वा क्रमविंतापवा वरुव ॥ कथं मृगवशादनि कथं व्या
जलका नर्तः ॥ एकमानं न स ह्युद ह्युतिष्ठामि नूदि ॥ मृगना किं ह्यविष्य नि मृगना व्याजलकिम् ॥ तत्सर्वं कावर्त्तय (अ) नि
ष्टामि न ह्युद यया ॥ तदा महर्षिकः ॥ सिंहा महाकायः ॥ उग्रपराक्रमः ॥ हर्यकवलीषनिकः ॥ पर्वतगक नवा नस्मिन्नामृगजलां द
र्शयति ॥ ततामृगकूला विषादहीषन नूयं ह्युतिष्ठामि न नूयकः ॥ कविज्ञानसंज्ञा न कविस्थः ॥ उपासक विनमृत्युपसमाग
मपुति ॥ कविस्थपूजवाल कथं कविस्थपूजस्वहवती कथं कविस्थमाता कथं कविस्थपिता कथं कविस्थहोषक थमवमन

विधिः॥

कविलायनत्रा दूयकमृग॥४॥ पुनः४ सिंहवाव॥ नरकमृग॥४॥ सर्वपूयमकववनं॥ रुकादं रुकमानत्वं माधवं दधमृ
ग॥४॥ पुनः४॥ रुकादं कलमाजलहिं सयामिमृग॥४॥ मृगाननकयजुवमृगयुवां वावं मयदिमन्य॥ पुनिदिनयुग्मयुग्मं मयग
कसययावव॥ नेवकनामियदिमयुवयगमिषासि॥ ननामृगमृषी कसंभनधीनयावधेमेनयावाकिकिर्त्तिहृनिकटगला
वाव॥ शवननाजसिंहकवकुप्रयास्माकं जीवकंदीर्घनाजं किमृक्तनवरुनास्माकं मृगकुलास्मिन्मनं लभलं कृत्वा उर्वसु वावज
र्यान्कमस्वकलमाजलहिंसि॥ ॐ स्वस्ति मृगमुखकागलासकलान्मृगकुलानां ह्यवाव॥ हृमृगमावाहथगृगकाजयुग्मं॥ नदा

८२

सर्वमृगगलमृगमुखकभवमाह॥ शमृगमुखककिमाहयसि किमृपायास्माकं॥ नदामृगमुखकावाव॥ नान्यापार्यं
मृग॥४॥ नजीविनापिकलनकालगमकिमासजिमासमपि दीर्घजीविरुवम॥ ममहृदयउवमनूरुतं युष्मासुकथमृत्युत्रहान
मिति॥ नदासिंहं निवदिनं सर्ववृत्तारुं कथितं॥ ननामृगकुला॥४॥ सर्वउवमाह॥ साधु२ मृगमुखक॥४॥ दानीं किमृपायं कथय
थादभिनस्तुं किं दीर्घनाजं जीवाम॥ नयुक्तमवरुतं॥ ननामृगमुखकावाव॥ मृगयुयमिदानीमवजुवथा॥ पुनिदिनयुग्म
मृगोदास्याम॥४॥ उवमवयत्नकिं विदीर्घनाजं जीवयिष्याम॥ ननामृगकुलामाह॥ शमृगमुखक॥४॥ उवमवजुवयथामम॥

विदिश

नमामृगमुखकः सफभनमृगान्सर्वस्मत्तंकला पुननपिसिंहनिवदिनंगनवान् उवमाह ॥ लावनवाजसिंहजुस्या कंसर्वस्
स्मत्तंकला आगमाहं उवंयथात्वमाहोपितं ॥ तदिवस्मानस्य युग्म २ मृगो गृह्णतुं पुनितिदिनं सत्यमवजुतदधिकं माजुतुमन
ग्रहं ॥ सिंहवाव ॥ मृगमुखकनरुगव्यंतदद्यापितन ४ ॥ उकमृगमपिमापनायितव्यं यदिपनायनतदाहं तदिवस्युष्या-सर्व
निहनिष्यामि उवंसत्यं ऊनू ॥ नमामृगमुखकावाव ॥ मापनायितव्यं सत्यमवकं विष्यामि ॥ ॐ हूँ नमामृगमुखकागलस्यमाभयमे
गनाहूयाविनवान् ॥ वत्स २ हंकथमनूकमनिदानीं सिंहस्मत्तंकला आगमाकिमु ॥ उकमृगमपि यदिपनायन ॥ तद्यहंकला

८३

नाहंसर्वान् निहनिष्यामीति सिंहनाहं ॥ उवमवयूयं सानिधं ऊनूततस्याकापिमापनायितव्यं ननकनापिऊनूकमंकथती
॥ तदावृक्षमृगवाव ॥ नमामृगमुखकः कनरुगव्यंतदद्यापितन ४ ॥ उकमृगमपिमापनायितव्यं यदिपनायन ॥ तद्यहंकला
इहं वृक्षस्य लूनं सकलं मूलं कन ॥ आचारिणालंकृतमवमृकः कथं कनं वं मवर्तकविष्य ॥ पुनश्च ॥ मा उवकार्यं मृगमुखकस्य
स्वल्यायू पुनः किं मृगभावकाहं वृक्षस्य वायुनिहदीर्घतृणं यक्षकमनऊनू कार्यमतत् ॥ तदामृगमुखकावाव ॥ वृक्षमाखदं य
हवां मृगभावकानां वावं सत्यमव वृक्षकमनकार्ययू कृमवं किमु बालस्त्री नदहलये नीरुज-मरुताः कथं न आदितमवर्त

विशिष्ट॥

[illegible]

यत्नूयाफ॥ तन्मा मृगो दृष्ट्वा सिंहं ४ उहर्षावाव ॥ मृगदंसाधूखागतत्वं यूष्माकं मृगजला ४ कतिसंख्यका ॥ मृगमुखकावाव
॥ सुफगतामृगजला ॥ सुफ्फामृगमुख, यूनूवाव ॥ हावननाजसिंहयथा हापितं लया आगता हंसस्य सम्यतं पूनितं ॥ दानीमो
मृगो गृह्णत्वमिति दह्वान्दत्तामृगमुखक ४ यतिनिवर्हयति ॥ अथ नदिवसमावत्युतिदिनं ॥ लूघविषानायुग्मयुग्मं मृग
मुखकानीयमं गत ४ ॥ सुफगतामृगजलापर्यंकं कयक ॥ मृगमुखकमुदीयूषमाशक्ति ॥ तदा नृभिष बावयुस्ति भाविहमर्मा
नामया कृत ४ तत्सर्वं दृष्ट्वा विसृजमना विनायवावहव ॥ अहंश्रुत्यमं नृजनहमानह विष्यति ॥ नदहृन्वाभूत्तं धेवमित्त्वमाववि

विविध॥ नरुथाः कनकर्मविद्याकनसिंहनरुतद्विधिं॥ मृगनाचकथंकनशूरुताका नममन॥ पुनश्चसुफभतामृगनाचद्विनीया
 धिकथाः पुनः॥ दलनवर्धनसिंहनरुतमृग॥ असुपाफेरुकर्तमषुमृगमुखकथाविना॥ किंरुविषयित्वदानीदर्भयामि
 मृगुति॥ नृणाविरुवर्मा मृगमुखकलीपूवृषोदहानरुययाविद्ययासिंहवान॥ नृकुलीपूवृषो मृगमुखकोपवस्यनसंला
 विनी॥ मृगवाच॥ कथंकाकमयदानीमृगसुर्वानिनासिना॥ सिंहगदंगमिष्यामिमुत्पुमंउसमागमं॥ पुनश्च॥ मृथवारुवउ
 मृत्पुष्पाहंनवगुर्विनी॥ मृगवाचमृगवाचकंमोविनामनर्भुहं॥ मृथगुर्विनीमृगीर्भकयापवमविलाथावाच॥ कथयुस

८७

किंगतिमयदिस्थात्यनायिताकभनर्भवऊकिंजीविनाहंनवमृत्पुष्पाकयउंविनाकिंगुषगुर्विनीम॥ मागकसुत्वनवाजसिंह
 गलसिंहप्रुउवआर्वा॥ हृयाथवात्वंयदिगकससिन्सुसर्गनरुमनर्भगमासि॥ मृगवाच॥ माउवकाकविधिमाहवकिंकल
 वननववगुर्विनीस्यान्॥ नस्याच्चकाकमनर्भनऊर्यान्गर्हसिंहस्यापिकथंरुवचा॥ मृगीउवाच॥ सिंहनऊरुयदिआवथास्यान
 ऊमपुतिहासकलसमोर्भ॥ यदानरुहवनवाजकनेविभालआर्युहलावथाहन्॥ कपलुवावृषनिदभयित्वाआर्वाविंसिंहपुने
 मनकार्य॥ ऊर्व॥ समनावनवाजकसिन्माउमृषंनसुनदानसुकि॥ नदामृगवाच॥ साधूकानयइहंलयाआर्वागमिष्याव॥ ६७

विविध॥ लूक्का सर्वसंभक्तं कलादीपुन्रुषोपनि संलघयित्वा सिंहगच्छतः॥ ततः सिंहं प्रमंजोको॥ तज्ज सिंहं वाच॥ मृगमुख्यककथं विलं
 विननतव वलालं धितस्यातमृगो जगुजकमाजानीर्त्त॥ तदा मृगमुख्यका मधूनया वा वापुतनन सिंहं प्रवमाह॥ क मस्त्रुमृग
 ज्ञानमृगः॥ नृन्यमरुहृथो॥ नृदानीं लघमाश्रवांकी मृगागमोत्वयि॥ पुनश्च॥ तदनुप्रपया सिंहं मृगसूत्राजीविनापिवा॥ तव
 कार्यकृतं वै वर्षपर्यन्तमाधुना॥ ततः सिंहं वाच॥ मृगमुख्यकवर्षमंकं हतंगतं किं न संलघितमाह॥ मृगमुख्यका वाच॥ व
 नवाज सिंहकथं त्रस्तं नन्दनवर्षमंकं तव कनकर्मना सफलमा मृगपर्यन्तं नृन्यमरुहृतं नृदानीं मय आवांकी पुन्रुषोपनि वमस्त्रिसामम

८७

काकाउर्विनीरुवति॥ तस्मात्ककययाश्रवांजीवाच॥ तमा सिंहं वाच॥ मृगमुख्यकसाधूः नरुहृतं यं युवामहं माह कनवीं युवथार्थदि
 कथागच्छतमित्युक्त्वा सिंहं नृगच्छति॥ तमा मृगो स्वमाश्रमंगलापहर्षयित्वा सुखनतिष्ठतः॥ ततस्तुष्टिस्वमाचयस्तिष्ठतः॥ वि
 रुसर्माना मवाक्कतः॥ मोहद्वयवमाश्रयपाकलादवमाह॥ मृगो जगपिमादभिमाहं॥ कनकर्मविपाकनमृगनामीदृशं मतं॥
 कनकर्मविपाकनमृगो जीवितलकृतं॥ कनकर्मविपाकनसिंहं नमृगः॥ रुहृतं॥ ऊज्युक्तं यं तत्सर्वं पृक्तं यामहं॥ नृलूक्काज
 यध्यानकर्मकृत्वा नृगच्छति वाक्कतः॥ वाचानसिं गलापुच्छतवान् कनापिप्रश्ननर्त्तकितं॥ ततः कश्चित्संभक्तं ऊसमानाममहाघान

विविधः॥

मनूपाफः॥ नृवाकमरुगवर्कं (गोतमं सपार्वदं दर्मनं दातस्य पुमृदि नृपीति सोमनस्य जातारुत्वा रुगवर्कं न काभमृपसंजं
मम्राभीर्वचनं दत्वा पुका न विनययुक्तं न हितवान् ॥ न नारुगवान् सव्यवविवाचयति स्म ॥ कस्मादागता सिवा कलः का हनुना ॥
वाक (भावाक् ॥ नेव (गोतमसमागमानामजनेयदबोसी शूनं कदभेदं भां न वगमननागता हं पत्रमाहा गधमाहं (गोतमह्वां दर्मन
मनूपाफः॥ रुगवानाह ॥ कनकाव (न नृवाक सधमदभा न वगतत्वं ॥ वाक (भावाक् ॥ नेव (गोतमसंसावमसावत्मानं कश्च
पुवश्च शूनं कव्यसुनयति यत्र हतं माया मय निर्गुनयति यत्र हतं दर्मिणाहं श्रुवांताह शूनं जीवि नृव हतं न स्यात्काभमृपसंजं

८१

भा न वगताहं ॥ कसिचिद्वनस्व (उ हतं संसाव निर्गुनं दर्मयित्वा कस्मादज्ञानूपाफः रुगधमाप ॥ रुगवानाह ॥ वाक न किमहं
तं दर्मनं कथं संसावनेर्गुत्वं ॥ वाक (भावाक् ॥ हा (गोतम शूनं ता नि दर्मनं न स कलं पुनि दभया मिपत्रमाहं न दहं वा शूनं व
जन्मा न वम ॥ रुगवानाह ॥ वाक सभं सकल हनुतं वद ॥ वाक (भावाक् ॥ नृमृ (गोतम निव दयामि उवम कवनस्व (उ सफ न
नव्याधिक मृग कल पुनि वसुनि मय वम विलापन नृवा इह ॥ कविकथं मयूज ॥ कविकथं पूजी कविकथं मयूज ॥ कविक
थं मका ना कविकथं मयिता कविकथं ममाता ॥ उवमन कपुका वम विलापय कि न सि समय महाधा वय वाक मवन राज सि

विधिः॥

हायवर्तनवावस्तित्वातामृगमन्यमिति॥तन्नामृगमितिअथनवावयक्तन्नामविस्मयमापन्नाहंकिंरुविष्यतीति॥तच्छिखवाचय
नकृच्छयाकृत्वाद(अनवर्षमकनसफभक्तमृगनरुक्तसंसिद्धिमाहं॥तन्नामृगमुखकोउकाकगत्वासिंहसम्मतंकृत्वापुनयुति
निवृत्तमृगनांसम्मतंकृत्वायुग्ममृ(गोनीत्वाद(अनवर्षमकनसफभक्तमृगनरुक्तसंसिंह॥तन्नामृगमुखकोप्तीपुनूषी
माउसंघत॥तन्नापनस्यवसंहासयवमविलापयुर्विभीमृगीसुहसिंहगत्वाअर्थेनानकपुकावभक्तत्वातन्नासिंहमृ(गोनरुक्त
सहस्रभांकृत्वाच्यवित॥यश्चासिंहान्यपुद(अगतवान्॥तन्नामृ(गोपवमयीनिमनास्वमाभ्रमंगत्वापुहर्षयवस्यवदूतनसंशय

८८

संकृत्वास्तितवान्॥ःदीदृग्(गोतमपवमाभ्रमृमृक्तंनदृष्टंवाभ्रमृक्तंकनकर्मविषाकनसफभक्तमृगनरुक्तसंसिंहनःदीदृक्साव
निर्गुलंदर्भिताहं॥(गोतमपवमाभ्रमृक्तंमृक्तंनदृष्टंवाभ्रमृक्तंकनकर्मविषाकनसफभक्तमृगनरुक्तसंसिंहनःदीदृक्साव
(सुवनागवीनाममहानगर्यासुवदर्थानामवाजावहव॥सुवसनानाममहामृकीसमापत्र४विनासवतीनामदवीसमायूक्त४व
काप्तवलसंयूक्त४वदुर्गवलाचिन्त४सुववीनसमापत्र४वृषवावस्थपोवृक्त४सुविहि४कविहि४यूक्तंवाकृत्वावदपावगा४वृष
योवनसन्पत्रानावीवृषवतीयूतासुहिकसूजनायनादर्भनीयामनावमा॥रूपालःदीदृग्(अवाजासुवद४वह४सर्वत४॥उदावावृष

विचित्र॥

विविधः॥ वान (१) वृषयो वनमभित ४॥ तस्य गच्छ ४७ कस्मिन्समर्थयवचकन गच्छाविजयसुननय गच्छाविजयका मनवकुवमवल
यूक्तनचकु वाभीतिसहस्रग नानाप्रहवम गृहीतनक वचन सुखन चनमहासंयमन वायनं कृतवान ॥ सफपाकावयवि
वाकारुयकि ॥ पुनश्चरुपतिनिवृत्त्यचकु वाभीतिसहस्रगानिसंनिपात्यसिद्धवक ॥ तन्नामहासाया ४७ त्वं कृत ४७ कृतलका
र्य ४७ तदासुत्रनागवीनामनगर्यास्यो वापुववसना ४७ सफसंमापृक्तु व्यानूलाहन गच्छाविजयका ४७ कृतवापुनवयिम
हायूक्तं कुर्वन्कि कारुयकि ॥ तन्ना गच्छासंयमि ४७ तदाकालाहलमथन पुनित्ताड्यातिता तदासफमत्तकुलजना गच्छाविजयका

माह ४॥ राजसू नदप्यप नायप नायसिर्त्वं कथं वयं त्वां पल्यंग तं दृष्ट्वा सिंहा ॥ तमा राजा वक्रु न भक्तम् ॥ तमा सू वसं नाना
मम कुी राजा नीदी नवदने दृष्ट्वा राजानम वपु नू दत्राह ॥ भूवधी वयमहा राजक मूपायं कुर्यात् ॥ सयमनस्यो नासं नाय तय
४ कुलकार्यम कृतव क ४ भू नू हा मा हं महा राजकथं ॥ राजा वाच ॥ मंजिन्न भक्ता हं ॥ ५ व भं पो किं कर्तव्यं मन्दरा गंधं ॥ ६ दानी
फमित्पू ५ क मा र्ग ॥ ७ पु नं नय नायति ॥ तमा म कुी भक्तिनाय थायू र्व कृत्वा ५ क मा र्ग निप नायति सव विद्व न मी मैये ॥ तमा वि
जय स नाना म राजा मा सू वना गनीं सु क लां ना र्क कृतवान् ॥ न भू न का भूम हिष भ तानि गृ क्त ४ भू न क ना बी भ तानि गृ क्त क नू पा

विशिष्ट॥

योवनमडिता। कविदत्तकानिश्चयानमतानिगृह्य कृत्वा। तन्मा सर्वसम्पत्कृत्वा सर्वधो नाऽसुवाधिताऽस्वयकस्य फलमस्यो
नासनापनयं प्रसादं दायित्वानुमानात्तवा कदा सुविजयसंज्ञा नाम राजा वा कृत्वा सुखनमिहति॥ उवमववा कृत्वा न द
धियासनसुवाजासूत्रदयः॥ काले गतः॥ अस्मिन्ननख॥ सिंहे जन्मा बहवः॥ नायादृष्टव्यः॥ तस्मिन्ननख॥ सुफलममृग
हृत्वा सधौ न सनापनयः॥ स्वामिडाहनसुफलममृगजन्मवहवः॥ नायादृष्टव्यः॥ हावा कलसेकमस्मिन्नमिह कृत्वा सधौ सम
चागतनमृगमुखकोरुमवहवः॥ वा कलमाज्जाहनमहापातकनसुफलममृगऽसिंहनरुक्रमः॥ पूर्वस्वकर्मविपाकनयात्

२०

४१

कृत्वा मृगमुखकोस्वामिडाहमकृत्वा नरुलननाहक्रमसिंहननमृवान॥ उवमववा कलस्वकर्मविपाकनरुलं दुःखं किमान
वः॥ वा कलमावाव॥ रुगवन्नरुमाहं गेनमं डीहर्मसन्मानवकस्वकर्महेलाहर्ल॥ रुगवानाह॥ उवमववा कलस्वकर्मविपाकन
मिहस्वकर्ममहापातकं वा कलसुफलममृगस्वकर्मविपाकनपूनवपिसुफलमपर्यक्तं नानकीयापूवन्ति। पूनश्च सुवदया
नाम राजा सिंहे जन्मं लब्ध्वा उकनगर्या उववाजावहवः॥ पूनश्च समंती तस्य पनमपीति उवमकीवहवः॥ उवमववा कलमाज्जा
हं महापातकं कृत्वा॥ वा कलमावाव॥ साधूरुगवन्साधूसुगतः॥ दानीमवन्नागा डीहर्मरुलरुतं स्वामीरुक्कति॥ रुगवानाह॥ वा कल

[illegible]

षष्टित्वं वा क्रमविज्ञाया नाम तथा गार्हपत्यं ४ सप्तमं वृक्षा विद्यावतसं पत्रं ४ सुगन्धालाक विदुर्हृदयं वृषदम्यसावधिभास्वाद
 वानाच्छमनूष्यानाच्छवृक्षा रुगवानिति ॥ तदा वा क्रमो मुदिन ४ पीतिसोमनस्य जात ४ रुगवत्तं प्रियदक्षिणी कृत्वा प्रणियत्यन
 क्रित ४ दक्षिणा दत्त्वा प्रकाश ४ तदा रुगवान् स पार्श्वदक्षक ४ स्वकाश्रमं प्रकाश ४ ॥ ६० ॥ निधी विविक्त कर्त्रिका वदानस्य
 माध्याय ४ ॥ ७५ ॥ युका वाव ॥ अथैकस्मिन् समथं रुगवान् कपिला कथं महान् गयीं विह्वलित ॥ अनकदवना गय कर्गधि
 र्वा सुवगलन सार्धं यच्छमन हि हि ४ समचागत ४ स्वाधिसत्वे गलनं यनिवृत्त ४ सयर्षहि यनिवृत्ता रुगवान् सत्कृत ४ मानि

विविध॥

त० पूजित० त० सिन्धुसमयक० नाम ग्रामयका भीरु सिन्धु (भव किता नाम हत कय निवसति॥ स्वधूर्त धुव० विन कः
वान निरुं हत व्यापा न क० तस्य का का सुन सिफा नामा य न म सुंदरी य न म पूरुष न मा सा ह सिफा ला क मा हनी सुत र्त्त हत न प न
जय मे ला फान् ॥ व म न्न न पा न न स ह त क० की पू नू धी नि षु त० सु ख न ॥ त त ० क सिन्धुसमय य न म ह त क न डि ऊ न प क न स च
किता नाम हत क० य वा ज य न ह त न सर्व व सु नि गृ क्त ॥ त द धि क ह त य धं द यं न न कि तं ॥ त मा स्व किता ह मा दी न म ना स्व
गृ ह सि त वा न् ॥ त त० का का उ व मा ह ॥ स्वा मि किं क र्त्तु वा मि दानी ह त य धं क र्थं दा त व ॥ पू रू धा वा च ॥ न न कि तं का क ० ० दा

२२

नी उ व किं क र्त्तु वं म न्द्र हा ग य क सि न क ना पि ह त ना पि य वा ज य मा हं दे व था ग त वि ना सि तं म ॥ ना य व मि दानी रु द व धि
त मा ह त क र्त्तु वं ॥ का का उ वा च ॥ स्वा मि न किं क र्त्तु वा मि दानी श्रु व धी न य त्वं ह त व्या पा नि क श्रु नि र्धु श्रु न मा र्त्त व नि त ह्म
त द नू उ व य वा न्न पा न वी हि न ह त त्या त का का या ० सा र्ध वि का य ना व ह व ॥ व कि त ह त स्या का रु धि ऊ न य म ० ० दा नी क ना न्न
पा न न श्रु वां जी वा च ० ना न्ना या य म र्त्त य वे द (न वा य म वा व न वा किं वि द पि या व यि त्वा स्वा न पा ना दि हा रु वं ग य मां य न द न वा
सं ॥ कां मा वा च ॥ क न ह रु ना स्वा मि न् य न द न वा सं ग रु वी क न वा ह न न वा ० ह न न वा ज य न वा त य न वा किं क र्त्तु वं य क वि त्वा

विविध॥

चूना ४ यागयूक्तं न सन् ह्यनपूर्वकं न भा क ह्नु नाव तथा वनं गत वं त ४ त्वमेव ह्यनहीन असाधुत्व ४ जपस्य याग हीनता ॥ तव
इतमकज ह्यनया फ क्रमार्ग तस्मा क्क न ह्नु ना तथा वनं ग क र्वा ॥ तव माया ग्ध र्त्तं पुन र्त्तं का उर्व व द क्षि ॥ अत्र या न वि ही न न द वि
उरुत क न व ॥ इत न य त्रि ह वा क स्मा त् ग क र्वा स ४ तथा व न मि ति ॥ पू व्वा वा व ॥ अल म ल न वि वा द न किं का क दे व क र्त्त का म कि
व क्षि नि श्र य म व का क ल मा ग ता वा अ ना ग ता वा ॥ त दा का का वा व ॥ न त्व त्सं सर्ग ग ता कि म् यू क्ता यू क्त्वा व द म्पा ह ॥ अ व ष्म मा ग ता ह
वे त व सं सर्ग ता म म ॥ पू व्वा वा व ॥ उ व म व का क हा वि ना य था ग म्पा ता मि ति तथा व नं ग त वा न् ॥ त ता व न य द (अ ह ल ह्नु ला

२३

हा व न वा स न रु क्त न क सि चि त् त्व व न ग क व म ना व म ह्नु त् अ नू पा फ ४ ॥ त क ष्च कि ता ना म ह्नु त क ४ की उ नि व म ति वि श्र म ति
उ व म व क्षि त्ती यू व्वा ॥ त ह्नु त् ज टा ना म वा क सा म हा धा व प ना ज म ४ त व न य द (अ म ना व मा ना म उ हा या ग त्वा स म्प दी य
व्वा वि श्र मि ता द नि त्ता न् स म्प द र्थ त्था ४ सं स दि आ ग त्वा व ड त्रि त वा न ॥ मा न व कि म र्थ मा ग त ४ क स्मा दा ग त ४ त्व म्पा थ
मा ॥ त त ४ स इ त क म हा वा क स म्प व मा ह ॥ ने व म हा वा क स अ ति स य द त्रि ड तो हं ही न दी ना हं वा न या न न सं पा फ ४ त्व दा श्र म न
वि ह्नु ता हं म्प ना व म ह्नु न मि ति मि ति ॥ त दा वा क स म्प व मा ह ॥ मा दी न ह्नु मा न व ना द त्रि ड पू व्वा ना स म र्थ अ स म र्थ अ

विदिज॥

निकथमजागतं भक्तिरसि विभषतसि या सार्धं आगतमां प वाजय ह्नुना न्दानीं ऊजग कथं मम ह्नुना फ ४ यूवापवा
भं ह्नुनापि॥ ननाचकि नाना म इत क ४ की पूवूषोप क म्यमानो ग नद क ४ पूर्य ना क स म व मा ह्नु॥ क म स म ना क स म व मा
दीना ह्नुम स म र्थ श्रु कि कु म मा न्य पूवूषा इत न प वाजय ति। सर्व स म्य हि पु स र्य ग ता गृ ह्नु क जा दि कान विना सि ता कि कि द न
या न व हि त म म ना उ व न मा ग ता ह्नु नै व ह्नु न न वा नै व ध र्म क र्म न वा दान न वा॥ अ न्न या न नानू या फ न नि श्रे य म अ ज ग ता ह्नु म न
क म स म हा ना क स॥ ना क स स म व मा ह्नु॥ मा न व श्रु ता ह्नु श्रा हा नं तां मा हा न का ह्नु नि वा स ह्नु मी म अ ग त व क र्थ मा व यि त र्थ॥

२४

नाथ व मान व म कं ह्नु कि ता ह्नु॥ अथ वा तां पा व य र्थ न व का कानी थ म म व म म व विलं वि त न किं म यि य ह्नु न जा ग ता ह्नु मा
या पूवूष मि लू का ह्नु क य नो च न द ना ग ता वा क स॥ न न श्रु कि नाना म इ ता ह्नु॥ मा ऊ वू २ क म पि म म स म म नं क र्था प व र्थ
न व ह्नु पा पि त क य वा यि थ ह्नु॥ न ना वा क सा ह्नु का व ना द ना वा व॥ अ ल म न न पूवूषा र्थ मा न व य ह्नु हिला वा ह्नु सि वि लं वि
त न किं स म म नं ऊ वू च॥ न न ४ की पूवूषो मं श्रु ता स म म नं क ना ति॥ पूवूषा वा व॥ क मू पा यं का न हा हा दे व का र्थ तां क र्थ मा व य
यं अ ज व था ४ हि त ह्नु न॥ अथ वा मां ना क सा ह्नु यि त र्थ न द पि अ व था ४ हि त ह्नु वि ष्य नि न ह्नु ता ह्नु क ना मि॥ कां ना उ वा व॥ अ पू वू

विधिः॥

मकपूपायं क नामित्वां नाकसाह किं यदि जीवितन किमहं श्रुतवा त्वं जीवितना कानमस्ति वक्षी जातु हं किं मवमरु
किमयदि यत्नमवमस्ति निश्चयमवयत्नं कुरु॥ पूर्वसम्पत्तमा कुरु श्रावयामानवः ४ स नाकसुवत्तन नमस्ति नमयि ॥ नितिविलं
वितन किं हापुत्रुषमान्यथा श्रावया ४ पुत्रुषं ह विष्पतित्वदिनान्य किं ॥ दानीं सु नाकसाविले मितरुगति सु नाधन श्रावयि
यिष्पति ॥ १०६० कार्यम॥ पुत्रुषावाव॥ काकनस्तमाहं युद्धं विना सु नाकसुवत्तनमवमव ह निष्पति ॥ सुक्तात्तयवदतिहायापि
नाकसुतिष्ठतिष्ठ॥ विना युद्धं नयेमो नायति श्रागच्छगच्छ सुक्ताचितवान्॥ नदा सु नाकसुस नाधनं कावनं कृत्वा हसति नदा

२५

नाकसावाव लोमानवमाहं नय नायति श्रावया ४ पुत्रुषो रुक यिष्पति॥ हस्तधकनमित्युक्ताजि काललनपीषल॥ लाहि
नाकमहाधाव निजगमत्तदा पुत्रुषः॥ नरु ४ यवत्तनं गजा सिंदी वविक वदिनानिथु नमा सुवकिता नामय नायत॥ पुत्रुषावाव॥ का
युद्धं नम कुरु कुरु वधं यथा सम्पत्तं कुरु ॥ निति नदा दीनमना तिष्ठति॥ नमाका का समुत्तयमवत्तजीवितमपि नाकसुवत्तमाह॥ ना
कसुत्तवत्तवत्तवत्तपापित्तं वधं यथा मत्तं कुरु वत्तजातिममपुत्रुषमाह कयितव्यमिति॥ नमा नाकसुत्तवत्तवत्तधीत्युक्ता
सुमात्रमगुहायां नो यमवत्ता॥ नाना वत्तविधिजा र्याकां वनमयां वृष्यमयां दिव्यगृहमिव काष्ठं मूर्तिपालिकां पलवमाना र्यामना

वि विज॥

विशिष्टः॥ मायां॥ ननु॥ सावलातां गुहां दृष्ट्वा विस्मयमापन्ना॥ ननु॥ नाकसंभूतत्वात् भवमाह॥ ननु॥ त्वं मानूषीसूषमनुहयसंभूतगृहानः॥
यानगृहानवकुंगृहाननानालंकांगृहाननाथवमनसाकनासितदवधिरु॥ त्वत्समक्षोपूनुषतुन॥ यथाहिल्लाषनमसममाथ
म॥ ननु॥ त्वत्वात्वात्॥ किंवरुनाहं नमयाकवाधिकावमांनानाहिमूनसि॥ ननु॥ नामिवर्नमीर्थदर्भग्रामकथेवव॥ अत्रत्वा
जात्यहंस्वामिन्देवथागदिहागता॥ ननु॥ त्वार्ननानामिवावहार्नकथेवव॥ गृहकुरुकुरुस्ववत्त्वकवीर्कुरुसर्वक॥ नाकसा
वाव॥ ममस्वगधिविषयमहंकुरुवर्हक॥ पापकदेवथागद्वहन्मीदृग्मयाधूना॥ अथ॥ नाकसंभूतमपि सर्वावधानी

[illegible]

विधिः॥

पर्थदृष्टान्तिष्ठापीतिमनवाजीविनंवायत्वंकृत्वाकसिन्दिदागभाहंकिमर्थत्वांभावययमित्युक्तागच्छतिस्वावाकसेनस्वमाश्रमं
नीयमदिनादिमासावधिगतः॥ नभावां(सावाव॥ पूनूपकिंकर्हयमिदानींजुवधवाकसु४मानुषवाकसुथा४हृकमहृकककिन
स्मादभक्त्यात्किंकर्हयमिति यथेवंतवदेवहृतत्वं॥ नदावकिनइतकवाकसा(यवादिनिहाकाभज्जुनिष्ठसि॥ काविद्याका
ककथंमामनुस्मरसि॥ कविद्याकाभज्जुवदनंनहंदर्भययंकाविद्याकाभथवावाकसाहृकसिप्रदर्भनयंकथं॥ कसिंविद्याकां
त्वयाउहंकथंनानुस्मृतं कसिंविद्याकाभमुखमाउमंकवाननादर्भनाहंकथमिति॥ नभावाकस४कनूलाविष्टमानसातमुवाव॥

२८

एतपूनूपकिमर्थवादिषिः॥ कंकाकादर्भनाहिलाषतसुवाहंदर्भयितयंजीविनंवापृतंवा॥ वकिनकावाव॥ अहिलाषिताहंवाकसा
अहिलाषिताहंश्रीसुंतिवदतिपूर्वजुवधवागभाहंस्वापिनयत्वंत४नहृतयंत्वांमनर्लकथंदर्भययमिति तस्मादर्भनाहिला
षिताहंकाभथविहावकासुन्ददत्त॥ नभावाक(सावाव॥ निषयिष्यामिपूनूपगृह२नहृच्छयाविद्यापकुतत्युहावेनवाकसुनिवे
भनंगत्वाकाकाया४सर्ववृहानंदर्भयपुनकन४कल्लनसि॥ त्वाः॥ सुपदर्भंदत्वावकिनइतकंश्चविवान॥ नभावकिनइत
क४पुमृदिनमनाजीतिमोमनस्यजातवाकसापूनवादनंनपुनियथावाव॥ हागुवातवकपयाहंकाकाया४मुखन्दर्भनासिद्धिन

विविधः॥ सुखं नान्यपदं (स गच्छ सिद्धिं निवृत्तं॥ त्वं विन मिदानीं गच्छामीति तस्मिन्नाकस्य गुहायां सच कित इत क ४ न पूर्यया मरु पथि
 याप विभक्तिपु विभक्तदा स्वका ना ना क सो विभक्तिमो दर्भितवान्॥ तदा व कित इत क ४ न का पूर्यया ४ निकट उ क लून दृष्टि
 कृति॥ तदा ना क समानूषी भव माह॥ शव जल किं ना वसूत्र गृहा लपानं गृहा लव कुं गृहा ल विविध लंकारं गृहा ल मोली कृत्तु ल
 कटक यू न नू प्र न हा ना र्ध हा ना दी न गृहा ल पूर्व ख ह र्हा मा सा व स नानू स व सि॥ तदा सा मानूषी भू व ला ना क स भव माह॥ स्वा मि किं मा
 हा पय सि न ह न वां पूर्व ह र्हा भ क र्थ सा व थ यं ना नू स र्हा नि ध य म ना नू हा व नी र्थं दानी मि ल्कं त व म नी थ न कि म न्य म नू (सा व थ र्थ

२२

ॐ सुखापहसितवदनाकार्हाया पूर्य ना क सक (४ वा रू त्या मा लिं ग्य महा व स ना पू र्य की उ ति न म ति य वि वा व य ति न दा व कि न इत
 क ४ स्व का ना या य वि वा न कं ड पू म स क ला न क (ल न पूर्व लून मा ग ल्य गु नो नि व दि त वा न॥ हा गु ना मूल म ल न कि म र्थ ना क स गु हा या
 ग ना हं मू हा सं सा न नि गु र्भं धि जे न्य ह न म क ने पा न क दे व न ॐ लं दर्भ य नि॥ य घ पूर्व क र्थे पा यं म या स क सू ज न्य व॥ त न्य इ ४ खं व पा यं
 व सर्व मा ह नू मां गु नो॥ त ना वा क्त स प ह सि त ना ह॥ क थ य २ नि ध य क किं द र्श त व का ना दर्भ नं वा ३ दर्भ नं वा कि मू॥ त ना व कि न इत का व
 व॥ गु ना मूल मूल नि ध र्भ ना हं॥ पु ति द भ या मि॥ त व पु णा द ना ना क स व स न्य क सि न्नि हा हं॥ न पू र्य यां क ला न दा भ का ना ना क स

विचित्र॥

याऽस्य सखा विविध वचनं संलप्य सुवचनं गतं कृतवान् वा कस्य॥ ॐ कृष्णमनिष्ट दर्मना किं कर्तुं वां धिक् नमः पुनाम्ही भां धिक् सुवी
नं माया हृती संसा न ४४ त्वमूर्त्ति पाया वनी धर्व अनिष्ट मसा नो सर्व ह की का क मि वदा व समू हां ये भू न्यतां माया दर्भी ॐ दम भव ॥
आ क (सा वाव॥ ने व निष्पा माया हृती पुन व व य क माया हृता क था पि न दे व हृता न॥ ॐ दम दर्भि न ह्यं मिष्ट मिष्ट सर्व कर्म व सा त्या
य न क थां वि न् न दा च कि न हृता का वाव॥ क न कर्म ना क न बा न क न म पु ना क न न ॐ दम ड ह्यं पु ना व द र्भ ॥ आ क (सा वाव॥ न ह्य
मा हं मिष्ट दे व हृता वि न ४ क थां क थं ह्य न र्भ ॥ न वा हि ला ष हृता अ ग क म या सा र्ज ग क व ४॥ न न अ कि न हृता वाव॥ ऊ ५ पु

१००

मा ह्य वि न ४ क थां ए क म म नू ग्र हं ऊ नू म म वृ षा क या नी यं य था॥ आ क (सा वाव॥ अ स्ति क पि ला क य पु न व न भा क पुं ग वा र ग व
न सर्व गु भा क व ज हृ (अ ह्य ही न दी ना नू क म क ४॥ सर्व ह ४ सर्व दर्भ क ४ द या सा ग न द व ना ग य क ग ध र्वा सु न कि न व म हा व ग म दि
हि र्मा नि न पू जि त अ सर्व सं भ य क मा न ४ त्व म हं त सि नू ग ला सर्व वृ ला कं हा वि न ४ क थां ए क य मा ग क ग क मि ष्ट ॥ न न अ कि न
हृता का वाव॥ अ नू ग्र हं ऊ नू म पु ना उ व म वं अ व का वा द द र्भ ॥ म पु हा (सा हं पा य द ही सा द वं क न कर्म ता म वा उ वा निष्ट दर्भ न क न हृ
ना कां ता व म ह ह ह्य म (प्र व ना क स हा वि न ५ वा वि क य तां क पि ला क य म हा पु न व न भो ग न वं भो॥ न न को वा स न ह ह न म म न ग

विविक्त

नयननिगम कथवाकपिला कथमहापू नवयं जाकव मो ॥ न मां हगव कंदर्भितव मो ॥ आसादिकंदर्भनीयं हि कृगलयविव
नं लाकपुहर्वलीयं मां वनीयं ददिय मानसुर्व विम्वमिव दृष्ट ॥ सुवाकलमु प्रद किनी कृत्य हगव न मत्त दवा वत ॥ न न भु
कि न ह न क ह ग व न ४ प्रि पु द किनी कृत्या पा दो मि व सा हि व दि त्वा उ का क ति ष ति ॥ न दा ह ग वान् सं वा न वि वा न य नि रे हा पू न् व
क स्मा दा ग मो पू न् ॥ का जा नि का द भ यू व था ४ न मा वा क् (भा वा व ॥ वा क् (भा हं ह ग व न् २ सु ग त वि मे ला ना म ती र्थ वा भ्य हं ॥ पू न् व
कि न ह न का वा व ॥ (प्र क्ष हं ह ग व न् (प्र क्ष हं सु ग त व कि न ना म ह न का हं क र्क भा ना म ग्रो म वा सी ॥ ह ग वा ना ह ॥ कि म र्थ मा ग त स्तु

१०१

वा क् न का हं उ क स्य ॥ वा क् (भा वा व ॥ ना न्य वं ह ग व न् ना न्य वं सु ग त ॥ त्वा म व द र्भ ना य व न् द ना य प र्यु पा म ना य हा वि न ४ क थं
प्र व ना य वा ग मा हं व कि न ह न क स्य हं उ ह न त्वा न् ॥ ह ग वा ना ह ॥ क थं वा क् न का हं उ ह न क ४ प्र थ य प्र ति ला ष य ॥ वा क् (भा वा
व ॥ प्र ति द भ या मि त स्य ह ग व न् सु र्व व ह न ह न मा हं ॥ क दा वि द क सि नि दि व स न मा व र्ण ग मा हं म ना व म व न् प्र द (भ नं व कि न ह
न कं ह क्ष हं ॥ न न व कि न ह न क न वि वा न सं वा र्य न ॥ वा क् न का ग न व क स्या दा ग त ति ॥ न दा म या क थि र्ना न्य वं पू न् व क सि नि
व न् प्र द र्भ वि व वि ता हं उ वा क् (भा हं मि ति ॥ त्वं क थ य क थ म प्र ति ष सि का जा ना नि क स्या दा ग त क ४ सु हा य नि र्ज न व न ॥ न दा न

विनिर्ग

नानकविलायनववननमयि विष्णुपयनिहावाकनगुवाजूनग्रहंऊनूभयापदहीयनमइ४खीवकिमानामइतकाहंकांता
या४साईमागमाहमज॥नदामयाकंकगकुसिकाक४नकिमहिलापहुनाजागतहं॥सवकिनइतकावाव॥उवानिभिवमहि
लायनवइतयनाजिननसर्वसम्यहंविनासितभेननघोनयानवदिननजूनकलात्काकाया४सहमजवनपद॥अगगमाहंनमा
कलाजाकसागल्लकाकानीयनयूइकलासपनायतिरनदाकांतानीत्वासनाकसुगहायांगनवको॥यनमसुन्दनीसुनसिका
नामाऊदभययंअनूग्रहंऊनूःसुहंसदयायूकनाहंनवकाकामुखदर्भयिष्यसिभनकृष्णयायाविद्यापरावनगकुलंनारुस

१०२

वसुनियथकयापयसर्वसम्यकंल्लानमागकुनिगलावाकसुगृहसकांतावाकसुथा४सुवतभृश्वरंरुतंदष्टपूनवयिउनिनि
वृत्तसुसुयिनिवदिनं॥ममापिस्त्रीनामपिधिकावत्तमाहाविर्गुलसुसारंमायावाकर्महृतमावाकर्थगुवाःसुकाउंल्यिगन
योहगवदभयमसुगनराविन४कथांवकिनइतकस्यसंभयकंदनायः॥नदारुगवायुहनिनवदननडाकलमवमाह॥वाक
लकथयामिभृभृसुवकिनइतकस्यराविनकथांकदाविदकसिन्नंनवपूनाकावर्भखपूनीनाममहानगर्याविमलभंश्वनामना
जावरुव॥नस्यकांताविमलानामदवीसमायत्र४सुवरुयनिक्कुर्नगवलाचित४उजावसुनसुहिकाववरुलाकाफनिवासितावा

ਵਿਵਿਭ

[illegible]

॥ वहुनामसमूहारूपस्यारूपगृहाधियः ॥ द्वाग्निगुन्मातिथ्यं पितृपुत्रं (थेवव) ॥ निरुपवाविनं नवेत्यविम्वारिनं पूनः ॥ वनि
कृष्णिकार्येषूपगुपालेषुनित्यसः ॥ किंविद्वाधिसंपन्नाः सदा नालित्याधयः ॥ अथेकदहवकसि-कालं २४ स्वस्य हंडुना ॥
तदास राजा विमलर्णवसुस्त्वावकैपेवत्याकामावागहवति ॥ दिन २७ वनिनवानकीउतिवमतिनिवकन ॥ तदाउकसि-समयसा
वम्यकवनी राजानमवमाह ॥ महा राज दिन २ मयित्यमागतः ॥ ७ वमयिधनं वा वरुं वा रूपमं वा गृहं वा कर्तुं वा ७ वमवनदीयसकि
मर्थं हंडुहूमाममतिवन्नहामितिल्वदसि ॥ सर्वमर्लमरुर्लडाहमाजं पाफमिति ॥ राजा पाह ॥ प्रियवम्यकवनी गृह्यतत्रिपिरुनद

विशिष्ट

रुपं धर्मं धनं वा वसुं वा रूषं वा गृहं वा यदि दीयते मया तर्हि लाकाः ४ ह्यपि यिष्यति सा राजवमनीयमनमनीति तस्मात् ॥ उवं हल
हनदला हं गुफी कवगहता ४ मा ४ ४ खमनू ह्यस ॥ वम्यकवती डवाव ॥ महा राज किं च दूना पुवा दना हं यथा ह्यपि तं त सर्वे ॥ उवमव
स राजा वम्यकवत्यां विह नमि ला वा क्रम ॥ नदन रुनं क सि समथ म स्या रु र्पुत्र ॥ उन रु सर्व ह्यलान् विविं न यति ॥ किं मया पाथ
न मन रुं मनू रुत ४ ख का कान स्वा धिना नू पा का हं ॥ किं व रु य म ह मि ह य न ला क मिति ४ ४ ख मनू पा फ ॥ वा क्रम राजा विमल संख ४ त
स्मात् कर्म विपा कान् क र्क आ नाम ग्रामे क द ॥ व कि ताना म इत क ज न्ना व रुव ॥ मिया सम्य न ४ अ पि व वा क्रम स पुत्र ४ नाम ॥ श्री

१०४

मना ह नाना म व न ख ॥ उ ड र्क ज टा ना म वा रु स रु न्ना व रुव ॥ न न क र्म विपा क ना स्वा व कि त इत क स्य स्वा कां ता ह न र्ग रु व ति सर्व भ व वा क्र
म स्वा क र्म व सा रु पा य न न ना ४ ॥ वा क्र ॥ ला वाव ॥ रु ग व सा धू सु ग न पु ती मा हं ॥ रु दा व कि त ना म इत क ४ स ह सा समू ह्य य पु न व पि रु ग व
नं डि पु द कि ती रु ला वाव ॥ उ व म व रु ग व न व म व सु ग न व रु ना कि मू रु ना हं हा हा हा ॥ उ ड र्क म स सा वि क मि ति रु डी स्ति ४ ॥ रु दा रु ग
वा ना ह ॥ म ज्ञा स्वा यु नि व द यं रु स ह र्ग मा न न ॥ ला रु रु र्ग ना ना वा डि पु की ॥ सु वि र्ग रु रु र्ग पी डि तं ॥ रु रु नी नि ल य म न क सु वि र्ग म रु
रु ना वा शि र्ग रु रु का दि वि व रु त वि पु नि रु म न म नी नां रु र्क ॥ रु ना रु ग व ना व न र्ग पु ति रु रु तं ॥ रु रु रु ग व न ४ या द या ४ य नि च हि उ

विविध

वमाह॥ अहावृक्ष अहाधर्म अहापुत्र्यवर्षकः॥ अ-धरुतमाहं नाथवृक्षवाधिनमानमः॥ एजापिविषयत्सर्वस-सात्रिकमनिष्ट
कं॥ पूर्वकर्मविपाकं मनाभयरुगवमहन॥ वृक्षहानारुमं नाथवृक्षवाधियदंयूनः॥ वृक्षश्चपदं दहियुष्मत्पादप्रसादनः॥
तदाहगवान्कनूतयाविष्टमना॥ असीयुनोक्तधर्मदमनाकृत्यागतपदंरुवान्॥ ह॥ असीवा नानस्यांमहानगर्यात्वंवृक्षक
उवकयूहानामतथागताहविद्यति॥ अनूरुनासम्यक् वाधिं पापभासादवा नावमनूष्यानाच्छूद्राहगवान् रुव॥ ॐ हं म
यिउपासनहउरुतत्वावृक्षवृक्षतिस्यनमहउ॥ ॐ हं मवमनूपापयिष्यतिगच्छतिच्छावितवान्॥ तमाहिकवाहगवर्तसाधुका

१०५

वंपदायस्वकस्वकानिवस्यनिपुकाः॥ ॥ ॐ निग्रीविविधकथिकावदानंजुष्टमाध्यायः॥ ॥ अथा॥ भाकावाव॥ यद्
हं श्रीमतासर्वं वाजन्मं अ-नयवतन॥ सर्वसम्यक् भांशुत्वावृक्षनस्य कथंरुवन॥ उपयुक्तावाव॥ अथेकस्मिन्मथरुगवान्
वृक्षकटपर्वतविजहानसर्लाकावयतिस्म॥ सत्कृत्वाउरुत्वामानयित्वापूजयित्वादेवनागयकगधर्वासूत्रगवूडकिन्नरमहावे
गादिहिः॥ सार्धं हिंस्रसंघेः॥ सर्वलाकपालेः॥ वज्रवर्धमनूष्येः॥ धर्मदमयतिस्म॥ तदावाक्कगरुगवर्तं उरुदवावन्॥ रुगवकस्य व
किन्ननामहकस्य पूर्वकर्मविपाकनउवमवंहयतिममकनकर्मनादीनवाक्कगरुगमाहं॥ रुगवानाह॥ वाक्कसपादीनहं

विदित

[illegible]

वाक्कनवक्त्रामिलकवेत्यहलंमहत् ॥ साधुश्चक्रगुलकवेत्यवतंविधि ॥ भूतंमयाहृतपूर्वव्यातास्वर्धवनीपूनी ॥ तस्याहृत्य
 हीयालस्वर्धकडुविधीयत ॥ तस्यदवीमितिख्याताहि नत्थवनीतिविश्रुता ॥ समूहतातता नाह ४ यच्च राजवत्तला ॥ पथर्म
 पूष्यकडुश्चनसकडुविधीयत ॥ सूर्यकडुहनीयं कडुवर्धदीयकडुकं ॥ यच्चर्मवत्तकडुस्यान्पसिञ्चा राजवत्तलं ॥ तत ४ पूष्य
 कडु राजकुमा नावाव ॥ आगमिष्यामिहतात, तज (अहं मूलं) ॥ वियन्त्रीरुगवा नाथरुक्मानम्यसमादनात् ॥ तत ४ सु राजकुमा
 नायित नोपनियत्य पूजां गंगहीत्यासंयति ॥ तत ४ यत्रवन्धुमतीमहानगर्याकनायसंकुम्यरुगवर्धुपिपदकिंभीकृत्यादीनत्वापू

विविध

ऊयामासुपार्थिववान् ॥ हगवनहंसमिहामिवत्रिउंवेत्यसम्भवं ॥ तदादोकिंउंमंधृत्वासंवयंयसमाहितः ॥ किंरुलंकिंउंमंधर्म
किंभयंकिंविधिसूतं ॥ कनसंवयंमहर्षिरुगवनवृद्धिभयं ॥ हगवानाह ॥ अथुनाजनमहानाजलकवेत्यस्ययंविधिः ॥ एकसंका
नकस्यापिअनकरुलमाप्यतः ॥ पथमंशुद्धरुहागमेहिकाग्रहणादिकं ॥ शुद्धदिवसमादायसूदननवतसा ॥ गृह्णन्निमृष्टि
कायवालकवेत्यर्थहृतवावलवान् ॥ गवाधीमानस्याघानीयाहवन्निवे ॥ दिवसाथानूयनमासपकवि ॥ अथतः ॥ वर्षवामा
सपकवापुनिदिनंवि ॥ अथतः ॥ मासपधानवच्छिन्नावनकार्त्तिकथवा ॥ शिवर्षयवर्षवासंपूर्णकृत्वावयम् ॥ आदोहन

१०१

कर्मातिनेकेभ्यःसंयच्छन् ॥ दक्षवन्सकुर्यायदीकृन्निपतीजनाः ॥ जगन्मूल्यपुनित्जनास्त्रानंपूर्वामुखंपूनः ॥ शुचिर्वर्ष
समावृत्यतथाकुर्याद्वि ॥ अथतः ॥ राजावाच ॥ उतारंहंकृतंयनजालीयाकिंवत्वायकं ॥ विधिनातत्तः ॥ श्रीमानवदमाकृदवादिना
ह ॥ हगवानाह ॥ निनाहावासदाहावमकरुहंसमावयन् ॥ गम्यन्त्येकगव्यंवाकीवमहर्षिरुलमवव ॥ जालीयायदिहृक्केववेत्यविं
तथाकृताः ॥ अमिषंमययानंवेह्यार्थहंसंयच्छन् ॥ राजावाच ॥ कस्मिन्सूतपुत्रवीतवेत्यकर्मउतार्वर्न ॥ सम्यक्कुर्याद्विह ॥
सर्वसत्त्वार्थकावयम् ॥ हगवानाह ॥ दवाभ्रमविहववानदीयूकनलीपूवा ॥ यवमंशुद्धरुहायूथकृत्वावयम् ॥ गमयन्समाति

विशिष्ट

विचित्रं यत्तु नालां वक्रा नयत् ॥ वदनादिसूगन्धो लययत् सिंवनं तथा ॥ धृजादि वामनायाश्च लम्बयत् सुविज्ञानवे ॥ वडुर्ध्वजं समास्तु यवडुर्कालि
नयेवत् ॥ पथमधर्मध्वजं येव नत्तु ध्वजं द्वितीयकं ॥ हृत्तीयं मयूरी वापि पद्मध्वजं तथा यत् ॥ विज्ञानवामनायाश्च पूष्पाकां लम्बयत् ॥
उकाहिं साकं कश्चिन्नुभो वयनि ॥ आधयत् ॥ पक्वगवानसं सिंवात्य कर्माय सर्वतः ॥ ध्वजादि वामनायाश्च लम्बयत् सुमानसा ॥ वनीर्नाथे
वृक्षानावपुतिस्तु सुभवनम् ॥ नाना वाव ॥ वेद्ये विस्वस्य कर्मस्य बुद्धिर्महगवः कथं ॥ मृन्मयं वा वक्रगुहाय कनसंकीयत नन ॥ रुगवानाह ॥
मृत्पूजाजत्रन ॥ मृन्मयं आधनादिकं वेनावनस्य भवनम् ॥ मृत्पूजां आधयत् ॥ पक्वगवाने श्वगवोश्च पक्वत्वादिमिश्रयत् ॥ समस्त

[illegible]

विविक्त

सिंहं (महावाहा) कलपूजितं सदा। संख्या व कपुमानन अधिकं काटितामपि॥ अक्षुध्वाहु हि संस्कार्य नानाधातु वि (मघतः)॥ अने श्व
वरू विष्णुकार्यामृ न्ययं व वि (मघतः)॥ वालुकं अदनीवेव (ममयस्कंदमवव)॥ सुटिकं कावदकं वा निर्मितं वसु रुदतः॥ उर्वति सुव
यं व वा सुफ मंदमवव॥ विदमं पक्व दमं वेव विंम सुफ दम सुथा॥ शिमतिसा भन म्वापि सुहसुं ल क मवव॥ अधिकं काटि पुमा (म
नवेत्य कर्मस्य तद्विधिं॥ वाक् (मवाव)॥ नरु लं व दता मि उवेत्य विम्व रुतस्य व॥ ल कवेत्यस्य कर्मातिरुग व न्य वमार्थ विरु॥ रुगवाना
ह॥ वेत्य विम्व कर्म य पिमृ स्यं वालुक कथा॥ अदनी (ममयं वेव) अक्षुध्वाहु क्तिमानसा॥ धनागम व सो रा गं हान निर्वातं माप्यतः सि

१०२

खना कथमं यं नानां (गे विं (मघतः)॥ खनिकया रुक्मि युक्तं य वर ग (धे सु) ये वव॥ विरु नूप मि व सो मं सुख स म्पद मा प्र या न॥
यान या व मृ ग्वा क्त म सुहम॥ गुरु कां म मयं वेत्य य ४ क मा नि विष्णु नतः॥ हा (गे श्व र्य सु सं तानं अरि सु रु ल मा प्यतः॥ का सु पा
वा म य ४ क धि दि सु का रि यु क्त वं न॥ गु म वान् हान वान् ल क्री य स (मो रा ग्य सं ह वं न॥ का टि ड वा नि सं पा क पु ष्पा सा स म ही य न॥
अक्षुध्वाहु मयं वेत्यं क मा नि अक्षुध्वा किल धन धा ना दि सर्वा नि उध न हि म नं गुरु॥ सु टिके ४ कां व वा क वि नू य ४ क मा नि रु पा स्य का ४
॥ सर्व पा ये वि निर्मूक्तः (म क वा धि वि वर्जितः)॥ गुरु नूप मयं वेत्यं वि धि ना ल क (ले ४ यु र्ग॥ नूप सो रा ग्य स म्प न ४ सु ह वं य क मा नि व

विधिः

सूत्रे विविधेषु केषुचिदयः कतिमपि समन्ति ॥ एतेन सूर्यसंकारं च वहीरुवन्नवशा ॥ नानावत् विविधां गेः कृतात्मनः क
तिवः सर्वसम्यदसंज्ञाया वाक्यवृद्धयर्दपूनः ॥ विष्णुसमधिकं वृद्धनमृत्पयं वेत्यकस्यव ॥ मरुतुक्तं हलं सम्यक् पृथक् २ म
हर्तुः ॥ वेगवन्नस्य धावन्नासाधना रूपतिर्हवेत् ॥ पक्वगर्भपक्ववर्तपक्वेग (स्येवमिथयम् ॥ समरुद्धस्य मरुतुत्सफेधात्मकेना
हर्तुः ॥ आयुना वाग्यसंपहं माकस्यपदमायम् ॥ वेसूधतिमकुलमृत्पयं ग्रहनादपि ॥ ऊष्णपापमहाधार्मनामर्हवतिना न्यथा ॥
वजाहवतिमकुलमृत्पयं पिबुनाहर्तुः ॥ सफजममृत्पापपूजान्वाधिमवव ॥ मृनजं नितिमकुलमेतत्संगलनाहर्तुः ॥ एते

११०

राग्यपुनसम्यत्रंदीप्तिवान् रुवति ८ सदा ॥ वज्रधात्वतिमकुलमृत्पयं वेगनाहर्तुः पूजवाहवन्निर्धनवाक्पूनः पून
८ ॥ वज्रमृगलमकुलमृत्पयं योक्ताटनाहर्तुः ॥ मृत्पापनादिवक्ता विविधा लारुसमोपयम् ॥ वज्रकहीतिमकुलमृत्पयं कृदनाहर्तुः
॥ मृत्पापनाधवलवान्निपुसर्वपमाहवेत् ॥ धर्मधकुशुगर्हतिमकुलमृत्पापनाहर्तुः कासागात्रेषु कापशुडसंपदमायम् ॥
धर्मवन्तिमकुलमृत्पापनाहर्तुः ॥ वेसूधतिमकुलमृत्पापनाहर्तुः ॥ सूपतिमिहमकुलमृत्पापनाहर्तुः ॥
धर्मवारूपतिं जायजिनपूजारुविद्यति ॥ लेकवेत्यस्य विं वस्य मया वाक्कससहम ॥ सर्वसत्त्वार्थरुहत्वाहर्तुः मरुतुमहामन् ॥ वाक्क (लो

विचित्र

ये वर्वितपादयन्ना॥ हनपदीपाहनमाहजालायदीपमालां वयन्निवृद्धे॥ दीपमाला॥ भेलाकादिपदीपकथादशाजिनयुग
वामजहिनामा सोलाग्यादिवचनवापुयात्॥ दीप॥ नेवयमस्येष्टदातिलाकथाहृत्तियुक्त॥ सुवसंसुगर्भिवलीविनिष्ठान
नवककुजमन्त्रविनां छिन्नपस्यमानेश॥ नेवये॥ हस्तमूलादिकदत्तावधुहृत्तियुक्तमानस॥ यथेष्टहस्तमात्रातिनिवागीसुखवा
सदा॥ हस्तमूलादि॥ सोवर्धुवयविविधकुजमन्त्रयवाभासादने॥ सुपविपूर्वस्येष्टिपुपाजं॥ हस्तदत्तिसुगतायगनाहमाय
स्याहस्तपुष्पमसमहस्तमपुमयं॥ पिपुपाजं॥ वागदिहि॥ पुववद॥ स्वकनेर्विमुक्ता॥ सिम्भाननाकनकहस्तमनाहवर्धु॥ वाक्यः

११२

हियविगतकलकमापूवकिरेषकदानविधिरुद्राकिवेत्य॥ हेषक॥ ताम्बूलादिगर्भदत्तावधुवानसुखवांङ्कवि॥ दिव्यांगसाम
नाहानीनाजलकीमवापुयात्॥ ताम्बूलादि॥ विमानमूत्रेविननामिरेत्यंधर्मकिराकयनिपूजनीय॥ विमानवंगुगुमनकनीयाजना
महादीपिभनीनरुगशा॥ विमान॥ धर्जायमाकानहिनापयकिथवेत्यविम्वत्तुहृत्तियुक्ता॥ महेश्वनाहृत्तियुक्तसंघा॥ श्रीसंयुक्तध
र्मनमाहवकि॥ कुज॥ गर्हहवकिनाथादिविहृत्तुव॥ धर्जायमाका॥ कुजानिनानामनिहिर्महादे॥ संपादयत्योरुमनादयकि॥ वेत्य
पूहमीश्वरवर्धवा॥ श्रीसंयुक्तधर्मनमाहवकि॥ कुज॥ गर्हस्ववर्धुक्तवाप्यक्तयनस्वहृत्तियुक्त॥ धनधनस्येष्टासोरुवद्वपदंग

विचित्र

[illegible]

113

[illegible]

विचित्र

गवाक ॥ यावन्निहमि वाजा का क (६४) कां व न व क न ॥ याजनानां सह्या निवाभी ह्या य वि की र्ति ता । या वं ह्या वा लू का ४ ना वं ह्या य
वि सं ख या । वा जा ह व नि वी न म श्रु क व र्ही म ही न लं ॥ का टि ज न क र्म या र्थ यु ल्प द ह्य स दा ह वं त् । पु हा य स र्व या पा नि श्रु क या नि जि ना
ल य ॥ य जा न मा जा ४ पु हा तां प या नि (६४) क र्म ज न म स दे व य र्वा ॥ ह स्ता श्र या ने श्र य नि श्र म नि क र्त्ता नू वे ह्य व न प त्ता र्ता । पु त्ता म ॥ य सि
सू क्ता ल य मू दा ह न नि न वा ग (६४) का दि वि मू क्ता द ह्य ॥ ध न श्र वा दी र्घ त वा य म क न ना म वा तां सू र ग ह व नि ॥ सू क्ता ल य न ॥ य वृ द्ध मू
दि श्र म हा नि नि हं क र्वा नि मृ त् (६४) म य त्ता प ना हि ॥ ह स्ता सू उ द्वा ज ल म तु ल म्वा ल ह नि न वा ज व र्म सू र ग ४ ॥ सू यां ग त्ता श्र व र्म

११४

विहा रं य (६४) ध यं ती ह न वा ४ पु य त्वे ४ नि र्मा ल्य म य स्य स मू द्ध र्म नि त ह म व र्ध ४ सू द्ध (६४) ह व नि ॥ (६४) ध न ॥ पु द कि तां य वि न व नि त
सि न्द्र व नि जा नि स्र व ला रि न क्ता ॥ सू व र्ध व र्ध व र्ध पू ज यो जा पू का म नू यान न व ना थ सं धे ४ ॥ आ ल स्य ना पि य ४ क र्वा जि ना ल य पु द कि तां
प द प द सू व (६४) क क र्म दा न र्म ल ह वं त् ॥ उ व म त्ता जि न त्वा व र्ध कि पू जा र्म ल म ह त् ॥ का र्थ ह कि स दा उ व ध र्म शो जि ना ल य ॥ ह स्ता दि र्म
मू नी श्र म श्र ता स र्व सू रा श्रि ता ४ ॥ ला का क्ता (६४) नि वि ह्य या या र्म न द पु वा धि ता ४ ॥ नि म गु नू ता दि र्म श्र म यान (६४) व र्म । ल म (६४) व र्म
दा व क न्द्र र्म त्ता जि ना ल य ॥ उ त्ता न न म र्म ड नि नू ता त्ता स दा ह व त् ॥ वा धि वि र्म व सं जा या वा धि स त्ता ह व रु दि ॥ उ क्त त्ता म नू हा त

विविक्त

यं लुके वे स्य पुं स सा न क मूरु म म व न न क र्म वि या क न वा क न ज न्य ह न ह्यं ॥ गुरुं वा १ गुरुं वा पि दी ना दी नं न (थे व न १३ रु मा म धा
मा ज वे स क र्म रु ल मा रु व न् ॥ वा क स क रि था वे न् ॥ (गु रू दि ही न ज क व ४ ॥ ल क र्म रु ल मा जा ना ४ त स्या द्ध र्म पु व र्च स ॥ त दा रु ग व ना व व
न पु नि श्रु त्वा सो वा क स रु ग व न ४ पा द था पु नि य से व मा ह ॥ मू हा ध र्म मू हा वृ द्ध मू हा पु न्थ पु व र्च क मू च रु मा क र्द ना थ वृ द्ध वा धि न मा
न म ४ ॥ ए जा पि वि रु वं स र्वं स सा नि क म नि षु कं ॥ पू र्व क र्म वि या क म ना भ य रु ग व न् म ह न् ॥ वृ द्ध ह्ना रु म ना थ वृ द्ध वा धि प दं पु न ४ ॥
वृ द्ध र प द द हि यु य स्या द पु मा द न ४ ॥ त मा रु ग वा न् क वृ त या वि षु म ना वा क स ४ ध र्म द न ना रु त्वा ल क र्म स्य व नं द रु वा न् ॥ ह्नु क्त्वा

११७

ना त स्यां म हा न ग र्था लं व क्त्वा हा ना म न था ग्ना रु व ॥ मू नू रु ना स म्प क्त्वा धि म नू पा य पि ष्य नि ॥ ग क्त्वा नि षु वि रु वा न् ॥ त न ४ रु व नि वि षु
ल ल क्ती ४ पू ष्म मा ना न पा थे दि वि रु वि षु ज ने से द व सं धे र्म द हि ४ ॥ ज मू द न मि नि रु क्त्वा ज न (म मू सं स क म न म म नि र्म य ४ आ व य वृ द्ध ध
र्मे ॥ त मा हि क व रु ग व कं सा धू का वं पु दा य ल क ४ स क नि व न्मा नि पु का ना ४ ॥ ॥ नि शी वि वि रु क र्त्वा व दान न व मा ध्या य ४ ॥
उ प गु फा वा व ॥ मृ ग्ना ज न पु व का पि वि वि रु क र्त्वा क थां य था म गु नू मा दि र्द त था व का मि सां पु नं ॥ मू (थे क सि स म य रु ग वा न् वि रु व
नि स ४ ध र्म प रु नी ना म म हो न ग र्था लं व क्त्वा हा ना म न था ग्ना रु व ॥ त मा रु ग वा न् क वृ त या वि षु म ना वा क स ४ ध र्म द न ना रु त्वा ल क र्म स्य व नं द रु वा न् ॥ ह्नु क्त्वा

विविधं कथा दमहि हि कलमे ४ संवत्सरे वा धि सत्वे र्महा सत्वे च उ हि अथ र्षदा यूक्ते र्महा अ वके ४ स वि पति ता व ह व ४ ॥ तदा वि न
 निर्नाम द व पूजा ह ग वं त म द वा व ॥ उ पु द कि नी क ल स नान पू व स न म व ॥ ह ग व क थ म स वि न ना या म लं क न स्या वि या क म सि वा
 ना सि द व ना य नि वि म्ब वा ना लं वा क थे मा वि धा नं ॥ तदा ह ग वा ना ह ॥ द व पू ज कि म हि वे रो न न क स्या दा ग न ह्यं ऊ ज वि न क वि नी र्थ व द म
 यि न म ना वा चि तं ॥ तदा द व पू जा ह ॥ ना ना व ह ग व न् वि न ग धि नी ना म पू क नि सि वा सि ता ह ॥ त न म थ म क म सि ॥ त न वि न क न त म हि
 ला पि ता हं न स्य गुरु म्बा गुरु नं जाना मि न ना ग ना सि न् ह ग व न् यु ति द न य ॥ ह ग वा ना ह ॥ द व पू ज सा धू र म न्न ल वि क न नी र्थ द व य ति

११४

वि म्बं वा वृ कं वा ना ना लं का रं वि क्रि तं वा नि जा हि ला षं वा वि जा य य न क र्म प न म मू ला ह कं गुरु न व ॥ द व पू ज ॥ द व पू ज
 वा व ॥ ह ग व क न क न नी र्थ क न क र्म क न व न स्य क र्म ह ला नू पा या न न स र्वा न् व द वा दि ना न् ॥ त न ह ग वा ना ह ॥ मृ तू द व पू ज न स्य पू
 ना क न क थं व का मि ॥ उ क सि त्र क न का ल वि म ला ना म पू क न नी य क म सि त स्या र्ग म ना व र्म गृ ह म क म सि ॥ त न वि म ला ना म पू
 क नि म्बां स र्म न पू नी म हा न ग र्था मा ग ल ह न द ह्य ना म (ग्रं ठी) ग्रं ठा वां गृ ह मा न स ॥ ध र्म वा न व ना नू वा नी न ना हि ला ष या त न म न न
 म गृ ह ना ना लं का रं वि वि क्रि तं न ल ख य ति ॥ त द न क न ल म्र न क ती र्थि क जे ने र्गृ हं द ॥ क यो ना दि क द र्श नी र्थ म ना व र्म ङ्गी द र्श क

नकनसीयंकनविहीकृतंसाध्वति॥ नकु कसि समथ तिलाहमाना पूना जायति भन हवनवाभीउकदवपूजनसार्कउकसिदि
वसकउमनामगृहनाजोनिवासयति॥ तसि कथा ४ पवस्य न वति कीजसूनननिवासि मो कथा उक वानवा विवा नवा जि वान
वाउर्वनिवसति॥ नदा उकसि दिवस हनदहनाम (अष्टी) विविगृह विमलानामतीर्थस्त्राता नाजोपसूयर्थपविमति॥ नदा
पूवदवपूजोमयिमो नदा आवहनपविवहनमयंकृतं नदा स हनदहनाम (अष्टी) ननु मयंकृतं नदा नुस्यनति॥ कावसति ननु गृह
हउहूतमिति॥ ननु ४ सनकेपु नि निवहयति॥ नत्य आदनुदिन हनदहना (अष्टी) पूर्ववत् नजो ननु गृहपविमति॥ नदा पूननयि

पूवदवपूजो पूर्ववत् निवसति नाजो नमना वमगृह नदा हनदहनापुनवहिकार्क हूष्टी हूतनतिष्ठति॥ नदापुसूयसमथजाय
तिमतिदवपूजपुथमनवसमूहयागत ४ स (अष्टी) ह हनसमूहयनवहिर्गच्छति॥ नदनु सापू नावहि नागच्छति॥ नदा हनदहना (अ
ष्टी) मयसना निवृधमिपमसुंदरी नमनीया आचनीया॥ (अष्टी) नमुवाव॥ हानुदनी कालं कस्यादागताममाथय किमर्थवसति॥
मूथदवा दवकन्यामानुषी वावदलं पनमसुंदरी॥ मूथ नावाव॥ हानुदनी कालं कस्यादागताममाथय किमर्थवसति॥
हिलापया तसि निवसा मिवाजो नाथर्ववहूवी मासमर्क निवसा मिहदवधि ४ मया सूवर्धमर्क दास्यामि पुनिदिनना न्याहं तिलाह
पन

माना माया नाहं ॥ न ता स्तनदला वाव ॥ साधु रदवी उवंक नूप नम हाग (धर्यं मः ॥ तिस्र म्म नं कला युजा ना ॥ तदि नय नम कं सु
 वर्ध्दत्वा ॥ न ता स्तनद रूप नम विस्मय माय न ॥ अहा हाग (धर्यं प्रमुदि न पी निसो मन स्या जा न ॥ स्व गृहं प वि नि वृ ह्य कि
 न ता स्तनद ला गृहं पा य का ना मु वाव ॥ अहा विस्मय का न ॥ अहा हाग (धर्यं वरु ना कि मु क ना भू न वा ह रं वा ॥ का ना उ वाव ॥
 पुला का रु क ॥ ४ ॥ अर्य किं हाग (धर्यं वद ॥ न न ४ पू नू वा वाव ॥ का न प न मा धर्य पा ना हं न सर्व वृ हा नं क थितं ॥ न दा का ना न व
 व नं नू वा प्र मु दि न म ना पी निसो मन स्या जा ना प न म वि स्म य मा य न सा धू सा (धरि प्र ह र्ध म पी पू नू पो सि मो ॥ न न रु द व धि न ४ ५ नि

११८

दिनी सुव र्ध्द प न म कं गृही तं गत्वा न न गृहं वा ना य न व दि का यां प्रु नू ना स्म पि तं सुव र्ध्द प न म कं ॥ उ व म व द व पू न मा स म कं प्र ति दि
 नं सुव र्ध्द प न म कं गृही त्वा स्तनद ला ना म (अ ष्ठी म हा वि रु व म नू पा य न न पू न न्ध सु ख म नू ह य न ॥ उ क सि न् गृ ह वि नि न मा उ म उ वं
 वि ध नू पा य न ॥ न न ४ वि न व ति ना म द व पू न ह ग व न म व मा ह ॥ सा धू र ग व न सा धू र ग न ॥ गृ हं म क सिं वि न मा उ म न न क म म व रू न
 मा य न ॥ अहा हाग (धर्यं म स्या स्तनद रु स्य ह ग व न व रं हं वि न क र्म क ना मि क थ मा वि ध नं ॥ ह ग वा ना ह ॥ हा द व पू न वि न व न य था हि न
 वि नं न वि न य य म (थ वा व हि विं हा व वा ध र्म आ ला यां वा द वा ल य वा वि न य य वि ध न म कं ऊ नू नी ला व दा न पी न व रु ह वि न नं ग म दि स्म

का २

ययित्वा साधयित्वा हि विष्णुं दनं न यथास्तु न विष्णुं यदविर्सं किं न मिमि ॥ तन्मा विष्णुं न निर्मादव पूजा वाव ॥ उवधव हगवधव
 धवसुगतममहिला विमाह मिमि हगवधं जिपुदकिनी कृत्य विष्णुं निर्मादव पूज ॥ स्वमाधुर्म विष्णुं गन्धिनी पूज न नीपुव काम ॥ त
 मापहर्षितन सदव पूज न यथा हगवानास्तु पितं सर्वत ॥ १० विष्णुं विविष्णुं तनाना लंका न विष्णुका विष्णुमानीय विष्णुपयति ॥ तन्मा वि
 ष्णुं निर्मादव पूजा यपुद ॥ वा नानसीम हनगनी न नवान ॥ तन्नु ॥ एषा नाम न वपति संस्कारि विहा न विष्णु कर्म का विहा न ॥ तथा ग
 नपुति विवंधा यथास्तु न दव मापुति विवंधा वेत्यपुति विवंधा मूले मंगलपुति विवंधा नाना पूषा वृकं वा दव वृकं वा विष्णुं रुतं स्वस्वहि

११२

लापितं ॥ तन्मा का म्पाना मरि कस्तु मूख य जिपुदकिनी कृत्य हगवधं न दवावत् ॥ हगवन सो ॥ एषा नाम न वपति वा नानसीम
 हनगनी विहा न कथं संस्कारि न क न कर्म ॥ तत्सर्ववदवादिना न ॥ हगवानाह ॥ मूला का म्प वक्ता पिधर्मा मांधर्म मूह मं नि ॥ १५ कं
 यमनि रूत्वा सर्व ह हनधर्म ॥ १५ पूर्वविदह दिहा ॥ गवासी न धव गो पूरी वा या मदी र्धन न ता व द्वा द मथा जने र्युता ॥ अदिही ता सु रि
 का वदर्शनी या मना वमा ॥ अनुत्पी ज ऊना की र्ध पूर्य मा ना सु ना सु ने ॥ तस्या नाम व ह वा य मि ॥ एषा महापति ॥ जगत्ता मय ॥ १५ का ला का
 नीयूध व र्धन ॥ तस्य पूध वती निर्मादवी कुलंग लावना ॥ मंजी मंजु विद्या विहा हन क कु विमि स्तुता ॥ रूपवृज धृता हस्य यत्युजानी न र्थेव

व॥ हिमादयनयभास्तु पिउ८५ ज्ञा ॥ खिवपिया ॥ ७ वं पंजाया लयन८ गुरुत्वा विना विना सी नृपनायकस्य ॥ पुण्याश्रया पुण्याहनसु
भीलाहृयउवृजहृनयंकजस्य ॥ यथोवर्ननवीनवावंधूस्वजयेजिकं ॥ नमोलादिदावाभानिलयीहनधववा ॥ अथनाजीवरुवा
यंसत्यसुप्रमहीयनी ॥ निजावसगभा नाजासुगभा नाजासुदकं दर्शनकदावन ॥ सिंहासुनसुमासीनं सनाजासुहयावर्नं ॥ सुधर्मदभयनं
नंवाधिसुलंजगुरुं ॥ नमो वावृधनन८५ वाधयटहसुने८ ॥ सुसुक्तकलमडायेवसोलाकदिनंकवसयनासुसहसाहयवि
स्रयागुरुह्लावन८ ॥ अथविनायका नाजावरुवरुवमाव८ ॥ १० निमलासनाजुडनिउधुमहाकुय८ ॥ धावनीकावयामास

पुनपुनसमग्रया ॥ ललापो नृनाश्रयजगस्तुवर्जगमा८ ॥ नृपस्यसंगमार्महंभूतयायनासिनीं ॥ ककुंनलाकंनम८
यनिलिजनानिनीहृवदभयनं ॥ ललाथिन८५ निमला८ समीपू८ महा निधिंहीनधनांवा८ ॥ निवयसुप्रातिभयंजय
भी८ सुविस्मयागुरुह्लावनधी८ ॥ पीलावलनृकुलुलगु८ ॥ ललावनाजाथसुलं सुविनीं ॥ नमसाधुक्रियताह्लावयत्वाध
धर्मसासांपुनं धर्मभाक८ पुनंयामिदुडनवविनाजिन ॥ नमसापर्वदावाह्लाविस्मयाह्लामानसा ॥ ग्रेलाह्लासंगतीह्लागीनं
८ ॥ पुनर्महीयति ॥ नमसाउवृ८ ॥ ना८ ॥ अथन८५ गमसम८ सुखावधर्मजगत्पालननत्यनह्ला ॥ सुखस्यदानासुनमार्गदह्लाव८ ८

माधर्ममिमं लक्ष्म ॥ उक्ता दयदया सिं (धर्मस्य) पुरुषा जगत् । वहुं सु किं वत्तमं कंभीता (धर्म) निवकालवित् ॥ ह्यन कर्तुं समा
 लयतान् वावसु पर्वदं । हेतुजा मीधन श्रीमान् सुपूर्व कीर्ति मेतुल ॥ विहात्र विजय सखा वसुबंधु ॥ वृक्षार्ता वाधिस
 त्वा नां पाकमा (धर्म) पदमक ॥ नृगत्वा जगत्तं मां सुधर्मं अवभायव ॥ वाधिसत्वं दया सिंधूपा मंजुयामि सत्त्वं ॥ अथ पूजा सम
 ग्रं संयुक्तं लालकृतं लक्षणं वर्थं समावृत्तं नृगत्तं वल्लभं ॥ नत ॥ सपो नानुमत्तं विधा यधर्मानुगमार्गमिमं जगत्तमं । महत्तु
 लवधनिहि ॥ सुर्वधे ॥ सार्धं महा माह्यग (धर्म) सपोने ॥ गृहीत्वा वा निवसु निवर्धग (धर्म) रुमानिव ॥ मोलि कृतं लक्षणं दामकयूनक

१२१

वि
 टिव कर्तुं । यामिने वधरुता निरुल मूलानि नानिव ॥ पूषा निवि विधा न्यवजल जसु लजानिव ॥ इत ॥ सो नू पूर्वत दृष्ट्वा विजयपू
 नी ॥ हा नार्ध हा न संकीर्ण किं किनी जालसा रुनी ॥ स्वर्ध नृप्य मय सुं हं नाना वत्त समा कर्तुं ॥ नृवा निमिव कालं हा सय कं दिग रुनी
 अथ नृरुजामि न ॥ प्रवि वभय (धर्म) धर्न ॥ विहात्र विजय मा र्धं हि सवल कीर्ति मेतुल ॥ नृवा सिहा सना सीनं स ददर्श या दधि ॥ नृवा
 ना सिमिव कालं महा कल मूनी नृव ॥ वाधिसत्वा पिरुपाल पातया मा सला वन ॥ आ वार्थ पमिनी वा नीर्ध वन ववुता रुव ॥ अथ आ वा
 व वा जानं वाधिसत्वा मही धर्न । ना वकि सु महा नृजका च र्धे मिहा गत ॥ वंद मिर्ध महा हा ग स गतां धर्म वत्त व ॥ मा कर्द नृप सा ई

लहिमयी सखवत्सल ॥ अथ सांख्ये लिमावध कृत्वा उदकित्तुयं ॥ निवद्यवापहाना निपुणम्या वाचनं गुणं ॥ उर्ववि विस्मयमानस्य
संघर्षार्थं वकानयन ॥ अथार्थिनाम सर्वगुणं लवां लवा सिन ॥ आतीर्णमाय दैवमां वमित्त्व दर्शननाडवान ॥ दृष्टापित्व द्विधं
स्वप्रहवा (ध) रुवर्गैर्व ॥ कश्चिदर्थस्ति मनाथ नवयादप्रसादन ॥ हगवनवृद्धधर्मरू वाधिसलन ममुनगो मंजुयाम्य हवृद्धध
र्मसंघा मृतपुद ॥ अन्नकं पां पूनरु लय म नार्थं गुरुमर्हसि ॥ हिमाय वसुहिको यमा काय पू ल्धरु य ॥ मलय सर्वसंधल ॥ आगता ह
मूदा किल ॥ सर्वमं शुद्धमानपूजाजनार्थं यथाक्रमान् ॥ उवमूक्तं थरूपा लया विनवान् रूपसरुमं साधुसाधिमिसं नाध वाधिसला

जगत्तु नृणां यनागता साजमना न (थ) नरु मं वनरु मिय पूनया मि ॥ समागता स्त्री निमूय देव सर्वे हिना यला क द्ये मया ह क ॥ अ
(थ) से नीर्घं पविपूर्व हर्ष ॥ पुष्टि न नाज पून मृत्यु ना क ॥ पुनम्य वा दो सुगम स्य सर्व विविज वाद्या दिपू नस्म नन ॥ ला अमा नयं स
र्वथ वं न वा प वा सुका ॥ ममु वमु पविधाय नाजारु ह स्वमं जित ॥ स्वखला र्व गृही ला उ गम्य न मुद्धमानसा ॥ दीर्घक न प्रहि निनयां
वना थात्मकार्कय ॥ मलय ॥ सर्वसंधल ॥ पगा दिदाय न किल ॥ सर्वमं शुद्ध पण्णू दाय मं लाजनं क्रमान् ॥ निहादिक दूवे वा पिसीथा
कृत्तु स र्क ना ॥ अन्नव्यंजन सर्वा निम मूजाजन दाय न ॥ वनरु वंजना नी निरुजनं जिनमूरु मं ॥ षडु सा चि नं ल क च्य य क व प्रपू नि

मं॥ पच्यमानं संतुष्टं कायवायुसक्तं न ४॥ पंचस्रं नंथास्तत्वास्वच्छागं तु शर्जनं॥ अथ कमानसु संधेऽधमूदा विरुनरुक्
 न॥ मघमर्दं तथा वाये सर्ववायं वका नथन॥ सर्ववर्जनपिठकादिममृर्नं शर्जनं तु काय॥ अहं नं जे हदनधूमांगदिनीवका
 नथन॥ पूर्वोदीये सुथा ग॥ अने वयादियं थोकम॥ अथागसनासु मूत्तयुक् च कृमना वम॥ मयनं विरुलां विरुमोपनि
 षिता॥ सच वलं विरुलां मुखं ककृके सुथा॥ हस्त्यादं तथा पुर्वं नाम्ना वगलं संयुतं॥ नाजहस्तान् गृहीत्वा तु स्वादं मुखं वंजि
 तं॥ पूर्ववत् सुफलं वीना॥ पुर्वं लुमीपनिहितां॥ पूर्ववत् लक्ष्म्यादिंका नथं च पुदकिर्मां॥ असूना नाकसा॥ अने वका कनूथं व

१२३

गता॥ कविचुननूयन॥ मघरा कानि तु कन॥ अथ श्रीजिनसाई लवराष व विवं मर्ज॥ केवल्य दमक॥ श्रीमान सर्वपाप विवर्जित॥
 साधु॥ महा नाजन यद्दं याय मरुत्तं॥ अपमय रुर्ध्वं व कर्हं स्वल्पं न किल॥ पाद्य॥ दद कि पादो सुगम स्य मेघर्जं सुभीत लुक्
 सुगंधि पाद्यं॥ मने तथा वका सुमना सुना व नाह व कि थम सु विभा लसं पद॥ अर्घा वम॥ यं वा मने॥ ऊद सुगंधि नायं नत्वा कने यं
 पुददा कि संघं॥ सा र्घादि दानं सु न सा हि व दं सिंहा सनं सल ह म पुनी॥ अ॥ दिव्यं पी पी नहुं ग सु न ऊ घ न घना मा न वि का हि ना यी हं
 न्नां वून दा ऊ च म सु न हि न सा न्ना व ग ध कि य र्णां॥ मन्दा कि र्णां सु॥ वा घा॥ पु नि दि न मू द क जी द या य ड म क् नाना ग॥ अ द क न स

पनरुलमिदवृद्धरुहावकस्य ॥ आसन ॥ पर्यंकविरुनसमाहृतनरुनिकासुसीमकिनीघनपथाधनधीतितांगशस
 (अननकिरुजानिभिजेपुदकंदियासनंसमितदाषगलाहपाय ॥ पुनम्य ॥ यच्चकवलीनिमिपयधनेकलाभलीकृता
 लवानुगले ॥ रुक्मासुसुत्रावकवंधननवृद्धपुलापाकथयकितल ॥ मधुल ॥ यथापुर्वमिसहस्रवजनाधिपत्यदीघायु
 षाविविधभागरुथेविमुक्ताशवृद्धस्यनहिउवनजयपूजिनस्यकृत्वाहवकिऊसुमेसहमधुलानि ॥ पीतनज ॥ विरुसिमापुप
 कनामिमधुलसूपीतवासेर्जिनसंधमधुल ॥ वजीनृपायत्यनिमोक्तिकाचिमाविद्युत्पराहलवमिपुमसुकी ॥ राजाकन ॥ याकी

१२४

हमाय

र्यमयेस्वल्पपूष्यनजिकासमरुहजार्यगलाग्रलगनश ॥ कीउकिस्वर्गसुनथेनोसंधके ॥ धूप ॥ नीलात्यनपवयडल्यमनीनगंधाविख्या
 नकीर्तिविमलायनवावृन्ता ॥ नलायमाउविवनकिमनूष्यरुनादलाजिनपवनधूपमूदानगंध ॥ दीप ॥ दग्धकयनकिमीमा ॥ मम
 धनवपूषादीर्घनीलात्यनाकादवायदवलाकवनकनकनिरालासूर्यमिस्वकांला ॥ राजायच्चकवलीमलिकिनमममैर्हासयंगंप्रया
 मि ॥ नत्सर्वदीपनोदोनरुवतिननूहर्माकसिंहायरुक्मा ॥ अलंकाल ॥ हानार्द्धहाने ॥ कटकेनूयमाकीउकिदवधूमनाहवर्ष ॥ स
 र्वहियस्त्रिदभाधिपेनवृद्धधर्लकालविधिपदानान् ॥ सुगंध ॥ यथाजावकवलीविमलकिविमलेर्जकमांरु ॥ पुनादे ॥ कर्पूनामा

दवहिर्मलयजसुनहि (शुभ्रभीतेर्युतायां गंगया संगसोख्यं यनममनूहवत्था दमसुन्दरीहि ४ सुखा गतुं जमादगुतमसि नि
 निधयवृद्धसंघायहृक्का ॥ सुवर्धुनिलकं ॥ सोवर्धुवर्धुनिलकं सुविर्नसुहर्षा ४ हृक्का ददन्ति विधिवत्स्वसुथमनूया ४ ॥ सिंहासनपुव
 नविघ्नगलेनरुधेसंसिबुद्धवपुनूषासुनसिद्धिर्वयं ॥ वसु ॥ गन्धर्वसुनकिन्नरैः सहवनाददियामो नानेनाविघ्नज्ञानानकृष्णकस
 हभा ४ काकाहिनालिंगिता ४ स्वर्गयदिवनकिदीकवपुषालीलायमानासुनासुदत्तार्यगलायभीतसमथकृत्कालिकाभक्त्या ॥ पुष्पा
 भजाधिया ४ पुवनरागसमचितासुपधन्दुकादिवपुषावलकीर्तियुक्ता ४ ॥ भक्तविजित्यवरसासुनरुहवन्ति संधस्यथसुजसुमेयकिन्न

१२७

(७३)
 किपूजान ॥ सुगन्धसुपन ॥ वेदर्यमूक्तमनिरुषिताम् ४ को (अथ वज्रावृतसर्वकाया ४ नाराहमा ४ सर्वजनेत्रयता ४ हवन्ति
 संधेसुवर्धुनिलकं ॥ हेषक ॥ नागादिहि ४ पुवनरुहवकनेर्विपूक्ता ४ सिग्धाननाकनककुल्यमनाहवर्धु ४ नाकं हिथविग
 नकृष्णकमापूवन्ति हेषकदानविधिनातदसुनिसंध ॥ नेथय ॥ नेथययत्सुगन्धिजिह्ववनमहिम श्रीघनर्षासंधसंयैकं निदि
 तीलोर्मनिकनकहवेवन्दयभापियमा ४ ॥ नचूजानत्तदिकेजवलयनयनाहासयंताहवन्ति विघ्नज्ञानाग्रहासु ४ पुवनगुरुयू
 ता ४ श्रीघनं जयय ४ ॥ विज्ञान ॥ विज्ञानपूर्वविज्ञानासिंधे ४ जिलाकना (आसुवसिद्धिर्वयं ४ ॥ आदीकदह ४ सुविभालव (असुव

विचित्र

मदहाहदिजुजता॥५॥गजुवगयदातिस्यंदनेःसक नत्वःउजतिसूनसहसेयात्रियवजवली।ममधनयनिवमकन
जार्कपादसुदपिरुलमुदानकजदानागुपसून॥६॥दकिभा॥निर्येयानिषूदकिभाभनगुत्तयायसहपुत्रवमीलायपुममंसहपु
निर्मपावाववागीश्वर॥७॥उककामविनागतापुपगमोकाटिभतानीभमंमार्गहूननयम्यरुसदासंपयमदकिभा॥८॥कांभादिपा
७॥गजायवजवलीधनूवसिजलिसेर्वकिऊमादिवर्षनाहिनादिवदहाहवनिनिपूगसेपुधधाधनाय॥९॥पायकसुमुजा
कायहूमनिववकांभायादिदानेसंधसंसावसावपुववसूननतंयानिवूचकदव॥१०॥राजन॥काकापानिसनाजविधुनीसोवर्ष

१२७

गन्धालांस्वाइत्यर्भसुखासूनासूनयदववृन्दानके॥११॥रास्वकांवनराजनपूनिहितामधुनिदियांशुधकवूचपुमृत्वार्यसंध
विषयस्ताननाहूल॥१२॥यत्यानवर्धगभिपुहमिगुमयूतकलिनंरुविनामिष्वायातायवाकपुममनवडुवंपिपलीखु
वूर्ध।ग्रीष्मपालयहिर्नभिकवसहभराजनसंसिक्तंनदत्तासंधपुहकामकडवनगतादियमाप्राप्तियानं॥१३॥नानाविधवायनृत्या
मृदंगवीनापटहादिहिर्यकूर्वकिपूजासूगताकमानांमनूष्यरुतासूमनाहवाकाः॥१४॥किमदाकसूमनाहूनूयान्॥१५॥यानह॥या
समयंविजमूयानहयसर्वपुसंधपूदिभकिहस्ता।यानाकमस्तुविर्नपुयाकिदवपुमर्षपुसदायपत्रा॥१६॥नामून॥रागवनादि

किमिमानवउदीर्घायुषादीर्घविभालदहा॥ हवनिनां वृत्तगर्भददनि संघायकमानिकरुषिताम्॥ ॐ हर्षलकं नानसंघव
 कृपदानम्॥ स्वस्याहर्लपवकापि सर्वकामं हविष्यमिदं दत्तस्य ववाकम् ॐ उष्टमहापुत्र॥ नीलारुकास्य राजस्य वदस्ये क
 नकम्॥ हगवान्वाव॥ पुरुवंजिनसंघानां तिलाककमिनामहर्गुकाभ्यायहर्गुपूर्वहिमयादृष्टं ददकिलसं ॐ उष्टमहापुत्र
 स्वाविमवा नानसीमहानगरी विजु कर्मका विवान्॥ गताकाभ्यानामहि कसमृत्त्ययहगवंतमनदवाचम्॥ हगवन्नसो विजुवनिर्नाम
 दवपुत्रायानीयप्रजावान्ब्रह्मान्वावीकिं हर्लपमिपद्यम्॥ हगवानाह॥ विजु कर्मकृतं यन्नमूनसंसा महर्गु॥ पवकापि ॐ महिका

१२१

मनसुसमादवान्॥ सकलपुत्रसमूहं दिवा दहां प्रपूर्व हवनिन विसर्गांगनपयादलं व॥ सूरगलसमूहमानयित्वा पुया निमतिम
 यकमलं ववावयद्यः सुधर्म॥ ॥ ॐ निग्री विविजु कर्मिका वदानदमभाधाय॥ ॥ गतावाव॥ हगव सर्ववित्राथ पुनर्वकुं
 लमर्हसि प्रयं विजुवन्तः पूज्यं तसुर्ववदसां पुनं॥ उष्टमहापुत्र॥ उकस्मिन्मयहगवान्यप्रपूनीमहानगरी विहवनिस्मा॥ वम्यकवन
 विश्वरुडकस्या गायनानाङ्गाय (आहि नानाहलहलसमचिन विविजुपूषा (आहि नदवनागयकगधर्वासुवेः सार्धं वाधिसुत्तग (सेः सं
 वरुले आवकेर्दमहिर्वाकया लेर्वुर्वर्धुकेमनूषेव (लकमनसहस्रपनिवात्रेः नस्मिन्सुहापुत्रसुत्तसर्वधर्मप्रवनिक्ताकाहगवर्कवीक

संप्रति नवान् ॥ नमो काश्याय नाम हि कस्य पूज्य प्रियद किंती कस्य हगव कथं नद वा वत् ॥ हगवं नमो विजयति निर्माद व पूज नदनं न
 नऊजगत् ॥ काश्याय नीय प्रजावान् वृत्तान् वानी किं हं लंपु निप घन ॥ हगवानाह ॥ विजय कर्म कर्म यं नमू न संसा म ह वं ॥ प्रव का मि ष्प हि
 काम न कस्य सुमाद नान् ॥ अयं विजयति हि का वा वान सां व हि र्ग न ॥ अयं पद एग क वं नाना ती र्थ समा ग म नाना कं उ नि वा स्य कू नू
 कं पु न र्प न ॥ उ के क सि च्छं दं विजय कर्म म ना व मं ॥ विजय ती नि ना घा व विरु न द न ग द्दि मि ॥ काल ग म नि काल न ना जा वे म्म लि का
 ह वं ॥ वा क्क वा न् क न वा धी मा न् ध न वा च ल वा न् म हा न् ॥ अहं ग व ले यू क ॥ अहं व श्च व न् पू र्व ॥ व त्सा न् मिला व क ह सि ह क व र्त्त व

१२८

शायं चिंतयन् ॥ नमो काश्याय नाम हि कस्य पूज्य प्रियद किंती कस्य हगव कथं नद वा वत् ॥ हगवं नमो विजयति निर्माद व पूज नदनं न
 वृत्त नीला सु नीला व धर्म नीला पु नि व ता ॥ अ व नो क व नि ह्वा ल ष्ठं प नि रुं ज न ॥ नन ८ का श्या वा व ॥ क र्थ ह ग व न् वि जि त मा ष्ठ न ष्ठं
 ह ल म नू ल स न वि जय ति र्मा म द व पू ज न ॥ ह ग वा ना ह ॥ का श्या य न मा नं द वि जय क र्म म हा हू र्त्त ॥ नि र्मि ता वृ द्ध नू पा नं पा य म ना ज स र्म ॥ नि
 र्मि ता न द न्य द वा नां वृ पं वि जि त का न्य न ८ म हा ह्वा ए न संपूर्ण वि जय द र्प उ ह र्म म ॥ वे स्य वि जि त क र्म स क ज म्मा नृ पा ह व न् ॥ य सिं व
 वि जि त क न ल क्री वं स नि ह र्मि त ८ ॥ न स्या वि जि त क र्म स ह्वा प निं उ मि ल स्य ॥ य क वि स्या न वा ८ ॥ अ ह्वा ८ क र्त्त वा ८ वि जय क र्म क ॥ का श्या वा वा

व॥ हगवन्नसो राजा क विषयपवनिनं धर्मविषयवावदलं यनमधुन॥ हगवानाह॥ नदकहंपवक्का मिभूत्तु काभ्यय हानवान्
विशुक्कर्ममहात्मा हं विशुक्कर्ममनाहर्न॥ वाक्कं लभं यनां तुक्का वाक्कं सुखं न (थेवव॥ सुखं नानुववा वाजा सुखं नय विशुक्कम॥ नमासव
जानकसुखमनुपुत्तुक्क॥ पूजविंतामनुविशुक्कयति॥ काक्क कथं मसूला गं वाक्कं नवा धनं नवा लक नवा से नवा सर्वसम्पहिना वा सु
र्वविषयनवा समापत्रा मना पूजसमापयमं॥ नदा कांता सुमती आह॥ महा राज किमनु (भावसं पूजहं मा माया ऊली कर्हव्य मयं सर्व
देवविधिहृतत्वमिति यनस्य न संल वतं कला की उति नमति नदा देवथा गा ऊर्ह समापत्रा हन्॥ नमाहुवना क व ना रूपमुदिनपीमिसो

मनस्यजाभाकाकायागुर्विनीरुतत्वात्॥नमः८७कवित्रिवकु८४पंवदममासनकुपत८सुमतीनामदया८गर्लधनक्रियायथाहियू
रुनयसुतमास्यपिंडमाजुंदर्भितवान्॥दृष्ट्वामाताबुद्धिमावज्ञा॥नमावाजासनकेबुदनमदभूत्वासंवावविवावयति॥कथंत्रनिक
कावालजात८।युजावाइहितावामृतावाकाबुद्धितं॥नमावमिकावहिवागत्यवाजानंनिबदिनवान्॥महावाजयवमहुरुहृतनंयूजान
इहितामास्यपिंडमाजुसूयतिनवूपंदर्भमहावाजहृदीहृवहृदीहृव॥नमासवाजाविविक्रयति॥मूहामंदलग्धंयकिप्रकृतंवरुनाब्
निरुदीहृववनमिष्टमि॥नमाध्वजिवर्गमातवमूवू८माबुदसिदवीकिंकर्हव्यथादेवकृतनेवडहृवहृदीहृवत्वं॥नमासुमतीदवीमू

ह॥ अति किं कर्तव्यं दत्तं श्रीहरे देव श्रीहरे देव का विधाता कर्म मम ॥ ऊको भदगमासा कनिहू संगुर्विनी कथां ॥ किं कथयिष्यमि सा
 काला ककिं वदाम्यहं ॥ किमर्थं जीविनं वाहं श्रुतमृत् ॥ समागम ॥ पुनश्च ॥ श्रुतं इति तावत्तस्या श्रुतं वाहं नमः ॥ श्रुतं गमनिन
 या पायी ॥ दत्तं नमः कर्म ॥ अथ वाच ॥ मासा वसा वेहादवी श्रुतं वाचमस्मि कस्य विन ॥ त्वमक सनन दवी रूपा त्यत्रानसं मय ॥ १३०
 क्ता जीवर्ग ॥ यनस्य नस्य मर्ग ॥ क्ता मास्य पिष्टं यम्य श्रुतं यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन्
 किं श्रुतं मास्य सिंहसाई लमक महाना गमनाम नयू नूषे क ॥ कस्या यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन् यस्मिन्

कुरुर्दि ॥ अस्मिन् वरु ॥ नमाद्यानया लक ॥ मां दृष्ट्वा संजुक्ता राजानं निवदया मास ॥ न वरु यितव्यं महा राजन वरुद्यान हृमिव कितव्यं ॥ नमा
 राजानं कुत्वा इतक माहूय श्राद्धमिति वान ॥ यनमाश्रयं हूतं हूतं कश्राय कनद हूतं वाश्रुतं वाकिं हविष्यमि गच्छस्व वंदनीय ॥ नमा इतउद्
 यानं गतवान् नमाद्यान गृहं प्र विष्णु कर्मणी र्षिणा दनिनवान् ॥ पूज विनीम ॥ अदिव्य पममर्क जाह्नू तंदर्पनी यं मनावमंदर्पित
 वान् ॥ ननु कुरुर्दि ॥ सिंहसाई लमहाना गपू नूषे कर्तव्यं नवान् इतक ॥ पूनूष मवमाह ॥ सा पूनूष कस्तुमवं नरुमान हविष्यति ॥ किम
 र्थमागमा ॥ नमा पूनूषा वाच ॥ श्रुतं मास्य नयू नूषाहं नाच वंजय जय राज पूनूष मंगलं नारु ॥ महासाहं सर्वं वाक्कां गमहा सुवाजान ॥ नस्य

पूज्यविशीम (अमहापूज्यज्जागता न दर्शयह गव रुस्मादा गताहं ॥ नमाहृतक ४ पून ४ पूज्यविशीम (अदिव्ययप्रंदर्भितं ॥ सिं
हावाव ॥ हापूज्यश्रुमी सिंहसाईल म हा ना ग ४ पूग प हू ४ ॥ हा मान वा ग कून रुत र्य ॥ श्रु न ना ज ग ता स्पी मि ना न्य प्र वं नि
मि रु कं ॥ श्रु उ स न सि सं जा नं प हा पू नू ष ॥ महा क रिय सं जा नं प हा सं ग्र म म र्द क ४ महा भू वा महा प्रा हू ४ महा व न प ना क म ॥ नू प व
च ल वा धी मा नू स र्व ल क म म श्रु त ४ ॥ ॥ श्री ह र्ण वा ल का जा न मं ग लं द ह मि स र्व त ४ ॥ ॥ मि सिं हा दि उ दि न क था मा क र्थ स हृत क प्र ति नि रू त
ना जा नं नि व दि त वा न ॥ महा बा ज य व मा धु र्या हृत पा का हं द हं वा ॥ न व उ घा न वि ष य स न सि म (अदिव्ययप्रंपाहृतं नू प य प्र म (अ

131

[illegible]

[illegible][illegible]

आशु ४ वत्सा नाकी ज आशु ४ उवं द म आह व र्ग स्य पि ता ४ ॥ न ता आशु व र्ग नाह ४ आशु द नं गृहीत्वा पु म् दि त्वा पी ति सो म
 न स्य जा ता ४ सु म ती द वी यू ग य दू ४ ॥ अ हा द वि अ हा द वि अ हा हा ग्य अ हा गु भा ॥ पु सु ति मा स्य पि अ च उ त्प न्नं म ज पु ज कं
 ॥ प म प उ न स व स्य पु क वि अ पु कि प म ॥ उ व म स्या हि सो द वि स्य य मा न स मू ह वं ॥ यू तु ली क स्य म (अ सि न् अ ह्ना का व सं
 ह वं ॥ द वा वा म नू जा कि न ह्ना न ह वि षा ति ॥ न व ल ग्य वि (अ ध न न व पु म् पु हा व न ४ ॥ न व र्ग सु ख हा द वी म म न सु ख स कृ वं

१३३

॥ न व थ द ४ ख संह तं म म न द ४ ख मू ह वं ॥ न व द ४ खं सु खं द वि य थ न व द ना म म ॥ न दा सु म ती द वी आशु म व मा ह ॥ म म
 दानी व ह आशु म ह हा ग्य म हा ह तं ॥ न द ह्ना वा अ तं वा पि म म लं ह व म स दा ॥ उ थ म ज न्म का ल व मा स्य पि लं पु सु ति कं ॥ म हा
 या ऊ ल म न ज आशु ल ज्ञा म हा क दि ॥ ज न्म स ह्ना लं पा कं जी वि तं व न (थे व व ॥ सा ह्ना म व ला जा ति यू षा कं स ह्ना लं प दं ॥ य
 आशु द नि तं ना जा यू षा हि पु ति पा ल य ॥ पी त्या हा आशु व र्ग म पु जं प न म सु द र्वा ॥ २२ सु क्ता सु म ती द वी आशु व र्ग स्य ४

वक्राया अद नंदत्वा यथा संलक्ष्मणं कृत्वा अत्रितवान् ॥ तत्ता अश्ववर्गसु मती दवीं उलम्य स्वकस्व कामूपचारं
 नज्जुमानमुवाच यन्निअथ दिवसमासवर्षा कथं यथा मास क्रिया कारं क्रिया कारे कृत्वा यथा (अ) षवराजकुमा
 नारुवन्ति कुममावर्षमानं ४ कुमा मायुज्जीउति वममानं सिंह साई वममाना (ग) ज मा म व पू वृ धा वत्ता व ४ सहायान
 अदयितव्या ॥ यथापि सुवाज कुमा मा म हा कृति या रुवति ॥ अमु म सुधनूर्ध्व त्वन्न व अदिहन्तवान् ॥ श्री लं द ह विता (अ) व राज पूजा व रु वस ॥

१३४

निपूजान् ॥ सुगन्धलपन ॥ वेदर्यमूला मनिहृषिता ॥ ४ को (अ) य वक्रावृत्त सर्वकाया ४ न वा रुमा ४ सर्वजने वृषता ४ रुवन्ति संधे सुने
 हि उदा नो रुवसे ॥ रुहता मिव रुपालजा नास्तनवतमिव ॥ तदा सुवाज कुमा व ४ पित व भव मा ह ॥ अस्तीहन गव कि चि द न्या य ध
 नूर्यममा नापन सह न काय वलं व ॥ तदापि राजा आह ॥ अस्ति पूज कुमा व आह ॥ कृत द व ॥ राजा आह ॥ तव राज निपू नापिता म
 ह कर्तु मा रुतस्य य धनू रु द वं न हि द व कुल गन्ध मा लो र्म ही य न न पू न रु क शि रु क्रा मित्वा ॥ तद्वनू ना ना पयि र्दु ॥ आ (ग) व यो निपू
 नयि र्दु ॥ यम (अ) ष ना वा व ॥ आनीय तां ह पित तद्वनू जिह्वा सिष्य म ह ता व या व च नू प ना मित म रुत ॥ तज्ज सर्व यो वजना सिंह साई ना

ऊ नाम न पू नू धा म हा ना (ग) य कू मा ना ४ य न (भ) पि पु थ त्व न या य कू मा ना न भ कू व कि ॥ त द नू ना ना पि डं पा (ग) व पू वि यि डं ॥ त न सु
 च नू सर्व ना ऊ ऊ मा न स्य धो व ऊ ना मं डि ऊ ना न भ कू व कि ॥ अथा ऊ नाम न पू नू धे ना पि सर्व का य व ल स्य मं सं ऊ न या त द नू ना ना पि डं पा
 लं वा रु त् न व भ कू ति स्य ॥ या व नू य प्र (भ) ष न ना ऊ स्या य ना मि त म हू त् ॥ त नू ना ऊ कू मा ना गृ ही त्वा श्रु भ ना द नू ति ष त्र वा च य र्य कं क
 त्वा ना म न या नि ना गृ ही त्वा द कि (भ) न या मि ना क वा (य) भ ना पि त वा न् ॥ त स्य ध नू ष श्रु ना य मा न स्य सर्व स म क पू वी म हा न ग र्व भ कः
 ना हि वि रु द्य म हू त् ॥ सर्व न ग न ऊ न व वि क ली हू मा ना न य म पृ कू न् क स्या य ध र्नी वि म ४ भ कः ॥ त द ना व नू ॥ व ला (थ) न कि ल ऊ

१२५

मा न स पू ना रु त ध नू ना ना पि तं त स्या यं भ कः ति ॥ त दान क ना ना स हू आ रि हा हा का व कि लि कि ला य म नू (भ) व य कि ॥ भ न स हू यो
 व ऊ ना सि हू सार्ह न ऊ ऊ नाम न पू नू ध म हा ना ग म डि ऊ ना ना ना न म हू तं ऊ न का र्यं ग था धा हा ष क ॥ अथ पू वि रु उ ष ध नू र्मु नि ना न व
 ड कि डू आ स ना व हू मी नि ४ भं भ य पू र्थ म रि पा य मू नि ल घू रु ष्य ति जि त्वा व नि पू व मूं नि हि ना ऊ नू य प्र (भ) ष न ना ऊ ऊ मा न भ कू नू ४
 पू न यि त्वा मूं गृ ही त्वा ता द (भ) न व ल स्य म्ना रु मि धूं कि य कि स्य ॥ य न व ल न द भ का भं ॥ धू ध न ती त लं पु वि ष्ठ ॥ त ना यो व ऊ ना सर्व वि सि
 ता हू त् ॥ त द स ना ऊ ऊ मा न पि त न मं व मा ह ॥ क थं पि त न क थं ना र्थ क ति य र्य क त ४ पू न ४ क थं ला क सूर्यं ४ ४ र्व क ति सं ग्रा हि (भ) न का

॥ कथं न सुखं इह खलु ॥ किं विद्या विमल विमल ॥ तत्सर्वं वदतां त्वं मे माख दानव संजय ॥ तदा पिता वाच ॥ मम ललव भ नाकं यो ना
भां सुखं संपदं ॥ सफल कसंख्या प्रोक्त्यास्ति यय नाकम ॥ पूज हीनं च इह खं भूज हीनं द विदता ॥ माख दं सुतं पूज सुखं नय नि
कुञ्जं ॥ तमा नाजकूमा नावाच ॥ तव नाजं न किं ना तव वड वा न किं विहा ॥ तव साक न किं भवे पूजार्थं दग्ध मं नवा ॥ पिता वाच ॥ पि
तु नाकं न त पूज पिता कानन त पून ॥ पिता द भं पिता द भं तत्सर्वं पूज कस्य मे ॥ पूज ना का प्रयच्छ कि पूजं द व्याय मं वव ॥ पूजं द व्याय न
स्वार्थं ॥ पूजं द व्याय ना ॥ तमा नाजकूमा नावाच ॥ माख दय सिह ता तत्सर्वं वाचं प्रवीण्य हं ॥ नन्दी र्या यात याता त क म स्व पिता ह पि

तथा॥ वरुणं गच्छामि हन्ता त्वं यः शत्रुं वरुणं वरुणं विह॥ यः शत्रुं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ पिता वाव॥ नमः कृष्णधूना पूजवाल
कृष्णं कथं नमः॥ कालं कृष्णं वरुणं कृष्णं कृष्णं वलविक्रमः॥ राजकृष्णं वाव॥ नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ सिंहं दिव्यं
नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ ॐ कृष्णं वाव॥ नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ सिंहं दिव्यं
नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ ॐ कृष्णं वाव॥ नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ सिंहं दिव्यं
नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ ॐ कृष्णं वाव॥ नमः कृष्णं यिष्यामि न जानं वलवान् वलविक्रमः॥ सिंहं दिव्यं

ना॥ सफरिय निगारि सफरिस्त वयहिरि॥ वाया मदी र्घनस्त वद्वा दन था जने युता॥ अविस्ती मा सूरि का वद र्धनी या म
ना वमा॥ अन्सी जजना की र्धरु पद नल या वग॥ मरुि मरु विदी विरु॥ मरु कजिय विरु म॥ हस्ति घाट कर्से युक्त॥ वरु से ना
फ वृद्धि मान्॥ सुवर्ध वृथ ता मा दि वरु धा धा उ स मा कुल॥ नाना वत्ता दि सै पा फ॥ संपूर्ण विरु वान् उ॥ दार्जि मन् कर्क या युक्त॥ द
या कुलंग नावेनी॥ श्री दक्ष मरु का नाजा सुख नय विरुंजत॥ नता सु वाज्जु मा नासं मरु पूनी महान गनी दर्भित वान॥ द द्वा वानू वि
विरु यक्ति मूहान मनी या सान गनी यन म वी स्ती र्ध विभा ला सफ या का ना॥ सफ य विषा ना था द्म स र्ध सर्व त॥ धनी था ही से द्वा उ॥

नमस्तु नार्कं दृष्ट्वा सु राजकुमारः तस्मात्किंचित्पुत्रिनिर्वह्यसिंहदिबहुर्नगपो नजना मंजादिसहाययति॥ कथं सहायाः मान
गनीमाश्रयं भक्तुं वा भक्तुं वा॥ तदा सिंहाना जो नभव माह॥ वनाधिपत्यावनराजका हँड्डून् नभक्तुं मनूजा पञ्चानाः यलाक पूर्य
धिय नायितास्तु पनाजयिष्ये न गनीव सर्वान्॥ ततश्चाह न राजान भव माह॥ बलानीवलदर्थो हँलाक साई नकं तथा॥ सिंहधिकव
लेयूक्तः पनाजिष्ठा मिहानृपः॥ तता महानागावाच॥ संग्रामविजयी बाहं महागौ गय नाक्रमः॥ दर्भतैज सुला कानीय नाजिष्ठा मिह
यत॥ तता इज ना मनयूनुधावाच॥ नमृत्यूर्नज नाबाहं रयं ऊरुहिमनृपः॥ तस्मात्पनाजिष्ठा मिहानृपः स्यामि सर्वतः॥ तदा नागावाच॥

साधूः महापुत्री उवंकू वसुवतः ४ मम कार्यं ॥ तस्मिन्मय वाक्क (लोक) वागमः ४ नृनाजक मा वा द द्वा नमवमाह ॥ हा वाज
 कुमात्र कुजग नृवीस्वस्ति ममुत्वं किमर्थं मज्जनिष्ठ सिद्धं भर्तुम् ॥ तस्मा वाज कुमात्रा वाच ॥ नाचं वं वाक्क न कथं न विज्ञानं सः
 मरुपूत्री महानगरीं प वाजयतु कामना गमाह ॥ महानाग से च या सहय न्ध कुजग नृवीस्व ॥ वाक्क (सा वाच ॥ हा वाज कुमात्र स म
 नपूत्री महानगरीं ग कुमाग नृ ॥ कथमिदानीं लोको यं ॥ तस्मा वाज कुमात्रा वाक्क नमवमाह ॥ जिह्मय हा वाक्क न स मरु वाज
 निउवं वदत्यसि संग्रामाग नृति गच्छ निवदय ॥ तदा वाक्क (सा वाच ॥ वाजपूता सत्य मजिह्म सिद्धं कथं ॥ वाज कुमात्रा वाच ॥ निधः

१२८

यम वाक्क न प्रव न्ध जिह्मय २ ॥ तस्मा वाक्क न आनीर्वचनं कृत्वा स मरु कनगरीं गतवान् ॥ तस्मा वाक्क न गरीं पा य तदा स मं
 न कामहा नागं महासर्प कृत्वा स्ति नवान् ॥ ततः ४ सुवाक्क न स मरु कं वाजानं आनीर्वचनं देने लो न दार्ह निवदया मास ॥ वाजा वाच ॥
 वाक्क न कस्यादा गमाह किमर्थं मागमासि ॥ वाक्क (सा वाच ॥ नाचं वं महा वाज त्वं दर्शनार्थं मागमाह ॥ जूजग नृमा (गं) जूनाजाल
 यिमहा संग्रामाग नृ ॥ महानाग सिंहादि वृद्धं गवत् (ने) नानसाह ॥ वाजा वाच ॥ वाक्क न सत्य वं वाकिं वा ॥ वाक्क (सा वाच ॥ निधः
 यमहा वाजय वाजयि कुमाग नृ ॥ ततस्तु वचनमाक न्ध स मरु कानाम वाजा मरुति नमवमाह ॥ मरुि नृजाग वसि सा निधं क वृस

१३२

नानाप्रह्वनगृहीता सर्वसेना ४ कुरुवंगवला ४ सधोवा ४ सत्रिका लयप्रज्ञादी विमला ४ महासंग्राममागच्छति ॥ तस्मिन् समये स
वाजकुमा नावभागतं दृष्ट्वा सज्जीकृतवान् गच्छथ सहाया ४ ॐ लूका सवाजकुमा ना महाना ४ समावृक्तगच्छगच्छ ॥ ॐ लूक नागस
हृत्ता ४ इह तासिंहा स हृत्ता ४ इह ता ४ ॥ पुनः ४ भा ईव स हृत्ता ४ इह ता ४ ॥ तदा जनाम वयू नृणां ४ सहस्रयुमाना स्वप्रहृष्टकधनुर्वा
नाम लहरीयान हस्ता ४ कविधनू हस्ता ४ कविमुखप्रहस्ता ४ कविहृष्टक हस्ता ४ कविहृंगिया न हस्ता ४ कविनाम लहस्ता ४ कवि
कुहस्ता ४ कविगुहस्ता ४ कविगुहस्ता ४ कविद्वयमर्ब नानाप्रह्वनगृहीता ४ इह ता ४ इह ता ४ ॥ तदा किलि किला यमाना तदाम

सर्वमहावर्गगच्छति॥ हाहाकारलोचनगृह्णतरेवंधनरे॥ तं का लाहलभयनमहावर्गनगच्छति॥ तदा तं अजना सर्वस्वजीवम
 यिवा यदि कृत्वा वा लभनं स्वर्गं धत्वा संपुष्टिमाप्नुमं॥ कविज्ञानहनिष्यामि॥ कविस्वर्गं न हनिष्यामि॥ सहा न विपुसर्वानिपति
 तानि समकृतं॥ उवक विपुसर्वानि त्वं कर्महीनत्वं॥ सहसा ह्यसर्वा हि सिंहादिहिर्यरुकिताः॥ यथ कृतं न निपत्य तान् काना
 लाकृताः॥ उवं न विलपं त्यक्त्वा नूदत्याहु विमिश्रितं॥ राजवत्सलपहाहू मिं आ यस्मै कृत्वा उच्यते॥ अविनाशस्तु सा सिपु क्रियास्तु
 विरलकविज्ञीवकिकविचमृता कविचरुकिताः॥ अह्नी निवावकीर्ष्य प्रकिफानि सर्पितं॥ ततः संपन्न का राजा यवमहोष

१४०

आकृतिः समाश्वास्य समाहूय मन्त्रिन वपुर्वीत्॥ मन्त्रिण राजकुमारं तं यत्र लभ्यते नन्दनं नृपतिपुत्रम्॥ सर्वजना सेव्याः पुत्रा वि
 तामया कृतास्तु न्याहृत्वा वा लभिषादिताः॥ आगच्छन्तमया सार्धं सहा कुर्वन्तवर्गं॥ नृपतिपुत्रम्॥ सर्वहनिष्यामाधूना वर्यः॥ हनिष्यं
 हियथा कामैः सुखैः कृत्वा वसुनयम्॥ नृपतिपुत्रम्॥ सहा सैव मलायतं॥ तज्जगज्जननीयं मन्त्रिणसमूहाश्रितं॥ गलदध्व वि
 लिफास्यः पुत्रतः उवमवुवीत्॥ हृदयस्वप्नमादाय पुत्रवत्तु सत्त्वं॥ तद्दत्तं मन्त्रिणैः कृत्वा निःश्रान्तिं सहसा ययौ॥ आनयित्वा
 सेव्यास्तु यन्मन्युसमकृतं॥ ततः संपन्न का राजा महायवस्य वसुग्रामागतं दृष्ट्वा बान्॥ अनेकनागस्तु आनू प्रनय हि धनान् अ

न कधनूर्ध्वान् सहस्रान् शून्यकत्वं नाम वगजडिभूलहं गिया वधवान् सहस्रान् शून्यकत्वं सहस्रान् सहस्रान् सहस्रान् संजममानं ४ सं
 कारुहृदया ४ हृत्वा सुभासा सलो न्या ४ यो वा ४ उप नायिना ४ सर्वसंज्ञा भित्तो डर्शन भक्ता सर्वप नायक ॥ तदा नरं नयं पनस्य नमिति
 पृष्ठमानिनी कृ ॥ तदा सपनमिव सर्वं विनाश विनाश विनाश विनाश विनाश ४ स्वकस्वको यद्वन पनस्य नं प्रहा विनाश नमा क विन दध्य न क
 विन किन किन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क विन सुकिन क
 ॥ ६ ॥ तदा हापिना हापिना मि ॥ कवि जानू न कि कविना रूपा नि ॥ कदा पूरु नि नाद य किना ना वि ॥ ६ ॥ सर्वसे न्या ४ सर्वयो वा ४ वड

वि १

नंगवलादय ४ कारुय कि ॥ त सर्वस्वन गवीं प्रव भित्तु न भक्त ॥ तदा वाजक मा वा सम न पूवीं म हान गवीं पनं कृतवान् ॥ तदा न
 दृष्टा सुभासा सम न क ४ सलो न्या ४ सपो वजना ४ सर्व उ क ग्राम प्रद ॥ ७ ॥ कत्वं ॥ ७ ॥ उप नाय क हा हा का वन ॥ तस्मिन् सम य विवा न सं वा
 वयिर्तु न भक्तं मृतं वा पा नं वा या व द्धु र्थ दिनं तमा विवा वयित्वा ॥ ८ ॥ कद ४ व क्रिया का वं कत्वा ॥ ८ ॥ कयित्वा स्व कस्व नि को दी न म ना नि
 कृति ॥ तदन क न स वाज क मा व ४ तान गवीं समा भिरु ४ तदा ता ४ वाज दा वा वा डि भक्त व नि का प्र न पू व दित्वा हि ता ४ ॥ दिव्य को मा वि
 का नू पंध्र ता सर्वा ४ समा हि ता ४ ॥ पू व नू भित्त्वा सर्वा स्ता ४ वा दिर्तु निष्ठ त तदा ॥ स्वामी स्तु त्वा नू ॥ ९ ॥ वय कि नि श्व स्य वं म हा विन वाज क

मान ४ मान गनी हा देव कथ मस्या कं विषही रुव मी दनी ॥ अन्न कवि लायन वाणिं मता ४ राज दा वा ४ वादिता ४ कवि वा स्वा मीति, क
 वि वा देव मी, कवि वा महा राज ऊग म मिति, कवि न नी र्व व प म या वादि मी ॥ कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥ कवि नू र्व व प म या वादि मी
 कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥ कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥ कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥ कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥ कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥
 दि मी, कवि नू र्व व प म या वादि मी ॥ उव मन कवि लायन वाणिं मता ४ का का वाद य मी ॥ मदा स राज ऊ मान ४ मा राज दा वा नू द न म र्द म
 ला अऊ वा म न पू र्व व प म या वादि मी ॥ अऊ वा म न पू र्व व प म या वादि मी ॥ अऊ वा म न पू र्व व प म या वादि मी ॥ अऊ वा म न पू र्व व प म या वादि मी ॥
 मादि

१४२

निं ३
 ला राज दा न म व मा ह ॥ ला राज दा वा ४ यू यं र्ग लं न ल्हा म या ४ ॥ म म राज ऊ मा व ल्हा पि मं ग ल्हा ग ल्हा व हि कू टा ग म व ल्हा म या ॥ म मा राज
 दा वा ४ यू ग य र्ग ल्हा ॥ ला प हा पू र्व व प म या वादि मी ॥ म म राज ऊ मा व ल्हा पि मं ग ल्हा ग ल्हा व हि कू टा ग म व ल्हा म या ॥ म मा राज
 र्थ का हि मा किं क मा मी दा वा न ॥ म न वि वि कि ल्हा वि ल्हा मा ह व म्मा ग ल्हा व हि कू टा ग म व ल्हा म या ॥ म मा राज ऊ मा व ल्हा पि मं ग ल्हा ग ल्हा व हि कू टा ग म व ल्हा म या ॥
 म मा राज ऊ मा वा मा वाणिं मता राज दा वा ग र्म द र्मि न वा न ॥ द क्का र्म वा न वि वा न य मी ॥ द राज दा वा ४ न ह म र्वा र्ग ल्हा २ उ क र्ग ल्हा ग म व
 नि कू टा मा व द य स र्वा न ल्हा म या हं यू म्मा नू द दा वाणिं मता म्मा का राज दा वा ध र्मा व ती ना म्मा द वा अ द का न ल्हा कू टा स न् राज ऊ

विविधं मानसदवावत् ॥ कमलसहस्रनामकवृत्तविष्णुमानसु ॥ नाथभूयंममदानीं कुतगच्छमहं नृप ॥ उक्तनामसहस्रं यस्मात्मीम
 जीवितं किमु मृतं वा पापमयं मम जीवत्यजामि हि ॥ पुनस्तमुचु ॥ धर्मस्य मूलं नाजानं न पश्यं वडा कर्त्तुं ॥ त्रिवत् यत्तु यत्तु कर्त्तुं
 उधर्मसमागम ॥ पाहसि एवमहीयात् किञ्च कर्म विवर्जितं ॥ विधुनवपविद्यागीसम ॥ इह स्वसमत्यागी ॥ जलनीलसु ॥ अथमास
 ह्यधर्मपनायत्ता ॥ उनीय कर्मनाशकं वा जडवा विधीयत ॥ श्रुत्वा तदकृतात्यागसर्वं हृषियदर्शन ॥ आत्मनीलसु ॥ अथमा उच्यते
 यविधीयत ॥ कूलव्यसननालूबं शूणगर्हसदार्जव ॥ श्रुत्वा यद्यकर्त्तुं ननाधियत्यं निधाजयत् ॥ मूलवृत्तिहिमाधीनसर्ववत्पनि

१४३

कक ॥ भुविश्वव्यवसायीवधर्मदक्षा विधीयत ॥ ॥ नदा नाजकुमावाव ॥ माखदयसि नाजकावकिं ह विद्यासि त्वं श्रुत्वा
 जाहीति ॥ उक्तसि नू कूटागवनिष्ठसिय ॥ थक्या ॥ पञ्च ॥ यषूकार्यषूविद्वषू सहसा विरुत्तादय ॥ विपहिषू महादानपनिवर्ज
 विवक्त ॥ महतामापदास्किमहानववसम्यद ॥ नू नवषूमनूषाषूनापदानवसं पद ॥ नदा नाजदानवमाह ॥ कथं हि मां म
 हा नाजस्वामीं पश्यं गत ॥ कालकल्पधूना नाजं मां लज्जामकनापि ॥ पुनश्च ॥ दर्शयस्वामि मनाजन् नाजसहस्रविक्रम ॥ कमल
 नाज नाजकशूथवामवर्त्तक ॥ नजगेर्जनसंसर्गरुजसाधूसमागम ॥ ऊनूयमहा नाजन् शूलानि त्वमनि त्वा ॥ नना नाजकुमा

विविक्तं वा वाच ॥ राजदा नानहं वं किं ह विष्णु सिलम व लति ॥ नव कूटा गभ निष्ठ सिग क २ ॥ अकार्थ व कृषा विधान न व रुनी नि व कृ
 षा ॥ वकार्थ व कृषा विधान नूत न वा वार्थ व कृषा ॥ प वा र्थ प न व सुं व प न वा र्थ प न व सुं ॥ प व सुं व प न वा र्थ प न व सुं ॥ प व सुं व प न वा र्थ प न व सुं ॥
 न ना प न वा र्थ प न वा र्थ प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥
 म प न वा र्थ प न वा र्थ प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥
 न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥ न व सुं व प न वा र्थ प न वा र्थ ॥

१४४

यमहा राज पापी मस्या दि दं व व ॥ विरु प ह न नं ह नं क म ह न न ना य क ४ ॥ नी ना प ना ध क नं वं क ४ स्या पा पं न वं हि क ४ ॥ व व य दि
 न नं क र्थ प मं क ग ह य न ॥ ध र्म न ना ज न ना ज व व व क न य न ॥ अ व व व व क य न क ४ स्या न पा प न व क ४ ॥ म ह न ना प न
 षा ने व ल क वं व म ह न ह र्थ ॥ स क ल न ग वी अ मा न प ना र्थ हि न का यो या ॥ म ह न ना प न वं हि ध र्म ना र्थ क न य ॥ मा क नू या प ना
 र्थ मा क ना अ मि मा न व ॥ मू क द नी म ह ना ज क म ह ल प मि प मि ४ ॥ अ नि ल स क ना र्थ व प न ना र्थ न की य न ॥ किं ॥ अ रि न ना या
 ४ क ना या ४ अ प वं क र्थ नृ प ४ ॥ न मू क य दि ल पा ल अ स्या कं ज म ल ज न ॥ अ रि न ना या ४ क ना या ४ ल द य म न र्थ ॥ न दा ना ज क म

विचित्र०

विधिः० नावि सिनः० अजनामनयू नूवमवमाह॥ अजनामनहसे न्य अजनामनपो नूवः॥ संहववम अजनामनधर्मार्थकं यनं॥ किंहुदा
नाजामोः० दंसा वंन हं वा नूतं ववे॥ नमं च मनसि मयि ह्यजापि नाक सर्वकं॥ अनित्य नाक दमं व अनित्य विषयादिकं॥ अनित्य
विहवं अनित्य सस्त्री नकं॥ किमर्थं यन नाजन यन उथन किं विधिं सुखं १४ व वला कानां जामिनां यन रथे वव॥ दानाया ववनं
लाहृकं यनमाहुतं॥ ह्यजापि निधय नापि ह्यजापि अजनामनं॥ नमाजनामन नाजनामन यनमाह॥ लाजाजनामन साधु २० लं म
नसि नकं वा नकं वा कं वमं वन क मपि नव यनमहा ग्यहृतं यनमपूय नायनमधर्ममहा नाजनिधय नमूकहि॥ नन ४ स नाजनाम

नपूनुषमवमाह॥ उवमजनामननिधयमंगकृ २ ममरुकाजनिधयपृष्ठनिबंदयसुखंषया॥ तमाजनामनपूनुषा नाजानंयति
पयगकृतिस्म॥ हापूनुषासमरुका नाजनिनत४ किंकिं हवमार्गनस्यो नजनानं कयूथदमितवान् उच्छसं निनवान्॥
तमाजनामनपूनुष४ पो नजनाना हय उवमाह॥ हापूनुषा किमर्थं किं हा जयूषा कं नाजा ऊज निहति॥ यूयं कथमउच्छस्यो
॥ तन४ पो नाउवू४॥ हापूनुष कथं पृष्ठसि ऊज ग रु व हूं मूषा कं नगनीय पन रुमं समग्रयमवानवा कथं कर्तुं पूनुष४ कस्य
दागमति॥ तदाजनामनपूनुषा वाव॥ हा पो नजना कथं न विहता४ पूजनामनपूनुषा हं मवम ऊमा नमा ह्यपितनं हनया४ नि पू

विधिः०

[illegible]

कृतं ई० कृतं मम ॥ तमाज नाम न पूरुषा वाच ॥ शमहा राज श्रुज नाम न पूरुषा हं राजा धनुवना क व स्या पूरु ४ य प्र (अथ वा नाम राजकुमा
नायकाय वा न्महा कृत्रिय म कृत त्व ह् ॥ अ कृ ह् स्व भ विद्या यां कृ भ ल ४ ध नु विद्या स्या व ग ४ त स्य से न्या हं ॥ राजा वाच ॥ कथमिदानी
महा पूरुष ना र्थ म कृतं वा कृतं वा ॥ द (अ कृ मिला क र्त्तिक थं वा र्त्ता म पि ॥ तमाज नाम न पूरुषा वाच ॥ महा राज वा ला वृक्षा स कि
७ वा ॥ द ह न पूरुषा ४ स्र ल्यि का स्मि ॥ क वि स्म लि न वि ला प न नू द नि स्त्रिय ४ त व कां ता वा शिं भ त श्रु न क वि ला प न नू द नि ॥ म म राज कु
मा न का वि वि दि ला प वि स्म य य कि ॥ का वि नू नू द नि ॥ मा नू दि मां द ह्वा वि ला पं भू त्वा वा न ज कु मा ना द या य न ला नू ड हूं न भ क्तं (अ ७)

विविध

नमस्कृत्वा ॥ संसावमसावकिमर्थमायानिधुयमंत्रमुक्तमीति ॥ गच्छसमरुक्तवाजावमानीयागच्छतिरुत्थादागमाहं आगच्छग
च्छमहाजाति ॥ ॥ वाजावाव ॥ रामहाप्रवृष्युर्वीविधिर्वापिथवाकिमुत्थवाद्यातयिहुंमां विकलीरुमाहं ॥ अजना
मनपूत्रवावाव ॥ रामहाजनहंनवा निधुयमंत्रमुक्तमीति ॥ गच्छसमरुक्तवाजावमानीयागच्छतिरुत्थादागमाहं आगच्छग
महर्षिपद्म ॥ रामहाजनहंनवा निधुयमंत्रमुक्तमीति ॥ गच्छसमरुक्तवाजावमानीयागच्छतिरुत्थादागमाहं आगच्छग
यसि ॥ अजनामनपूत्रवावार्थमाजुपुक्तमीति ॥ गच्छसमरुक्तवाजावमानीयागच्छतिरुत्थादागमाहं आगच्छग

१४०

नाम ३

त्यत्रा ॥ १ ॥ कसिंहसहायासहस्रसिंहात्यत्रा ॥ २ ॥ कमहानागसहायातनागसहस्रात्यत्रा ॥ ३ ॥ कसाईवसहायातसाईवसहस्रात्य
त्रा ॥ ४ ॥ नान्यसेना ॥ ५ ॥ तस्यवत्तानमाज ॥ ६ ॥ तस्मात्कनवाहाकाधक ॥ ७ ॥ पुनश्चमेहावाजनजवाहनमृत्पुत्रमयेकस्यपवाजमे ॥ ८ ॥ कहि ॥ ९ ॥ नये
पुथाधकदर्शनान्पुपवायक ॥ १० ॥ तदासमरुक्तवाजा ॥ ११ ॥ तद्वनमाकर्ष्य अजनामनपूत्रवपवमाह ॥ १२ ॥ आथासिअजनामनपुवा ॥ १३ ॥ ह
महापूत्रवपुर्वनिधुयागताहमित्युक्ताहामकि ॥ १४ ॥ रायोना ॥ १५ ॥ रासेना ॥ १६ ॥ आगच्छ ॥ १७ ॥ सर्वस्वनगवीपुवमिहुमिति ॥ १८ ॥ सर्वनाजादय ॥ १९ ॥ स
मरुक्तसमंतपूत्रीपहानगवीगच्छति ॥ २० ॥ यननाजकुमावकुनायसंजा ॥ २१ ॥ मायसंकम्य अजनामनपूत्रवपुनसुननाजकुमावमव

विविध

नमो दिव्यभूताहारमूपयकयित्वावमाह॥ जयजय राजकुमार कमलपत्र नक्षत्रहृन्नीर्ध्वलं कुरु नाम नवदितां॥ अथा
सिंहाजपूजस्तुतुमात्रानविद्यत॥ नृपस्य पितृवत्तुनापि पुतापननविद्यत॥ वलसंग्राममप्यपितृवत्तुनापि पुतापननविद्यत॥ निर्वृत्त
पसुनाजममनाकमनामपराजवाधिका न सर्ववैराकांग सर्वलंबलं॥ सहायाहं वनपुत्राजपूजमहावल्लभवानुवनका
निर्ह्यविविक्तित्त्वा नमजु॥ तदा राजकुमारा राजानमवमाह॥ अमहा राजमातिसापितृवाप्रम॥ आगच्छ तिस्रमाकं न किंक
रुंयमाह सर्वनापराधकृतपुनानाचर्वमपू नृपार्थमवडू महेस सा नमसा न वमायाह नमिति॥ पञ्चतां महा राजा यव

१४८

चमनमयाकिननगच्छ किर्गमि॥ अहायमानुषा कायां दिव्या काया नृपासुत॥ यसंघमनमयाकिननगच्छ किर्गमि॥ अहा
यमानुषा कायानदिव्यकायानृपासुत॥ इहं हं पापमानुषां विष्णुहं॥ अर्पितुं वी॥ हवपानमिभयत्कार्याहिहवतापून॥
धर्मविना न माकं वेदानं विना न कुतुहवानु॥ अहं विना न भक्त हनं न स्याद्वर्मादिकं वनेत॥ तदा समंतको नाम राजा राजकुमार
पुनववनं भूलाह सुकुपुमना राजानमवमाह॥ जयजय राजे कुमार साधु आघनीयं॥ पुन नृवाव॥ दीनाहं इति न आपि ना
मा राजा निलोकि क॥ कश्चिद्यनित्यं वं हि महात्मा कनू आस्य क॥ यनायकानकहृद्वेदेत्यादिवर्ष ४ स्वयावक॥ कमाभीरसप

विधि

यत्र ४ कृपाय ३ ४ खना ४ क ४ ॥ अथ कृपासो वरुं नृपसु वा र्वहा नानत्वा दीन नृज ऊमा नायसु पृथक् कितवान् ॥ अथ समाज ऊमा
नयथा समाजं कृत्वा नृपसु सत्र पसा दं महाना एवा हयित्वा स्वसना सुतस्व नार्थं प्रति निवृत्तयति ॥ अथादि ह्यै मृत्नी उत मृत्वा
नका न्यायाम्ना ॥ सर्वं नृपति विरु पपात्यन दसदा रुजन् ॥ अति मृग नृपति ह्यै मृत्नी मयान नाधिय ४ ॥ सर्वं च साधनं धृत्वा
व नधर्म समाहित ४ ॥ अजा अपि नृपति नार्थं वाधयित्वा पयत्न ४ ॥ ऊमा वाधिसमासा य सर्वं च पदमा प्रयात् ॥ अति नृपति समादि
ह्यै मृत्वा (अर्कन नाधिय ४ ॥ नृपति प्रतिमा दित्वा पात्यन दं समाहित ४ ॥ ॥ अथ दम वा वरु गवाना ह मनो न वरि कवासा व

१४२

सं

सर्ववर्ती पर्वसु दवमानुषासु नग श्वर्व अरु गवं मं हापित मिनिस्व कस्व क मृपजा ना ४ ॥ अति श्री विविध कर्तुं कावदान
उकाद (अथ ४ ॥ ॥ अथ (अथ का महीयात् (अथ मृत्नी कृत्वा हापित ४ पयत्नं यतिनं त्वा पार्थय दवमा दनात् ॥ अथ (अ
पुमि अमि पुन वन्धु सुहापितं मृत्वा (अथ का महीयात् (अथ वाधयति यति ४ ॥ नयथा पुनृत्वा नार्थं नार्थ द ह्यै वमर्हति ॥ पुनः स ह
गवान् वरु ४ ऊमा नायमे नायमहि कहि ४ अथ वरु सर्वं वरु का वनि हि कृत्वा हि कृत्वा हि कृत्वा नृपति नृपति नृपति
सुहमे पुन सर्वधर्म अवलिका लाकारु गव रुं वी कृत्वा संप्रति कवान् ॥ नदा का न्यायाना महि कस्व मृत्वा यति पद निती कृत्वा दकि

विविध

सजानुमधुसुं पथिवां सुपहगव नमस्तदवाचन ॥ अशोहगवन यप्रलभन राजकुमानस्वनगनीय निनिवर्हयित्वा नद
नं नं ऊगग ४ ॥ यानी यप्रजावान दयावान धर्मवान किं हू लुपति ययन ॥ हगवानाह ॥ यथकाभ्ययमान नय प्रलभ
नमादिन ४ ॥ संधयुप्रदयाह क्तासुकेय हजर्म सुदा ॥ ७ ॥ सुभवि पाक नकुमा ना र्यसुधी कर्मि ४ ॥ कुमाकाधिवनी ४ पूर्यदभ
हमीश्व नाहवन ॥ नयथा ॥ अथस राजकुमानस्वसे न्यादि सिंहसाई लमहानागा ४ ॥ नामवपु नूषस मायू कून नमाकुमन ४ स्वना
कंसं सदिपाकवान् ॥ नदास्वधो नकुना वा हनिमम्यपिता राजानं जिहसुयकि राजनसु कर्लं प्रुत्वा समुत्तिस्थो ना ४ राजकुमान

१५०

माहिमूषार्थग नया ४ ॥ नन ४ कुमन ४ राजकुमार वंददर्शन राजासंवा नविवा नयति ॥ नन ४ मक्षि ४ संवार्य विवार्य पुनिपुलाग
न ४ ॥ नन ४ सर्वधो ना ४ ॥ अवाहनं क्ताजयाभी र्ववनंदत्वा नाना सुवन नाना वा ययू नस्स वलसिंह नयाजया समायू कूनानीय न ना
जकुमार वं नमानगनीं पाकवान् महतासुका वं स पादपु का ल्य राजमणि वपु वनिनवान् ॥ नमापिता राजकुमान भवमाह ॥ राजकु
मानकूजग नवीन ह्ताह ४ ४ विनन निहामि ॥ नमापिता राजकुमान संवा नविवा नयति ॥ पूजकथ माव नहू प्रुला एह कर्थ सुदय
सिचदिननग नयति ॥ सुहृदि नति ॥ नदा राजकुमान पिता नो ७ वमाह ॥ किमूक्तव रुना ना न ४ अकुमाका वका वती ॥ पाका हवे मह

विचित्र

नारदं पुरीं समरुका मिति ॥ वरुणा मा वरुणा वरुणा कसपा जला ॥ नमनीया राजधानी नमनीया ध्यायिता ॥ कीदृशं मलिनं न
मं उके कं कुकि मय म ॥ मूलो दिवस मा विहृत्तु गच्छ मिह पित ॥ पिता वाच ॥ मूल पूज मूल कार्य मूल ता का न का न ॥ पुनीतं वा
पुनीतं वा म ह कं उ व र्ह म ॥ त मा राज क मा वा वा ॥ मूल पुनीत क थं ता न नि म य व र्ह म म ॥ मूल नाम न मा रूप ए क ह पित ह पित ॥ त
त ४ स राज पु ह सि त व द न ना ज नाम न पू नृष मा रूप त म वा वा ॥ क थ म ज नाम न पू नृष य न म ह कं रु ता हं प न मा ध्या र्थ पु नी त म पु नी
तं वा कि म त इ य ता ॥ त मा ज नाम न पू नृषा राजा न म व मा ह ॥ कि मू कं व रु ना राज न् कि मू कं व रु ना पु ला ॥ न द हं वा मू तं कं वा न तु ला न वि

२५१

यत ॥ महा रु डिय ४ सा य च्छ त पु ला वा म ह र्दिक ४ व ल न वि ज म ने व त स मा ना न वि य त ॥ त दा ना जा वि ला य प त्रा ह ॥ मूल ह क मूल
मूल ध्या र्थ मूल नाम न पू नृषा क ने ला क न से न न ॥ ७ क सि ह स ह मं वे मा र्द ल क त थे व व ॥ महा ना ग स ह म क म त नी
नं स ह म कं ॥ ७ कं से न्या स मू ल त्रा ४ त स्य वा ह ४ पु ला य त ४ ॥ ७ कं व र्ह स मा ह क्ता स र्व ला क य ना य त ॥ उ व म व म हा ना ज उ व म व म हा व
ल ४ ॥ पु नी ता सि म हा ना थ स स स र्व व द म य ह ॥ त मा राजा न व र्ह नं ॥ ला पु मू दि त म ने व मा ह ॥ पु नी ता ह पि दा नी रु मूल नाम न पू नृ
षा ॥ ध्या ध्या ध्या ध्या य म पू नृ त स ह क्ता न वि य त ॥ त मा राजा ना ज क मा न म व मा ह ॥ ध्या ध्या ध्या ध्या सि ना ज क मा न ७ कं ना क सं जा ध्या धि क थ

विधि

डीनारुयउवमूवावःशरामक्तिःप्रसिं गजकृमा नायसहधर्मक नायहं सानिधं ऊवसर्वजय अथा गंधं विष्मति ॥ यजय अथा गंधं
हिकुवुमायंतदामक्तिनाह ४ ववनमाक ऊधर्मपहन नाम महानगरी गलाधर्मदक्षानाममहीयमोगलाय अमनं सुखमभादिडीया
कारंरुलाय अमनंयवहा विनंरुलाधर्मावनीनामधवी ॥ तदामक्तिनाजानधवमाह ॥ उवधवमहा गजय ह्यपितंयया उवसर्वतत्सा
निधं कर्म ॥ पुनर्मक्तिमाह ॥ कथाधर्मावनीनामकुलैंगमृगभावनी ॥ वृषभोवनमक्तिनाधर्मवानीसूवकनी ॥ डीनाधर्मसिं नानिर्वाणी
रुकीपुनित्वा ॥ दयाभीलसमायूहा ॥ र्धनंरुकुलावना ॥ तदामक्ति यथा ह्यपितं गजाय अथा गंधं मवसाधनीयं प्रमाननं ॥ कश्चिदिवस

२५३

मानससहधर्म ॥ १ ॥ ॥ ॥ टिकापर्यंतं सुपितवान् ॥ तदामक्तिनाजकृमावधवमाह ॥ पूजययासहधर्मक नायहं दिनादिघटिका
पर्यंतं सुपुंमरुत ॥ मा ॥ येन ४ सहधर्ममकिमर्थं इष्टवयकुं ॥ मायाहर्तवलाकानां तस्मात्समभावन ॥ पूजनसहधर्मक नायहं
दिनादिघटिकापर्यंतं सुपुंमरुत ॥ मापित ४ सहधर्ममकिमर्थं इष्टवयकुं ॥ मायाहर्तवलाकानां तस्मात्समनभावन ॥ पितावा
व ॥ मावर्थं ॥ दं पूजं टहसु नामनवेनी ॥ सहधर्माहमं ॥ प्रहंयथा न थं प्रमाननं ॥ तदा गजकृमा भावाव ॥ तववावंकथं तातलंघ
यदधूनायनी ॥ यथा मनं कुरुकार्यय ॥ थच्छतवमहर्त ॥ सुखमकजवर्तहियकार्यममभावन ॥ यदिविस्वययन्तातलविषकाः

विचित्र

र्यकं नदि॥ नद्यापि नावाव॥ किं न कर्तुं वीहं पूजवदसि त्वयि कृति॥ यदा वदसि यत्कार्यं कदा कुर्यान्न नापथा॥ ॐ तूष्णीं स वाजपुज
प्रवाधिरु॥ न नादिना निधु नयामासु तदिव समागतं न कदा मंजिनं यथा ह्यपि तं नाजा सर्वं न यथार्थं तु मानं न कदा दाना दीनमा नयाया
सु॥ न सुर्वं सुहर्षं कृतवान्॥ यथा सुखस्य तथा नृपस्य नृणां ॥ ४ ॥ क्रिया गुणा लीकृतं गज ॥ ५ ॥ अथ वदस्मि न निवत्तयासे ॥ न था विनाजु
न कृतावे॥ पनस्य न प्रमममि प्रसन्नो हि मां शिव कृमुदनयथां॥ सुवा नृहने वयं अर्थमावे वरु वरु हर्षतया प्रदत्ता॥ न नादिनमासव
र्षादिधु नयायासु॥ न नाज कस्मिन् दिवसं नाज कृमानं ॥ पि न न भव माह॥ पूर्वकुदी निन आहं कृ नृपकार्यं मे कर्तुं॥ त्वदयहा विनस्यं प्र

१५४

नयत्तु वदस्मि॥ पि नावाव॥ किं कार्यं न नाज कृमानं निधु र्यं क ना मय ह्यकार्यं सकलं॥ नाज कृमानं त्वम क पूजा मे कथं न कुर्यादहं न
वकार्यं सुखं सुखं पूनयामि यदि कृति न इत्यर्था॥ न ना नाज कृमानं नावाव॥ साधु रवहता न मद्रं लं वरु न सदा॥ ना न्यवं कार्यं मता न आदि मः
॥ ५ ॥ कमु र्मुमं॥ मृता र्ने सर्वलाका नां ना र्कं गहं न वी न कं व भू मि उ वरु गज वरु धन धन्यादि कं व री॥ अनित्य पूज कं दा ना मृ नि त्म मूय
ला गि कं॥ अनित्य विषयं वरु माया सर्वं वरु वरु॥ भू नं पूर्वम हाता न स दस व निजी विनं॥ वरु र्थानि मृ सजा ना ॥ ४ ॥ पृथ कर्म ग ना ॥ सदा
॥ ५ ॥ भू भुजा स्व दजा ओ प पा इ का भू ज ना यूजा ॥ ४ ॥ ख ग ग या मृ भुजा ओ हा मान वा या ज ना यूजा ॥ ४ ॥ स्व दजा कृ मि की टा या ओ प पा इ का ॥ ४ ॥ ५ ॥

विविध

कर्मभावेन वृत्तशीलनधीयता ॥ न चांगमिविभक्त्या यत्कृत्वा तिनस्तथा ॥ वडकीयमहात्मा ह पूर्वजन्म विपाक ग ॥ खडगो
संस्तुतवृत्ताग्रधर्माहममथमा ॥ नञ्कर्मविपाकनगमिस्तथाप्यथकथक ॥ अथविवात्रयानार्थस्वादिपायंप्रकाशयन् ॥ न
चांगमिविभक्त्या वावदमवादिपुंगव ॥ उयगुकावाव ॥ भुलभुलमिदंरूपेकायवाकिरु कर्म ॥ हलंउ कृजनस्तथाकोरु
नललोकि ॥ लाहविद्याहयामर्षाधाननाननहिंसक ॥ सा न्याहृतिवर्षवधसंजीवकायमिधुर्व ॥ वनादीदहिनींदाहय ॥ क
या ननहीव ॥ लयनयननसाधिपाकलनननन् ॥ मातापिहस्तुहसिउडाहीवपिभुनाननी ॥ पायनकालस्तु ॥ ४८ कलहि

नञ्कर्मसे ॥ धर्माधर्मविभक्त्या न्यासंतापयतिनास्तिक ॥ सतीवृत्तिनानूनंप्रतापयनपुनयन ॥ नमलाज्जकादीधन
भाषुमग्नकनान् ॥ अथाग्रहृतिवायातिमघवाधुर्वकायमवाघनसाधालेय ॥ कुर्यादिहदहिनीं संतापं नो नवंतीवृत्ति
नादकनस्तदा ॥ इहसिनापिह नस्तवृत्तिविषयमाधर्मायामहृत्तो नवे नोड नस्तन नोडवृत्तिना ॥ गुनमाजापिहृत्ताहृत्तयकार
कनातिय ॥ नोडा एतेयवातवीव ॥ साहृत्तापिविभीर्ययन् ॥ हृत्तिय नस्त नडाहीया नस्तसिबदहि नस्तसिनाहृत्तव ॥ इहृत्तव
मानयनस्तने ॥ याथाकलितनीस्तग्रंस्त्यस्त्यलकृत्ताहृत्तसंकमयानदात्रिक ॥ अथलीननन् कृत्वासिद्धददाववायासो

विविध

विश्वस्य घातकः॥ वायसो लूक गृह्ये नानुक्तं कृतं निर्गमं॥ यः सांघिकं हृदयं सांख्येन ध्यायति॥ वाक्कायकवदभ्यानिः
इष्टस्य कानि इर्मनाः॥ आसौ वैमिकिकः कृते नथाऽहं॥ स्वहिः सदा वर्धकाटि सदा सितं वनं वाद्यतहर्षं॥ पीनादिजलजाह
न्याथाकलद वृक्षप्रतां रीमां वेतवनीयातिनासो प्रिनावदकृत॥ यधर्मसुद्विषयजलवाहिन्द किमोर्गकटि सगुहवा॥ अथाकलदी
कृतवक्तुना प्रवक्तुयक्तु कि विगीर्तुयादाः॥ संवृत्तं नयति यूकादीनां नखैर्मघयवर्तः॥ हृथा हृथा वृहदहस्य कन्दं वृक्षमविर्गमी
आजीवनयः कश्चिदनुनायिहिजीवति॥ पुत्रः ८४ किमिहिर्म (ग्राहकमगूथमृहिक॥ संपन्नं ननु मन्मस्य आनिनभूयत्यसौ॥ मू

१५७

मले नायसे लूकेऽजयतयः पुनः पुनः॥ उक्तं सांघिकं हृदयं सांख्येन ध्यायति॥ वाक्कायकवदभ्यानिः
कुविधिं तात ससाववक्तुमशुल॥ अथिनवक्तुवधावविषयवाततायिनि॥ सार्वभूतं वदानवर्कीर्तिवृद्धावर्तवर्त॥ गृहं मायादिर्क
त्यक्ता तस्य सावक्तुयावर्त॥ गच्छयन्त्यसाईलमावदंजुहपित॥ मूलकार्यदुमस्य कृपार्थयामितयावर्त॥ सधर्मजन्तां स्वहिः स्व
र्मजन्तां स्वर्त॥ सधर्मजन्तां भाकसर्वकामहर्तुत॥ कयायातवहातातः कृयायाकसंपदं॥ हवयवर्तमालंघ्यमूकनिर्हवर्तय
यो॥ ननुः सपितातववनमाकर्षवर्तुनभक्तहृदी हृत्तनावतिष्ठति॥ कलमास्ययपिताः किडक्तवान्॥ याजुर्वेदनाजज

विधि

मानः दं कार्यमलं॥ स राजकमान पुन नू वाव॥ सत्यमिति न कर्म सत्यं हं कृमा ऊनू दवाः सत्यनतिष्ठ कि सत्यन पृथिवी
हिताः॥ अथ च॥ मया कृतं न धर्मं न जथा हवति न पितॄ मया कृतं न याथेन न कृना भन संभयः॥ तदा पितॄ उव मूक पूज्यं वमा
ह॥ राजकमान कि मूक न वरुना लया सत्य पा एन वधा हं यथ कृ ऊनू मंगलं भम॥ ततः राजकमान पितॄ न या दधा नि यत् पुन न
पिमा न मू प ग ला वाव॥ मातृ कार्यमकं म ऊनू लं धर्म मू हं मं त व भु भू य सिद्धं सततं त व म म लं॥ कार्यमक म हं म न कृ ज या वि
अधुना मयि॥ सानिधं ऊनू ह मा त मा ख दं ह दि जा य म॥ माता वाव॥ तव कार्य कथ म हं पूज न ग वा व र्च यदि कृ या त सूर्य ऊनू नि ॥

२५१

तमा राजकमान वाव॥ सत्यमवहितं मातृ त्वयि सत्यं कृतं यदि तय हं कार्य सिद्धिं म ऊनू र्या निश्चय तां य मां॥ माता वाव॥ सत्यं सत्यं हि
तं पूज्य कार्य क यदि कृ सि ऊनू कार्य न स द ह निश्चय न क मा म्य हं॥ तमा राजकमान वाव॥ नान्य कार्य म मा क ना भु हं ना मू म हं लं॥
तया वन वृ ग कृ यं नू न लं ख द मा ऊनू॥ तमा माता वाव॥ हा हा पूज मा ऊनू मा ऊनू दं कार्य म मे क पूज हं ना भो वं॥ अथार्यः कृतं तव
कार्यं न क हं वा क थं मां मू कृ सि॥ राजकमान वाव॥ मा ख दं ऊनू म मा त मा ख दं ऊनू म न नू॥ सत्यं न व क र्म त मंगलं त व सूर्य दा ध र्म त
हा ग स म्य त्र ध र्म त स र्ग मा पि नै ध र्म त ह ल त ना र्ध ध र्म त सूर्य मा व ह नू॥ तस्या दि कृ म्य हं मा त ग कृ म्य हं त था व र्ण॥ सूर्य न कृ कृ प भा

विविध

मिथयध्वानेकतत्त्वतः॥ अथविश्वसूक्तंनानाधर्मपूजायतः॥ उरुममध्वमेवमूधमाकर्मउक्तं॥ पूर्वजमकृतंयुष्मजपध्वान
सूक्तकृया॥ तीव्रतत्त्वसासात्रीकान्तकृदिपूजनं॥ दध्माकमलपनित्तुक्तंजमर्धर्मसंग्रहं॥ समात्मानंयनात्मानमकाग्रपुत्रमा
नसा॥ तत्त्वांयुष्मानूरावनजिदलवजिनालर्य॥ दिव्यदहासूक्तलायथायुष्मानूरावतः॥ उरुभाहमयुष्मानांमूधर्मासध्वमानसा
॥ मूधमस्ययुष्मादिमूधमासूनभाहमः॥ दध्मादिवलितालाकानवध्वपूजायतः॥ भाहवर्हिषयसलायुतंवेवमनूहवं॥ नागादि
वलितालाकानिर्गन्धानिपूजायतः॥ मृदयुष्ममनूषादित्रुर्वर्षुपूजायतः॥ ह्युष्मादिवलितालाकासूनपूजायतः॥ यस्तुवाहविष

१५८

क्रियुक्तमसूरावतः॥ सर्वासांयाययुष्मानांमधुवाधिककर्मकृतं॥ सप्तमिकाविलम्बमउरुममध्वमाधमा॥ उरुमसूलाजगदि
हापायमारुनवानता॥ यथातथायुकावलीतिधर्मपुष्टवतः॥ धर्मसत्त्वगजाकृपायननवकंयथो॥ सूक्तंजीवतिहमातपध्वय
कदिवंयथो॥ मातावाव॥ पूजकथंयजापित्वाधकंनवजायानूजानसक्ति॥ अवमवानकविलायनवृदिता॥ तत्तावाज्जमावयून
वाव॥ मातादयसिहमातकिमर्थकवसावनीनमृत्तमानवागर्हयुष्माकायकृपयः॥ ह्युष्मासूराज्जमावामातर्नपिपदकि
नीकृत्स्वमागन्तुविश्वकाकाधर्मावतीनामदवीधवावाव॥ मृधमववनंकाककार्यमकंकमहिहिमंगलंवहंतस्मात्तुजम

विविध

लंवहसुता॥प्रसन्नमुखतःकाकमहलंदिनसुनव॥खदमाऊनकार्यविरुत्तानिधंऊनसर्वतः॥कांताउवाव॥प्रसन्नवचनं
पुंउहालवचनामृतं॥यत्कार्यकऊनलंदिनमिच्छयद्यदिहसि॥साधुसाधुपुताहदिकंकार्यकिंविधिसुतं॥निधिमाहंकवि
यामिय॥अहंलंकथाकिल॥अपवच॥लंदातालंविधातावलंगतिश्रयनायनः॥प्राप्तलंदिहहास्वामिन्यहंतंमयिनिधुः
य॥वदलंकवकिंस्वामिनधर्मधर्मधर्मववा॥वृत्तंश्रुहंनजानामियत्कार्यहदिवावतः॥नाऊऊमावावा॥नायेहंननूकाकहंमि
स्वामिसुतवंवर्न॥माकदसुतंकार्यलाकस्मिन्यममूरुमं॥काकातादिपिहभांमाकदक्विषयतः॥००तवगणउवंधूनापाय

१५२

पुंकर्मनाममः॥००कार्यक्कर्मवधर्मासांधर्ममूरुमं॥आपानंस्वर्गलाकानांरुविषयतिनसंभयः॥काकसुखऊनलंदिनवमां
हर्लहवद्यदि॥प्रमानंमारुवन्नमंवन्नहति॥००दंऊन॥काकाउवाव॥सुखंरुहिलस्वामिन्यवनंलत्पुमानतः॥किंलंवदसिकार्य
निमयिसुखंविनिधुयं॥नाऊऊमावावा॥आकनंसर्वधर्मासांसिद्धिसुनसमागमं॥साधनं॥००पित्तंसर्वगच्छयंवतथावर्न॥नान्य
कार्यवहकाकमूरुकार्यतथावर्न॥तस्मात्त्वयिप्रवक्ष्यामिमाविष्टंऊनमाऊन॥तदाकाकाउतववनमाकर्ण्यश्रुवकार्मनानुसूखव
कुंनमकमः॥हृषीहृमनल्लिता॥ततःकतमास्वयकाकाहहासांक॥००श्रुयस्वामिनधर्मतदवावत्॥मावदत्वमिदंकार्यतथाव

विविध

नमिनिस्तुतं॥ नमः कमाजन्तामिन्मूनीवयत्रमिहसि॥ वाक्शगं कथं ललातु नपावनमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं
पुंववांदिता॥ कथं धर्ममयासह कर्तुं यं प्रमादित॥ नपुजानामहं लामिन्मामाह कथं कृतं॥ ॐ ह आ योवनीवाहं कथं लला
नपावनं॥ लयालया ॐ हं न कर्तुं यं प्रमादित॥ नपुजानामहं लामिन्मामाह कथं कृतं॥ ॐ ह आ योवनीवाहं कथं लला
नीनः संसावननकाक॥ वाजतिव कथं नामय॥ थयविशगिन॥ वाक्शगं कथं ललातु नपावनमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं
कयालवाविषयगंवसर्वत॥ धनभायादिसंपूर्ण॥ वाक्शगं कथं ललातु नपावनमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं

१५०

साधनकार्यवत्माजन्तुसुततंविहा॥ नमः कमाजन्तामिन्मूनीवयत्रमिहसि॥ वाक्शगं कथं ललातु नपावनमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं
माहुंपदनिता॥ अनिष्टं धारितं का कं संसावननकाक॥ वाजतिव कथं नामय॥ थयविशगिन॥ वाक्शगं कथं ललातु नपावनमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं
स्वावतिमवा प्रयात्॥ जन्मवादिजनामहं ललातु नपावनमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं
त्रियादिनागजा॥ वहुनाहनमसाधिमउयू आदिदहजा॥ अयथाहानवायात्माहवालापवृत्ति॥ नमः कमाजन्तामिन्मूनीवयत्रमिहसि॥ यमनूपाययत्रनसुखं
कामूयूविक्रय॥ विदित्साकानयदेशयथायायथाविधि॥ आगुरुकादिदावपूयावदहयाजलं॥ वलिकर्मविधिर्वैवना

विविध

न॥ सधर्मसंप्रतिष्ठाया सर्वथा जडमहसि॥ इति नमो यथु फन समादि हनि सव्यसु॥ राजा नथ नि विस्त्रय पात्यनंद स्या र्घद
४॥ ॥ इदमवावह गवानात्मना सुवहिक वासु दवमानुषा सुनलाकारु गवर्क हावितमिति॥ ॥ इति श्री विविधक
रि काव दान द्वादश अध्यायः॥ ॥ अथात्मका मही पालयामु मया सुहावितं उयुक्तं यमिनं त्वा पार्थय दवमादनात्॥ इति
मनन वडन पार्थिकं सजि नात्तु ४॥ अत्मा नं नयति हं ह्युपन नं वं समादि भक्त॥ अमुना जं मया रत्ना तं यथा मयु नूत्ना दितां नथ अत्मा
नमादित्वा अहं च निरुमहसि॥ अथ हग वा च नूवन महाविहा न कलुष कनि वाय महता हि रुसं धन सा र्क जया दभ हि रुमने ४ स

१४३

वहूले धवाधिसत्त्वैर्महासत्त्वै नन कदवना गय रुग धर्वा सुनं मनुष्या मनुष्यो सत्रिय निवहू वृषा महाकाय पाना महि रु ४ समूह ना
संगं रुत्वा दकि न जानू मयु र्त्तं पृथिव्यां प्रतिका पायन हग वा नूनां जलिं प्रमय हग व रुम व माह॥ हग वन सो य प्रमय न ना ज ऊ मा
न ४ स्व विषय सर्वे ल क्त्वा रुदन रुवं त पावनार्थं ऊरु गतं॥ अथा नीया अद्वा वान धर्म वा च नानू वा निनी किं रुत्तं प्रति पश्यतां रुदा ह
गवाना ह॥ काय य पने मान द रुत्तं सर्वे लषया म्हा॥ रुत्त ना ज ऊ मा न स्या निमि रुं नू सा स्यु र्त्तं॥ रुदा य प्रमय न ना ज ऊ मा न ४ या ना पि
ह का नायां संम तं रुत्वा सिं ह ॥ इत्त महा नागा रुज ना म न पू नू पा दि सहा यन रु पा व ना दि ती र्थ जा ज र्थं उ व जा म ४॥ अथ ना ज ऊ मा न

विधि

शुद्धीर्थं तीर्थं वगच्छति । नदीसंहरदकं चैव चतुर्वंगनवक्ति ॥ नीलवान्गुप्तवाननाजादयावान्तां कयावक ॥ सुखदुःखया
आलाकववालो सोमहीनलम् । अनेकवृद्धकृच्छ्रिं नानादवालययुव ॥ जिनत्वेरुजनं कृत्वा संव नं जगद्विना नयात्पुत्रगत्वा ती
र्थं सवारुलंकनं ॥ धर्मधर्मसमयार्थं स्त्रियाश्च समाययोः तद्यथा मूलतीर्थं निकथान् द्वादश हि ॥ महातीर्थं निर्वर्वां तीर्थं
नां यानि कृतं लम् । अथाद्यरुलदायि न्यावागम्यां यजुसंगमः । तद्दीर्घं आधनात्वा नंदनयापविना भयत् ॥ कुरुनागधिया नक्तु ॥ कुरुकाव्य
सूक्तानिमान् ॥ समुद्रमहावत् श्रीमत् ॥ अविहृषिता ॥ यननाश्रयया कुरुयुग्मतीर्थं यथाविधि ॥ स्त्रानं ऊर्युमूदायावदकविं नतिवा

१३४

सुनं जययज्ञादिकर्माणि ऊर्युसुफदिनान्यपि । पिहृदवाश्रसंपूर्य ऊर्युसं हफमादिता ॥ दयूदानानि वार्थित्य ॥ यथेष्टिर्न तथेच्छया ॥
शुद्धनीला समाधाय च नयुधुवतं तथा । उक्तयुग्मा विभुजात्या ॥ निरुक्तं निर्मलश्रितिया । वाधिसूत्रा महासूत्रा हवयुग्मी गुप्ताश्रया ॥ नक्तु
वाधिसंहरनं पूनयित्वा यथा मं । विविधं वाधिया साद्यसंवृद्धपदमाप्नुयुः ॥ १ ॥ नक्तुमानदायि न्यावागम्यां यजुसंगमः । नक्तु कतीर्थमा
त्वा नं कुरुनदाय विआधनं । नक्तुनागधियश्च कुरुक्षेत्रमनितीति विभुत्वा ॥ वित्तसु अग्निवत् श्रीरुम्पुत्र विहृषिता ॥ नजायि नक्तु
र्थवयक्तु मद्रुखितानना ॥ ऊर्युस्त्रानं सदायावदकविं नतिवा सुनं ॥ जययज्ञादिकं ऊर्युश्च नयुधुवा यिधो धर्मपिहृदवाश्रसंपूर्य

विधिः

ऊर्ध्वमुखः नदिताम् ॥ दयू र्दानानि वार्धित्यः ४ जथा हिल विमं मूदा ॥ शुद्धनी लासमावा नाध्यात्वा पुजयूनी न्वनं ॥ ७ न स्यु ग्गा हिलि
फास्य निशुद्धि मयु लो १ वाधिसत्ता महासत्ता हवयू श्री गुभा लया ॥ न न सत्ता वाधिसं हान पुन यित्वा यथाक्रमं ॥ मूर्ध्ना विधि विधं वा
धिं जथा यूरु सौ गमं पदं ॥ २ ॥ न न सत्ता मनि शहि न्ना वाग्म लां यज संगम ॥ न न सत्ता नि ४ ह न्ना शुद्ध ४ हू टिका हान सन्निहा ॥ नू ज्ञा ना म
नात्वा ना ४ यं या व न्ना संगम ॥ विवनी संगम न न न क न ती र्थ मय न ॥ न न ना गधिय ४ न र्वा ला गो ना नि सून द न ॥ मनि न न्नि स म
दी फि श्री म न्ना विरू धि ना ॥ न न न क न ती र्थ य मान वा यथा विधि ॥ हान न ऊर्ध्व मूदा या व द क विं न नि वा स न ॥ ज य य ह्ना दि क म्मा

५२

१७५

नि ऊर्ध्व मुखः वा स नं ॥ पितृ दं वा य संपू क न र्प य यूर्य था विधि ॥ द यूर दानानि वार्धित्यः ४ जथा वा धि मान सहा ध्यात्वा हवयू नी नं व
सुं व न नं व या य धं ॥ ७ न स्यु ग्गा वि शु द्धा त्या नि ४ क्ता नि र्म ल र्धिया ॥ ल ह यू श्री महा पू र्णि मा नि गु न ज ना य पि ॥ २ ग ति न न या यूरु
सं ज ना ४ स र्ग तो स दा ॥ वा धि सत्ता महासत्ता हवयू र्वा धि वा नि न ४ न न सत्ता वाधिसं हान पुन यित्वा यथाक्रमं ॥ मूर्ध्ना विधि विधं वा धिं
जथा यूरु सौ गमं पदं ॥ ३ ॥ न न सत्ता न ज मं ऊ र्ध्व वाग्म लां यज संगम ॥ न न ज ती र्थ मात्वा न ना क ला ग्ध सू ख प दं ॥ न न ना गधिय ४ क्ता स
नू पा ना नि सून द न ॥ मनि न त्र महा दी फि श्री उ ह म ति ना य ॥ न न य मान वा या व द क विं न नि वा स नं ॥ हान दान न य ध्या नं ऊ र्ध्व द ध्यु य

[illegible]

नयूवाधिसंखनं नतस्तु वाधिसंखनं पूनयित्वा यथाक्रमं विविधां वाधिमासाद्य संवृद्धयदमाप्नुयात् ॥ ७ ॥ नतश्च कसूमावल्यां क
मावल्याधिसंगथं निर्मलगीथमाख्यातं कल्याणविघ्ननाशनं नतनागधियापलाख्यापीनवर्त्ममहाकृतिः ॥ दिव्यवत्पुलाका लरी
मनूयाविह्वलितः ॥ नतश्च मानवायावायावदकविंशतिवासनं कसि विघ्नमलं कृणु निर्मलकृत्स्नवा विमलः ॥ सर्वसत्त्वहिता वक्ता
हवयूर्ध्वकृत्वा विमलः ॥ नतस्तु वाधिसंखनं पूनयित्वा यथाक्रमं ॥ अहं न वाधिमासाद्य संवृद्धयदमाप्नुयूः ॥ स्नानदानादिकं ऊर्युः नतश्च
सर्ववपूर्ववत् नतनर्गमिं यायूः सदा सद्गति संयुता ॥ वाधिसत्त्वामहासत्त्वा रुडधी सक्तु माध्या ॥ ७ ॥ नतश्च विसृज्य वल्यां वक्तव्यं

विविध

ववाग्मशां यजसंगमनिधानतीर्थमात्मानं सर्वसंपत्तिदायकं ॥ कुरुनागहनिवर्धनं दापनदलावृक्षो नानावत्पुलादीकिः श्रीमह
माविहृषितो ॥ कुरुयमनूजाय कुरुविंभतिवासनं ॥ स्नानादिपूर्ववत् सर्वकर्मज्युः यथाविधि ॥ तपिनर्गतिं यायुः सदा स्रुमिं संहवा
वाधिसत्त्वा महासत्त्वा रुडधी सुकुमाश्रया ॥ सर्वसत्त्वार्थसम्यक्त्वा हवयुधर्मवा विमश नये वं वाधिसंलानं पूनयित्वा यथाक्रमं ॥ अहं क
वाधिमासा यसो गतपदमाप्नुयुः ॥ १ ॥ कुरुयथापना निन्याकभावत्वा हि संगम ॥ स्नानतीर्थसमात्मानं दिव्यलागसुखं पदं ॥ कुरुना
गधिपशु कुरुवाशुकीनामहीषनादिव्यवत्पुला श्रीमान् रुमात्मानमस्तु ॥ कुरुयमानवायावदक विंभतिवासनं ॥ स्नानदानानि

१७१

कर्मानिज्युः सर्वानि पूर्ववत् तपिनर्गतिं यायुः याताः सदा पितृभक्तो ॥ सर्वलाग महासंपत्तसुखवन्तानि नामया ॥ वाधिसत्त्वाः
महासत्त्ववत्पुत्रक विहाविमश रुडधी सुकुमाश्रया ॥ कुरुयुधर्मवा विमश ॥ तथा कवाधिसंलानं पूनयित्वा यथाक्रमं ॥ अहं कवाधि
मासा य सर्वरूपदमाप्नुयात् ॥ रुडधी सुकुमाश्रया ॥ सर्वकर्मज्युः यथाविधि ॥ तपिनर्गतिं यायुः सदा स्रुमिं संहवा
निमात्मानं सर्वकामार्थसंपदं ॥ गंगवज्रमूनावापितथा दवी सुवस्वती ॥ पर्वपुलागता कुरु ॥ मनयं वसमा गता ॥ कुरुनागधिपशु
क्लावन्मसर्वनागनाम् ॥ दिव्यवत्पुला श्रीमान् रुमात्मानमस्तु ॥ कुरुयमानवायावदक विंभतिवासनं ॥ स्नानदानादिकं सर्वक

विचित्र

यू० पूर्ववत्समादनात् ॥ तपिन इर्गतिं या यू० सदा सद्गतिं संहवा ॥ संपूर्णं यनमायूष्मा विद्याधियवित्रकल० सुसंज्ञानामहात्म्य
धर्मार्थकामलागिन० वाधिसत्त्वामहासत्त्वावर्जुनक्रविहानि० रुडभीसुदुभाभनहवपूर्वाधिवानि० न० न० न० वाधिसंज्ञानं पू
नयित्वा यथाक्रमं ॥ गृहं न वाधिसायाय संकृपदमायूष्मा ॥ २ ॥ न० न० यजुवागमत्या नत्वा वत्या वसंगमं ॥ उमादतीर्थमाया न
नक्षिपीति यथार्थं ॥ न० न० न० गमधिय० यथा ॥ धनवादिवा सुन्दन० दिवा नत्वा महाकाकिरुमा मयुलरूपित० न० न० यमानवायाव
दकविंशतिवा सुनं ॥ हानदानानि कर्मानि कर्तुं सर्वानि पूर्ववत् ॥ तपिन इर्गतिं या यू० सदा सद्गतिं संहवा ॥ नक्षिपीति वसानन्दसह

१७८

याव२

सेव्या समन्वित० वाधिसत्त्वामहासत्त्वाय विभुजि मयुला ॥ रुडभीसुदुभाभनहवपूर्वाधिसाधिन० ॥ न० न० न० वाधिसंज्ञानं पूनयि
त्वा यथाक्रमं ॥ गृहं न वाधिसायाय यथार्थं ॥ १० ॥ न० न० यजुवागमत्या वा न० मत्या समागमं ॥ न० न० न० कलमाया न
भीतजालाग्यं संपदं ॥ न० न० न० गममहायथं तिधवला तिसुन्दन० दिवा नत्वा पुला भीमरुमा मयुलरूपित० न० न० यमानवायाव
सुनं ॥ हानदानानि कर्मानि कर्तुं सर्वानि पूर्ववत् ॥ तपिन इर्गतिं या यू० सदा सद्गतिं संहवा ॥ भीतजालाग्यं संपदं ॥ न० न० न० क
मन्वित० वाधिसत्त्वामहासत्त्वा रुडभीसुदुभाभेया ॥ सर्वसत्त्वहितायूष्मा हवपूर्वाधिवानि० न० न० न० वाधिसंज्ञानं पूनयित्वा

विविध

यथाक्रमं श्रुत्वा कतिविधं वाधिं यायूः सो गतं पदं ॥ ११ ॥ ततश्च यजुर्वाग्म्या उक्ता वत्या समागमः जयतीर्थं तदा ग्वातं सर्व
भद्रं रुया कुरुत ॥ ततः नागधियः ४७ ॥ श्रीकान्तिदिव्यसूद नः ॥ दिव्य नक्षत्रपुला श्रीम रु मा मशुलम श्रितः ॥ रुद्रयमानवायाव
दकविंशति वासने ॥ त्वानयस्तु दिक्मसि जयूः सर्वा निपूर्ववत् ॥ तपिन इर्गमिं यायूः सदा सद्गतिं संरुवा ॥ निर्हया किं गु ॥ साह
जयितानि जिना लयं ॥ वाधिसत्त्वा महासत्त्वा वरुर्वक्त्र विहा विमश रुद्र श्री सु सु मा धा नरु वयू र्वाधि वा निम ॥ ततः क्वाधिसंलनं पू
नयित्वा यथाक्रमं श्रुत्वा कतिविधं वाधिं यायूः सो गतं पदं ॥ आदत्तानि तीर्थानि महान्यज हिमा लयः श्रुत्या न्यपि वसस्तु

१७२

तानि वक्ता महेन्द्र ॥ १२ ॥ तथाथ पवि वाग्म्या उक्ता सिद्धा संनि र्वा सो दयं तीर्थं मात्या तं सो दयं गुप्तं सर्व पदं ॥ रुद्रयमानवा
यावदकविंशति वासने ॥ त्वाननादि कर्माणि जयूः सर्वा निपूर्ववत् ॥ तपिन इर्गमिं यायूः सदा सद्गतिं संरुवा ॥ सु वृ पालु क मा
यत श्रीम रु सु मा त्रिता ॥ वाधिसत्त्वा महासत्त्वा वरुर्वक्त्र विहा विमश ॥ सर्वसत्त्व हिता नं व वायू वाधिसन्धवं ॥ ततः क्वाधिसंलनं पू
नयित्वा यथाक्रमं श्रुत्वा कतिविधं वाधिसंजायू र्जिना स्पदं ॥ १३ ॥ तदुप विवयली र्थं श्रुगस्तु नमनी विता ॥ निहृताः
त्वा जपध्यानं कृत्वा यद् वसु विरुं ॥ तनागस्तु महा तीर्थं तदा ग्वातं मूनी श्वने ॥ रुद्रयम नूजास्तु यूः तयायूः पनमां गतिं ॥

विधि

दानयहजवादिष्वर्क्युष्मात्वापिबन्धनं। तास्यययूक्त्यापिहृदयुर्दानंयथेष्टितं॥ तत्सर्वविमलात्मानश्चर्तुर्वक्रविह
विमश। वाधिसत्त्वापहासुत्वाहर्वयू४ श्रीगुभाश्रया॥ तथाहृत्वाधिसंहनंयूनयित्वायथाक्रमं। अहृत्वाधिसमासायसर्ववृ
पदमायूयू४॥ १४॥ तत्तुवाननकनागनयदाभित्तंमहाऊद। मनहृदमात्मानमनकतीर्थमर्थदं॥ तत्तुयमकुजायावद
कविंमतिवास्वन्मानदानजयध्यानं कनूर्यहृत्तुर्ववत्॥ तपिनर्गमिंयायू४ सदासुहृत्तिसंहवा। वाधिसत्त्वापहासु
त्वा४ हर्वयू श्रीगुभाश्रया॥ तथाहृत्वाधिसंहनंयूनयित्वायथाक्रमं। अहृत्वाधिसमासायसर्वहृत्पदमायूयू४॥ १५॥

१००

तत्तुवचमहातीर्थमार्यमानानिषविम। मनदंयथिभार्यमानातीर्थसुहायदं॥ तत्तुपियनवायावदकविंमतिवास्वन्॥ स्ना
नदानजयध्यानंयहं कनूर्ययथाविधि। तपिनर्गमिंयायू४ सदासुहृत्तिसंहवा। वाधिसत्त्वापहासुत्वा४ यनिष्ठुचिम्भुला॥ सो
हायमानिनधीनाहृत्तु श्रीगुभाश्रया॥ सर्वसत्त्वहिमात्माहृत्तुयूवाधिसंहनंयूनयित्वायथाक्रमं। अहृत्वाधिसमासायसर्वहृत्पदमायूयू४॥ १६॥
हृत्तुविधिंवाधिसंहनंयूनयित्वायथाक्रमं॥ तत्तुवचमहातीर्थमार्यमानानिषविम। मनदंयथिभार्यमानातीर्थसुहायदं॥ तत्तुपियनवायावदकविंमतिवास्वन्॥ स्ना
नदानजयध्यानंयहं कनूर्ययथाविधि। तपिनर्गमिंयायू४ सदासुहृत्तिसंहवा। वाधिसत्त्वापहासुत्वा४ यनिष्ठुचिम्भुला॥ सो
हायमानिनधीनाहृत्तु श्रीगुभाश्रया॥ सर्वसत्त्वहिमात्माहृत्तुयूवाधिसंहनंयूनयित्वायथाक्रमं। अहृत्वाधिसमासायसर्वहृत्पदमायूयू४॥ १७॥

विशिष्ट

ऊपध्वानयहं ऊर्ध्वयथाविधि। सुविशुद्धिकायास्तथाकामसूत्रानिनःधर्मार्थनीसुमृताःसूत्रवर्जकविहानिनाकवित्र
इर्गतिंयायूःसंजाताःसुदोसदा॥ स्वयनात्महिमंरुत्वा संवन्नं सदागुरु। नरकविमलात्मानःसुविशुद्धिंयायूः॥ वाधिः
सूत्रामहासूत्रा रुवयूःसुदुगाकनाः। नथाहं वाधिसंहनं पूनयित्वायथाविधि। मूर्धकृतिविभांवाधिंयायूःसोगतंयदं॥ ॥
नंनंस्वयंनंनमः सर्वनितायथाहमं समावाहनमाहमः निष्ठापसिद्धिमांरुवत्॥ नृजापियसमागित्वात्मात्मासमाहितः॥ ज
ययस्तदिदमनु ऊर्ध्वयथाविधिमानसः॥ नयिनइर्गतिंयायूःसदासुदुगिसंवनः॥ वाधिसूत्रामहासूत्र पविशुद्धिमुत्तुलः॥ निःक

१०१

आविमलात्मानःसर्वसुलहितायथाहं सुदुगीसुदुगाधनाहवयूःव कवानिभः। नरकवाधिसंहनं पूनयित्वायथाक्रमं मूर्धभावा
धिमासाय संवृद्धयदमायूः॥ वरुनिवायतीर्थनि विद्यकृतिमालयः। नानिसर्वानितीर्थहिः। सुकृतिमुक्तिपदानिच॥ यययंय
वकीवनामयासां वसमागमं। नृकृता नितीर्थनि पूनरुत्तुपदायनि। नवांवायूयतीर्थनां पृथक्पृथक्कृतंमदत्त। पापसं
धनंपूयं सुधर्मसुखसाधनं॥ नृषपियननाःस्वात्मा वनयूःपौषध्वत्तं। दयूदनानिवारिष्यः ऊर्ध्वयथाविधिमानसः॥ पितृसं
यययूयू पूययूःसुनानयि। सूत्रात्मात्मादिवत्तनां रुवयूःनामजल्पने॥ उवंलाकाधियानावः सूत्रात्मात्मासमाहिताः। जयित्वा

विशिष्ट

नाममज्जानि, साधययूर्यथाविधि॥ नानिस्त्रानिनिधायू॥ साधनानिजगदिन॥ दयूर्वहृत्तात्साहं यन्त्रनिर्वृतपदं॥ नयिन
इर्गमिंयाकि, सदासुनिसुहृवा॥ नि॥ कृ॥ नविमलात्मान, पवित्रुद्रिपुला॥ वाधिसुत्वापहासत्वा, कर्तुर्वक्रविहाविम॥ रु
डभीसुहृत्तात्साहं यूर्वाधिसुत्वापहासत्वा, कर्तुर्वक्रविहाविम॥ रु
वंविहयसर्ववां, मीथानामपिसुहृत्तात्साहं यूर्वाधिसुत्वापहासत्वा, कर्तुर्वक्रविहाविम॥ रु
॥ साननादिकं कर्म, कर्तुर्वक्रविहाविम॥ रु
॥ साननादिकं कर्म, कर्तुर्वक्रविहाविम॥ रु

१०२

नृनं॥ नमसर्वविकल्पात्वा॥ पवित्रुद्रिपुला॥ नि॥ कृ॥ नविमलात्मान॥ रुवयूर्वाधिसुत्वापहासत्वा, कर्तुर्वक्रविहाविम॥ रु
उपयुक्तेनपि॥ सर्वानिमानिमी॥ निसंविनानिसर्वदा॥ नदावपुनिहि॥ सर्व, सायसेवक्रवानिहि॥ यनिहिर्यागिहि॥ यि
मीथिके॥ आवकेनपि॥ उक्ते॥ वेष्टुवे॥ लोके, लोकिकेनपिसंमिके॥ दवेष्टुदानवेष्टुपि, यकगधर्वकित्रवे॥ उक्तेकसिद्ध
सा॥ वेष्टु, ग्रहेविवाधनेनपि॥ मृष्टुवाहिष्टुसर्वानि, सदासंविनानि॥ नागुद्रगुद्रुष्टुपि, उक्ते॥ वेष्टुनाकसेनपि॥ उवमः
नपि॥ मृष्टु, सविनानि॥ रुथिहि॥ रुहिसांधिकापि, उमिहि॥ यूप्यासुके॥ वाधिसुत्वेमृनी॥ वेष्टु, सविनानि॥ रुगदिन॥

विचित्र

विविध धर्मभण्डं समावृत्य, स्त्राद्धात्वा समाहितः जपित्वा ध्यानमीमरुं, प्रावरणं वाधिसंवरं ॥ अहमपि तत्प्राजननी रथसूत्रं प्रयत्नः
स्त्रात्वा दानानि दत्त्वा च, कृत्वा यज्ञं यथाविधि ॥ यिह संनयं पितृभ्यः समस्तैर्वा समावृत्य, शिवत्वरुज्जनं कृत्वा, प्रावरणं वाधिसंवरं ॥ उत्तमं
उत्तमं पवित्रं यिह यिह पुलाहा निःकलेर्विमलात्मानः, उद्वक्तविह वक्तुः ॥ वाधिसंवरं महासत्त्वा, रुद्रासिद्धिमान्, अथ सं
वाधिसंवरं, पुनरपि त्याग्यथाक्रमं ॥ जित्वा मानगमांसर्वं, कृत्वा वपि जगदिह ॥ अहं कश्चिद्विधं वाधि, संवाधि धर्मं नारुवं ॥ ॥ अ
थ नाज्जमानश्च, तीर्थस्त्रात्वा वगच्छति ॥ वा नागस्यां वगत्वा वै, जपयध्यानवत्तत्प्रा ॥ अथ न कवूचं कृत्वा, नाना दवाद्यैर्न सदा ॥ शिवत्वरु

११३

जनं कृत्वा, ववाचो सोत पस्त्रि वत् ॥ नियमा यवा सकने वयथा कृत्वा विष्णुषत्तम दत्तता या विष्णुषत्तम, तीर्थस्वादि कंतथा वृद्ध
कृत्वा सुता दृष्टा, वृद्धधर्मपूत कृत्वा त्वा यक कृत्वा श्रय कवि, दया कृत्वा सिना जना ॥ २ ॥ मिता कधि यस्त्वैव कृत्वा कृत्वा मूखा नयि
सर्वा श्वतानि तीर्थानि, संसृविता नि सर्वदा ॥ उवम नयि सर्वानि, सविता नि शुलार्थि हि भूहमपि तदा न भू, तीर्थिक संप्रया यन
॥ त्वा त्वा दाना नि दत्ता व, कृत्वा य हं यथा विधि, पि हं स कृत्वा यि त्वा हं पि, स म स्य र्थ स नान पि ॥ शिव त्व कृत्वा, जा व न था य धं व तं धर्म
॥ अहं समा ना ध, स्या त्वा त्वा समा हित ॥ अ पि त्वा धा न नी म कृत्वा, जा व नं वा धि स म्ब नं ॥ उत स्यु र्मा नू ता व न, प वि शु द्ध शि म्बु ला ॥ नि ॥

विचित्र

अविमलात्मानं, बहुवर्क विहात्रिकशवाधिसूत्रा महासूत्रा, रुद्रग्रीसुभार्जिवान्, श्रुतसंवाधिमासाय, पूनयित्वा यथाक्रमं, जित्वा
मानगमासुर्वा, कलावपिजगद्विभक्तं, श्रुतं कतिविधं वाधिं, संवृक्षाधर्मनाहवन्, येनिजाककहिकादि, ववानवनवासिनः॥ गृह
द्वयविसृष्टाजाताः यजुनाजजमानकः, वृद्धपून्मानुहावन, सिद्धमवृद्धपाप्यन॥ येनाकनमि विख्याता, सुथागताहविष्यति, वि
द्यावननसंपाकः सगतालाकवित्पनः॥ आस्तादवामनूयातां, वृद्धस्तनविदाम्नवः॥ तस्यसंसर्गतापाका, वाधिसूत्रा यगाहवन्ता
सिंहसोईलनागादि, श्रुतनामवयो नूषः॥ सिंहविजीडितवेकः॥ आईलं वदिनीयकं॥ हतीयानागदर्पध, वत्तानामृगककुकां, पू

११४

वकीर्णलकर्मन, वृद्धमास्तनमायुनः॥ तस्यभिष्याहवन्तं, तस्यहवनसर्वदा॥ ॥ उवधवकांथपः॥ सनाजजमानपूर्वज
लकर्ममास्तुथागतपदं पापूवन्ति॥ तस्यपून्मापुहावनसिंहमाईलादिवत्तावाधिसूत्रपदं पापूवन्ति॥ तदाकांथपाहगवन्तम
वमाह॥ रुगवन्तनकर्ममास्तनाजजमाना॥ ॐ तं तथागतपदं पापूवन्ति॥ तदाकांथपाहगवानाह॥ कांथपयवमानन्दतसुर्वलाभयाप्यहं
स्यनाजजमानस्यनिमिहं॥ गृहसाम्यतं॥ श्रुतिनाजजमानोवन्दनंतिजनपदं॥ ऊहनाकावस्यजन्मायंदयावाधर्मतत्पनः॥ तत्समी
पसिद्धकसिंविजका॥ तत्तत्वातवान्, वृद्धकणविहात्रुविनिष्ठवमनावधमनऊहकालनापिमीवकनविनोतथा॥ मृहिकानि

विशिष्ट

मिहनेवविशिष्टमविधानमशा। दानदकिसवापवक्षीवकमनिनोवथाप्यत। विहानंनक्रमार्थनसिहोवेउमिहानको। तदव
धितःसिहोकोनाजोनाजोप्रदकिरेमो। उपजीव्यविहानकंनक्रमार्थनरेवेवत। तस्याकुमलपूरुषन। अयंराजकुमानवकः॥०८॥
विजयसुमनादयावांराजसुरुमः॥ पुनश्चकाण्यप। मस्यपुण्यप्रसादनतस्यसुगृहमातापिहकाकस्यपनस्यन४सुपूजराजकुम
नमनुविशिष्टयन्नि। कावित्सातावित्सापनउवमाह॥ हाहाउकपूजयंकगकृति। माताकाकापिननादित्यक्ता॥ तदाकावित्साक
उवमाह॥ हाहामीमा॥०९॥ सुदयित्वाऊजगकृयां। यथाहिलासहसंशुभकुरुवर्षकमागमिष्यामीति। उदीविनपूर्वकथमिदं

१०७

नीनागमहं॥ तदापिताकश्चिदवमाह॥ मा। अविनयंहरवीपूजमयराजकुमानमसुवांचि। तरुलयाप्रकट॥ नक्रुदवतास
र्वहक्रुसजिनात्मजःनइहकाकाण्यपपूजकृतपूरुषनमातापिहकाकादीदिव्यविमानंवाहयित्वासुर्जाकंयावदुषितालयनीय
कः। उषितकायिकदवपूजा४। उवमवकाण्यपकनविदकनरुपूरुषनपूजोपादेयः४मातापिहकाकादयः४हसंशुप्रवन्ति॥
ततकाण्यपाहगवकमवमाह॥ यनमाध्वर्यहृहगवन्पनमाध्वर्यपाकाहंकिरुमृहिकामयमाधमसिंहनिर्मितस्यपित
न॥०९॥ मिहानंरुलंशायन। महर्षिकनराजजमरुमन। यनमहृहृमाय॥ ॥ हगवानाह॥ किरुहृहृकहृहृकाण्य

विविध

प्रभवजात्मनविवर्णानुरूपं कल्पयमानवाधयानमृत्तिका मयनापिमिलयाकाशकनवासाहमयनताप्रभमृत्तिका
लादिहमयथाविहवमानूनयथावेष्टयाकिलयथादवानूरूपनेपुतिहानयस्तुपयत्सिंहनाईलनागधयथाजा
ग्यप्रमाननशाप्रतिमाहासिकादवायथालंकालेभादिहिंशगुद्वभावरुमलोर्वलघुनालघुलायनवस्तुपुहदतालवर्ह
लकिखलुदहिभांउवमवकाभयाहयसं॥नन४काभयाहगवरुमदवावत॥पुवाभाहसुगतसाधुसाधु॥ ॥उप
गुकावाव॥तथायूयंमहा नाजत्रिर्विघ्नवाधियाफय४।वृद्धधर्मसुसंधधूउरुजर्धयथाविधि।धर्मधर्मुयथास्यस्यस्मृत्वा

१०७

आसमादिना४॥रूपित्वाधवभीमंरुं संरुजधंजगद्धिम॥उत्तयुग्मानुरिफादिपविभुवसिपुलाइर्गमिनेवगच्छता
यधंसुनिसदा॥००॥यादिधूमनिधुनप्रत्वा सर्वपुवाधिता४॥श्रुत्वाकादिसंहाताकाश्यायनदपुवाधिता४॥ ॥००॥मवा
वरुगवानारुमनामवहिकवासावसर्वावनीयवत्सुदवमानुषासूनगंधर्वधरुगवताहावितमयनदत्रिमिस्वकस्वकषुपुज
का॥ ॥००॥निधीविविधकर्तुकावदानुयादभाधाय४॥ ॥श्रुत्वाकादिसंहाताकाश्यायनदपुवाधिता४॥ ॥००॥मवा
पूजयित्वाउपगुफमवदिन४॥हिंसाहमोखजानुत्वाउरुवासंगमूदहनकृतांजलिपूजनत्वापूनववमववीत्वाहदक

विविध

रत्नविष्णुमिस्रसुखसंपदं यथा कृत्वा मूर्तीकृत्या विरहितं स यतीश्वरः ॥ उपरु कं न वरु कं समामुत्र मव वीरु साधु
भूममहा नरु ॥ भूमसुखसमादनात् ॥ यथा मगु नूत्ताया तं तथा व का मि न हि मर पु ना सु र ग ना चू च ना क सिं हा गु ना क व ॥
धर्मना जा ग सु सा सर्व ह सु ग मा जि ने ॥ सर्व विद्या क ना हि ह ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ मूर्ती श्व व ॥ माल जि हा क वि ना थ वि ना य क रु थ ॥ १००
ग रु ॥ ४ ॥ अव लां य त का व र ॥ ४ ॥ महा या न म ना न म ॥ मृ ना थ पि उ र वा स्य ग रु ह सु स मा हा त्म न ॥ ना ना व क स मा की र्त्तु ॥ ना ना पु
ष्य पु र णा हि त ॥ ना ना रु त ह ना न ॥ ४ ॥ क ल्प व क स मा न क ॥ मृ षा ऋ गु न स म्प त्रा ॥ ४ ॥ क ल्प य ना त्प ला दि हि ॥ सूपु षे य नि पू र्ण सि ॥ ४ ॥

कवितीहि नाप्रिम नानाजुगले आधि, पिथ ॥ ४ ॥ हानू व धि ने ॥ ना ना य कि ग ले आ धि, सं ह र्व नू प र णा हि त ॥ ४ ॥ त सिं दि य म ना
व म्प, मृ नि सं घ नि ष्य वि त ॥ पू न्थ क रु जि ना वा थ, वि हा न म नि म ति त ॥ आ व के र्हि क रु ति सार् च, वा धि स त्वे नू पा न केश ॥ सर्व स त्वे हि ना र्थ
न, त स्ते ध र्म पु का नि रुं ॥ ४ ॥ वं रु स रु नी नं, सं वृ ष ध र्म ल वि तं ॥ ४ ॥ ध र्मा मृ तं पा र्त्तु, स मा य यूर्म ह र्षि त ॥ ४ ॥ द वा दे त्या अ सि जा अ य क
ग ध र्व कि त्र ना ग्र ह वि षा ध ना सा ध्वा, ना र ग जा ग नू ज मृ पि ॥ सर्व पि ला क वा ला अ, मृ न य अ म ह र्व य ॥ य त यो था गि न आ धि, ती र्थि क रु
त प स्त्रि न ॥ वा क्त न क डि या आ धि, अ म्मा ४ क र्प टि का मृ पि ॥ ४ ॥ व म न्मा धि स त्वा अ, सर्व जा नि स मू च वा न ॥ पू जा य र्वा य ह ना नि, ग रु ही

विद्विज

त्वाहं किमानसु॥ सुधर्मप्रदयाः प्रदं, समुदायसमायेयो॥ ननु सर्वप्रतिष्ठासो, दृष्टुं संसृगं तं जिने॥ वन्दितानन्दिता सर्व, पूजां वज्र
यथाक्रमं॥ तत्तान्तासमासीनां, पवित्रस्य प्रभादिता॥ धर्मः प्रदं पुनस्तु, तत्पुनस्तं जनयामुदा॥ ॥ अथ सहगवान् दृष्टुं तां
लाकाधर्मवांस्तिनः॥ आदिमध्याह्निककल्याणं, दिदमधर्ममूर्तमं॥ एवं सहगवान् त्रिहं, सर्वसत्त्वहितार्थकः॥ धर्मप्रकाशयं तां, तत्सो दी
कां सुमानिव॥ तस्मिन् वसन्तः, जनवनश्रुताथयिष्यन्ताथ, जनकालस्य हि कवायागनवाभ्याः॥ कृमनी नाद्वं माक्षमहाभाग
पविपीडि, अस्मकवदनाक्ष, हगवांस्त्वया वाः स्वस्व्या तं क॥ श्रुतागवन्वातददर्शनार्हिकवा, हगवन्तं पुत्रं॥ पञ्चहगवन्तं पुत्रं॥

१०८

कवः नार्दिकनागमवाभ्याः॥ पीनपात्रुका कृमनी ना, महायाधिना पविपीडितां गाः॥ हगवांस्त्वया वाः स्वस्व्या तं क॥ वववा
जागजानियः समवाकया वगद्व्या समागतं॥ ति॥ हगवानाह॥ तत्तान्तासमागते वतानि हि कवः पूर्वमन्यासूजानि पूकर्मनिकृता
निउयविनानिलसंज्ञानानि पविनस्तु प्रत्यानाय वत्तु प्रत्युक्तिः॥ तान् वधं हो गिनयेता नि कर्मनिकृतानि उयविनानि कान्य
हन्तु विषयिन हि कवः॥ कर्मनिकृतानि उयविनानि, पूर्वजन्म कृतानि, वाक्यं पृथिवी भूतो विषय कनामो न कजाभो श्रुतिरु
या कवः व, स्वध्यात्वा यत्नं पूकर्मनिकृतानि विषय क॥ अहं न्युहानिव॥ न पुनः पृथिक् कर्मनि श्रुतिरुत्पन्नं न वि॥ सामग्री प्राः

स२

विधि

यका नं व. ह न कि ख लू द हि नां ॥ पुनश्च ॥ धर्म न मा द न पा या. मृभा द य लू ह वं का य इ धु वि नं क र्म. शि धा हि त्र पु का नि तं वा
क इ धु वि नं क र्म. व डु वि धं पु का नि तं ॥ म ना इ धु वि नं क र्म शि धा हि त्र वि इ वि धा ॥ मृ द ह्यु पा ना नि या त. का म मि थ्या त ये व वा ॥ मृ वा
पी शु न या नृ थं. सं हि त्र त्या ह धी म ना ॥ अ वि या वे वा या दा मि थ्या द हि त्र या वि धा ॥ या द यां स य ज्जा हि. य न पा नि व धा दि ना ॥ ना
उ नं हि स क र्मा नि. पा नि या त न इ धा त ॥ य नि वि ध य ला ह न. मृ न्वा य न व ल न व ॥ वे र्मा स य ध र्म म न. मृ द ह्यु ह र्म वि इ ॥ उ गी
नी ध र्म वा नि थ्या. मृ शु वि धा य न हि य ॥ सं व धि नी पु सं ग य. का म मि थ्या त इ धा त ॥ वि ध य मृ व ला ह मृ. स ह मृ व ह य मृ व ॥ मृ स

११२

स न पु वा धा य. मृ वा वा द न इ धा त ॥ स दा सं गु फ य य व. य न दा य पु का न य ॥ म य य म र्म दी गु ध न. या इ धा व व नं वि इ ॥ इ र्हि
व य हा न म. व धु मि र्म वि नृ धा त ॥ स न व गु म ल या य. ये नृ नं वि ध ना म ना ॥ य न ड या नि स प हि. ला ह वि रु न क य न ॥ य स्या य हि
नृ वा द न. य व वि रु म धि र्य य न ॥ य न स्य व वि ष य स्या सं हि त्र वि ध ना म ना ॥ न द वि या मि नि ह्य र्म इ र्ज ने य नि स वि त ॥ य न द हा दि र्म
य लो. कृ वि त न स सा य य न ॥ मृ म म ल ह व ली ति. या दा दा य स ड य म ॥ य न ड या य पु ध न. स र व इ र्म न वि ध त ॥ इ र्वा ध ना सं धु ला
व. मि थ्या द हि स ना हि क ॥ उ कं द र्म कृ न ल न. या य ने वं स वा नि न ॥ य न ड य म इ र्ज न. ना ना पी ड पु क र्म ति ॥ य न र्म क र्म क र्म त न न
य न ॥

विशिष्ट

पुञ्जं न॥ जन्मना सृजना वीची, निमग्नतातिना द॥ तस्मात्तुहीयामहाहीम, ह नक्षिखलु दहिनां॥ ॥ हूतपूर्वहि कवादीन
अनिना नानां महानगरी, यत्र कानामनाजा नाकं कावयति॥ मन्त्रिकसुहीनवकमं वाकी सुवहजनमनूष्यं वप्रभा ककनिकनह
डिव कडमवतस्तु न गगन श्रुतगतं, अलि कृष्णमहिषिसंयंत्रं॥ श्रुतिनमक ४ कर्मकयूज मित्रमिव नार्क कावयति॥ सवनाजाप्र
शरुडकल्याणाय, आत्महितवपवहियुनियत्र ४ महाकावुली क ४ महात्मा धर्मकाम ४ उजावत्सु न ४ सर्वप्रद ४ सर्वपनिष्ठा गिनी मंगल
पनिष्ठा गवर्ह न॥ तस्मिन्समयवा नासत्यां कालवे संयात कडुये नूना व्याधिवृत्त्यत्रा य ४ सत्तानां पाशुला गसं वृह ४ तना नास्तनांद

१८०

हू महाकावुली मूल्यादिनां॥ मया कषांपविशत कवली या विदित्सु कं॥ ॥ निविता व्यथा का ना, सारथि विवतस्तना॥ तमव नाग
जं पन्थ, तथा स्तुहाहिवश्चित नाजायितं नूजं दृष्ट्वा, स्तुह ४ स्वायिनायिना॥ मृत्सु संकापविशस्त, नूदकिसु मूपात्र वं॥ तदा तस्य मातायि
ना, वाश्रवास मूपागता ४॥ सर्वमं नागिनंदं दृष्ट्वा, स्तुहा क्तवमजवरु॥ किं स्तुह न नदह, लूक किं वा न वां दृष्टि ४ कुं कयथयि नं य
थं, निष्ठु धैर्यं समा यथ न॥ ॥ निष्ठा कृपिते सर्वे ४ स नूजा का कना चित ४॥ दृष्ट्वा वंता मूद्रयन्धने वकिं विदल वरु ४॥ तत ४ सर्वपि नंदं दृष्ट्वा
तव सर्वं नूजा कुवं॥ मृत्सु संका विवादिष्व, वाश्रवा कं तथा वदत॥ साध्वं वध्वं नागं, तदा गयू पस्त कय॥ स ह सावे य माद्रूय, दर्भय

विविध

सासमाहितः॥ पवित्र्यासमाभयः नागसायं न जायतः॥ ततः स राजा सर्वविषयनिवासिना वेधासंनिधात् ४ तं घांसत्वात् निशमान
यान् नयं वायल कस्य यमा लब्धः विदित्वा संवर्षिषि मनुजान यश्च कर्तुः॥ ततः विदित्वा मानानां तं घांसत्वात् वहवः ४ कानि जाता
नवसक्तं ॥ वेधाऽथा विविधविधानं सम्यक्नापि विदित्वा ॥ ततः राजा सर्ववेधानां ह्यश्रुद न जात न पुनः ४ पृथ्वा का उहृत्
यनयः ४ विदित्वा ॥ वेधा विचार्य गुणदायान कमलना ४ ॥ देवकानवे स्यात् ४ वेधस्याचल कयाम्पहं ॥ श्रुतिदवात् ४ क
लेषकं नाहित न न मस्य ॥ आहित न्यथा कित्वा ॥ न क क विदित्वा मिनि ॥ तमा राजा नाहित मस्य न न मस्य ४ मानव ४ स राजा वेद

१८१

हिविवाययपूनुषे मृगमानान कस्य ॥ ततः नाक्षत्रिद्यदि न व मा ॥ अथ राजा य न स मय न वाहि वयानात्य विगच्छति ॥ वय
धिना ४ क समुह न सि ॥ राजान मूव ॥ पवित्रा यस्महा राजा ॥ श्रुत्वा ध्यायि जायत ॥ अथ क निवृजानां वजीर्व वजी विमं ॥
तवा व राजा कानु ॥ नृजस्य नाग ॥ कयं ॥ धैर्यमा वस्य दवा ॥ स्यात् ४ कासूखा वह ॥ तथा पितृस्य तडाग पवित्रादि न दिने ॥
सहृदव नाय ॥ वलिं प्रासाय ॥ विधि ॥ तथा पितृहिं नाग ॥ तस्य कर्म विद्या कत ॥ किं विद पितृ ॥ नय ॥ नेव ॥ किं पूयाय ॥
॥ ततः स जन काट ॥ तस्य नाग पुन कय ॥ श्रुयं नागं ॥ तस्य ग्रह द ॥ रुतं ॥ कद ॥ मय ॥ कथं ग्रह पूजा मूयादि न ॥ ततः स जन

विविध

सुननसुवाका प्रवदनवि कथायास ॥ लाहमसुलजायनाम नमनत्तामदीयनमा सुनधि नमसुविताह विथमि नमि ॥ नदशन
नापिकुननसुना नादमवर्षा निहाकसमान सुनधि नमसुनर्यायायास ॥ नवानुह मायासम्य कं वापिविहं निवर्हिनेवान् ॥ यदा
नमांसुत्तानां सर्वानवाभिपूय न कथन ॥ कदा नमनाहितमत्त्यन न दमुदाविकशा ॥ १८३ ॥ कुरुद कसुत्ता प्रह माजा पप्रका मयापूय
कमर्थस्व जीवितयेविद्या गनायं उर्वविशुत्ता हावापयहि ममाहिक विहूपसाधयधं ॥ यदाह ॥ कदा सुनयने नाह ॥ पुस
त्रजिनमासन ॥ नतसुर्वयुवला कं निवयवमहा प्रकशा ॥ राजनहं महा नागी विवत्तन वमउज्ज ॥ कुरु विवत्त कथाह ॥ जीवना

गंविभाविता ॥ नमयासुनी अपिसर्वसंधे सुहाधुना ॥ समामका पप्रका नाजा हगवानवमववीत् ॥ नम्य शून्यग्रहं कृत्वा लाकानं
पूग्धवृद्धय ॥ नदधि वासनां कृत्वा समयस्तपयपुला ॥ नमिनाथि नं प्रत्वा सनाजा एनमादित ॥ यप्रक कंसमाला क ॥ पुस
वंसमादिना ॥ यप्रक कंसमहा राग सुवृद्ध सुवर्णगत ॥ नम्य नृप्रदयानिर्ह ॥ कुरुनत्तयसदा ॥ नमिनाला एनहास्य प्रत्वा सपप्रह
कामूदा ॥ नृपतिं कं पुनत्वेवं स्वगृहं सुपूया यथो ॥ नृगृहं समासाद्य कृत्वा कसममं विह ॥ नम्य निमकुनकुरु विहानं समूपाववम
नृगृहं सुपूयादि ॥ हृष्टमं श्रीधनं मूदा ॥ कृताञ्जलि पूमानत्वा आर्थयदवमादनात् ॥ हगव कदिजानीया यदर्थसमूपाउज्ज ॥ नम्य

विशिष्ट

यत्तु वदत्युपार्थयम्यदं कुरु ॥ यदर्थं गागनिमूर्त्तं पुनजमं वाक्यं ॥ नरुगवांसं कृपा दृष्ट्वा उसादहितमननं ॥ नदहं
वतां सर्वं संघानां राजने गृह ॥ वृजानामुरुमं धर्मं यदहा न उतुतं वनं ॥ पूजयीतुं समिद्धं दनूपहिमहं नि ॥ उतुतजमस्तत्पत्र
रुद्रमिच्छाम्यदं ननु ॥ नितिसंघार्थिनां मनः ॥ पुत्रासहगवापुनि ॥ नथनस्यनमादित्वा ॥ दुष्प्रीहत्वा धिवास्तन ॥ नरुगस्यपमका
मत्वा ॥ रुगवानधिवासिनी ॥ मृदा नस्यमूनयापो नत्वा ॥ सुखगृहययो ॥ नरुगस्यसहसापो न ॥ वधूमिजनेसह ॥ संघावनका कपूजा ॥
सामग्रीं समसाधयन् ॥ उरुयुद्धि नरुगो ॥ संधिवा समरुत ॥ मृपनिनरुगमयने व ॥ पथियां उपलपय ॥ दवनामपुनरुत्वा

१८४

मृदा न उतुतं वन ॥ नरुगं श्रीघनं वृद्धं ॥ ससंघं सजने ॥ समरुद्धं विहानस ॥ सहसावनमावरुत्वा ॥ नरुगस्यनमाजं व ॥ दृष्ट्वा नं श्री
घनं मृदा ॥ ससंघं सांजलिर्नत्वा ॥ उपार्थयदवमादना ॥ रुगवन्निजानसाधं ॥ समुदावरुत्वा मधुना ॥ नरुगवांसं धिक् सार्धं ॥ विजयितुं सम
हं नि ॥ नितिसंघार्थिनां ॥ नथनिसमूनिश्वरा ॥ योऽवी वलमादाया ॥ सर्वसंघे सहावन ॥ नरुगमार्गं प्रसर्वतु नगवसमरुत ॥
पुकास्यत्पामिहार्य ॥ नत्पुनसमूपादिन ॥ नरुगपुनसमासा ॥ यादार्थं पुनिगृकथ ॥ स्वासनसमूपाद ॥ उमाहृत्वा ससां धिक् ॥ न
यास्यपमका दृष्ट्वा ॥ नं वृद्धत्वा सनसि ॥ ससंघं सर्वपूजा ॥ सर्वपूर्य ॥ समवयन् ॥ नरुगवसा ॥ सहाधिपे ॥ वरु

विधि

गन्धनसाधने, सर्वांशानां समं ॥ उक्तं कृत्वा राजानां, सपादादीनां यनीयम् ॥ मूत्रादिंश्च धयित्वा च, पूगानां वृत्तये कथम् ॥ ननु ॥
प्राञ्जलीर्नत्वा, समं च पूगं मूत्रम् ॥ पूनस्तु मनसा कर्तुं, प्रणिधानं यथास्मत्तनम् ॥ मूत्रं कुरु नत्नाहं, लोकश्च यत्रिनायकः ॥ यथायं रु
गवाचूच, कृत्वा ह्यसमासुर्वीम् ॥ यथा ननमूनी ॥ जगत्त्राकारिणोऽसि ॥ त आहं सर्वलोकानां, पावययं समं कुरु ॥ मूत्रिर्भक्त
वयिष्मि, भावयित्वा ममावितानम् ॥ मूत्रं ह्यस्मात्समासात्, स्थापयिष्मि निर्वृत्तम् ॥ ॐ ह्यवमनसा मनः, प्रणिधानं कुरु मूत्रम् ॥ मत्वा सह
गवाचूच, मूत्रात्पुनश्च मूत्रम् ॥ निहृत्वा हि पूलाकं पू, कस्य कसमासनम् ॥ महत्सौख्यं समासात्, मूत्रं किं गता वयं ॥ कथं पुनश्च

१८५

॥ १

लावन, कस्मात्कं जायत सुखं ॥ रुगवन्निमित्तं वृद्धं, सुप्रयत्नं समदर्शयन् ॥ विस्मिता सहसंमितं, पूनवमस्तु चिवम् ॥ मूत्रं समं कुरु यं, पू
नृणां ह्यन्यथा ॥ ॐ निसृज्य न सर्वं, कस्मिन् चूचुषसा धिक् ॥ न मा वृद्धाय धर्माय, संपाद्य वन्निजा वदन् ॥ ननु सर्वपितृलाका, सि
त्तं मूत्रिपुंश्च ॥ ननु ॥ इति विनिर्मुक्ता, स न निःसृपाय यो ॥ उवाच उवाच सर्वं, मूत्रं स्यात्समं कुरु ॥ पूनश्च ह्यगमास्तु, मूत्रं
किं कमायय ॥ ननु कान्तिर्विजा सर्वं, संपित्य समुपासिता ॥ कृत्वा उदकिणीं उवाच ॥ मूत्रं न कुरु मालाक, विस्मि
सहस्रादिनां ॥ कृतां जलिपूगानां, प्रयच्छे वं मूनी धनम् ॥ रुगवन् ह्यवमा वक्रा पंच वत्सु न स्य यः ॥ विनिहृतादिनां सर्वं, कस्य कसं

विचित्र

[illegible]

निरुवक्तिवाधिरुगिनः॥३॥उवंमत्वाजिवन्तानां सत्कृत्युद्धयामुदा॥संस्तुत्यनवर्गतात्तात्कृत्यंवाधिवान्क्तिरि॥०॥त्यादिष्टंमूनी
 उवाच॥अनन्दसमाहितः॥सांघिकेऽसदलोकश्च॥कथंनियत्यनान्दः॥कथं॥सहगवान्स्मिन्नुक्तवाजसूताधिका॥दत्तामीर्वचनं
 हृत्वा॥समोमजोवमवुवीत्॥यद्यकंवाजवाजुः॥श्रुत्वावाजुवर्तकता॥वाधिवक्तव्यमनित्यं॥सम्भाषियदमाप्नुयान्॥०॥निसर्ह्ययविह
 य॥सर्वसत्त्वहितार्थरुत॥कथंनक्तुम्यंस्तत्तात्कृत्यनित्यंसमाहित॥०॥त्यादिष्टंमूनीन्द्रस्य॥संघेऽसार्धसंमूक्तिकः॥यद्यकंनसमायंज
 स्तवित्वंयथोक्तम्॥सदाज्ञाकहितंरुत्वा॥वाधिवर्गसमाववन॥उक्तमगुनूमादिष्टं॥अनंमयानवाधियः॥कथंनक्तुम्यंस्तत्तात्कृत्यनित्यंसमाहित॥०॥त्यादिष्टंमूनीन्द्रस्य॥संघेऽसार्धसंमूक्तिकः॥यद्यकंनसमायंज

विदिम

विदिग् कविनकु निमहा नगनविह नमिहा पायंमाते ४ नने ४ जिम डिम डिम ये हि रुहि ४ पविवावे ४ रुमहे अकिम अवे महर्षि के ४ वा
 भिसुत्त नने आ नये ४ यद्या नमिता अमिहि ४ यं वव रुसमा यने ४ अने के ४ आवक गले वनूरु वपु म रुजवू का पासना नापिहि ४
 दव नाग यकादिहि ४ पुनिम छिने ४ स्यावद ४ यनिपू ४ सार्द निवा निने निष ४ अरु ४ न सिं यदि यदि अथ श्रीहग वा कसुलायां
 अने क दव नाग यकादि सन्मिहिने ४ वन वाज क आं ४ अरु मिहू किमिहा ना ४ हग वा नाहा ४ न ना म पूरु मं व म य द हा ना उव न वं ४
 वन वाज महात्पत्रं ४ मूका म्भय नन्दन ४ ॥ पूरु ना द नं न वा का म्भय समहा मनि ४ हग व कं न मान म्भ म्भ वा व रुग ना यनि ४ रु

५८८

[illegible]

विशिष्ट

यं॥ कथं पुनरुक्तं न, अस्या कं जायत सुखं॥ नितिविहासि ध्यानं, न वा विरुपवा विन, रुगवन निमित्तं वृद्धं, दृष्ट्वा हवयितुं मुह
दा॥ विस्मिता सहसं मिल्य, पुनर्वचं वरा विन, अस्या सम कुरुतां, पुनरादभ्यस्य न, नूनमस्या नूतनेन, सोऽप्यना जायत धूना॥ निति
संहासन सर्व, कथं वृद्ध पुरुषना॥ न वा वृद्धा यधर्माय, नमः सर्वं याय यावद, न नरु सर्व विन सत्ता, विन तस्मिन्निपुण्य नरा॥ न हर्गति
विनिर्मुक्ता, स नितिसमुदाय यो॥ उवंता नभयः सर्वान वरा स्य सम कुरुतां॥ सर्व सत्ता समुह स्य, पुनपत्या यय पुनरा॥ न था या नभय
काश्चिदप्यविस्मयसा विना॥ नाः सर्वा दवला कान वरा स्य सम कुरुतां॥ यावह वाय यय न, कस्य स्य पुन विना॥ उवंता यिमहा नद,

१८२

पुन्य स्य समुदाय वन॥ अनित्यत्वं तु संसारं, इह सर्वं न्यमना त्यक्तं॥ नरु वत्सु निति दिता, सधर्म रुजना दनात्॥ निष्कामता नमध्वं व
मूकं च वृद्धं न न॥ धूनीत मयुसे न व, न जाग न विवदि यरा॥ या प्यस्य धर्म व न्यय, का पुमर्ह स वत्सदा॥ स हिता जा नितिस नानरु
व स्या कं क विद्यमि॥ नृत्वं न महा नदं, पूजा सर्व विन सत्ता॥ न था ल स्य नूमा द न, विन तस्मिन्निपुण्य नरा॥ न था ता न विषा सर्वा, अवरु
स्य सम कुरुतां॥ पुनरपत्या गता स्य, पुनरि क समा ययुः॥ न न स्या अविषः सर्वः संमिल्य समुपसि, ना॥ कृत्वा पुद किपी पुध मुदी य
नद रक्ष पुनरा॥ दनयिरुग वा धर्म, अहम ह्यी नि निधयं॥ न दा का न्यय पुन न विड वा न॥ कदा रुग व नृ थि या च्, कन सं व नि न उ नं

विशिष्ट

श्रुता नानुवर्तन्ते हि हलं वापि वदन्त्या ॥ ॥ हगवानाह ॥ नृभूकाभयप्रसूतं च नानां वरु मूलमं ॥ दधयि व्यामि न सम्यक् कथि
व्यां वा वभी कथा ॥ तदा पुन नानी का न उरु नदि विरुग क ॥ धर्म यरु नना न्ना व न ग नी वा सी सु का भय ॥ यथा ॥ पुत्री सुता सा
वे न र्था रु मे भू जने संयुता ॥ कथं विना विना न ग नी सु क था जने संयुता ॥ व्या याम याम विस्ति भुं रु व कि व म ना व मा ॥ नाना य कि स
मा यु क्ता य विस्ति हि सम चि ता ॥ न इ र्च डि कू टा ना म स्वस्ति य र्व न व क क ॥ नाना व क समा कि भुं नाना व क समा न न ॥ नाना ऊ सु म स
कृ त्रा सु ग र्भा ग भ वा नि का ॥ य भुं ता ला सु मा य त्रा म वि हि वा सि ता स दा ॥ सु न हि ध सु सं य त्रा नाना वि या ज ना व त्रा ॥ नि त्य ह ध सु

१२०

संयत्रा ॥ हि व न य र्हा मि ता ॥ सु रू पु नू वा दि सं पू भुं नाना सु व वि ना दि ता ॥ पु जा सु र्व सु वा य त्रा इ ॥ र्वा नां व न व दि ता ॥ का ल
ह का ल वा दी व व ल रू प नि वि रु वि न ॥ म डि म रु रु ल ह न्या य नी मि वि रु क वा न ॥ व धि वा सां न ग र्थि वे ध र्म द श्वा म ही य मि ॥ द
या वा ध र्म ज ना व पु जा सु र्व सु पु न व न ॥ ये न इ ॥ र्वा व ध र्म य स्व इ ॥ र्वा व ध र्म याने ॥ ध र्म य न न स म य त्र पु न का र्थ म हा त्स व ॥ न
स य त्री सु नी ला व ध र्म ल क्ती उ मि उ ता ॥ सु र्व ध र्म स दा न स्था सु मा य त्रा व रू व सा ॥ डि कू ट य र्व न न स्मि न् आ नि पू ज म हा म मि ॥ व का
पू ज्वा नू ज न रु ॥ वि ज हा न स सु र्व दा ॥ उ व य व वि रु य मि आ नि पू ज म हि रु भा ॥ का ध र्म व स ना ला क ला क ध र्म य ना य ना ॥ ऊ ज हि

विचित्र

विविध धर्मवचन ४८ न कृत्वा सत्यदर्शनं ॥ ॐ ह्युक्तं दर्शनार्हं कृत्वा सर्वधर्ममहावर्तिना दर्मदका महीयात्, लाकट्यानि महाद्विकशा नंधर्म
दगमिष्यामि, ॐ ह्युक्ता गतवा-पूवीं ॥ न (थे व समनूपा क, ह ह्युक्तमनाह नां ॥ ऊरु वित्तासा दमक मस्तिजनसनिष्टु निस्मा ॥ न ना
धर्मक धर्मकृत्वा, सि, न वा वनदा वन ॥ कवि सूर्जनमान ग जा, साधू कान सदा न न ॥ नृक कवि सूर्यु नृणा ४ सिष्य समनू ग वृ नि
॥ ७ भा नू संसा पू वा च, न स्य हि काम हा स्य न ॥ अथ ना जा धर्म द का पू वा वृ कृ क सर्व कं ॥ सा द नं गो व नं नं वं, न ज क ल प नी थ न स्य ॥
वा स नं ह क न य नि स्य य य नि स्य ॥ अथ स ना वि पू ज ना जान मा नी व व नं म उ वी न ॥ स धर्म ऊ नू नां स्व सि, स धर्म ऊ नू नां स्व नं ॥ स ध

۱۲۱

मङ्गलानाम् सर्वकामहृत्पदं ॥ १ ॥ अहर्षन्नननाजन्तुः कोऽहं हलमवाप्नुयात् ॥ २ ॥ मासीत्वनंभूत्वा, ववा दभविपूजकं ॥ किंवि
हाम्भनिपूजदं, कथमाभीद्वत्सुव ॥ वृद्धामहं न भूय नोऽदयात् कुरु सर्वदो ॥ सद्धर्मजन्तुनां त्वस्मि, ददासित्वं महामता ॥ सद्धर्म
वनजानामि, सद्धर्मप्रतिष्ठापय ॥ ॥ भाविपूजाहं न जायिमहा राज, धर्मानां धर्ममूर्ध्ना धर्मधरु कथं नाम, धर्मानां धर्ममू
रुधं ॥ धर्मधरु कथं नाम, धर्मानामा कवं वं नं भूनाजन्महा राजा, सद्धर्मकथयाम्यहं ॥ ३ ॥ पथमं हृमिसं ॥ भाव्य, धर्मधरु वका
नयन् ॥ ४ ॥ वं हत्वा सदा कुरु, मूहा नाजु वं वनं ॥ ग्रामवानगववापि, विहा न वनं ॥ ये वनं यजसि धर्मधरु, नजु नजु वनं

विधि

वचनम् ॥ अहने निमहा नाजं सर्वधर्मकृतं विदुः ॥ राजा वाच ॥ कथं विधि विधानादि कथं तां हि कुरु मा उत नाज कुरु सं
सा न दिन मासा दिन क मा न ॥ ॥ ॥ निपुण मा ह ॥ आ दो य वा द कं स या व वा ना द व ना वि व ध र्म धा कुरु म व य व
ह मि ते र्ज ना ॥ सर्व न स न सा र्कं ल लि ता स न सं हि मं दि व्या ह न म रू मा हं यं व वृ ह म कृ टि कं ॥ वा गी ध र्म म हा लु कं सर्व ध र्म य
नि धि मं ॥ उ वं सं ह दि सं हा य पू व स या य पू ज य न् ॥ वा क न क रि य र्धे व वे षा भू डा द य स था ॥ व रु र्ज मि ॥ उ वं क र्मा द न ने
व न का न य न् ॥ धा उ ॥ नि नि जा नि स्व स्व क य स यू क म ॥ उ वं क र्मा य स वा सूल मा प्रा नि नि स्य स ॥ मा सा शि नी शु क य क व

१२२

ई ॥ अ न्ते व वा द क धा व न हा ना दि रू व क र्म श्र का न य न् ॥ म धा म य ह न दी यं दानं क र्मा रु मा उ ती ॥ सूर्य व श ग म हा ग ॥
न न श्र क ल य न् ॥ मू र्ख य का न र्म य श्र वा नं म रू मा न न ॥ ना ज न या र्धे उ ह न स मू य स य व ह न म ॥ हा ना दि कं जि यां कृ त्वा
चिं कृ त्वा न वी व र्क ॥ सो व वृ ह न या वृ ह ॥ उ वं क र्मा व र्म स दा ॥ मू य नि त ॥ म य ने व पृ थि र्मा व र्म य य न ॥ द व ना म रू लं कृ त्वा न म
मू र्ध न दा य य न् ॥ पू षा भू यो स था ग ॥ ने वृ शे दी य म व वा वी म वं म मृ दं ग धे ॥ मृ द्वा प ट ह ना ल वे र्म व ध र्म क र्मा धे ॥ गी न
वृ ह्या दि हि र्म ले ॥ ना ज ना ना स वे पू र्ण ॥ धा उ ॥ वि धि म र्म ले ॥ आ दो य द कि मं य व सु नि वृ ह य गी य न ॥ ला ज क र्मा स पू यो व

विधि

ह्यमृद्धिप्रक्रिययत् ॥ ॥ अथ राजा वाच ॥ हिंसासहस्रमहाहाग, महाभयवृत्तकथं, उक्तदवालयवापि, यजुमी, रथसुसम ॥
उक्तान्नदितियवा, हनीयवदसहस्रमहाभालिपूजावाच ॥ नेकसुनमहाभजनयजुवेत्युपनिहि, तहा ॥ यजुदवालयवापि, यजुमी
रथसुसम ॥ यजुयजुमनामय, वृद्धकृत्पुत्रकृत् ॥ उवंगजमहाहिंसा, मूहाभयवृत्तं वन ॥ ॥ राजा वाच ॥ कथं नाम पुमानं
व, वेत्युपदक्षिणा कथं संपूर्णं यथायावत्तावदिति किंपूनमहाभालिपूजावाच ॥ यजुमी नाम हो गज त्रिजं वे वनका वयत् विप्रमं
वित्तं नेव, किं विदित्विदं कृतं ॥ ॥ कमानति ॥ राजा वाच ॥ समर्थमसमर्थं वा, तस्य ना कथं पुत्रा ॥ भालिपूजावाच ॥ कदा विदमम

१२३

॥ ॥

रथं वा, बालवृद्धाथवापुनः ॥ मूहाभयवृत्तं न, न कर्तुं वांमही यत् ॥ ॥ राजा वाच ॥ कथं हि कामहाहिंसा, मूसमर्थं वातवृद्धा
का ॥ मूहाभयवृत्तां नाव, हलकृत्कथं वन ॥ भालिपूजावाच ॥ उपवासाभिलाहृत्वा, ऊर्ध्वारुवेत्यमर्त्तनां ॥ निवत्तनादि
कं हत्वा उपवासावका वयत् ॥ मूसमर्थं बालवृद्धा नो मूहिना यथाहवत् ॥ दिनमकदिनार्जवा ऊर्ध्वारुवेत्यमर्त्तनां ॥ वेत्युपनिवा
नं वापि, उपदक्षिणा वका वयत् ॥ येन कृत्तु कर्तुं यवमहाभजनथा विधि ॥ ॥ राजा वाच ॥ उक्तनियमकथं हि सा, हकाशर्क
कथं पुनः उक्तसंपूर्णं कथं ऊर्ध्वारुवेत्यमर्त्तनां कथं कथं ॥ भालिपूजावाच ॥ उक्तविद्वानादिकं कृत्वा, उक्तविद्वानका वयत् ॥ सर्व

विधिः

मुक्तापवायन.सुगन्धसुकेमेसह॥निहन्तुमस्तुम.नहिणानिवधनवा॥निहन्तादरुदानन.कामावनंत्यजत्यूनशा॥त्यक्तह
पिपुनवाकन.त्यक्तहिन्नहावननवा॥त्यक्तशूद्रवाकन.पावकववनंतनू॥नवश्रुविद्यादानन.वापादविहन्तुनडा॥ने
वमिथ्यादृष्टिप्रहर्ष.नेवालवमहाजनेश॥मघदाननपीयक.माशाहवननकल्ययन॥उच्चनर्यामहासूर्या.श्रुकालुगजनन
उवा॥उवाविधिमहावाज.पुनर्यक्तवश्रुहनिनि॥पावननंतथाकुर्यादहावाजुक्तस्यवा॥पुनश्चमहावाजुक्तसंपूर्णार्थप्रतिव
र्षवा.वर्षमकंवा.हृत्पीयंवा.पंचमंवा.सकमंवा.उक्तसमाकं कुर्यात्॥उक्तसंपूर्णार्थकनवाज.विधिःकृत्वापवायन॥वत्

१२४

कृत्वा मय कृत्वा.नाभासुवदिनदिन॥नृत्तगीतादिसंपूर्णकृत्वापवायनं वसंपूर्णेश॥पूज्या कृतसमायुक्तेश्रुजकृत्वापवायन॥वि
धियस्तदिकं कृत्वा.श्रुवाय्यपद्ययन॥सूत्रार्थकं कर्तव्यं.कोमानीतय्ययकृत्वा॥उवाविधिमहावाज.वदामि सकलं नृपेश
॥ ॥श्रुथनाभावावा॥साधुसाधुमहावाजोक्तवधर्ममयाश्रुत्वा॥रुत्तकृतमहानाथ.लावयत्यंयथा मर्म॥भालिपूजश्रुत्वा
श्रुवाज.पुनश्चामिपुनवाजस्ययत्नं॥पूवातथागतं पाद.सुदकं उक्तमसर्न॥निर्घोषादमनानाम.श्रुत्वा नृपकृत्वा॥श्रु
मनावतिस्मासाय.मिहमिहसुखलीलया॥तदादयदवादिदीनमनास्मालय॥उदानीं किंपुकावत.विजयिष्यामसदा

विधि

सिक्तं॥ ममाग्रममनिर्घाषा, दमनाममदानव॥ मदांतिविचित्रा, हवनजायतिभक्त॥ प्राक्तेवदवनाज्जे॥ पूजार्थेव
स्यपितं॥ ममेवेष्टमूहावातं, वृत्तं कुर्याद्यथाविधि॥ तदनमनश्चिनिर्घाषा, दमनां सुननिर्जितं॥ निर्जितं वपुषिभ्याम, व
धनिस्तदानव॥ उर्वपुष्टावनाज्जे, मूहावातं मया॥ मूहावातमहातजा, तदुत्तस्यदुलं मया॥ कथमसकलं सम्यक् १२५
र्यकुमादिपश्चिमं॥ विमानमूत्रेपुष्टातिमयां, श्रीधर्मधनुश्चतथागतवा॥ कलाविपतिमनोदिजन्मस्य स्तासु राजासनमा
सि, तासहाधर्मधनुश्चत, पश्चिमयूनमवव॥ ककुवकविहानश्चककुधनुहलाप्यत॥ धर्मधनुश्चतानवधु, दीपतमाय

मवव॥ तनवांशुविगाजाय, महाधनंपुलस्तम॥ तजार्वनमूखध्यात्वा, दीपकयनवांशुतगावेष्टापयस्यकनापि, तस्यव
वांनलंघन॥ इष्टाकनपववत्तानि, संघपुष्टायातनवां॥ अर्घ्यं कुरुयतस्य, मूर्तिवाचहलाप्यत॥ इष्टपुष्टासूक्तमा
नादि, ददन्निधर्मधनुश्चत॥ ब्रह्मात्मतदुसंवायां, यस्त्वर्गजन्मयायत॥ तिनकंपुष्टाकिंतयन, वेष्टापसूनहिंसंयूनं॥ सोद
र्यगुप्तसम्यक्, सुगंधदहमाप्यत॥ धूपनन्ददक्षियतस्य, तनवांशुपमाष्टायति॥ सर्वपापंविनस्यन्ति, स्वर्गलोकपूजायत
दीपदानवस्तुपात्र, सर्वधार्तविनस्यति॥ कूर्वन्निधनवांशुनित्यं मूर्तिनूपमाप्यत॥ नेवयेष्टाकिंतयन, वेष्टापवडस्युः

विविध

हं॥ दविडनासन कन. नाजल की हलायन. नाना हल समायुक्त वेद्याय यथ य द्वा. वांदि. तं स हलं कार्य केने वं लख्य कथ
व्यं॥ भूवनिष्टं वं संहतं. पक्व पूषा नि. (क्षीकि तं) कथं न वा ४ विपुला हा ग्वा. सर्व सुख समापन॥ विविज निव व्या नि. पय निने मि
तानि व॥ दवला क प्र पूर्य क जाय न कमलासन॥ यन वा धर्म धा रु व. नाजा कत विकि र्य न॥ सुवर्चुन निका तुल्य. दान स्य त न ह १२७
लं ल ह न॥ पदा क य पदा क य क र्ध म कं सुवर्चु कं॥ दान क हलं य व. लख्य न मून य ऊ ॥ का रु म व प्र ऊ र्व कि. धर्म धा लो व य
न वा ४॥ दवला क प्र पूर्य क. सुवला क सजा य न॥ यन गी तं प्र गी य क. हू प वि म्भू वा यून श दि वा श्रु तं प ल ख्य क सु न ला क पूजा

यन धर्म धा रु म हा नाऊ न. ऊ प म रु प्र ज य न॥ बू द ह न स मा सा ध ४ न ने वं मा रु प्रा य य न॥ विविध वा य प्र वा य क य न स ध र्मा
ध क वं॥ श्रु वा न दि वा वा यै व सु व ला क स दा सि. क ४॥ ना ना वा य स मा यू क नित्यं ऊ र्व कि य ऊ ना ४॥ स्वर्ग हा ग स मा यू क. ग ध र्व न
म न स ह॥ नृ ख मा न स्य न कृ सु ह स न धा नि न त नू॥ क वृ. कृ त सर्वो नि. पा या नि प्र ति ह न्य न॥ वे द्य वि म्भू य म र्त्वा. पा य ना नि
वि र व ति ता॥ कूर्व कि न सु धा ल यं. सु व ला कं स ग द्वा. मि॥ दि ग्मा ला प्र ला ह कि वे द्या य य न वा स ह॥ गु णि ता न क पू षा नि प्र मा न न
य दी ह्वा॥ दि ग्मा लि का या श्रु पू षा या श्रु णि क सं वा या स ह ४॥ स्वर्ग ला क रु व ऊ न म हा हा ग स म वि त ४॥ ना ना कृ ५ वि वि र्ध वा

विधि

मयनरुद्रकथेववपुलायायनियनवेववकवर्हिरुविषमि॥वहुवंगवलेयूकपूजाभासुहसकं॥मृदुजन्मजनाहवा,मृ
कवृद्धपवन्तुह॥उवमस्यमहावाज,श्रुहावाजस्ययहूतं॥श्रुहामहापुलावस्य,संकपवववामाह॥वाजावावर्हिरुसहसमहा
हाग,निजानक्यादिसिस्वयन्॥विश्रामकक्यादिसिनिविश्रामश्रीकीयन्॥नस्यहूर्नकथंदावंबुहिल्लिरुसहसम॥ ॥आविपू३ १२१
वावा॥निजाविश्रामंकीयन्थनदभासंरुलमाप्यन्॥उवंविश्रामनिजाया,रुलदाघंरुवकिव॥वाजावाव॥आविपूवुनवाहू,रुल
हीनंवदपुला॥रुलहीनस्यपाय,महिकिंवानवापून॥आविपूवावा॥नस्यायायमहावाजत्रसिकिंविहत्वाभृषुधर्ममकुंय

नम्यादी,कावयस्यचपदकिभां॥यावथाश्रोत्रवनेव,सर्वदावपुमूयन्॥श्रुहाववपुलासंव,रुलाकुरुकमापयन्॥उवंश्रु
महावाजन्श्रुहावाजुवकस्यव॥महानसंसापुलावकथयामिपूनश्चन॥उवंवमहाश्वेव,वधनवसहादहं॥उदिथारगा
वधपायं,माहहापिहृघाटकं॥उवंसूपपुहदादि,नवननविनासितं॥श्रुस्वमधसहसाभां,संपूर्णपूनमाप्यन्॥आकुरुकथागत
वाहनहावाजुवकहूतं॥उवंमहावाजनिस्वर्यनमयापूनं॥सफानांयवतानांव,मकुरुषपलानिव॥यनदानानिसहसम्वा,श्रुपू
कंलकमवव॥नथेवगुननासंख्यामयिवाहूमयानृप॥कुरुकुरुवाजस्य,रुलसंख्यानवाकन॥नद्वर्मानांसपुलागकु,हाग

विद्विज

विचित्र कंठयन्तममहासावधिजनसंगकं, लोकेकंदसुवासिनां॥ बहुर्हगवतीनां च, उव वाजश्रुमानकं॥ नस्यधर्मप्रहावनलाकंधः
र्मप्रवर्तन॥ ॥ वाजा वाव॥ साधूसाधुमहाहि कू, उतानां उतमूर्धमं॥ उत वाजमितिख्यातं, सत्यभवमहामन॥ सत्यभवकवि
यामि, हिलाषाहूतमहदि॥ रुक्मानन्दवनायोय, श्रुमात्यानादिदसव॥ सन्निपातपुसर्वमहावेद्यवकावितं॥ यथाहंभानिपू
जन, सङ्गीकृत्यं सर्वकं॥ दिनानिपुत्रयामास, तदादिवसमागत॥ यवादकादिसंसा, बहुर्दमपांनतानृप॥ उयवासाधिभारुवा
नियमनप्रतिष्ठिता॥ मध्याह्नपुष्यववेद्यं, दीपदानं पदीययत्॥ व्याख्यानवृत्ताहूय, साक्षिपूजमष्टक॥ नतलूथायहूयात्, नया

१२८

र्धपहननिसि। कृत्वा वस्त्रेष्वनं न दातुमस्मान्नरुत॥ तमात्रा कनकाज्ज्वलमानं मस्तुतं॥ यंत्रपदकिं कृत्वा नासनं विकिर्नि
 तं॥ मुनीगीतादिसंपूर्णं वैष्णवमालयविवा॥ वहवावेष्टमास्तु गतवानृषसूक्तम॥ ननिजानं वृष्टिमां धानिर्भवनका वयस्य
 चावननदीयं वदीयमपुमिर्वैष्णव॥ शूनकनृषगीतादिहोम्यलान्धादिकंपूज॥ कृत्वा हनि संया वक्तिनाय नृपसंरुम॥ यथा
 भाविपूजसदमित्त॥ छिवर्षपूजयित्वादिगमालादिद्वजावलाहनं कर्माणि॥ कोमावीपूजनं कृत्वा कर्माणि कृतमावना॥ उवक्का
 न्यपरप्रहं धर्मदकमहीयनि॥ पूजापूर्वकृतमनः शूनकावतुमिदं॥ उमातभाविपूजायदकवान् विविधानि व॥ सह्यामिव

विविध

मूल्यानि मूला हवमरुपवं विहावहृष्यादिकं सर्वं वक्राणि। वीवनाभिव। उवं दत्तातमा राजा गथयाध्वभाकृतं कमस्तुहा
महासुखं उक्तं राजमहादयं मया हा गधनसंघातं नवयादयसादतः॥ हर्षाहृत्वातमाहि कूडवावेतं मही पमिं तव हा गधमहा
नाजमहि नमकं कं शूरा पूर्वान् कूलसूतं वं प्रव कामि विधिं नव॥ कवित्महा मतिर्नाम वाधिसुखन निर्मितं॥ श्रुति नयावनतव
वेत्यमकं मनाहवं॥ महादत्तवानामसु वसिष्ठा वनी मकमस्ति॥ वसुनागनागिंया तजयस्मिन्नावनव॥ तवेत्या श्रुमकवित्पू
ष्यानि विविधानि वानाना कसूमसं कृत्वा नमनीया वहुकहु॥ तवेत्यहृत्ति पूरुन नानासाध्यायननव॥ जयसाधु प्रकृति अवय

१२२

श्रुवस्तीत॥ उवं पुनिदिनं कृत्वा तवे ववसमासिता॥ कस्मिन्नुदिननागम अविमकं दुर्दमितं॥ सूर्यदर्भितनेव वदनापनि
वदयत॥ आपितानागनागिंया सफतवुं हवनवर्वा॥ तदावनागनागिंया आपितामाउकनहु॥ सफाहिर्भवकाजम वहुवुधन्यक
हुक॥ नित्यं वेत्यदर्भनीया भवुकानागजमनि॥ पूर्वजमस्य वृत्तिश्च स्वप्रवस्यमिवाकृतः॥ कस्मिन्निवेत्यहृत्कथमहर्षिदर्भितं
या॥ तनेवर्भवकाजममनुहृत्कथ्या कृतं॥ तद्वृत्तवां विनासि उवसुपजायत॥ कृते धन्यं सुदके कं नित्यमिति विधीयताः
मिमत्वा भवुका सर्वकावयकिपुदकिभां॥ श्रुथवहुर्दिताय्या हृत्तर्भवकाजमपूक्तवान्॥ किल कीर्तिमहानाम नृपत भान्वान्

विविध

विविध ल॥ सुशानिकन्यकाजन्म प्रसिद्धा निवह्य कन्यका ॥ सुनूपावदर्भनी यामना हुन ॥ कथनवर्द्धन कंन्या जादहू मिव
 पकजं ॥ नितस्तुतावनीरुता ॥ कायविरुनगच्छति ॥ मूनागंधर्ममार्गवतदातपावनं यथो ॥ नरभ्यभानवप्रिकायाश्रुहृतिन
 सुवनंरुता ॥ सुभाषयप्रिकादवी, वृद्धकणं यथुस्तुता ॥ उवंगत्वाववृद्धमृहृतिन ॥ सुवनंरुता ॥ मनपूषानूलावन, त्वमिह
 र्मयकत ॥ नृपाहृत्यामहा राज, धर्मदक्षिस्थानवान् ॥ पत्नीतधर्मनीलनि, सर्वलाक ॥ प्रकिर्हिता ॥ नृपपूषानूलावन, मूलाव
 वतंयुवां ॥ प्रसिद्धवाचमहा राज, पूर्वपूषासंवय ॥ ॥ पुनश्चमहा राजा ॥ धर्मविना नमा कंव, दानं विना न ह क्तवान् ॥ ॥ ॥ ॥

200

[illegible]

विधि

ता॥ ननादहासमनाजवायं नाना हूर्यपू वयम् ॥ समरुदिसादिपूषावर्षयन्निव ॥ उवंविष्मस्यत्नीनाजाना धृत्वायूषावि
मानकानीयनवसूखावसांउनिनः साहुवनससोऽङ्गमहिः कुरुदासुस्मिं किङ्कनयर्वतासुम ॥ श्रुनन्दनयमादनपाफवा
नसुहसाकिनाभाविपूषसुतदाहगवानाह ॥ ॥ उवंकाभय (अष्टवर्षमदिक्षा महिपत ॥ उरुनाजुपुलावनपापामा कय
देवना ॥ उरुमगुवूमादिष्ट (अष्टमयाननाधिय ॥ तथातकथनार्जुनावेवंपुकावय ॥ तथात्ययापिनाजुः सुत्तानाहितसा
न ॥ श्रुहानाउवर्तकृत्वा कर्तव्यवाधिवानिभा ॥ ॐ नितनायपुपून्समाहर्षेनिसंयद ॥ नाजानथमि विंयपात्यनन्दसुपार्षदम

२०१

॥ १

हवकिविपू नानस्मिः पूष्मानानिधाषये ॥ दिविडुविसूजनेरुदवसंधेमहहिः ॥ ऊपूदससिराहाम (ओदसंभूतं स्थं सुमसु
ममस्मिसंयः आवयवूधधर्म ॥ तदासुहाजनाः सर्वरुगवकंयनामव ॥ ऊपूः स्वस्वालयंदवाः वाधित्वा सथावकाना ॥ ॐ दमवा
वरुगवानात्मनासुवहिकवोवाधित्वा साधुसर्वमानुषासुवगधर्वधरुगवतालापितमत्यनन्दनिमिः ॥ ॐ तित्रीवित्रि
उकर्षिकावदानपक्वदसाधायशा ॥ ॥ श्रुथाशाकामहीयात् (अष्टमयाननाधिय ॥ तथातकथनार्जुनावेवंपुकावय ॥ तथात्ययापिनाजुः सुत्तानाहितसा
न ॥ श्रुहानाउवर्तकृत्वा कर्तव्यवाधिवानिभा ॥ ॐ नितनायपुपून्समाहर्षेनिसंयद ॥ नाजानथमि विंयपात्यनन्दसुपार्षदम

विभिन्न

ऊ। प्र. खानं नृपतिदृष्ट्वा पुननवसमादिसुतः॥ प्र. मू. वाजं मया ख्यातं यथा मयुः प्र. तादितं रतथा प्र. खानमादित्वा प्र. व. निडुं मर्हसि
॥ प्र. वासुगवान् नृप. आवल्यां वदिना प्र. म. रजतो वना महाद्यान. विहा वमनिमप्रिक्तः॥ हि. कृ. हि. ४. अव. के. ४. अ. र्. वे. न. के. उ. नि. हि. रू. था. र.
हि. कृ. नी. हि. रू. था. नृ. म. हा. स. त्वा. नृ. पा. न. के. ४. वि. ह. न. स. र्वा. स. त्वा. नां. हि. ना. र्थ. स. मि. नि. स्मृ. ता. र. स. वा. धि. सा. ध. न. ध. र्म. मृ. वा. द. र्ष्टुं. स. मा. न. र. त्वा. ॥ त.
दा. त. स. मृ. नि. ड. स. व. क. र्त्तुं. य. प्रा. दि. नि. ४. स. र्वा. र. त्वा. र्ज. म. मृ. तं. या. र्त्तुं. स. र्वा. स. त्वा. ड. या. ग. ना. ४. उ. त्वा. प्र. म. का. दि. द. व. डा. ४. स. र्वा. ना. का. धि. या. श्रू. यि.
दे. ह. डा. ४. स. ग. ला. य. का. सि. धि. ग. स. र्वा. ना. क. सा. वि. धा. ध. न. ग. ला. आ. यि. ना. र. ग. डा. प्र. म. हा. न. ग. म. ग. नृ. जा. कि. त्वा. न. डा. प्र. म. हा. न. य. पि. स. मा. ग. ना. ॥

२०२

वा. कृ. ला. म. य. य. आ. यि. ता. प. सा. उ. कृ. वा. नि. ता. वि. धा. ध. न. ग. ना. आ. यि. ना. र. ग. डा. प्र. म. हा. न. ग. म. य. न. या. या. गि. नी. वी. जा. रू. था. न. य. नी. र्थि. का.
श्रू. यि. ना. जा. न. का. नि. या. आ. यि. वी. व. वा. ज. कृ. मा. न. का. ॥ श्रू. मा. ला. म. कि. न. आ. यि. वे. म. आ. यि. प्र. जा. य. नि. र. अ. रि. ता. व. नि. ज. आ. यि. सार्थ. वा. ह.
म. हा. र्ज. ना. ४. यो. ना. जा. न. प. दा. प्र. म. हा. रू. था. का. र्थ. नि. श्रू. यि. उ. व. म. न. य. पि. स. त्वा. प्र. स. र्वा. ना. का. स. मा. ग. ना. ॥ त. स. र्वा. र्ज. म. मृ. तं. या. र्त्तुं. त. व. हा. न. डा. य.
वि. भ. र. तं. तं. श्री. घ. न. दृ. ष्ट्वा. स. म. स. र्वा. य. ना. म. व. ॥ स. रू. तं. स. मृ. पा. नृ. त्वा. य. नि. वृ. त्वा. स. म. कृ. त. ४. तं. मृ. नी. ड. स. मा. ला. क. आ. र्त्तुं. स. र्वा. र्ज. म. द. न.
मां. ॥ सा. र्ज. ल. य. ४. प्र. स. त्वा. उ. य. नृ. स. मा. हि. ता. ४. श्रू. थ. ना. स. मृ. पा. नी. नां. दृ. ष्ट्वा. स. रू. ग. वा. न. र्ज. ना. ॥ श्रू. र्थ. स. र्वा. स. मा. न. य. स. र्वा. र्ज. म. स. मृ. पा. दि.

विविध

विविध सूर्यसूक्तमपि सूर्यसूक्तप्रमाणानि ॥ शिवत्वरुजनं कृत्वा बहवूर्वाधिवा निनः ॥ तत्तु न्यतः ४८ अष्टौ विस्तिर्भुवः वि
भवदः ॥ आद्या महाधनाहा (ग्या) वेध वनधनेन समानिव ॥ आवत्यां पूर्वी जातानि समदा निपवादिनः ॥ आयुष्मता महाभोजन्या यनन
उवर्जितसा सनः ॥ सावता निगारुगवा न्यह्यर्थ महिपु सत्रतः ॥ सवगृह्यपतिनू नौ दोधि मूरुहस्तनः ॥ आयुष्मां महाभोजन्या यनडक्तः ॥ २०३
महायानरुवः ॥ मिहगवतः ४ पूजाकर्तुं ॥ ॥ व्याधिवा सयत्यायुष्मा न्यहा भोजन्या यनः ४ सवगृह्यपतिनू हृष्टी लायनः ॥ अथायुष्मा न्य
हाभोजन्या यानरुवः ॥ गृह्यपतिमादाय ॥ यनरुगवा न्यहा यसंका ४ ५ यसंका न्यहगवतः ४ यादो निनसा हि वन्दित्वा का न्यनिषर्तुः ॥ ५

का कनिष ३ श्रूयुषा महाभोजन्या यनाह गव कनिषदमवाचन ॥ श्रूहं हं दह गृह पतना कां कति, ह गव कं स आ व क सं घं हा क यि हं ।
 तस्य ह गव तान धि वा स थ द नू कं या मू पा दा य त्व धि वा स थ दि मि ॥ ह ग वा क स्य गृ ह प त ह ष्टि हा व न ॥ श्रू थ स गृ ह प ति ह ष्टि हा व न
 धि वा स नी वि दि त्वा भ त स मा हा नं स जी क र मि ति ॥ यू ष्य धू प ग न्ध मा ल्य वि ल प ना नि व, श्रू यु ष्य ता पि म हा भो ज न्या य न न, भ क्ता द व
 ५३ धि ष ४ क्रि य तां श्रू स्य गृ ह प त उ प सं हा न मि ति ॥ क र ४ स क न द वा ना मि श्र न व भू व न व द न व न मि ति नि र्मि तं ॥ उ वा व त सू य
 ति ष्टि त स दृ षा नि व ना ग स ह्मा वा ल वं ज न न वी ज य नि ॥ सू यी य पं व णि ष न हं वू नू प ह ती नि श्रू न का नि ॥ श्रू न क पं व मा जा ति, गं

विविध

धर्विकभानिवा। सुप्रिया नाम गंधर्व, गंधर्वाधियति ४ पला ४। वसुप्रिया सर्व ४ गंधर्विकसूको भलदिव्यवीनासमादाय, नृपेव
समूपावनत्। सुप्रियानका नृकामकजमा नृहसि, श्रुत् कुक्कुट, मयून (गम, रुकका, कि व, समान भव, विभक्ति मुक्त ना॥ समूधा
षयमानश्च स्वमति दर्भयययो॥ समूधा षयमानश्च वभूवनं समूपादिभक्त॥ नृपतं समूपादिभक्त, दृष्ट्वा सर्वप्रियानिका ४॥ श्रुत्वा
नृदहूतं नादं विस्मिता समूपावनत्॥ तानिवयं च माजानि, गंधर्विकभानिवा। श्रुत्वा दृष्ट्वा निवसर्वा निविस्मयं समूपाययो॥ न
सातानिवसर्वा नि, दृष्ट्वा वभूवनं तानिव। स्वस्वसदास्मिमानित्यं, पूजयामि निधदिन॥ यो भक्तस्तु महा हि ह ४ सर्वविद्या गुणधियः॥

२०४

स्वभक्तस्तु जगन्नाथ ४ सर्वस्वहितार्थरुत॥ नस्मिन् वसतु, रुगवा समुनीश्वर ४॥ लाकसत्वा समुद्र उक्त यया समुपभयथा नृद
नन गृहस्थन, सार्धभवमुपागतं॥ वभूवनं समा लाक, मनसेवं व्यविकथत्॥ श्रुत्वा वसुधीयासो, गंधर्वाधियति पुरुषा यं वसिष्ठा
हि (ध्वनी) मा मादाया हायसंक्रमत्॥ नितिन मुनिभक्त, मनसाय विविक्तिं॥ मत्वा यं वसिष्ठाया, तथा गुरुं समिच्छि, नृकतसप्त
गंधर्वहस्तन सहसा चित ४॥ वैश्यदेवु वीभासं पादाय सहसा वन॥ तथा स संक्रमस्तु, वभूवनं समूपाययत्॥ दृष्ट्वा नृपि घनं नत्
तां वीना समूपाययत्॥ नृक ४ समुगतं रुक्मा समस्त्य पसन्नधी, नृसूचं मा मृतं पादु, नृसहाया मूपाययत्॥ नृदासे सुप्रियाय नृ, दृष्ट्वा

विविध

मानाहिगर्वित। तां वीभक्षनूयन (प्रहृष्टा विहंसमानरुत॥ तत्पुत्रा मात्स्वनास्युक्ते विभक्तिमूर्च्छा॥ समुल्लिखता सर्वलाक, व
तासि पर्यभाह नत॥ तदा सर्वविभक्तलाका, श्रुत्वा तत्पुत्रा मात्स्वनास्युक्ते विभक्तिमूर्च्छा॥ समुल्लिखता सर्वलाक, व
आयि, तस्य मानाहि घाटन॥ वेदूर्यदं वीभक्षनूयन (प्रहृष्टा विहंसमानरुत॥ तत्पुत्रा मात्स्वनास्युक्ते विभक्तिमूर्च्छा॥ समुल्लिखता सर्वलाक, व
रुथानाना, विधानि वा निता रुथा रुत॥ अथात्समूह नूयन (प्रहृष्टा विहंसमानरुत॥ तत्पुत्रा मात्स्वनास्युक्ते विभक्तिमूर्च्छा॥ समुल्लिखता सर्वलाक, व
ववीभावदिष्टिया निस्व नानिवक्ष मूर्च्छा नां व विधानि, ह्यता वा (प्रहृष्टा विहंसमानरुत॥ तत्पुत्रा मात्स्वनास्युक्ते विभक्तिमूर्च्छा॥ समुल्लिखता सर्वलाक, व

२०७

नदिनिस्त्रत्वा वा धि विरूपलुहि न। तदा ससुप्रिया यव, श्रुत्वा मलानूमादिता॥ यनिनत्वा वगमधर्व, विद्यामहाधिमातां॥ त
निर्यान्नावीनास, गधकूयां विनासिता॥ रुगवच्छ सनरुत, पवर्जितं समेच्छु॥ तदसुग्री घनत्रत्वा, सुप्रिय सानूमादिता॥ क
तां ऊर्लिपूट हित्वा, प्रवक्षा समयावत॥ वन्दनं वन (लोभासा, रुवतां सनरुत, तन्मज्जुं ग्रहं कृत्वा, प्रवक्षा दुरुमर्हसि॥ ॐ
तिननादिन श्रुत्वा, सुगवा नूनीधन॥ दृष्ट्वा तदा श्रुयं शुद्धं, गधर्वकं तथा वदत॥ गधर्वसो गतधर्मं प्रवर्जितं यदिच्छसि॥ अ
ष्टीनास्समासाय, उदितास्यामि न वतं॥ ॐ ह्यादिष्टं मूनीधन, श्रुत्वा ससुप्रिया मूदा॥ सा ऊर्लिपूट हित्वा, पार्थयदवमादना॥

विविध

मृगमवांश्चिन्ता कुरु यदि मस्ति कृपानिधिः तत्प्रमानुग्रहं कृत्वा सद्धर्ममात्रिणा जयतु ॥ मृहा हि सुगतं धर्मं दृष्ट्वा वांश्च मित्रवत्तं
तत्प्रवृत्तां समासाद्य पादुं मित्रमिनिर्वृत्तं ॥ अनित्यं खलु सन्साधनं तदुदायिनमवतिष्ठति ॥ मृवस्य हि हवत्प्रत्यु सर्वेषां प्राप्तिना मयि ॥
उर्वदृष्ट्वा सुसन्साधनं सागनं च मिनिः ॥ ४ ॥ तत्प्रवृत्तां विधत्वा पादुं मित्रं सुनिर्वृत्ति ॥ अयिश्वा सोमनिः ॥ ५ ॥ सदा नैवं न निष्ठति ॥
वृद्धकार्यं समाप्येव निर्वृत्तिं सर्वदा हवत् ॥ किं वा सुसर्वदानेव मृत्युत्पन्नमनीश्वर ॥ कदा विदधमृत्युत्र लाकवाधिं समादिनतः
भावश्च हं जन्म सद्धर्मो वरुनं तथा ॥ तत्कथं मे धनं लब्धं ॥ धर्मविना जससा न किं सा न सुखिना यि हि ॥ क

२०७

मध्वं निगनी वं वा जीवनं वनृणा मृवत् ॥ धर्मं तसद्धर्मि याया त्सम्वाधि मयि वा मृयात् ॥ तत्प्रवृत्तां विधत्वा पादुं मित्रं निर्वृत्तिं
तदुदायि हि तान् कृपानिधौ सद्धर्ममयि सर्वथा नूग्रहं कृत्वा तदनूत्तं पदं हि मया ॥ ६ ॥ नित्यं नार्थि तं प्रवृत्त्वा सुगन्धर्वो यि पसूधी ॥ सु
वनं मृवदृष्ट्वा सदा दधमहावतः ॥ सत्यमवमयाख्या तं तथापि मववत् ॥ ७ ॥ उर्वयोऽश्च कनीवयो तत्कथं त्वं समावनतः ॥ त्वं हि
यूवायमर्हसि मदनाका कमानसः ॥ कामराग्यसुखं न कृ तत्कथं तदुत्तं वनतः ॥ प्रवर्जिता विनक्तान्वा सन्साधनं गनिष्ठं हा ॥ सर्वो
न्यनिग्रहाद्यका समाधिसंप्रदायसि ॥ ८ ॥ त्वं वदंस्त्वं न ह्यत्वा प्रवृत्ता वत साधने ॥ सह समा कथा विहं निवानय समाहितः ॥ यद्य

विविध

दिवांशुसंपूज्यप्रवक्षाग्रहणकथा॥ वृद्धसुसूपाश्रित्य, तिनत्रुद्धनचरन्त॥ तत्सुखावयूवागह, सोर्यांशुकाय(थयितं॥
वृद्धत्वमवतंधृत्वा, तिनत्रनिसदाहृज्जगतावेत्यहवमज्जम, सारुल्यहववाने(लो॥ सुखंशुकावतंधृत्वा, निर्वृलिंकासमाश्रुयात्॥
ॐ निमववनंश्रुत्वा, मत्वेवंयत्पुवाधिता॥ तावदुहसुखंशुका, मत्वा नत्रुयंवस॥ ॐ निमिदिनंश्रुत्वा, सुप्रियशारिसंकिन्ता २०१
पूनस्तुतिनंदंष्ट्वा, वाधयनवमववीत्॥ सत्यमवहवतात्, तथापिवक्तमया, तत्कुलोपितयासम्यक्कृतिहायविवृधतां॥ सत्
कलंइत्यहंजम्, तज्जापिइत्यहं कर्त्त॥ इत्यहंसुगतंयादं, इत्यहंशुकावतंधृत्वा, ॐ निमत्वाजसंसाव, कृणमानसदाजल॥ श्रुवन्ममन

नीदंष्ट्वा, प्राप्नुमिच्छुतिनिर्वृतां॥ तदुक्तययामकं, समनूसांशुमहसि॥ यूयच्छापिहितधर्म, शोणेसक्तमिमाश्रुता॥ ॐ निहता
पिमंशुविनवमाकथाविनं॥ सहसानुगतंकृत्वा, तदनूत्पददिम॥ ॐ निमनार्थितंश्रुत्वा, सगधर्वाधियश्चिनात्॥ स्रहइश्रवा
प्रिसंतप्ता, गनदश्रुत्वावदत्॥ श्रुपिसुप्रियपूज्यं, स्त्रहामयानिवायस॥ यद्यनिवांशुसंपाद्युं, निर्वृलिंकासमावन॥ संवृद्धवनं
गत्वा, प्रवक्षासंवर्नदधत्॥ तिनत्रुद्धनंकृत्वा, वनत्रिह्यसमाहित॥ ॐ निमिदिनंश्रुत्वा, सुप्रियशारिमादिता॥ यादा - युनत्वव
सहसानिययोगुसंवर्नदधत्॥ हात्वनाकव॥ तज्जसहसागत्वा, विहावसमूपावनत्॥ तज्जप्राप्नुनिउक्तंष्ट्वेवसमूपादिभत्॥

विविध

कृत्तं श्री घनं नत्वा प्रांजलिं पूजयन् श्रुत्वा यत् ॥ सुप्रसन्नसूत्रा भूज् पार्थय दवमाद वात् ॥ सर्वरुहगवाक्षुस्का नादिष्टं हवताः
यथा ॥ तदनूस्त्रादिष्टं ४ पाप्य ४ पागमाह मिहाधूना ॥ तदनू हगवा सास्त्रा ४ नवर्गसमूयोगतः ॥ उक्तवर्गवविद्यामन-युवका
प्रदक्षिमा ॥ नितिननादिनं प्रत्वा हगवा-सूजगहु नू ॥ दृष्ट्वा कलाभयं भुङ्क्ते पुन नवं समादिभक्त ॥ अहिसूत्रिय ४ हि काज् वनं उक्तव
विंजिवां ॥ जिनत्वननं कत्वा रुज्निर्ह्यं समाहितः ॥ न्यादिष्टं मूनीनां सो यकहस्तं न कृत्ते न ॥ सत्यं न्यां धि के वृक्ष संग्रहं
नं समादयो ॥ तदा सुसूत्रिया हि कृ न हति मूनिनादिनः ॥ मन्त्रिण पाहु हस्त्रा ४ वी वनं पावृणो वृक्षो ॥ तज्जससूया दाय उक्तवर्ग

२०८

समाहितः जिनत्वननं गत्वा समाधिसूत्राय यन् ॥ तदा दृष्ट्वा वसंसा न क्लमसंघसमा क्लम ॥ यवगन्धमयं दहं जीवनं वध
नो वृवत् ॥ संवाधिसूत्रं वधत्वा सन्धाधिसाधना यत् ॥ सर्वक्लमं निपूजित्वा साकादहपदं यथो ॥ ततः सुसूत्रिया हि कृ ४ पात्रा हि
रु ४ कर्तुं संधी ॥ हि कृ सर्वमविद्यां निर्विकल्पा हवद्यदि ॥ समत्वा सुसूत्रं भुङ्क्ते यन्निष्ठं जिनं भुला ॥ वासि वन्दन कल्याह दाका
सुभममानसः ॥ सन्ना वला ग्यसक्ता न मान्यत्वा ह्यनां सुखं ॥ निःक्लमं यन्निष्ठं ध्यात्वा उक्तवानिति नं जनः ॥ सदवा सुव वाकानां स
र्वरुवनवासिनां वद्य पूजा हि न यथा माननीया हव वृक्षो ॥ तदवहं न मर्हं न सुपीय नं सुहृदियं ॥ जाला कविस्मिता ४ सर्वतत्स

विविध

हृष्टप्रसदिन। तदा सर्वविधलाका दवादेत्याधकिन्नराः॥ यथा सिद्धाश्च गंधर्वाः नागश्च नाकसाश्रुयिः॥ गच्छन्तश्च नान्यपि वि
द्याधनश्च साश्च नाः॥ सर्वलाकाधियथापि विनतस्वभक्तताः॥ संवृद्धाभनक्तु सांधिकानां समकृतः॥ नक्ताननस्युष्टिं कृत
हृज्जसुमयतः॥ तद्वत्तु तापियथापि गंधर्विकर्णनिवः॥ अनूमाद्यप्रसन्नानि संमित्यवंवहाधियः॥ उक्त सर्ववयं नीव कर्मनीय
विवर्जितः॥ सुखानहिसुखार्हः॥ कृष्णमिनः॥ कृष्णवृक्षः॥ यदस्माहि पूनायूषं किंकिवाधिनसाधितं॥ मनास्मा उवयं सर्व इष्टधि
नानीव वृक्षः॥ तस्माहि नयं सास्मा मुनिश्च नास सांधिकः॥ सुकृत्यहजनेवापि पूजनीयायथाविधि॥ नूनमस्तदिवाकन हवम

२०२

हिसुखमिनः॥ तद्वत्तु पूषानूसा वन वाधिमार्गव नमहि॥ ततः कर्मन संजाय वाधिसुखा सुखवनिः॥ वनरुक्त विवाकन निवृत्तिं
सनहत्सहिः॥ इति श्रुत्वा वयं सर्व विह्वलाश्च निनंतथा॥ ससंधसुगते लोके नहामहसमर्चिः॥ तथेति समर्त कृत्वा सर्वमस्य
नूमादिनाः॥ अस्मिन् विह्वयना कर्तुं सहसा समुपावनाः॥ तद्वत्तु समुपायिष्य दृष्ट्वा नृपतिमुदा॥ कृताञ्जलिपूटानत्वा पार्थयद
वमादनात्॥ जयदवमहाहिह लाकाधर्मनया नयः॥ किंकि विह्वयनां कर्तुं वयं सर्व उवागता विजानीया हवा कृत रूपायिपार्थ
यामहे॥ श्रुत्वा नान्यहं कृत्वा कृपया तपसी ददुः॥ यद्वयमव सर्व नीव कर्मनूवा नितः॥ तत्सु संधं मुनिं लोके॥ समिष्टमसम

विधि

त्रिंशत् ॥ न दनं ह्युपदत्तान् कथयार्कं उमर्हसि ॥ न द्विस्तृतीयानां कर्म तत्पुत्री दनया धियः ॥ ॐ नित्यं पार्थितं श्रुत्वा नृपतिं सान्
माहित ॥ ता सर्वं समुपा मजा पुनर्वत्समादिभक्त ॥ साधु हवति सर्वं वा युष्माकं सुसमीहितं ॥ न रुथा क्रियतां वृद्ध सुक्ता न भ
क्षया दनात् ॥ सर्वं यत्कर्म कर्म तत्कर्म किं भूया न हि ॥ उमा धा धि व नि पूर्या निवृत्तिं समवाप्नुयात् ॥ न दत्त सर्वं अश्रुयं ससंघं श्री
जनं मुनि ॥ ये आहं राज नं रुक्मा पूजयध्वं समा दनात् ॥ ॐ ह्यादिष्टं न दत्तं न श्रुत्वा सर्वं नित्यं मुदा ॥ न (येति) नित्यं नन्दित्वा नृप नत्वा व
नरुत् ॥ न नरुत् स न नरुत्वा विहानं सह साग न ॥ दत्तं श्री घनं नत्वा पार्थय दवमा दनात् ॥ ह ग व र्क विजानीया यदर्थं समुपागता

२१०

॥ न तथापि पार्थय बोधं नृपही उमर्हसि ॥ यद्वयं ह ग व तां सर्वं भां धि कानां यथा विधि ॥ पूजयिष्ये समिच्छामा यत्कर्तुं राजने न
पि ॥ न रुत्वा कथय दत्तं कृत्वा स्माकमनूय हं ॥ पुनश्च सां धि के ॥ सार्धं विजुं ॐ उं समर्हसि ॥ ॐ नित्यं ॥ पार्थितं सर्वं ह ग वा नृ मूनी
ना ॥ न मा धर्म पवृ चार्थं उ वृत्तत्वा धि वा स नत् ॥ न नरुत् सर्वं पितृ सत्त्वा ह ग वं सा धि वा सि न् ॥ ह्येकं श्री घनं नत्वा स्व वृत्तं सह सा ययु
नरुत् सर्वं पितृ हर्मि ॥ आ ध यित्वा सम नरुत् ॥ प्र ह्य स्वा स ना वे वं सा मरुत् सम सा ध यत् ॥ न न ॥ पूजा य हा ना नि रुक्मा गनि न सा नि
वा प्र या ति स पु ती ता नि सा ध यित्वा प्र मा दि ता ॥ न नरुत् स ग र्क ली सर्वं संघं वा मरुत् उं ययु ॥ विहा न समुपा धि त श्री घनं नत्वा मि

विचित्र

व॥ कृताञ्जली पूजानत्वा सर्वसमूहसिंहिता॥ संवृद्धपुत्रं सर्वपार्थयनं वमादनात्॥ सर्वरुहगवंभासाः समधावरुतधुना॥ रु
हगवासांघिकेभावे विजयिष्ठं समर्हसि॥ ॐ नितेः पार्थिवदृष्ट्वा रुगवसुसंघिकशोयाजवीवनमादाय पुनस्तु संप्रसादयन्त
मा(र्ग)सुसर्वज्जगतिहार्यसुदर्भयन॥ सर्वेषां सुमनाकृत्वा तत्पुत्रसमूहाविभक्त॥ पदकिं भाकमनेवं वनस्तु समकृत॥ हासुयं रु
डताज्वरं कथयद(भ)समाश्रय॥ रुडयोदाघमादाय क्रमस्तु सहसांघिके॥ स्वासुनोत्समूहाविष्ट तस्मै हानुविवाकनन॥ तदा नभीष
नं सर्वसंघं वसासनसिंहितं॥ दृष्ट्वा सर्वपिसंहर्षाः पूजयिष्ठं समानरुन॥ यथाक्रमनसंपूज्य तंवृद्धपुत्रं गनं॥ यथाहं राजने सर्वसंह

२११

पुंसमभाषयन्त॥ ततस्तु राजनेस्तु वाजानिवायनीयव॥ नादिंशुधयित्वा तस्मिन् वर्य(भा)धयन्॥ ततः पूंगादिकंदत्वा पुनः स
र्वपितृमूदा॥ कृताञ्जलिपूजाकृत्वा समूहसिंहितपुनः॥ तव गंधर्ववेकासर्वजिनत्वननंगता॥ वाधिप्रतिधिमादाय पुनर्जिनसम
हिता॥ अश्वीनामृदगादिहूर्यसंगीतिवादने॥ उपसिंहितसंघं कृत्वा घनं समभाषयन्त॥ तदा स्वरुगवा-दृष्ट्वा तेषां रुक्तिप्रसादना॥
सर्वेषां शुद्धवतानि अमूर्तसिंहितशुद्धवान॥ तस्मिन् महत्पत्रा यववर्षां शुद्धवत॥ सर्वरुडवनंगत्वा पुनर्वृत्तमृताशुवत॥ कथां
कविद(भ)गत्वा नवकषु समकृत॥ श्रुत्वा ह्येयनिष्ठा सर्वजपिसुखंदृष्ट॥ तदा तनोनेकीयास्तु प्रसादस्तु स्वाचिता॥ किं भ

विदिष

नदिनिसंदिग्धं, समित्येव वरा विना, श्रुतान् जायते सोऽयं, श्रुत्वा कंसायुतं कथं॥ वतान् च गताः ४ स्याद्य, कस्य भूषणं नूलावतः॥ ॐ नि
संदिग्धं विहानां, गवां मनः ४ प्रवाधन॥ रुगवां निर्मितं वृद्धं, सप्रवयसमं कृतं॥ रुजं सोगं दृष्ट्वा सर्वं मननं कसि, ताः ४ विस्मिताः स
मूया भूत्वा, वयं दिव्यं सा विना॥ नमा वृद्धाय, धर्माय, संघाय च नमः सादा॥ ॐ निपाताः प्रसक्तं नृवं, नमः समूपाय यू॥ ७ नृत्युषा
नूलावन, सर्वं मननं कसि, ताः ४ सहसा स्रुतिं याताः ४ स्रुतं समूपावनं॥ ७ वतां सर्वं सर्वं सुखाय, समूहस्य समं कृतं॥ सर्वं गवां भव
रूपं ४ संवृत्तिं मूपावनं॥ किं किं ईगं नीयावत् इकं निष्ठं समं कृतं॥ श्रुवत्वा स्रुतं मूधय, नृवं समं वादयन्॥ श्रुतिं खं नृसंसा वा

२१२

इह खभूयं कनात्मकं॥ ॐ निसृत्यं पवित्रं य, जित्तरुजनादनात्॥ निजामता वमं ध्वं, पूर्य ध्वं वृद्धसासन॥ धूनी नमा वस्ये न्माव, न
दागा नं वा कवि॥ या या सिं सोगं धर्मा, श्रुपमं वृद्धं सदा॥ सत्यं क्ता जन्म संसा न, इह खस्या नं कवि विमि॥ ॐ निसंवाद य कस्ये सर्वा
दवायु सर्वं ४ न सर्वं स वा रूया ४ सुगता किं कमाय यू॥ नृवायं स वा सर्वं, समीप्य सुगता मून ४ पद किं नृयं कृत्वा, नृया कृत्वा
समाविस्तु॥ नृहृत्वा नृसुलाका, विस्मया र्धं नमानका॥ किं नृद निसंविर्त्यं, सर्वं नृसुलको रुका॥ श्रुथमो नृया यन ४ समा लाक ना नृ
वा विस्मया र्धं नान्॥ ७ नृया सां जलि मत्वा, सा सा वरं समं विवृ॥ रुगवां स्रुत्वां हा सि, य वृद्धं विनिर्गताः ४ श्रुवत्वा स्रुतिं नृसर्वं ४ नृ

विविध यात्रा विसंकिता ॥ उरुदृष्टा सहालाका ॥ सर्वविषयसंविस्मया ॥ तद्वत्तुं आहुमिच्छामि तद्वत्तुं दृष्टुमर्हति ॥ नाहं हि स्थितं वृद्धा दमयं
 निकदावन ॥ यच्च नाहं वृद्धा मुहसि संतसमादिमुह ॥ निसंयार्थितं नूनं निष्पन्नसंयुनी च न ॥ नमो गत्याय न सहा वापि समासा
 केवमादिभक्त ॥ भोगत्याय न यदेतद्दि सर्वगं शर्वकं वेपि ॥ मम ससांघिके खेवं सत्का नपु कही तं मूढा ॥ यत्तु यत्तु विद्याकन सर्व
 पीमहवा न न ॥ कमवाधिव विद्या को निः ॥ कमाविमना स्या ॥ मा नवर्था विनिर्मुक्ता यत्रिभुव विमधुला ॥ वत्तु स्वनाहि कसर्व पुत्र
 कसुगताजिन ॥ पाकस्य सनासी च हीनदी नानूकम्यका ॥ न कमीया मही सर्वा हविष्य किं भुहं कना ॥ उवमनसमा लाकं युय

२१३

यदि समेकं ॥ अथाज भर्तृयानित्यं चित्तरुजमादनात् ॥ यच्चित्तरुजमादनात् सत्तु खेवं रुजनिने विहाय इगति त्रित्यं सज्जति
 समवाप्नुया ॥ निसंयार्थितं नूनं निष्पन्नसंयुनी च न ॥ नमो गत्याय न सहा वापि समासा
 केवमादिभक्त ॥ भोगत्याय न यदेतद्दि सर्वगं शर्वकं वेपि ॥ मम ससांघिके खेवं सत्का नपु कही तं मूढा ॥ यत्तु यत्तु विद्याकन सर्व
 पीमहवा न न ॥ कमवाधिव विद्या को निः ॥ कमाविमना स्या ॥ मा नवर्था विनिर्मुक्ता यत्रिभुव विमधुला ॥ वत्तु स्वनाहि कसर्व पुत्र
 कसुगताजिन ॥ पाकस्य सनासी च हीनदी नानूकम्यका ॥ न कमीया मही सर्वा हविष्य किं भुहं कना ॥ उवमनसमा लाकं युय

विदि

दिन॥ मूनासिहगवाचूषवाधनाहिधाजिन॥ सर्वरू॥ सुगत॥ साक्षाधर्मनाजमूनीधन॥ सर्वविद्याधियानाथसुथागतविना
यक॥ मावजिज्ञाकविहर्लुगडाहंदिनंकन॥ नदासुहगवाचूषाजनपदपूयाविकां॥ वरनन्यांवाजधनीमनूपायससांघि
क॥ नदस्य॥ सनवदस्यजीजयातनावध॥ प्रविभत्वासनासीनसुखेवक्रिनिवाकलन॥ नदोकस्मिदिनमदनाजकाकापवाहिने
॥ संगीतिसुहसंनकेनमिडंसमूपाविसन॥ नउल्लंनसमासीनसुगनसुपहाकलं॥ दृष्टेवसुहसायसुनत्वाकृत्वापदकिभां॥ समा
धिहंनमालाकनसोविनमूपात्रयनरुसुमूखयभात्सुचर्ममृत्लिप्ताया॥ वाद्यमाने॥ सनेवाद्ये॥ मूनिंवाधयत्रय॥ नमथा

२१४

सुगतावूषा॥ समाधे॥ निघमूक्तिरु॥ साकपूवननवदकंपदाकीत्सुमूपल्लित॥ नदातत्रपनिदृष्टससमूषवाधन॥ सचर्मसमूपा
दृष्टसमामसोवमवविन॥ उदिनाजमहावाहात्वागनरुमहीपत॥ सचर्मसमूपात्रित्वाधिवर्यासमावनन॥ सदादानंपदलाकुनील
धृतोसमाहिने॥ कासुपसादयत्राकधर्मवीर्यपसादयन॥ वाधोविहसमाधायपहावत्रसमूजय॥ उरुदत्तानेलावनसम्भाधिमर्षमा
पूयात्॥ नरुल्लमंजुलित्रित्वामहापूजसदाहवत्॥ सर्वसुखेदिनंजर्वनसुननिमवपापूयात्॥ ॐनिमत्वामहावाजसचर्मसमूपावनन
॥ उिन्नमनमंकत्वासुहस्यरुजसर्वदा॥ उिन्नमूकनंपूर्णनकिन्नातिकदोवन॥ सर्वदासुहगानेवमूनवाधिसमर्पय॥ ॐनिमत्वामहा

विविध

राज. तिनत्र सनतंगरु॥ बाधिवर्यावुतंधुत्वा वनतिहंसमाहित॥ कथाकमलत्रितयं सर्वजापिहवधुर्व॥ क्रमादाधिसमासाय, समु
दयदमा प्रयाग॥ ॐ नितनार्हतादिहं, मूनीन्डनसह्यपति॥ अत्वा तथनिवीजपायाद्यनदप्रवाधिरु॥ कत॥ समुदिता राजा, तंमूनी
उंसंघिकं॥ यथाविधिसमस्य, राजनेसमसाखयत्॥ कत॥ बलजनानेसुनयति॥ साजसिमूदा॥ तंमूनीन्डनसह्य, अनिधानंददाय
धरु॥ मूननकसलनाहं, साकधपविनायक॥ सम्यकवाधिसमासाय, हववनंसुगताजिन॥ अककनूवडन, अनिधानंदकतमूदा॥ म
त्वासुगमलीकथसर्ववनंददा॥ सदासुगजया राज, धर्मनायावयपजा॥ अनिधानप्रथावा, तथासिद्यदुधुर्व॥ ॐत्वादिहंमूनीन्ड

२१५

न. ननश्चत्वात्तु यतिः॥ मुनिर्गंसंज्ञितः सत्त्वं मूनीन् संभवतीति॥ विद्या न ह्यसदा सा सति न त्वस्य न भद्रं॥ स वाधिसम्बन्धत्वात् त्रि
व्यामसमाहितः॥ न ह्यवाक्यया दृष्ट्वा सदा मां ड्डुमर्हसि॥ सर्वदा ह्येता मवसु न॥ अस्मिन्माहितः॥ निसंज्ञार्थितं कृत्वा, नाजासु सुज
नायुदा॥ ह्यगवर्गं मानस्य, मोक्षं त्याग्य न भवतीति॥ न न ह्यसह गवाक्षत्वा, समुत्थाय ससाधिक॥ सर्वं ह्युदमां कृत्वा, स्वाश्रमसमूपाय यो
मूनावतां हि कृवाया सो, न ह्यसंबुद्धसुवक॥ वद्ध पूजावतं न ह्य, कर्तव्यं ससमाहितः॥ न मया श्रद्धयानित्यं, वाधिवर्था क नाम्यहं॥ पूजा कान
महात्मा ह्यमुष्य संगीति वादने॥ न न पूषा विद्या कन, ममाश्रम महात्सवे॥ उवमत्वा महापूषं, संबुद्ध ह्यजाह्वं॥ दिनत्वननर्तकत्वा

विविध

वाधिवर्गवर्गधिरिष्टा॥ ययव्यसिदनिहं॥ आस्तावंगुर्नृजिन॥ समुद्रसमुदाधित्वं विहर्षसमादिता॥ ॐत्यादिष्टंमूनीश्वर॥
 त्वाहिक्रवायुदा॥ सर्वतथेतिविशय॥ वाधिवर्गसदावनन॥ ॐतिमगुर्नृमहर्षं॥ अतमयानवाधिय॥ तथाधूनासमास्तानं॥ तवपू
 र्णपुष्टय॥ सर्वतथेतिविशय॥ वाधिवर्गकनाम्यहं॥ उवंगेजस्तुयायव॥ वाधिवर्गवर्गसुदा॥ संवृद्धसासुनंधत्वा॥ जिनत्वंनवभाग
 त॥ वाधिवर्गसदाधत्वा॥ वनधर्मसमादिता॥ यजाअयितथावर्ज॥ वाधिवर्गपयत्नत॥ संवाधिसाधनधर्म॥ वाजनीयात्वमादनात्॥
 तथावेत्यसदाहृदं॥ हवर्गुनंसमकृत॥ क्रमात्वाधिसमासाय॥ संवृद्धयदमाधूयात्॥ ॐतिआस्तासमादिष्टं॥ अत्वासाकनवाधिय॥

न(थनिप्रतिमादिवा. पात्यनन्दसुपावर्षद॥ ॥ ॐ दमवावतुहगवानाहमनासदवमानूषासूवगवूठगधर्वश्रुलाकारुग
वसाहाषितमत्यनन्दनिति॥ ॥ ॐ निग्रीविदिशुकर्णिकावदोनधाद(भा६ध्याय॥ ॥ ॐ आभाकमहीपालसांजलिपूज
नहि. न॥ ॥ नमर्हं कंयमिनंवाप्रार्थयदवमादनाम्॥ उपउक्षावाव॥ ॥ ॐ एकस्मिन्समयहगवान्नाजगृहविहवमित्या॥ कलन्दकनि
वापेवभूवनमहनाहिरुसंधनसार्धं दवनागमनूषासूवगवूठगधर्वकिन्नरमहावगत्यर्चिनः॥ ॥ ॐ ब्रह्माहगवान्नाममहापूज्यंलाही
वीववपिउपाजयनामनप्रत्ययहोषकपनिष्कानामंसंश्रवकसंधानां॥ ॥ नजहगवान्मूर्हस्यकं ब्रह्माधर्मावोप्यागप्रवग(आ७

विधि

जनपदनिर्वाहः कृत्वा उपाध्यायं नृपं वान॥ नमस्तु नखलपुनस्तमपन आवाह्यां महानगर्यानि वासिहस्तु प्रहानाम॥ अष्टीनो सो नथा गक
महस्तु सप्तकं वृद्धं वं गृवनक वृद्धक निवासे विवाहे नं वार्हा प्रत्वा धर्मप्रवभा यस्मा गच्छति स्म॥ नदा असौ वं गृवनक वृद्धक निवायनभा
गकार्हा संमक्तं वृद्धस्या निकाद किं नृप गच्छति यत्पुष्टिः ॥ ४॥ मृथखलु हगव नं॥ अष्टिदा वकाद हृष्ट एव ॥ ४॥ कनका न॥ मन॥ अष्टिदा व
ककनाहिला धिगवृषका याहव निमं॥ अष्टिदा वका वाव॥ हा॥ गोमना नयं पावधवना यवा सिहवा म्पुहं॥ मनवृकका यमहृता॥ हग
वानाह॥ किमहिला वहा ॥ पावधवना यवा सुकनक निवर्षहृमं॥ सुप्रहा॥ अष्टिदा वका वाव॥ हा॥ गोमना हगवा धर्मा यको मभा

२१०

कायवा॥ वं पावधवना ना धिगनव वृषहृमं॥ नमस्तु हगवान्॥ अष्टिववनं प्रत्वा पुनव नद वाव न॥ मनवृकका या॥ अष्टिदा वका
मनवृकदहिला धिगालवृद्धदीर्घकालं गमं॥ नास्ति नृप्यापि समी योहि नं हलं॥ नृममहिला ववनवेदी च सिद्धं॥ हगव नार्था व
लाकि नृप नयवा धिसुत्वस्य महासुत्वस्य वनमा वन ॥ ४॥ नमो प्रत्वा वपुन नृपा सुकदा वेकना वेका महाया क्षया सिका पूर्वगमा ॥ ४॥ यत्कं
पश्चमन पविवा ना॥ अष्टि पुना त्रिकु म्पयन हगवा॥ नमो पसंक्रम्य हगव नं॥ किं उदकि नीकृत्वेका नृप्या दन॥ नृमस्तु प्रहा॥ अष्टिदा व
कनसार्धं पश्चमन॥ अष्टिदा वकन पविद नृपु वस्तु ॥ ४॥ मृथखलु हगवा॥ सुप्रहा॥ अष्टिदा वकन सार्धं सि पुनृपे दानक दा वेका ॥ ४॥ नि

विनिज

यदिना ४ संनिप्रभु विदित्वा यथा नयं सन्दर्भना धियत्यना हित्यमहा मेला धियत्यनपुजा दया धियत्यनमहा कद्रु धियत्यनधर्म
दभनामाहिनिहत्तना धियत्यनया धिबना मया प्रविदिनमहावम विधं सन्निदाधर्ममय दद्रु काम ४ सुपुरु (अष्टिदानकमवल
कयामास ॥ हि रुसुपुल्लवत् पुनः कनका व (नया धध विधानं कनका ॥ हि रुगव रुमा ह ॥ सुपुरुल्लवत् (अष्टिदानकस्य समनं २१८
ननावजा नस्यमा ४ क को न सि गृह स पुनत्ता जला आ इरुता ४ सम ना रुहस्य सु विरुता रुपा श्वेत्तां जलामेव सप्तमहा निधा
नानि यन रुनत्ता रुमा ४ समुपल्लव नमी नलम हि निर्हि यात्पु रुमा ४ सुवर्षु स न्यस्य सप्तवत्तस्य सदा सर्वा म्पुल्लव (अष्टिदानविप्र

भुदभानां मासानामत्यया ज्ञात ४ ॥ नयाना नि सप्तमहा निधाना नि सप्तहस्ता याम विस्तारार्ध उमाना निधव नी नला दत्तु म्प्य विर
लानि विना व क्रिज रुमा ॥ य प्रलज्जन नाना नि सप्त गृह पा इरुता ॥ नाना वत्त मया निरुज्जनानि सर्वा य क न म य वि प्रभु नि ॥ य इ न स
वर्ग ध य वि प्रभु नि सप्त गृह ज्जनानि ॥ नाना वत्त य वि प्रभु नि नि सप्त गृह ज्जनानि ॥ नाना रु रुता य वि प्रभु नि व स व सा य य वि प्रभु नि
म नि रुज्जनानि ॥ नाना वत्त य वि प्रभु नि सुवर्षु रुज्जनानि ॥ न्य वृषु य वि प्रभु नि ॥ व रु उ म्पु र्वा नि य प्र वत्त रुज्जनानि सप्त
नानि ॥ नस्य (अष्टिदानकस्य गृह काम का रुमा व प्रभु ना दिसर्व विहिंसु व भु वि वि भि वत्त वर्षा नि ॥ नस्य निमिहि के र्ज क (मे र्मा ना धिह

विदि

स्यांस्त्रिगुणवर्गनवविपुलधननवसमृद्धिरुस्यजानमाजस्यगृहपादरुमं॥सूपरुनिनामधयंरुमं॥सूपरुप्रविदावकपूर्वजिनरुमाः
धिकावावलापिनऊमलमूलउदानाधिमूककल्याणमिजानुगमानयानवयकायवाघनकर्मसूपदावावाधिसत्वमार्गयवि
धनपाषाणधिरुक्तसर्वरुमाहिर्मूलाहजनीरुमावृद्धधर्माणांश्रुप्रयामवयविउच्चासमवाधिविरुपविनिष्यन॥॥श्रुतबलरुग
वासंमयकंवृद्धासूपवंप्रविपुलमवलकप्रनिसंभादनस॥धर्मश्चास्यदभयामास॥यद्रुसर्वधर्मवतामानस्यसर्ववृद्धधर्मसंघ
वृयकावलकमानूयजनधर्मतायविनिष्यहिमानस्यसर्ववृद्धसमनामानस्यधर्मदभयामास॥मनाहृष्टसूपरुप्रविहृगवर्गयू

२१२

न॥आवममावनलेवपुहर्वनप्रविभषन॥श्रुतंगोनमयसर्वरुगवमाहंयूमाननं॥श्रुधूनाहृमिष्टमिविधानंयाध
स्यव॥कथमावावमवलाकभस्यवमारुमं॥रुपालनाहिनसर्वगदमानविदानक॥कथमानाहवनवेवलाकभस्यवमारुमं॥वृ
द्धाकूलसमृद्धाहृदिममूनिसरुम॥मनहिसर्वथायस्यवमनाजस्ययद्विधि॥सत्यमवकविष्यामिरुक्ताववकुमहसि॥रुगवाप्र
मिथूलावविष्यामिनाप्रविनासव॥श्रुवलाभनसर्वकनूयाविष्टमानस॥॥श्रुसूपरुवक्तामिहृक्ताकभवनजिनं॥श्रुनं
गुमस्यनामहायानविश्रुयानि॥श्रुर्थयसर्वसत्वानांउत्पद्यकनथागरु॥महाकावूनिकाधीनाधर्मवज्रवर्हिना॥प्रनिकरु

विविध

कथं न कं वृक्षात्मजं वंदहि नः॥ सत्त्वा र्थं च हि पूजानां कल्पकाटिभे न वि॥ कल्पकाटि वनं वं कृणाय जिं न सु दा नू॥ न त्व वा दर्श
न भा सुः सर्वसंघनि वर्हि नः॥ सर्वसंघ गमा या वा इः वत्सु ध प्र वर्ह न॥ इत्सा दय स नि वि ला ला क ना थ स दर्भि नं॥ या व स्य सर्व ला क
स्मि न या या ग न ए थ क व नं॥ नृ नृ वि व वा सा वृ क्षा नां ला क न मा भू नि न व॥ य के क स्रु व नं क त्या त्रि वा सा न व क पि ना॥ न त्व न त्व जि ना स्य
जा था हि मा वा धे वि इ र्वि भ॥ किं का न ग म या थ भू नि र्व भ वि व मि थ म॥ य स्ता व र्म ला क न स्य दर् न नं क न व र्ध नं॥ कि य न स र्व इः स्या नि
दृ ष्ट ला क न वं पुं॥ स र्व व स्य व मा ना श्र न स नृ द र ग व व न्॥ क मा य य न् उ मी स र्व सृ त्वा ला क न वं पुं॥ व र्ध य स्य मि नं पुं थं थं

२२०

न उ न स मि ति व॥ क र्प य नि का मा हि म निः स त्वा नां सं घ दर् न नं॥ प्र पू व य मि त्र नं स नं धा ला क ला का रु ना मि त्र॥ क थ मा ना रु ग व मा व
वं ला क न स्य व मा रु मं॥ वृ क्षा कू ल स मू रू र्णं द दि मं मु नि स रू म॥ न ना र्णं स र्व थ य स्य व न ना रु स्य य दि धिं॥ स स्य म र्व क वि ष्या मि रु ग
व न्द्र कु म रु सि॥ नृ नि न ना दि नं थू त्वा रु ग वा स मू नी न व॥ ॥ नृ सृ सृ प रू व क्रा मि त्र न ना रु वि धान कं॥ नृ नृ नृ वि नृ नृ नृ स
व र्म व र्म मा दि न॥ अ दो त्वा न वि धि नं व र्म र्थ वा र्थ हि दा व क॥ ज ल दान क र्थे वा पि न स र्व य दि धान न॥ व जा द कं वि रु वा दो वं का ना
रु व म व व॥ नृ नृ नृ ज ल र्णं व॥ जं का ना ग र्ह या ज य न्॥ नृ मं मं उ द द स्य नृ द या हि ज लं मृ द॥ न त्व नृ यं प न मा दो प थ य स

विविध

वदवतां॥ स्नान दान स्थासुर्वा विधिना उक्तमावहन्॥ सूपला वाव॥ कथय गोमसर्वयत्समासेन कवू नया विष्णुमानस॥ उ
हिलं मुनि आर्हलवेने संसावमावन्॥ ॥ हगवानाह॥ उक्तं हि वमया पूर्वं विनतुमनममन॥ दाया शनां समासेन चर्याच
र्यविलम्बन॥ निष्ठा निष्ठा कर्मस्य मूढा दृष्टवन्तः॥ नत्सर्वं मूढत्वं प्रसी कथयामि एतत्कथय॥ आभामि यान दाषस्य मूढर
दानकस्यत्र॥ मूढक चर्या चर्यानां मृषा वादेकवा विन॥ सूनापानं च दाषस्य नृत्तगीतादिना लको॥ महोच्चमयना मनस्यना कालका
जनस्यव॥ आभामि यान कं पापं स पापं वरु इव दं॥ आभामि यान हनानां संसावय विवर्तनं॥ आभामि यान चर्या चर्या ज्ञायक हीनसत्त्व

२२१

का॥ वरु इव न संपीय वरु व्याधिं पीडय॥ यदि लाल विवला सि गती निन वक भूव॥ नत्सत्सर्वयत्न नन ऊर्या आभहि संक
॥ मूहिंसा यन माधर्म मूहिंसा यन मागुनि॥ मूहिंसा यन माजन मूहिंसा यन मायदं॥ हिंसा कालं मूयसत्त्वा मनसा वचसा यिव॥ सानूम
हं न क्वी न यदि दृष्ट्य दमयदं॥ मूहिंसे मालिका नाजा सानूम हं न इव विना॥ नाक ज्ञ महात्मा कस्तु क्तु वन गन॥ किञ्चित्का
ल वनं न सि सि ला सोम वनं ययो॥ उक्तं मूधनूला वन न वक यमि नासन॥ सदा क श्री महा इव दीप वपी जनू जीवका॥ वा ना मस्या द
मिडलं जायतं उक्तं वनकं॥ ॥ सूपला वाव॥ कथं गोमसर्वयत्समासेन कवू नया विष्णुमानस॥

विचित्र

काश्यानाकधर्मसिंयुक्तायुक्तविवाव(॥नयूक्तकंडुनवेवनाकधर्मसिंयुक्तय॥ ॥हगवानूवाव॥श्रुयुक्तभाभिउंदाउंउम
शायविवाव(॥नयूक्तकिंडुवावावउतावाधनसंलिं॥श्रुयामिदायम(श्वेवश्रुयुक्तसू८कथंवन॥सर्ववर्षप्रयत्ननप्रवनाम
कमिपूक॥नमात्रकाहिकर्हयाभाकस्यउनिन८सदा॥उमविधंसकानीहि८धननायगनप्रय॥ ॥त्रमसिन्नकवसनाजा २२२
धर्मपालक८दंपत्यावाधयामासउवाधमहाउम॥ऊकुसूदामहावृद्धालाकानानायकसूथा॥यथादिपूसंबूधनवर्षानमाजसह
म॥सदामन्दीसदायायीपिडीवलाकयावक॥सूनीकोनित्यवानीसोधीनगह्रीवमानस॥नस्यपूम्भविपाकनमहीसर्वाहिनय

[illegible]

विदिउ

अरुनविस्मयात्रिभु॥ दृष्ट्वावनगवंनमंमङ्गलात्सवधुविनं॥ कनयूरभनसुनाजालरुमं॥ दृढंरुलं॥ अविस्मयनाभजाया
ननेवास्याहुकं॥ महाबुनयूरभनसंपाप्तं॥ दृढंरुलं॥ नयसंसदिमनिमंनंगत्वासुप्रार्थयायहं॥ विपन्नस्यारुलंमस्यविघ्न
मवंरुविशानि॥ ॐनिमनसिसंविह्यगतासोनाजसंसदि॥ स्वस्त्यस्तुनमहानाजदवनाजपदंपर्व॥ प्रापयिष्यसिन्नूनंत्वत्पुण्य
स्यपुलावम॥ उपकावायमंनाजसाहसंक्रियमभूना॥ अहमवाधिकारोभायप्रार्थितुमागमानय॥ मस्यासुर्वप्रयत्ननदहिम
दानमूलमं॥ नाजावाव॥ किमहिलाभिनमहिपूवयामिद्विजारुमं॥ सत्यसत्यंतिस्त्यश्वप्रार्थयसांप्रतंहिन॥ आक्रमावाव॥

२२२

जेलाकमाहनंवलंबुननाजउसादम॥ लब्धंमंनंपूवानाजनसांप्रतंदाहुमहसि॥ उपमाउमकुब्धमसर्वधोवजनामथा॥ नयू
रुंप्रार्थितुंविपुजनानांहृदयमनि॥ मनिवलेवहिसर्वाप्रार्थयस्वमभूहमं॥ आक्रमावाव॥ किंकर्हयमहंरुदमनिनायनमः
तिभ॥ उपकहुंविघ्नयनननार्थप्रार्थमाहमं॥ मन्त्राक्रवपुमिहासोनाजाकनिहमानसो॥ विपुमप्रार्थितुंयहमधिमादायवाग
न॥ उत्सवमहिभावाथप्रार्थितुंनियत्यव॥ उवावमभूवंवावंनाजानंवाचनायवे॥ दाहुंनयूक्तविप्रायजेलाकमाहनंमनि॥
पुलावाविमलोनाजनाकनिकृष्टकंसदा॥ महाबुनस्यपूरभनसंपाप्तंरुलमूलमं॥ विपन्नस्यारुलंनाजमहाकसिहविशानि॥

विचित्र

नञा वाव॥ दातुं न त्वर्घं न त्वं वे विजाया मात्यसहम॥ महापुत्रान्नूतनस्वीका वंजीयममया॥ दानमिनि दाना वा दानार्थि दान
मानस॥ स्वीकृत्या हि दातुं श्रदानेन दीयमसदा॥ पापीनामपि पापिष्ठं तूकं हि वधीमना॥ ददासान वदाना वा दाना न प्रनिवध
क॥ स्वयं दाना हवन्ने वसुधा पीमि मभीषि न॥ श्रुता ह मा मया त्यक्तं कथं दानं न दीयम॥ न स्यात्सर्वप्रयत्नन दास्यामि न संकथा
॥ इह लोका यं पूर्य दानं प्रदातुं वै वमस्मि न॥ श्रुता ह मा मया त्यक्तं कथं दानं न दीयम॥ न स्यात्सर्वप्रयत्नन दास्यामि न संकथा॥ इह
लोका यं पूर्य दानं प्रदातुं वै वमस्मि न॥ सुइह लोका हि दाना नाप्रमि श्वाही सुइह लोका॥ दानमिह लोका क दानं न का क नं पव॥ दविडनाम

२२४

नंदानं दानमात्रिकं नंभुलं॥ यदि ह्यहं हवत्स्वर्गं प्रविष्टं वै ववृद्धिमान॥ सदा दानानि कर्तुं व्यानान्या पाजि न डव्यके॥ वाक्कम उवाच
॥ ना विलम्बन ना जड संका वर्जित मानसा॥ हवमा कं यथा ह्यं दीयमानं न त्वमूहमं॥ नञा वाव॥ सत्यमवप्रदास्यामि प्रमिष्टं द्विजसहम
॥ महाव्रतस्य पूर्य न संशयं न त्वमूहमं॥ श्रुतान कनका लव वृहस्पति सभा यम॥ उवाच॥ यामहात्मा सो श्रुवाच नमधू वां गिन॥ यू
क्तमवहिना जड दातुं विजाय सा प्रम॥ किं तु त्वं न मात्रि ह्य दीयमानं न त्वमूहमं॥ न वरुड प्रसादा यनिकट स्य मं हनि॥ शुभा वचन
मात्रि ह्यस्य हानि समन्विता॥ यथा दनस्य संज्ञा ना मथा विप्रं न मानिन॥ उक्तं नूयस्मि न न जड विवि कर्तुं न ना ददि॥ न हि स्या नृप

विचित्र

निह्ययः विप्रमाननविप्रसं॥ महादनात्मना दानादी वसूनि सूत्रतना॥ नूनमन्युहा वाञ्छि नाकं पवाकमिथ्यनि॥ ॐ मानिवयून
कंडुमिविह्यस्वपिविप्रकं॥ कर्मदुग्दीयमास्तु सुज्ञानाविप्रवन्दन॥ मायाभक्तनिनिर्मायहानयिष्यामि नमंनि॥ ॐ नस्मिन्नरुव
कारेणुवनाधनमूलमं॥ यथापदिभ्यनरुदुगुनूना वाजसहस्रं॥ प्रसार्यपांजली नृपवत्तुत्वा महाज्ञानं॥ वाक्कमूवाच नृगोत्तु
यदानायनत्वारुमं॥ अस्माकं शुवनंदनसर्वारुथायूयडवा॥ ॐ नस्मिन्नरुवकाले भक्तमनिर्मितं स्वग॥ आगत्य स्वगमनेव
माकाभाजहसक॥ भक्तममनसावेव आरुयभक्तनीत्वं ग॥ नीयममासुवत्तुनं स्वघाटनहन्म॥ विप्रसु नूनानाजा

२२१

मूलरूपं कर्म द्विजः॥ नृधिनाशवन्मना दृष्ट्वा सविस्मयं स्वहस्तकं॥ किमिदं निम्बिधनाशममदानवविघ्नकं॥ ममसिद्धिधनं ना
 जावेदनायावलक्या॥ दृष्ट्वा पाकिममाकाशस्य मन्त्रं पुनः पुनः॥ मुखसोमकनीयकिमासु मन्त्रयमद्विजः॥ आकाशचुपि न
 भक्तं स्वयं वयमिह स्वगता॥ वाजाय नमः कुरुहृदं हि न कर्म द्विजः॥ नाशकमाशु मन्त्रमासोमकनीयगता॥ नत्वमादाय विधासो न
 जेवा न हि नमः॥ अथ पार्थसिद्धिस्तु सर्वं पूज्यं श्रीसुहृत्॥ हविष्यति किमस्माकं नूदनायिवदन्ति वा॥ यो नाजाने पदाश्रयिवदन्ति
 ब्रह्माकला॥ अत्रावर्तु विषय इह संममिषहं॥ हविष्यति न स दत्ता कस्माकं नूदनायिवदन्ति वा॥ न दृष्ट्वा यिव नाजाय भूत्वा च विक

विविध

लं वनं ॥ अलं दहं मणिपां सुं विमिसाम विविदिनं ॥ वा कंदं अनिनं नैव न दर्थं वा वनादधि ॥ ना वदयं वदामा भां दानस्य निरूलं
हवं ॥ सुप्रलं वाव ॥ कथं गो नमसं पाय सुमगी धर्म पानक ॥ कथं हि निरूल न स्य न तदा न स्य यरूलं ॥ रुगवान् वाव ॥ रुग पूर्व
महा केलं महा पाषधमानि न ॥ पुर्वमाना म न जा सो सुव ना जगु भा धय ॥ न स्य ना रु स्य रु स्य लं जा य न पूर्व ज मसू ॥ ना रु ४ संसर्ग न
नेव महा पाषधका विन ॥ उरु पाषधमा गार्गं कथया मिव सां पुनं ॥ न रु रु ग न हि प्रयू रुं उरु पागी समचि नं ॥ अरु मां उरु प कं अ
रु क वा व सुसं पुनं ॥ विममं कार्हि क मा सं उरु प क म नाहनं ॥ अ ना धय त्य न मा लो न ला कं न क नू भात्मकं ॥ वव मा ना धय ना ज

२२७

वा धिसलस्य सर्वदा ॥ उरु ना जस्य पु रं न ना ज पु मा द न स व ॥ कश्चि लं लं पु नी न हि रु स्य ज ह न न न वा ॥ अचि वे ने व का ल न प च ल अ
ग न रु क ॥ अरु संसर्ग ना वा धि न उ व रं वि दान क ॥ उरु अ जी य न य न ड प वा स स ख वि नं ॥ पु रं न ना न न ना ज उ वे न लं जा य न पु
न ॥ रु मा प वा स ख उ न ल रु न इ ४ ख म व व ॥ व न स्यि न रु न अ प नू या य नि पु न पु व ॥ इ ल न रु रु यं पा नं महा ली घ न न द हि नं ॥ न
उ सं पी अ माना पि इ र्हि कं स मू पा ग न ॥ अ नी व इ ४ ख पं क सो नि म रु मि न थारु म ॥ स मा म अ रु ना मा स ए रु मि इ ४ ख का व नं ॥ म
सू वा व ॥ किं क र्हु य म या ना ज न या न क र्म भा म पि ॥ अ ना ग ला डि का ल रु क रु रु रु ना मू नी अ व ॥ न मू पा म रु म हा ना ज ए रु व इ

विविध

खमावनं॥ ॐ सुखाप्रययोनययजनिष्ठमिदानीं नव॥ एतन्मिस्मिन्निन्दुकेन मे इह त्वत्तु व॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ
न्दा मूर्ती नव॥ मूर्ति पूर्व महा राज धर्म पूजा हि संयुत॥ कृता यवा सख्युन महा पातक भवत्तु॥ त्वया मन महा राज न लल्य मे इह
त्वत्तु वत्तु॥ महा इह त्वत्तु मा माय कृत्वा यथा धर्म॥ नास्ति न जे धर्म राज न प्रमा माय व पातकं॥ पाप धन विना कृत्वा इह कर्मा
नायत्तु॥ राजा वाच॥ ह गवन्मूर्ति मा इह उक्तं मा न सांप्रतं॥ स्मृतं पूर्व जन्म स्यैव विष्णुं समानं॥ मूर्ध्ना ह भविष्यामि महा पाप ध
मूर्ध्ना॥ न स्य पुनः पलायन जायते निर्मलं कृतं॥ ॐ सुखाप्रययोनययजनिष्ठमिदानीं नव॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ
न्दा मूर्ती नव॥ मूर्ति पूर्व महा राज धर्म पूजा हि संयुत॥ कृता यवा सख्युन महा पातक भवत्तु॥ त्वया मन महा राज न लल्य मे इह
त्वत्तु वत्तु॥ महा इह त्वत्तु मा माय कृत्वा यथा धर्म॥ नास्ति न जे धर्म राज न प्रमा माय व पातकं॥ पाप धन विना कृत्वा इह कर्मा
नायत्तु॥ राजा वाच॥ ह गवन्मूर्ति मा इह उक्तं मा न सांप्रतं॥ स्मृतं पूर्व जन्म स्यैव विष्णुं समानं॥ मूर्ध्ना ह भविष्यामि महा पाप ध
मूर्ध्ना॥ न स्य पुनः पलायन जायते निर्मलं कृतं॥ ॐ सुखाप्रययोनययजनिष्ठमिदानीं नव॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ

२२१

दवदवनयत्तु॥ जेला क माहनं वत्तुं प्रमिद नृप सत्तु म॥ ॐ सुखाप्रययोनययजनिष्ठमिदानीं नव॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ
दव मापि सांप्रतं॥ धर्म पातापि राजा वत्तु हर्षात्तु स्मिन्मावन॥ एतन्मिस्मिन्निन्दुकेन मे इह त्वत्तु वत्तु॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ
मि सादनात्॥ ॐ सुखाप्रययोनययजनिष्ठमिदानीं नव॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ
त्तु॥ ऊकृच्छ दन वृत्त न दत्तं ॐ सुखाप्रययोनययजनिष्ठमिदानीं नव॥ उवाच ह गवान्वाथ ऊकृच्छ
भूना प्रार्थयिष्यामि साधु मरुज मूर्ध्ना॥ साधु मरुज दक्षिण स राजा वान्पीडित॥ दाया दन दत्तं स राजा न नृप॥ नवः प्रापि पुनास

विचित्र

मयकावयमिवनामव॥ वनसिन्ननवनकालवनामवसमावव॥ महाइश्वरसुंदरं कृष्णकवचवनामव॥ मृत्वाविनमकालनसुद
वंमनवाधिय॥ सानुमरुजयायाधि॥ दनिडलसुजायम॥ संपन्नसुदवंमपिपुपसुदुमनीलक॥ वनवाधनपूरुधनवाना
नस्यापूरुधनक॥ नसिंवेसुपुलाप्रधायायायाजिंरुडयके॥ जानिद्युंरावजायमववनननवजिंरु॥ सकिंविदपुंमयाधंनि
उत्वननत्वम॥ सुदवंमसुपूरुयव॥ अयवासुजमक॥ वकादममहालगदभाकनवदुहि॥ धामभाकावयामासुधाधधवाध
नायव॥ कनधामममाजमपूरुस्यवमिनपून॥ सवनिस्यमहासासोवनावाधनजहलं॥ उवागवमदहं हिमहसोवां वदनव॥ मृहा

२२८

इधनिमंवाकसानुमरुममंरुम॥ ननासिइधविमजधदनिडलनवाप्र॥ निसंविहमनसाग्रावाधनिपून॥ महासुनि
सुविहूनदानंरुवावमाम॥ सुदवाचिरुसंजाने॥ महापूरुधमहाकले॥ विद्याधनधनवनमिवाकावनववानन॥ इन्द्रहिसुदसं
हनजायमंवाजसुम॥ वीधमजमसावेवपूरुधमपिपुपमव॥ नासिइल्यामहावाजसुर्ववाजाप्रभालय॥ नत्यकापिमदावापि
लाकंमसुवमाम॥ मनपूरुधनमनस्यसुर्वजसुखमव॥ वजवर्हिपदंयायावमवाजप्रभादम॥ सुखावनीचयायमसपूरुध
जसुम॥ उमिप्रसुमाजउहिंरुवाववनंमृदा॥ मूनयादीनमरुलासुकरुवंसमागमं॥ दवासुवमनूधोधप्रममहाऊमं

विचित्र

का ॥ ॐ दम वा वरु गवाना रुमना रुवहि रुवासा च स द वा सु व म नू य ग वू उ ग ध र्व भू ला का रु ग व ना ला मि न म स्य न न नि
मि ॥ ॥ ॐ मि वि वि वि क रु ति का व द न स पृ द भा धा य ॥ ॥ मू था भा का म ही या ल न म ह नं पु न ॥ उ नि य ला वा च ॥ मू
हा ध र्म मू हा पु भं स र्व ३ ४ ख वि ना भ नं ॥ मू य व र्म अ रु मि य मि न दा स वं कु म ह सि ॥ उ सी द स म हा हि रु ॥ स र्व स त्वा र्थ का व भा न ॥ य
था हं द न यि य मि न आ हं डि य म भू ना ॥ ॐ ला क र्म व व भू ला उ वा च हि रु स रु म ॥ व क सि स म य क रु ग वान् वे भा ली मू य मि
त्य म र्क ट ऊ द स्ती व कू टा गा व भा ला या वि ह न मि त्य ॥ स्व र्म नि र्म ल सू ग ध स नी न ल स्वा र स्य र्म ल पू सि य ह य वा नि भा य वि प्र भु य म

२२२

कू पु दा वा ल ला दि हि र्ज ल पू य उ का भ मा ना म र्क ट ऊ द स्ती व न आ च म्प क व कू ल या वि जा न जा मी वि ह प ना ना पू य सु व हि रु न न
सि न्न व व न वि ह न मि त्य ॥ व सि स म य धा उ न हि हि रु न न आ न्ये व न के र्द व ना ग य का सु व ग वू उ कि न्न व ग ध र्व म हा न ग वि या
ध न ग ले व न क म नू य ना जा दि हि ३ य वि रु न ४ पू व रु ना रु म र्क ट ऊ द नी व रु टि क म य नि ला न ल नि व र्म ॥ रु रु ग वान् ध र्म
प्र व न आ न ज न य वि य र्म ह रु जाल व वान् ॥ रु रु न र व ल पु न रु सि स म य वे भा ली म हा न ग व म र्क ट ऊ द नी व सि ह स्य स ना य र्म सो न
आ ग न स म्प कू व र्म र्क ट ऊ द नी व वि ह नि र्म व र्म भू ला ध र्म प्र व ना य स मा ग रु मि त्य ॥ न दा भ सो म र्क ट ऊ द नी व न आ ग न स्या र्म न स

वि. वि. ३

मयस्कं कृत्वा नि कडपसं जा न हि न ॥ अथ खलु सिंहे सनाय निरुगव न म न द वा च न ॥ हा गे न म सुखा य भा व नी ना मा हि वू पा द न
नी या प्रा सा दि का रु ग व ना वि वि रु ल क ॥ हा ल का यं द का स र्थ प्र सा द नि ल च व नी भा स र्थ य प्र च ॥ का सि क शि मा सा य वा स का थ ना ह
प थ वं उ न यू क्ता स्या दि नि ॥ रु ग वा ना ह ॥ हा स ना य म कि म हि ला ष ह मा ॥ मा सा य वा स उ न रु न क नि व र्ध रु नं सु खा य भा व नी ॥ स ना
य लु वा च ॥ हा गे न म ध र्म का म मा का थ या च र्वा मा सा य वा स उ न व रु व र्ध रु न ॥ न न ॥ सु रु ग वा नि सिं हे स ना य नि ना य भा व ना ॥ प्रा सा
सा हि वृ स र्थ प्र रु न हि न न्य सु व र्ध व त्वा नि व द ह्या नि ॥ न मा य भा व ना दा नि क या रु ग वां स अ व क स र्थ ॥ मा सा य वा स हि ला सा रु र्हे

२२०

ह हा य नि मा नि ना श वि वा सि नं च रु ग व ना न स्या नू य हा र्थ ॥ अथ खलु य भा व नी दा नि का सु व र्ध म या नि पू या नि का व शि ला नू य म या नि
व त्म म या नि उ रु न ग न्ध मा ल्य वि ल य न वू र्ध सं ग्र हं रु ला ग न ॥ सा वा हा नं स क्ती रु स रु ग व ना रु न काल मा गा च य नि ॥ स म या रु द रु स
क्ती रु रुं य स्या दा नि रु ग वा काल म न्य दि नि ॥ अथ खलु रु ग वा हि रु ग न य वि रु ना स र्थ ग न पू व रु न ॥ य न सिं हे स ना य नि व न नं न ना
य सं जा ना ड य सं ज म्पू व रु ना हि रु स र्थ य प्र रु व वा स न नि ष र्थ ॥ ॥ अथ खलु य भा व नी दा नि का मा सा य ना सा उ न रुं ला स र्था
नि ष र्थ ॥ वू र्ध प्र मू र्ध हि रु स र्थ यं द ह्या न न व स न श्रा हा व न ख रु रुं स रु र्थ सु व र्ध पू या नि रु ग व नि रुं दु मा ल द्या ॥ ना नि पू या नि ड य नि

त्रिजिह्वा

रुगवणावत्तु गगनवत्तु चंद्रवत्तु मधुपवत्तु वसिष्ठं यन्मम कंसु भिक्षि मन कर्म कना कना सिना वा कुरु ॥ यथा पितां वृक्षानां वृक्षा
नूलावनदवतानां दवतानूलावन ॥ अथ स्वयं यत्ना वनी मद्रु मद्रु दव मनुष्य वृज्जन कवंपा निहायी विदित्वा मूलनि रुमि वड
मा सर्वमवीक्ष्य रुगवणापादयानि पल्लवनि धनं कुरु मालाया ॥ अनेन कर्मलना हृदय धर्मय निष्ठा गनवा चला क मृनायक मृयवि २३१
मान वृक्षा ह्या समनी भुनां सत्वानां ना वयि ना मृषू कानां भावि ना मृना ह्यना मा स्वासयि ना मृयवि निर्वृता नां यवि निर्वृति ॥ अथ स्वा
लु रुगवान् यत्ना वत्ता दानिका या मा सी यवा सुवना हृदय नं यना कर्म यनं यनां वल्ला रुगव रुम मद्रु वा न ॥ धर्मना ल लपुन ४ यत्ना

वमीप्रमानहिलाभलवहंडुनामासायवास्त्रमनदीर्घकालंगनंनासिर्गंध्यापिसुमीयहिर्गुलं॥नङ्गमहिलाभलवहंडु॥यदीदृमिसं
॥हगवन्मठश्रीतिनत्रवृद्धधर्मसंघस्याग्रमासायवास्त्रममात्रवहंडु॥नमासोयत्नावनीदानिकाहगवमावचनंयमिष्टुलहगवन्मन
दवावहंडु॥हागोममनजानामि॥हगवन्मिष्टुलवृद्धधर्मसंघस्याग्रहिलासायवास्त्रमस्यकिंरुलंरुविद्यसि॥कथमोहिधनंकथ
मावनिर्गंध्या॥पूर्वकनावनिर्गंध्या॥पूर्वकनावनिर्गंध्यात्सर्वत्रहिगोममाजनपदकोमृनदवांरुमायवास्त्रमासिक॥अधुनाहगवन्मूत्रम
गुलान्निसृष्टममृनरुवनिर्गंध्यात्तानदावयमावनिर्गंध्या॥हगवानाह॥साधुसाधुयत्नावनीमनसिकबूलाभिषेदं॥कथिर्गंध्यापूर्व

विशिष्ट

सिन्हासायवास्तुर्न॥समानाधयित्वासायकमूपवास्तुं॥श्रुश्रुश्रुश्रुपिपीदिकामयिरुमश्रुदयावकुरुमनसस्यपविद्यावि
मन॥यथदवास्तुमनुयादय४आनिरुता४॥रुगवम४डिबलादिश्रार्यावलाकिमश्रुनस्यायमासायवास्तुनमाववनि॥नस्यपुम्भक्त
धगभयिर्दुसमर्थकनायि॥यज्वरुसमुद्रस्यापिवावित्रिदुसंख्यामधिगच्छकिगभयिर्दुसमर्थ॥नवमासायवास्तुनस्यसंख्याना
मयिगभक्त॥यथपुत्रवाप्रभुदानानियथाभक्तिरिवर्थिकस्यश्रुगप्रत्यंगनिददकिमवांपुत्रपानांपुम्भक्तधनांविद्याकरुलानिगम
उ॥यथलाकाप्रभुहक्तिपुक्तिपुनत्तुयप्रदकिमदानपूर्वगमे४॥पुष्पधूपदीपनेविद्यादिदृष्टानानहंयथाक्ताववांपागमनूसा

२२२

वे४हूपविश्वप्रदकिमवापिकुर्वनि॥यथपुत्रवाप्रभुदानानियथाभक्तिरिवर्थिकस्यश्रुगप्रत्यंगनिददकिमवांपुत्रपानांपुम्भक्तधनांविद्याकरुलानिगम
उ॥यथलाकाप्रभुहक्तिपुक्तिपुनत्तुयप्रदकिमदानपूर्वगमे४॥पुष्पधूपदीपनेविद्यादिदृष्टानानहंयथाक्ताववांपागमनूसा
वे४हूपविश्वप्रदकिमवापिकुर्वनि॥यथपुत्रवाप्रभुदानानियथाभक्तिरिवर्थिकस्यश्रुगप्रत्यंगनिददकिमवांपुत्रपानांपुम्भक्तधनांविद्याकरुलानिगम
उ॥यथलाकाप्रभुहक्तिपुक्तिपुनत्तुयप्रदकिमदानपूर्वगमे४॥पुष्पधूपदीपनेविद्यादिदृष्टानानहंयथाक्ताववांपागमनूसा
वे४हूपविश्वप्रदकिमवापिकुर्वनि॥यथपुत्रवाप्रभुदानानियथाभक्तिरिवर्थिकस्यश्रुगप्रत्यंगनिददकिमवांपुत्रपानांपुम्भक्तधनांविद्याकरुलानिगम
उ॥यथलाकाप्रभुहक्तिपुक्तिपुनत्तुयप्रदकिमदानपूर्वगमे४॥पुष्पधूपदीपनेविद्यादिदृष्टानानहंयथाक्ताववांपागमनूसा

विशिष्ट

सायवासुतमननास्य वंसिद्धिः॥ तथापि अहमवमावनिर्गुणिधनं वरुणं॥ यथासम चाहवदु मां वृजादमदिक्लोकभद्रसन्निधेः
मिमासुत्रिषुर्वृद्धाहवदुसम चाहवदु नूकम्यामूपादाययत्किञ्चि कायवाग्मनाहिदुश्च विमं त्यक्ता सर्ववृद्ध वाधिसत्त्वानां माता
पितृवो सर्वसत्त्वानां संजगम्य समागम्य हज्जन्मा ननं प्रवामयायाय कर्मकर्मका निममनूमादिनं॥ नत्सर्वमयापिसं किं यपि गुणित्वा
उलपित्वा सर्ववृद्ध वाधिसत्त्वानां माया वलाकिमं नस्या किं अग्रयाववमाप्रदिदमनयानूय नयनिष्ठ दयामि॥ त्रवां द्विष्टि वपि स
र्वसम चाहवदुहद नयथा नयगता श्रुयार्हं नायावल्ली वंजाना निपातात्पुनि विनानिह नद अवि लकिना दयाव न हनं प्रुस

२३३

वसत्यपानिह न प्रु॥ अथाहं पुन वाज्जन्ममर्हं नृगगुरुं॥ पापानां प्रुल्लोका नां यक यत्वं पदमय॥ कायवाग्मानसा कर्मकानि कानि क
नानि च॥ यत्सर्वं न द्विः सव वदय वादियुगव॥ हगवानाह॥ गुरु गुरु लं नृमां यक प्रु चतुः पदम॥ धर्ममजा यममादममादः
यगुरुहव॥ कायदुश्च विमं कर्महिक्काहि न विद्विक्का॥ अविद्यावैव व्यापादमिथाहृष्टि रथा विधा॥ यादयां नृत्यज्जाहि यवपानि वधाह
दिना॥ नाजनं हि संकर्मा निपानि पाद नृयम॥ यव विषयलाह न नूया यन वलनव॥ नोयसत्य अधर्मम नूदहृय हर्मा विद्वता॥ वृमीनीध
र्मवानि रन्ना गुविद्यान्नाय वष्टि य॥ संवन्निनी पसंग यकाम मिथाहृष्टि रथा॥ विषय प्रुवलाह निहृष्ट प्रुवहृय प्रुव॥ अस्त्यनवपुवा

विविध

[illegible]

मनपुत्रं कर्म ॥ जन्मना भजल्लावी बोनि ममा ॥ आभिना जद ॥ तस्या हीया महाहीयं जुजं गही निमानिव ॥ दवा सुवमनूया च निर्यं कुत
 नूना वका ॥ अन्नमो जायमं न सिं गुरु गुरु न कर्म ॥ ॥ अवमं वाहमं नामा ॥ उमा ध्वलाम्पादाय यावदाणिमिनी यावत्सूर्यादय
 नवदहा दानमवक्रवर्गमृवावादं सुनामं वयमद्यमानस्य नं नृत्तगीम वादिनमाला गंधविलेयनासूवर्गदिहृषमउच्चमयनमहा
 स्यनं वक्तृत्वाग्रहकिं पूरुनमासाय वासुजमावयम् ॥ अन्ननाहं कर्म तमूलनसप्तजन्म रुतानि यायानि नाभं याकि ॥ न मां मासाय
 वासुनार्हमाश्नुमिष्यंश्नुविदरधश्नुकनामि ॥ उर्वमासाय वासुसाधूसाधू ॥ ॥ सर्वं यथा मासाय वासुसुतं ॥ न रेव वाजत्रणा कमयाक्ता

विविध

[illegible]

२३७

सिंहमहानगनीयविजयस्यवलाकव॥नमोनगर्यानिस्त्रनोहि कवोमभिवसुनगमनाय॥रुद्रगमनपरथवाजानंदस्वमो॥नमस्तो
विस्मयावमोनवाधियस्यमहानामद्यावलाससुस्यमहानाजानूलवेन॥श्रुत्रकनहि रुभासोष्टुष्टु॥कनकावरनः॥पुष्टु
वाकनवापूरुभनवानवाधियस्यद्वर्नवाजसंपद॥यथयस्यत्रीयथयस्यघुनिर्यथादववाजस्यउपवाव॥नयेवात्यनवदस्यस्यान
नमायवगहि रुभास्यववनमाकर्षवावन्॥वनस्यस्यपवः॥राससंपत्रावाजामद्विवलेलावभगुगविभालधर्मवान॥सक
लविषकनवदहमदमदगलिननिविक्रंविनरुमाहर्षाहृष्टिनकावधह॥पुमायघुनिर्वाजिनपिंगलायडलासिनकनवधरुनयम

विचित्र

कृपायां॥ यजयज एथिवीपदं यनिरुमिर्दं भस्त्रु दिक्कपि॥ नृवसुवसना राजाना वलाकिर्न॥ नत्समीयं समायागं वृक्षायासिकं एव
म॥ म्रुथतो राजा हावमनू हाव यनो नमस्ते नत्समीयाया गम्या एव नां॥ हा वृक्षायासिकं कनका वभन किं कर्म त्वे निन्देत् भायन ४
ग्रीपना पयूनि संयत्रा ४ वनि॥ नत्सनाधियस्य किमरि लायभा उगम्यमाना राजा॥ वृक्षायासिका वाव॥ हा रिक्वा रुगवभावत्स
या र्या वलाकिर्न वन्या हो वाधिसत्त्वसम चागन मासा पवा सर्ववनि॥ वृद्धान्धक ना निरस्य पूवृषस्य यं यं मना हि वांछि न नमं स
र्वं समृच्चमि॥ इन्द्रे भा प्रहासादयस्य त्रा ४ राजा सुभा यजयज यययम॥ नृवसुवस कर्म हला नृसा वं भव विनयां॥ ननदिन स्यन नाधिय

२३१

स्य इन्द्रे भा वृक्षासादय उपसम्यत्रा वनि॥ नृवयं वा कानू पयम विवसना नाम स वाव नृगवत्सु का न्धयाना मसम्यक् कृच्छ्रं प्रमासा
पवा सर्वमादि धर्मं वभा या गमा हो वयमपि धर्मं वभा यन नाधियस्य नृगु द्यम॥ नृगुत्वा रुगवना यथा यदियदि सुं य निभूत्य न
दनु मासा पवा सर्वं कृत्वा॥ इत्युक्त्वा जलाश्रयं गमा कृत्वा फलं रुगव नम ह नत्सम्यक् संवृद्धं कपि प्रमियत्वा सु॥ नना हो रुगवा न्
म्यक् कृच्छ्रं राजा दिन यदि वा नृवा स का सर्वा धर्म दं नया मास॥ नृगुवना दनि ना सत्वे न ह मा रूमान सो मो हि कृवो रुगवना यथा य
दृष्टि र्हेत्य गृह्य पन स का मा हो वाधिसत्त्वसम चागन मासा पवा सर्वं समा वनं॥ नृदकनय निभुधन मनसा सु कालं कृत्वा वा कृ ४ कृषि

विविध

दानीयमहाकनूयनिराविना॥ वद्यानमिनाऽपविपूर्ययः भावत्यानामसम्यक्नुवाहविष्यसि॥ दमहिर्वलेऽवहुहिनाकोनेश
कुहिर्वेभावेष्टिहिनावमिकेस्पुपुष्टनेर्महाकनूययमस्यादयधर्मांममांकेकाविहमहिपुसाय॥ ॥ॐदमवाचरुग
वानाहमनाहवहिकवासाधसर्वविनीयर्षसुदवासुनगवूडकिन्नवरुगवनालाप्रिममत्यनन्दनिदि॥ ॥ॐनिविविधकशि
कावदानेभूसादःभाधाय॥ ॥मूथाःभाकांमहीयानसांजलिंपुनरुहिकुठारुमर्हकयमिनंत्वाप्रार्थयदवमादना॥उपगु
ष्टावाच॥मूथेकस्मिंसमयंभावस्यांविहवमित्या॥दवनागयकगधर्वासुनगवूडकिन्नरमहावगस्यर्चिन्ऽवुवाहगवान्क्षमांमहापू

२२२

महाहीवीववुपियुपाहभयनासनपुत्ररुषकयविकावागांसंभवकसंपानांमस्मिंसमयजनवनमूनाथपियुस्यानाममहना
हिकसंधनसाधननखतूपुनऽसमयनवाजापसनजिकोभत्यानामनगवयनिवसदि॥कीदभीकोभनीनगवीसमावासीदमनाव
नी॥साधुजनसमाकीर्तिरुत्थाहमेजनसंपूना॥कथमिस्त्वावीसानगवीसकयाजनसंपूनाव्यायामयामविस्तीर्त्वाहवकिन्नमन
हना॥मलेयंकिंस्माकीर्तियविवाहिसमरुठानानावृकस्माकीर्तानायाकिनिहृजिन॥नानाकसुमसंठनाऽसुगधगधवासि
निपत्रभातासस्यनाहिषववसमाजला॥सूकपूवृषादिस्यनाऽनानासुवविनादिनामकिंमंरुनत्वहधर्मनीनिविवकवान्॥

विविध

वस्तुवस्तुनंगर्वावे गजाप्रसनरूपनिःपयावा भर्षजाम्भ्र. उजासर्वस्वपूजवत्॥ यवमद्रुवस्वत्वेयम्भ्र. स्वद्रुवस्वत्वेयवानाम्भ्र
मभ्रविलसंपन्ना. यवकार्यमभ्रत्वन॥ नस्यपत्नीसूत्रपाव. कमलीगीलप्रमित्रना. उवमवविदयनि. यवस्यवविदयना. उलवये
नोविद्वन्नि. गजाभ्रजामभ्रम्भ्र॥ भ्रजामनाभ्रय. प्रसनजि. कमलस्यव॥ श्रयाकाभ्रजामभ्रम्भ्र. वरुनंगवसनव॥ हस्त्रिकाय
वभ्रम्भ्रकाय. नथकायवपरिका॥ गजाकमलप्रत्यनिर्धना. भ्रयायाहुससनया॥ यवस्यवमहाभ्रयस्रुडउवक॥ ननाप्रसन
जिजाजा. यवमहीषभाकनिःसमास्त्रासमाकूप. महीभयवमववीन्॥ महीयनाभ्रयिधामिहस्त्रिवावससेयकान् नृपनिप्रमृत्वा

२४०

सर्वान्सेनान्पूवमाश्रितान्॥ मयाकमाऽससेनारु. हित्वावाभाहिमाहिमा. भ्रगद्युनमयासार्द्धसहसाप्रवभंवन्॥ नृपनिप्रमृत्वा सर्व
हनिशामाऽधूनावयं हनिशामेयथासेनोऽसखैरुत्वावसनयन्॥ ६० निनथा कमाकभ्रु. सहसेवमहाविनः। मज्जमांजनमांयम्भ्र. मस्त्रिन
सम्प्रपाववन॥ गलदभ्रविलिहास. पूवमहि. त्वासमववीन्॥ रुवकवभ्रमादाय. प्राववकुरुसत्वरं॥ मद्रुक्तंमस्त्रिभाभ्रत्वा. निप्रमिंसहसा
ययो। भ्रनयित्वाससेनानि. यम्भ्र. यजुसमकन॥ नमऽसक्रुमलावाजा. महायवस्यवसंग्रामंदह्वान्॥ भ्रनकहस्त्रिकायसहस्रपिहिकाय
सहस्रं भ्रम्भ्रकायसहस्रं नथकायसहस्रं पर्यमात्राजप्रसनजिकोमलारीमाहयवायिनायवाहृष्टिहृष्टवकवरधनग्रावनिप्रविभ्र॥

विशिष्ट

उवंयावदिनथयार्थनाजाउसनजिकोमलभाकागवंप्रविशकलकयानंदला, विनायवायवसिद्ध॥ हाहामजायनरु॥ देवना
उविषादिमंयदहाविनलदाहावि, हाविचन्नदयथा॥ नसादेवउहावाय, स्वकुलस्वदवना, श्रुत्स्वसमाधौनो, यावत्स्वनाक
सहूलं॥ उसीदस्वकुलस्वत्वं, कमस्वश्रुयवाधकं, नवेवमनमहाहं, नभनाकंप्रवक्रभाहं॥ उवमनसुवाजन, प्रार्थिर्नपिदिवानिनी॥
ननावाजाउसनजिकोमलविनायवायवसिद्ध॥ नसिस्वमयंश्रावत्सामंस्तनगर्वाश्रुचनम॥ ८॥ अष्टिश्राधामहाधनामहाहागाविभा
लविलीधुविभालयनिग्रहा, वेप्रवमधनसमुदिता, वेप्रवमउमिसिद्धिननधूर्त, वाजाउसनजिकोमला, हययवाहसिद्ध॥ ८॥

२४१

वाथनहउविशः॥ मिश्रुवाचपुनः॥ यनवाजाउसन, जिकोमलस्वनायसंजाकाउयसंजय, वाजाउसनजिकोमलंरुयनायुषावव
ईयित्वाउवाच॥ किमर्थंयदवभाकक्रियतहंदवस्यनावत्सुवधुमनूययद्यमि॥ पुनवपियथसुप्रवावकंनविद्यमीनि॥ मनस्य
महासुवधुवाभीकृतवकाप्रविहः॥ पूवभाकिहंपूवधनंयन्धमि॥ उकितावापूवप्रविहं॥ श्रुमनकवंवाजाउसनजिकोमलानखः
विषयंवनंपूवभासमंननाउकिहा॥ १॥ श्रुमनजनयसवा, प्रायावादभावासेचावाहंनि॥ यावकंनवनहोमहावधानंयसंजलंजव
नः॥ श्रुमिकमनीनामसंयामः॥ १॥ यकाकयंयपूवभासुसंयामनिवसित्वायकायमभासुमयवडसुहाशनपूवभासुपृष्ठविनि॥ १॥

विशिष्ट

नहं वाहं निनिवदिनव नहं भूत्वा राजा प्रसन्नजिह्वं को भलन, राजा भूत्वा न भूत्वा वेदही पूज्य सर्वहस्तिका यः पर्य काश्च परहिका यः
यकाय पर्य काः राजा पवनमय का जा न भूत्वा वेदही पूज्य, ही न हय य वा यि न ॥ य वा हृष्टि रु न न जीव प्रा हं ग ही ला न क न य ना हि वा क्य
नहं ग वा हं ना प सं जा नू य सं ज म ह ग व न ह या सो नि न सा व न्दि ता, व का न नि षी द न का न नि ष र्भु न द वा जा प्र स न, जि ह्वो भ ल ह ग व
न मि द म वा व न् ॥ भू यं हि ह द न वा जा भू जा न भू त दी र्घ ना भू वे न स्य म वे नी भू स म्य न स्य, म वे न य ना न व य म व जी वि ना य य मा य यि न्
य स्या द्य म स्य पू जा य ह् व मि मूं वा म न मि नि ॥ भू भू म हा वा ज य ह् ग व न ह्वा व ला या पि मां ग म म हा व न ॥ ज य वे नी प्र स व मि द्द ह्वा न म

२४२

[illegible]

विधि

निलम्बं नन्दस्य (अस्मिन् ४५) सा दध च हं मन वलन प्रवा वया मि ह्य थ ॥ नञा प्रसन जिहं को भल नं (अस्मिन् वलन प्रवा वय मि ॥ सक थ
 यत्ना कां कामि वन स का हं म य था हि वूषि नं ना क म नू प्र य द्ध म नि ॥ न ना ना कां अ वत्ता म हान ग र्था यो न जन नां सर्व वि जि न न घ अ धा
 म नां का वि नं ॥ ४५ म (अस्मिन् स सा हं म वं ना क मि नि ॥ या व रू न (अस्मिन् वू क प्र म्वा मि रु सं घा स सा हं क ना य नि म डि ना ॥ नञा व प्र स
 न जि को भल स य वि वा ना या व न ध का नि को भल पू जन का या ४५ नि व स मि ॥ न नां इ मं प्र ष गं रु म ॥ स सा हं यू यं सं क ला य य थ सूं पा नि
 म ४ सू व स्य म नां वि ह न नि ॥ किं वि हा ग ल वू द्ध भ व ग न ४ ध र्म व हि रु सं घ थ श्रा त्य क थ र्ग ज नं उ हा ना स थ ग नं प र्शू पा म ध मि

२४३

मि ॥ ४५ नि न न न वं न म स मा र्वा नं स (अस्मिन् ४५) सा धू सा धू म हा वा ज नं उ वं म हि ना र्थ दं ॥ न मं व स ह या धा म भा स्ता वं नं वा य हां
 ४५ नि न न न वं न म स मा र्वा नं नि सूं य स ॥ प्रू वा नं य नि पा मा य गं उ म व स मा स न ॥ सा धू वा ज नं पि द्ध मि भा स्ता व नं य द नं य न ॥
 न न स ह वि रु स थ ॥ ऊ र्वा रु न नां उ मा ॥ ४५ नि न ना दि नं प्रू वा नं य नि स नं थ मि हि ॥ (अस्मिन् नं स मा द य वि हा व नं रु मे के
 न ॥ ४५ स नृ य नि न न (अस्मिन् ना हि मा नि रु ग ॥ नं थ य ध न न व नं यो न र्ग न य द नि व नं स नि व न व स नं रु ग वा स मू नी ध न ॥ ला क
 स ला स मू रु ४५ य ना स मू य ध न ४५ न दा न न न वं न न सार्ध म व प्र या ग नं ॥ (अस्मिन् नं स मा रु य म न स वं य वि रु य न स सा ह ला

विविध

ऊनामः श्रुताः वरुणासह ॥ इति मनमोनिः ॥ मनसाय विचिनिता ॥ तथा संक्रमनस्य विहानं समुद्रादिभन ॥ दृष्ट्वा नृप
नंनत्वा नां पूजा सद्रूपानयना नमः ससुगमं हृत्का समस्त्ययं सत्रधी ॥ रुगव सर्वविनाथ मया कंग रुमर्हसि ॥ मने हससाहृग
व सत्रावकं संघगभान ॥ कोलाय रुगव नाहु ॥ प्रवक्षु मधुना गृह ॥ नानाहृयं सहस्रकाटि निग्रुने ॥ संवा यमाना कूलन सुधुन भज ॥
इत्यव विप्रुने नत्पुकिने वामने भानाना नसि समूह काटि गानि नानि नवहि ररु ॥ दका इ इ हि नं वगुं निवहे नानादिनेता विनशा
नदय रुगवा कूर्धा ॥ अ कसि हां जगदु नृपा रुवी वनमादाय ॥ प्रवक्षा मन्त्रया लय ॥ नमः रुग अलय सर्व उमा न्वयका नकाशा सुवि

२४४

वक्षु यविधर्म नाजह अ मदि नशा ॥ स्वस्वयं जन गृहीत्वा उ गय मं उच्च मानसः कूर्धधर्म उह निन सत्रावक ग ॥ अहम ॥ नत्यस
र्वसु संघस्य यजादि दाय न किल ॥ सर्वं नं उच्च यमू दीय न हाजनं क्रमा ॥ नोर्दकं लुव नं वापि ॥ संया क घृन न कं वाशा मूनु यज
नसर्वा नि ॥ न पूरा जन दाय न ॥ वन ह वं जना नी नि ॥ हाजनं जिन मूह मं ॥ मिहो दि क दू वे वापि ॥ मधु कं वय पू विमं ॥ पंच य स न स
उक्ता पंच वायु स न त्य नं ॥ पंच रु न न आ कला ॥ स्व य हा ग रु हा ज य न ॥ मूय क्रमा सु कूर्ध ल ॥ पूजा विहन हा क न ॥ मय न द न य
वा य ॥ सर्व वा य व का व य न ॥ सर्व यं जन पि रू का दि व हा जनं उ क्ता स सं घ स हि न न ॥ य ॥ अ कं न रु ह द न ॥ धूमा गा वि च ना य य ना ॥

विधिः

पूज्यभूषेन आदीयेने विद्यादिग्रन्थाक्रमः॥ अथासनात्समुत्थय, उद्धरुमीमनावय ॥ गमयनविलिप्ताः ८४ विद्वन्मित्रादिभि
माहाजलधनादिकं कृत्वा, मुखमुद्विग्नकानयनम् ॥ हस्तपादप्रकाशित्वा, पूगनाम्बुनक्षेत्रम् ॥ नाजहस्तादृहीत्वा, स्वादेव मुखवर्जि
तम् ॥ पूर्ववत्सर्ववृत्तान् श्रीभीष्टवनमवर्जितम् ॥ अथैनकवत्सफट्टविना ८४ सत्रावकहिंरुसंघसहितम्, सत्कावेभवत्तु निवृत्ताभिगमस
हृष्टाभिकुललज्जननिजाजितानि ॥ सहाहृष्टाद्ययनरुगवभायादधानियस्य, वंष्ट्रान्पूज्यादिप्रतिधिवकावधननाहं कृमलमूलनाहं वि
हृष्टादनदयधर्मयविल्यागन, लोकभूनायकयविनायकवृद्धाहृष्टासमन्ती भुनांभावयिता, अमृत्तानांभावयिता, अनासृष्टानांश्र

२४५

असृष्टिनामपविनिर्दृष्टानां निर्वापयेत् ॥ हगवाकं सत्प्रतिनः ॥ अथ हगवर्जितेन आर्द्रलं वलाधिवनाजाप्रसनजिह्वोभला ॥
पूर्ववत्तुलनादिनायवृत्तिप्रदकिर्मा ॥ अथ वायुकवाकसत्प्रवेकाकवृत्तेन आगमाहाकविद्यस्वानवृत्तेन, अथ हाका नि
रुक्तकवैवत्यदभकः श्रीमानसर्वपायविभाधनम् ॥ अथ हगवानाह ॥ अत्रयानभयनासनसम्यवत्तमाल्यवसनाहवभानिकीर्
हिनुरुमगुनश्चयुवला दानकथितमईभषम् ॥ आदीष्टे गसम्यत्पुष्टवृत्ते दार्थवर्षु माधूर्यमाजः वाकसो लर्मकादिश्रवा
यमायुनतदानादिष्टमिष्टं हलं ॥ अथ वायोमानिनाभावकृमभित्तवामलं चानयनम्, अथ संगीतिगह्वरधूपटहनवायुय

विविध

मालायुवत्यः। हाकं वलादिह मायूनन गववहीव भमा दैवलाकं संवृद्ध संचवृद्धः कथितमिदं लंदन कल्पद्रुमस्य ॥ यत्री लात्यव
कामला मलदल प्रत्यर्द्धि न जस्त्रियः ॥ चंचल मलवृत्तिना वृद्ध घना विभु न कान्धुकाः। दास्यं या निविकं पि न स्तन टगा व्याव नि न
कुलना ॥ न सा सूर्य कपाट पात मयदा, दानस्य विसृजितं ॥ श्रुत्वा नाम वलावभा मृत धूलै नृपै र्वलीना-सूते ८ नागे हि न मदे श्व यन
वव ना गच्छ किं च ज्ञा च्ये ८। भुवे ८ साहन ले ८ रुगा जलि पूटा वत्य च माना सदा, न दानस्य रु लं वद किं पुन या पूर्वा दि न स्थ द भी हवे
वृज विविज ह म वलये ८ यत्पार्थि क ह सिना ८ क यूवे म कूट श्व वल व विने ८ सिंह सनत् ८ सदा ॥ मध्व न पुन का जन स्य विविधे ८

२४७

क्रीड नि विजी डिने ८ प्रासा द म नि वृद्ध म व वि न दृ ज ध जालं कन ॥ वी भा व न्न वि व भू गी न मु दि न व ल्प ल हा सि न, य च्छ ज्ञान
म न स ची नि स ह, या वि स ह्प्र कृ ल ॥ न दान स्य रु लं व द किं पु न य ८ पूर्वा जि न स्थ द भी ॥ दा ना प्रिय त्व मू प जा नि जि न स्य स स स
य न च व रु हि ८ समू प त्व स हि ८ की हि श्व दि रु वि स न त्व म लं य न स्य, न ह स्य द स मू प या नि वि भा ल दा सो ॥ ह दा स्का य स्य द वं च
विक ल वि वि धा ह फ ला ग स्य द वं च, प्रा था त्य हि वि वि डै ल व क उ स मि न, स्त्री न क ल्प द्रु म वृ ८ दान मू प का मं सु वि न म नि सू वं
न द ना दि च वि न ८ प्रा ना त्पू र्ण रू प म व यु व नि जने ८ स च मानं य दा ना ॥ दानं ना म म हा नि धन म वृ गं, वी रा य सा धा व र्ण, दानं म

विविध

सुवलाहदाषवजसु४पुकावर्भचमसु४संस्तनाधपविप्रमायनयनंदानंसुखंवाहनं दाननैकसुखापहागसुखं सन्मिज्जमात्य नि
क॥ पर्यत्तसुहकावहंगसुवहिष्ठमनिमरनात्यवं श्रीमत्काश्चनराजनिहिमं वधूकतासुमंधू। कामिन्नासुप। थायनीतमसुख्य
यीयनकामिना हंडुऊवदकिउधमनथा दानंयवं प्रयसु४॥ न्निदानयुभा निस्सम्यपयनात्मा ऊवदानववयत्वं। जिहवायम
हाहयननाभां नहिदानात्यवमस्ति वाजनय४॥ न्निधुत्वा सुगाहं सुखमवमूनवव४॥ जिनस्याननमयादा सहर्षिनननूह॥
नस्मिन्समयहगवात्तुर्धुकोभाशुविवगत्तं वनस्मिन्सुखानि शार्थकाश्चिदधकाहृदं नि। काश्चिदपनिष्ठाहृदं नि॥ थडमुननका

२४१

प्रानिनयक

भीतिरुतापनक्ति। यभीजनवकासुपुड्डीरुतानियनक्ति॥ जननं वांस्तानां कावभवि। मया४पनिपुसुखं नमवामवहं वदिनं
कवं वयं रुदन् न्मभूतानाया न्यजापयत्रा४पुपिस्वयमपूर्वादर्भनसुखस्यानूलावेनात्मा कं कावभवि। मया४पनिपुसुखं न्नि॥
जननिर्भिर्न विरुमस्तिपसायनं नवकवदनीयं कर्म कययित्वा। दवमनूष्य सुपुनिसंधिगृह्णन्ति। यजसुखानां राजनरुमाहवार्त्ति॥
यावड्पनिष्ठाहृदं नि। ययस्मिन्नानांदवानां गत्वाशुनित्यं सुखं मुनयमात्यं नि॥ गाथावयंचलावनं॥ श्रावमधं निष्कामन। पूक
धं वूधभासनं धूवीनमृत्पुनासेनं। नरागावमिव कूजवं॥ थाकस्मिंधर्मविनेय। श्रुमरुध्वनिध्वनि॥ प्रहायजानिसंसाव। इहव

विविध

स्यात्कंकनिष्पत्तिः ॥ अथानावर्धिसहगवर्धदक्षिणीकृत्यहगवर्धोवाकर्धायकं ॥ अथकाग्वपाकनकनयूहाईर्कंपयकुं
 जानाधिरधनसुसुविशवक्राकनानिष्पत्तिः ॥ कलायवृवरासिगधनदिभः ॥ समनादिवाकनभादयनामथेव ॥ गथाधुहो
 वन ॥ विगभाईवायूदैनमदपहीभा ॥ वृद्धाजगलूममदपहीना ॥ नाकालर्धमृमाल्लोवसिगमूपदर्भयकिजिनाजिनावः ॥ न २४८
 कानमंस्वयमधिगमवीनवृद्धाहभांभवमजिनडकाकिमानांधीगारिमुनिवृषवाहिवृत्त्यन्नव्यववयसंभयकुशुहाहिः ॥ नाकस्य
 ज्वनमजलादिवाजधेयोः ॥ समुद्राः ॥ सिगमूपदर्भयकिनाभा ॥ यस्यार्थसिगमूपदर्भयकिधीनाः ॥ नं ॥ अहंसमहिलविमंजनोपाः

निनिः ॥ ॥ हगवानाह ॥ अवमवर्धनेनद्वजममत्रार्हव्यत्ययमानदन्थागमार्हः ॥ सम्यक्कं वृद्धासिगं प्राविजर्वनि
 यग्वसित्वमानदन्तयिनिनाजापुसुनजिसुार्धकथागमसंभावकसंघस्येवंविधं सुकावेमलजनं कनमहाजनका
 यं वृद्धलनियुक्तं ॥ अवर्धयकथयिनासुहवाजापुसुनजिकोमल्यननजमलमूलनविहात्यादनदयधर्मपवित्यागन
 ठिकल्पयनिसंवायवाधिसमुदानीयमहाकन ॥ यनिहाविनाः ॥ वत्यावमिनायविपूर्येवंसम्यक्कं वृद्धाहविष्यसिदमहि
 र्वलेः ॥ वडहिर्वेभानयोः ॥ मृत्पुष्टनकेः ॥ महाकनूगयावायमस्यधर्मयाममाकिक्विरूपसादमिनि ॥ ॐ ॥ हर्षविषयं वाज

विचित्र

नृनिका महात्मा धर्म काम ४ यज्ञा वत्स न ४ त्याग विहा त्याग नृ विष्णु दान नृ विष्णु दाना हि नृ नृ महती त्यागा वर्ह न॥ यावदसो सर्व
या पाव विभु नृ य ह मा नृ य ह॥ यज्ञा नृ क नी र्थि क नृ स ह्या नि उं ज नृ स॥ यज्ञा नृ ग व ना नृ जा वि वि भा ल ४ स य नि वा ना वि नी नृ स
स च वि न या नृ नि या नि नृ स ह्या नि वि न य मू य ग ना नि॥ नृ दाना नृ गृ हा सृ पू नृ स नृ दाना त्याग त्याग पू नृ स य नृ दाना दू द स च नृ
ह वि उं य ह ४ धर्म संध स च थ संध ४ वा क्त्वा म हा भा ला ह ग व ना गु न सं की र्त्त नृ य नि य म हा नृ स द ४ य नि ल च वा न॥ न
नृ नृ नृ म हि नृ क नृ गृ हा हि मू व ४ हि नृ उ लो जा नृ म उ ल य धि यां य नि का य पू या नि कि य न॥ धू य मू द कं च ह ग व नृ मा यो

२१०

वि उं पा र नृ ४ आ ग र ह ग व नृ य क्त्वा ट मि या था॥ मा नि पू या नि वृ दानां वृ दाना व नृ द व ना ना नृ द व ना नृ ला व ना य वि ह ग व नृ ४ पू
य म उ यं क क्त्वा नृ ४ धू या नृ क्त्वा ट व इ द कं वे र्थ नृ ला क व ह था यू या ना नृ द ४ क नृ क नृ पू र ह ग व नृ य य र॥ ह ग वा ना ह॥ नृ व
म नृ स च वि नृ य नृ स ग नृ य नृ क नृ क ल य स ह्या य य नि य य नि ह नि नृ न॥ नृ व द व स मं पा य नृ व का नि स म नृ य ४॥ द वी च नृ व क
ग मी त्या नृ क मी वा वि म वा नृ या ह॥ म नृ स म नृ गृ का नि नृ यी॥ नृ स र व म नृ नृ नृ नि ज नृ नृ ध नि वृ द्धिं द व नृ ल य द दि सि नृ ४॥ द वी हि
का नृ य त्या यं वि हा ना दि व द्ध सं क ४ ध र्म नि द रू लं स च सर्व या या नि का नृ य न॥ वि हा नृ वि धि स नं पा यं नृ म हा त्या स मं य नृ ४॥ वृ द

विधिः

धर्ममयं लोकं न हत्वा सुगमो कथां॥ धर्मनिन्दा कृतं पापं प्रकृतिना सुमनस्य॥ बुद्धानां जननी पृथक् मां निंय सुगमो कथा॥ सा
धिकं याह न डस माहुं हीनमूचा न॥ बुद्धधर्माभयं संघं न हत्वा सुगमो न हि॥ श्रुत्या नि सर्वपापानि कथं या किं सुनाधु वं बुद्ध
पूजादिकं कृत्वा सर्वबुद्धपुस्तक॥ न त्रय यड् दीयमां पूजान गृह्णन् जिने॥ विना जिने पुलाव व सुचमन न कं कथं॥ न स्मा धमवः
लहत्वा न त्रय य पुलाव क॥ बुद्धा का किं य यत्नेन रावथ दिवि विने धन॥ नेव विप कथं या किं या व जीव म वि घ्न न॥ आधम कं उः
या ह न्या लून सर्व विधा ह ना॥ विकल्प धन दी धून ऊरु आध ह विरुजा॥ देह भीलान म वा दो प व ध क ति मान न वा ज ना नू प व न् आध

२७१

न म भू कृष्ण नाम पि न व त् आधर्मार्थकानार्थ तस्या आधं निवा न य न्॥ अव कं मा ह व दी र्य वी र्य वा वि य न ४ स्मि न ४ न दि वी र्य वि ना पू
न्यं यथा वा युं वि ना ग मि॥ किं वी र्यं ऊ म ला सा ह रु दि य क स मू च न॥ आ ल स्यं ऊ सि ता भ कि ४ वि वा दा त्या व म न् य न्॥ श्रु या या नि सु
त्वा सा हं नि जा या भ य कि क य॥ सं सा न ४ ख नू र्वा ना दा न स्य मू प जा य न्॥ आ ल स्यं य स्य द ह मू सु किं क र्य व ता दि कं॥ आ ल स्यं स न नं हि
त्वा प्रा य मि वा धि मा मू या ह॥ न्द य नि क वं सर्व प्र क र्थ दि ज गु र्जि ना॥ न स्मा द्वा द य प्र क ४ ४ खं नि र्वा हि कां क था॥ प्र क ४ व न न वि क
ल उ न न स्य नू प मा ल ख्य नू पे मि व सा व दि ही न म रु ४॥ बु ध चि त्त य रु ल मि हू मू द ति वी र्य वी र्य रु बु धि वा हे तं स व धा य न रु ४॥ या मे

विविध

कननितांज-मांखज-मःहमंरं विष्णुलनामगाउ॥ मथा-नपूर्वहिजनप्रवहि-प्रज्ञवल-नकथयनिबुद्धा॥ यद्वैर्मर्त्यलोक-
मलुनिनिवगहनंनानयित्वा महा-कं-ज्ञानालोकं कवाहिप्रहवनिवसदाशषवृ-न्दननामां-मृद-वृक्ष-र्षीयानां-यवमनूजमनावहिसर्वेषु
कोवि॥ प्रज्ञकजापिनिहं-प्रहवलजननीहउमूकीर्त्यनि॥ कार्या-धुववापिदृष्टनिममा॥ सं-ग्राम-म-धमनूजाप्रक्षना॥ प्रज्ञवलं- २५२
विजयीलह-नं-प्रज्ञकन॥ सा-प्रह-हं-हना॥ प्रज्ञवलनेवजिनाजयनि-धावंसू-इ-व-रुमानसे-यं-प्रज्ञवि-ध-ध-जनाविहानि-
प्रज्ञहि-र-माजननीजिनानां॥ न-सा-साधन-उ-म-ध-साधनकवी-प्रह-व-स-व-ध-नां-न-प्रज्ञविकलां-विहानि-पूर्व-वा-॥ प्रा-न-॥ यदीया-व॥

[illegible]

विशिष्ट

ब्रह्मन्मन्त्रं तथैकदा विशाकस्य पूर्य भूमिं कर्म स्यात् ॥ तस्या दूर्हं इच्छन्मवन्ति त्वं, बलं दुपायस्य महत्सु धार्यं नृजीयन्नेन
भुक्तं कन, संवाधि विरुं यदि नाम न स्यात् ॥ कल्याणनल्यान्यु विविं नयहि ॥ इहं मूनी हिं मवन्त दव ॥ यन ४ सुखेने व सुखं पुट
इहं मूया वयस्य प्रमितां जनो घान् ॥ रुव ४ खमनानि नृकु कामे नयि सख्य सनानि हृकु कामे ॥ वरु सोख्य भनानि हृकु कामे ४ न वि
माचं हि स मे व वाधि विरुं ॥ रुव वानक वधना वनाक ४ सुगमानां सुकड चानक मन ॥ सननाम नलाक वदनी थारु वमिलादि न
वव वाधि विरुं ॥ शुभु विप्रति मा मिमां गृहीत्वा, जिन वत्प्रति मां क शास्त्र न र्था ॥ वसुजान मती ववधनी र्यं, सुदृटं गृह्णत वाधिवि

२७२

हसं कं ॥ सुपनी कन मप्रम यधी हि ४ वरु मूल्यं जगद कसार्थ वा हे ॥ गति परु विप्र वा स नीला ४ सुदृटं गृह्णत वाधिविरु वत्वं
कदली वरु लं विहाय याति, कन म न्य क न लं हि सर्व मव ॥ सन मं रु सति कयं न जाति, प्रस वरु व वाधिविरु वृक ॥ युग म न कालान व व
महा कं, यायानियं निर्दह मि क न ॥ यस्या नृभं सान मि नान वाच, ब्रह्मादि नाथ ४ सुकलान् विरु ४ ॥ जगदान नदी जस्य, जगद् ४ खोषध
स्य व ॥ विरु वत्प्रत्यय स्युभं, नृ क मं हि प्रमी यनं ॥ हिता संसन माधन, वृद्ध पूजा विमि घन ॥ किं पुन ४ सर्व सत्त्वानां, सर्व सोख्यार्थ मूः
यतां ॥ इह ख मं वा हि वा व कि, इह खानि भ न म भि न ४ सुख द्य ये व सं मा हा, स्व सुखं घृ नि भ ड् व न् ॥ यस्तु वां सुख लं कानं, पीडिता

विशिष्ट

नामनकन॥ हृदि सर्वसूत्रेऽर्थात् सर्वपीजं दिनहिव॥ नामयत्तु विसंभाहं साधुस्तु न समः जनः॥ कृतावातादभं मित्रं पुंभं वा
मादभं कन॥ कन्यं पुनिकुर्वीत॥ सायिना वत्स मस्य न॥ श्रुत्या या विसाधुस्तु वाधिसुख किमुयत॥ कमिययजनसं ह दायक कनलं
कृत्य हि पूज्य जनैः॥ कनमनकन मज्ज दानक॥ सयनिह वंदिव सार्ध या यनात्॥ किमुनिनवधिसुख संखया विनवधिका न सुखयच्छ २५४
न॥ गगनजनय विक्रया कयं सकलमना वथं पुनमं॥ निसिस्तय नाजिनस्य पूजा कलूषस्व ह दय क वा मिय॥ कलूषा दय संखया
सकल्या नवकथा वसनी नि निश्चिंतं॥ श्रुथयस्य मनः प्रसादयेति प्रसवे ह स्य न नाधिकं हलं॥ महता हि वलनया य कर्मजिन पूज्य

गुरुं वयत्त॥ नमो नवी नामिनमस्तु गुरु यथा दितं न वन विह्वत्त॥ यथा यका नापि सुखानुवन्धि सुखा क ना नां न वमं प्रयातु॥
॥ श्रुथस्वत्तु वा कन ह ग व रु म न द वा वत्त॥ कथं ह ग व कल पूजा वा कल इ दिन वा वाक् निसंसा निक व न ना धर्म विनयं वा ध
र्म विनयं वा कर्वन्ति॥ यरु वाट विनयं वा येरु वाट विनयं वा दान विनयं वा दान विनयं वा भील विनयं वा भील विनयं वा का
नि विनयं वा का नि विनयं वा वीर्य विनयं वा वीर्य विनयं वा ध्यान विनयं वा ध्यान विनयं वा प्रज्ञा विनयं वा प्रज्ञा विनयं वा
यरु संयदा हत्वा ह वन्ति॥ ह ग वा नाह॥ नृपुत्रा क मा र मी न ध नि व द व नी निल क प्रा नि सत्त्व प्रसा नि ता स्व कर्म समा श्रिता

विशिष्ट

प्रहवन् ४४ वृत्तानि सुसंवेदनि ॥ न च था दवमनूष्यासुनरुतप्रन निर्यगादयः ४ प्रहवन् ॥ रुतसंरुवा दवमनूष्यासुन निर्यगा
दयः ४ प्रहवन् ॥ प्रनसंरुवा दवमनूष्यासुनरुत निर्यगादयः ४ प्रहवन् ॥ निर्यगसंरुवा दवमनूष्यासुनरुतप्रनादथा प्रहवन् ॥
न पिष्टथ कथं सा न भुवानूला मयमिलामगंगानदी बालूका यमानाः ४ प्रहवन् ॥ किं कर्म कृत्वा दवा दया हवन् ॥ अ वं मनुष्यादि २५७
संभूता मनुष्या दया हवन् ॥ न चां कथं मयमिलामगंगानदी बालूका यमानाः ४ प्रहवन् ॥ किं कर्म कृत्वा दवा दया हवन् ॥ न सर्वग दतां प्रसा सर्वला क प्रवाधनार्थः
॥ हगवानाह ॥ अयमां वाक् ॥ या गवा व विभालका नूनपहः ४ सखा हवै संयमाना ग दध विमाह मानः ४ विमलः ४ स्वार्थः य नार्थः ४

नि ॥ दिवा ॥ अहं मका नि कांचन निरु ४ संमार्ग सुन्दर कः ४ दवाना मिह वं न का गत व नि ॥ अहं डिया क र्व भी ॥ पुन्यं लेक म नि ४ स दे
व गुनू भा मा राध ना वे स तां धर्मा लय दान सं विरु लं ज न्या न व र्णु य ह ॥ मानूष्या न ज्ञान संरु व गु ॥ विना य म सु म ४ कामा न ४ य वि पू र्ण
कर्म कृत वा ची मान सो द क क ॥ वज्र आध स वी व वा दि नि सु म ४ सं ग्राम ४ भू वा द्या ना कार्या कार्य म हा सु व ४ स्वय व ना ॥ अथ ४ सु वि का य
न ४ दवाना मु दि न ४ प्र वृत्त मु दि ना दि वां ग ॥ अथ ४ सा हं का व कृ ला व ना वि कृ ना दे ला च मा ४ ना ल्य ४ ॥ रुता वं न कृ कर्म कृ वि न या मा सु
र्य लू मा न य ४ ॥ रुद्र लू ल वि रु द ह सु य वि लि हां ग य न मा मान व ४ ॥ इ ४ वा र्ण व रु वं च ला य न वि हं ४ पा मा न सं हा व क ४ ॥ ही ला सु ल वि स

विचित्र

यथा नो जात्यय यच्च न वीर्यं साहसं न च विविधीर्ययनं ॥ हृदि यत्र स्य वं डाहि, या वर न च व दहि न ॥ सा इ सिन त्वा रु वं इ ह री
ह न्य माना य न स्य वे ॥ या इ या कृ लि न गी हं प्रा, ना व रु रु क रं इ निर्भा य ॥ ह ० सं क म्य रं या व ॥ दा नि क भा ल्म ली न रु न ॥ च द
सि च्छं द ना इ व, या इ सो वि आ स धा न क ॥ वा य सा लू क गृ हा ये, ना व रु रु क रं निर्भा य ॥ सां धि कं ह वं द्र वं, सा इ म्या ल्प य गु ज नि व ॥
वा क्ता ल्प रु व द न्धा नि इ प स क्ता नि इ र्म ना ॥ या इ सो रू उ ह व क्ता ले, व या ड ह्ने च हि स दा ॥ वर्ष का टि स ह्ना मि, सं व र ता य रु ह र्म ॥
मी ना दि ज ल जा हं न्या, ल्प कृ ल द न्मा य वां ॥ ह्री मां वे न व नी या नि, ना सो इ मि व द क रं ॥ य ध र्म स ह्ना वि ष य ज ल वा, हि न्द नि मा र्ग कृ टि ल भु ह

२५१

[illegible]

विविध

यमहर्षं ॥ ताउनं वधवधनां गवाश्चादिषूजायनं ॥ कुवकर्मात्कथञ्च ॥ अ. दहीवर्क ववृष्टिक ॥ व्याघ्रकृष्टमार्जव, खानरुल्लवक
दय ॥ मत्स्यनाथमासादा, जायनकाधनानना ॥ थाकुव ॥ आधनादामा, पावृष्यवानसीनव ॥ गवृष्ट ॥ आधनादामा, रुवना
गमहर्षिक ॥ यदहं न स्वयं रुज, कायवाक्किरुमानसे ॥ निर्यक्तनरुवर्क, मनस्ययिमाकथा ॥ याहर्हर्क कथय, रु
आदानादिवर्जित ॥ रुवच कुनवाहा व ॥ सप्रन ॥ कटपूतन ॥ रुष्या वचयथासी, विह ० यमिवालकान ॥ कनयूटनकिंविद
दाह्यव, दानंवायिनिवानयन् ॥ सूचीमूवाहवत्युन ॥ कृत्यीयासीमहादव ॥ नददामिक्कुकर्थ, वनार्थपालयधनं ॥ आका

२१८

हाहाहवत्युना ॥ दहादायीसूदावृम ॥ यवडवायसाव ॥ रुथा दवावान्माचक ॥ रुष्याविद्यानमूनामां, रुकाप्रनारुव
वावृष्टकल्पनवावा, दवात्यवधयथा ॥ मकननायकोलुवा, सदासोवचका ॥ थाकाधादप्रियंवाकं, रुकाप्रनारुवकिम
मार्तिघाटनं ॥ उल्कासूवाहवत्यव, प्रनक्तनामिदावृम ॥ कलहय ॥ कवात्यव, कुनचनादिनिसृह ॥ रुपिकीठभन ॥ प्रन ॥ सरुवका
निक ॥ किलभा प्राप्तिनानि ॥ रुथा हर्नियारुकाथददामिच ॥ सप्रनयाकसाकृष्ट ॥ रुकाजिलरुमनिर्ग ॥ मालागधप्रियानिर्ग, म
दामर्षप्रदायक ॥ गधर्वाजायनयासी, दवानमिक्कुन ॥ पिशुनामर्षनेकश्चिदद्यादर्थार्थयवच ॥ यदहं त्यायिमाश्चसह

विचित्र

वदितुमनना॥ इष्टास्त्रयवानिहं यवपीज्वनश्चय॥ हृत्प्रतहवत्थव संयदानवमानव॥ कृत्कृद्द॥ प्रदाताय सर्वमया प्रियसदा
॥ सहवत्थयकोवा कृत्नात्मा मदनप्रिय॥ यानेयामुनयत्माना यिरुगुन्यथयिर्मं॥ यकाहवयानयायि सुखाचिन॥ सुसालवान्॥ मा
नवान्सूर्यलाराद्ये॥ प्रमा॥ सु॥ इ॥ स्वरागिन॥ अहोयकादयाजाता हवन्किरागरागिनः॥ नवासुनामां वधव सुविनायुवहिसया॥ नसा
द्विसायवित्याका मत्स्यायुहिसयाहवन्॥ धनमादाययादहं विषादिष्टाददातिव॥ धनवाच्छीलवाहृत्वा सहयानिर्धमाहवन्॥ यवत्वा
नेवहर्त्वा वीरनागादिदानवान्॥ संपूर्णमिष्टमाहार्यसचिहं लहमलघू॥ उत्साहायानिधानिहं दयाहाजनमूरुमं॥ वोगादिन

२१२

जित॥ श्रीमानायु॥ पू॥ अ॥ वलाचिन॥ सदयानूपवास्यागी रागी स्वस्वहवन्मुनी॥ यमुवन्मुददातीह समहायुवषाकृति॥ कृ
यवापीतद्यगादि जलाग्रयंकवानिय॥ हृत्कृद्द॥ स्त्रीसुखीरागी निष्प्रियासहवत्त्रन॥ वधवयनिनाकंक संयवमुनिध
वन्काकिवागुनवाधवे श्रीमानयिसपू॥ हिनापानिनांसन्धि यमुसंयक्कानिहि॥ सा॥ हृ॥ दानूववाविदा सत्यवादीह
हवदली॥ गुनूमांसनंनिहं य॥ क॥ वा॥ पु॥ मा॥ द॥ न॥ आ॥ द॥ य॥ वा॥ गि॥ ना॥ वा॥ यी॥ सहवह्नीमभासुनं॥ मायावीकिलिषीनावी य॥
म॥ न॥ व॥ क॥ लि॥ प्रि॥ य॥ वी॥ र्य॥ वा॥ ध॥ न॥ वा॥ त्या॥ गी॥ सहवदसुवधव॥ यनियहसुखहृदयानायादकमिष्टुनि॥ समहावाजिकश्री

चित्रि

विचित्र मानवुद्धिमाभाकल्लुङ्गकः। गुणेभ्योयत्रिकुल्लात्मा। दुषिभ्यामिनायकः। प्रदानदमभीलादीं, अनूयास्तस्यंजना॥ नविन्द
दयतेनूनं, निर्माणतेनेयायुका। यदीनमानसात्प्रसा, प्रदानभीलसंयमाः॥ शुभिनः काकिमन्तु, संयामिपवनिर्मिता॥ शु
रुशुरुल्लवाना, यत्प्रसाकं शुभं॥ धर्मप्रोप्यन्धर्म, काधर्मप्रोप्यधर्मः॥ लोकद्वयत्रायिभुक्तभुक्तगतिः॥ पूज्यादपूज्या
चदयादयानतिः। विदुषतावदुषसाधनं धनं, नमः॥ पवन्त्यभुक्तं नमनं॥ जन्मनाभजलावीचो, निम्नगाः॥ पाणिनाः॥ ह्रीयानि
ह्यमहाह्रीमः॥ रुजं गह्रीमिमानिच, नताविद्यात्रिवक्ता, धासितार्थजित्प्रियः॥ गार्हस्वविषयं सत्का, जिवत्तं नवमं ययोरा

[illegible]

विशिष्ट

विचित्रं यस्मिंस्तमथ वृद्धं ह गवत् स्वर्गं निष्कृन्नांगं गमितं कृतं संकथयत् ॥ तथापि सर्वं तथा गतं स्यात् किं कृत्वा गृहीता गृह्णता यवर्हिता
यवर्हिता शूनूमादिना यवत्सु विरुद्धं संपकाणिना ॥ पुनरपि काश्चिदप्यसंभूतं नाम वाक्यं तद्विहा नैहाम कर्मयुकाणि नांवा नि
तानां पुंश्चानुसंसाधुत्वा हा विषयः ॥ यच्च कुलपूजा वा कुल इति नांवा ॥ दंयि श्रुयात् पुनिरुक्तं कर्मना नर्गं भूत्वा च धनयिष्य किं वाचयि
ष्य किं शूनूमादयिष्य किं यवत्सु विरुद्धं संपकाणि यिष्य किं तेषां वा यायगमिकर्म विषयकं नार्गं यायुः दीर्घं नाशमर्थं यद्विहाय
सूरि कायथागसंस्तुनायसंस्तुनां वा प्रायश्चित्तं विषयिना तस्य पुंश्चानुसंसाधुत्वा सर्वं गतिहर्षय किं दवास्तु नमनूष्याश्च सर्वं गतिहर्षय किं तत्र नमनूष्याश्च सर्वं

कथं यिगाः यस्या मास्मा वका कत पूतना जाला नान विदुर्थयन्ति । सर्व विनायकाः सर्व भजवः सर्व ग्रहा कि न्युपडवा
 न विचित्रं यमि ॥ ४ ॥ सर्व लोकपालाश्च उर्महा राजकायिकाश्च सपनिवा नासक्त सपित्तं तस्य वका वन भुष्टिं क विषयि ॥ स
 र्वथामा नान्यवगा वं नलरुं सर्व तथा नूट हीताश्च रुवन्ति ॥ ॥ दमवा चरु गवा नारु मना रुचरि कवा साश्च सधवा सुवः
 गनूठग धर्वश्चरु गवता हा धित मत्यनन्द त्रिति ॥ ॥ निविचित्र कर्तुका वदानं विंमं तिममा ध्याय ॥ ॥ भू धा र्मा कु
 मही पाल पार्थ यदवमाद ना रुद रुद्रा रुद्र मिष्ट मिपू नर्वकुं त्यमहं सि ॥ ७ ॥ यशु धावा च ॥ चक सिन्न रुदं कालं भाव स्यां पूलि

विचित्र

सकृवा॥ ऊतवनं रनाथपि सुदसा नामरुगवान् विहवमिस्म॥ आदी कल्याणं मरुत्तकल्याणं पर्यवमानकल्याणं स्वर्थसूयजनं कव
लं पानिपूरुस्य विभुषं पर्यवदातु कवयसं पुकास्यमिस्म॥ नरुधुआवकाभां चान्यनमाप्रविष्टा मदाधनामहाहागा विस्ती
रुविमानरायविगृहीतवेषवसाधनसमूदितावेवमप्यमिस्मर्द्धि मनसहभाकुलाकलरुमानीनं॥ सकयासाध्वं जीउनि नमुनियवि
वानयति॥ नपूजानइहिन वसकलंकपालदत्ताचि काप नाव्यवहि ॥ ४॥ अन्नकधनसमूदितामगृहनपूजाममाहयासर्वस्वापः
नयमपूजकमिहिकृत्वा नाजविधयह विषयमीति॥ सधवमवाक्रमनेमिहिकसूहसुचधवेनूयन॥ दवाचनं ऊनूधमि॥ अः

२४२

स्तिवेषलाकपुवादायदायावनहमा॥ पूजाजाय नइहिन वप्रति॥ नखनेवदं वतानूगवनयदवमह विषयदके कस्यपूजस
हसमह विषय॥ नयथा॥ वाजायचक्रवर्हिन॥ अदिउरुयाभां समूखीरावा पूजाजाय नपूजसहसं इहिन वभूकनमवां जयाभां म
नापिन नीवलीरुवतसं नियमितीमाता कल्याहवति॥ अहुमतीवगधर्वधुपुपहि माहवति॥ ववउयाभासु नाभां सनूखीरा
वा पूजाजाय नइहिन वप्र॥ तथा कसो प्रवमवाक्रमनेमिहिकसूहसं वधवाधवा विप्रलब्धा पूजापूजाहिन दिनिवववृमऊव
वमऊउकादि अयाधुदवता विमवाभां यावतस्य॥ नयथा नाम दवता वनदवता वलवदवता भृक्षकदवता वलिपुमिग्राहः

विधिः

काऽदवनासहजासहधर्मिकानित्यानुव(अश्रुपिदवनाश्रयाचक्षुः॥सर्वेवमायावनयवनिष्ठति॥अन्यमथसत्त्वाचक्षुः॥सत्त्वा
निकायाश्चक्षुः॥पञ्चापस्याऽऽकिमवकाऽऽपश्चावसिकाधर्माऽऽकस्यऽपश्चिन्नातीप्रमाहप्रम॥कर्मयश्चक्षुः॥पुनर्वि
ज्ञानातिविवेकंषूबुधंजानाति॥अकुंजानाति॥गर्हमवकमनंजानाति॥मस्यासुकाभगर्हवकामनि॥नंजानातिदावकंजानाति॥सर्वं
दानिकाहवति॥दकिमकुकिंनित्यनिष्ठति॥सर्वदाविकाहवतिवापकुकिंनित्यनिष्ठति॥साश्रुहमनास्वामिनमावाचयतिदि
वानार्यपूजवर्द्धश्चापत्रसत्त्वंसिंहंरुहा॥यथावापदकिमकुकिंनित्यनिष्ठतिनिष्ठंसाध्याहमनापूर्वकायमसूत्रमथान्नद

२४४

किमनाकुंश्रिपसार्यउदाममूतानयति॥मृथवाहंचिलकालाहिलचितंपूजमूतंयत्प्रथमं॥जानामेऽस्यांनावजानाऽऽकथा
निमज्जवीरुतऽपुनित्थाहदायाशंपुनित्यायकुलवंभापचिनस्ति॥कस्यादस्याकंवात्यनिकालवातामत्यंवापुहमंवादाने
निदत्वादकिममादंकरं॥ददमयार्थपूज॥रुजापयत्रऽयागदुभानुगच्छति॥आपत्रसत्त्वावेनांविदित्याउपनिषासादक
लगनामयाशितं॥आवायेनि॥नीमयामायकवलोऽऽधुऽधुपकवलोऽऽनाहावेनीमिकीनीमिअसेनीमिलवलोनीमिधूवेन
मिकदुकेनीमिकवायेहिहासलवममधूवकवायविवजिनेनाहावेनीमिर्हानवविहृषिगशीअप्रावसमवनन्दनमिववनं

विधि

वामं वामं वीथि पथ मन्त्र वन्ति दाध विमां रूमी नवाद्याः किंश्चिदमनाहं न दंथ वरं यावदवगर्हस्य पविषां काया-
साधनानां नवानां वामा सोनां वामा स्यात्पुस्तका दा वका जाताः अहि नूपा दर्भनी या प्रासादिक जन्म निवास मत्कुल नन्दितं ॥ मस्माह व
हुदान कस्य नाम किं ॥ न स्य सूनन्दं किं नाम वाव सि ॥ सून दादा वका रक्षा भूती सादरु ॥ दायां आत्म वा जियां दायां की जा धाडी
यां दायां की वधा जी सां दायां मल वा जी सा हि वे धा जी हि ८ उनी यम वधी यम की वे न दधन वनी मन सार्थि म १७ नाह वा
रुधे नूय क वम विरभा वे नाव धम ॥ रुद ह मि पयं क जं यदा म हा सं वृह १ प ध्व व र्ष ष ष र्वा म दा ऊ भी द सं वृह १ य न म ऊ

२७७

भीषान कृति ॥ सयना भना यूत्तुं ॥ मन निमित्त वृद्धि मया कर्तुं ह स्ते ने वम भु न्यधी मानि ॥ अथ अष्टि न न दह वम ॥ था
यि म क दा विरु हिं वि दं वता वाध न या यूजा जा न १ सा यि कू भी दा य वे म कू भी द १ म य ना सना द यि ना मि कृत् ॥ न किं मे मान
न द जा नी य न यूजं म य ना म स्व कृ म नी ना रू त्या य भु नि व स कि कृ मि ० ॥ स व अ ष्टि यू नू वा य स ना म न व ष्टि र्थि का १ म स्मा
ना स्व गृ ह मा रू ता १ अ यि ना मा य दा व क र्मा द र्भ ना १ मी व व जा ना म य ना सना द यि ना व रू हि कृ ॥ अ थ कू भी दा दा व क र्मा वा
हू द ह्वा व कृ १ सं य क मा ना म यि न कृ त वा न् ॥ क १ पू न र्वा दा त्म स्य मि ना रि वा द यि य मि वा आ स न ने वा उ य नि म कृ यि य मि ॥ १

विद्विज

मृथस्य ह्यपि नित्यं न वदन्तु सूर्यं नमस्कृतं ॥ कथं कथं पालयन्ति विषयाव्यवस्थितं ॥ मृगानां नमस्कृतं किं विद्वानां हंगवता
मनूष्यान् महत्तमं विदितं मविज्ञं ॥ धर्ममात्रं लूकानां हंगवतां महाकाव्यं निकांतां कान्तां प्रहृष्टं कानां ज्ञानं कांतां समर्थं वि
पक्षानां विहायिमांति दमयन्तु कुमलानां वदन्तु वा धीमान् वदन्तु अविद्यादच वनतलसूत्रं निष्ठितानां वदन्तु संग्रहं वदन्तु वृद्धीर्घ
नाडकं नय विवर्यामां यं नम विप्रहीनानां यं जगति समन्वितं नानां यं उरु सप्त चागतानां यं द्यावपि ताप विपुर्भुजां सफवां यं
ऊर्ध्वमायानां ॥ मृगानां मार्गदर्शिकां नानां वानू पूर्वविहानसूत्रं हि कुमलानां दमवलीनां ॥ दमदिग्गजायुर्भयभसानां ॥ दमभ

२५

नवर्हिपुनिविमिश्रानां ॥ जिनां जिदिवस्य वृद्धव कृपां लोकवला कयस्त्रान दर्शनं प्रवर्तनं ॥ काहीयनकावर्धनं क० क०
पा० ॥ कावायनिम्न० कावायप्रवर्त० कावायपा० व० कावहमया इ० वृत्तसर्गमाकवप्रतिष्ठापययं ॥ कस्य कायं प० कनिचस्य
ह० कावावमनूयदशां कमार्यधनेभ्यर्थाधिपत्यमिष्ठापययं ॥ कस्य कानमिति न पटलपर्यवर्द्धनं नृस्य कानां जनमला कयाव कवि
भाध्यामि० कस्य नवलायितानि कुमलमूलान्यवनायययं ॥ कस्य यनिपकासि विमोचययं ॥ आहव ॥ मृथवानि कुयं वलासाग
नामकलालय० ॥ नउवेनयवत्तानां ॥ वृद्धावला नमि कुयं ॥ यन्माहि हंगवान् यं दावकं कुभी दामदर्शनां वीक्षमावच्चस्यं ॥ याव

विचित्र

दनूरु नां स्यात् कृष्णो विरुपविनामयिष्यतीति ॥ न नाह गवनातीर्थि कानां मददयि विरुपार्थ दानकस्य कृष्णमूलं संजननार्थं सूर्य
सहस्राग्निं कपुलावाकन कवर्धु मवी वय उत्सृष्टा ये सृष्ट हं सम नादं वंहा सिनं ॥ कस्य सहस्रं य विरु विना भूमेत्यु भ उत्सृष्टा ये न स्य
पृष्ठमाहं मनी वं पृष्ठादिनं ॥ सूर्यं न भूमा मरुधु ये किं तु मा न च ॥ कस्य पृष्ठावात्ममे मनी वं पृष्ठादिनमिति ॥ ह गवनाह गवाहिं कृ गमय वि
रु ॥ न कृ हं पृष्ठं न ददर्श कृभी दा दानक ह गव नं वृद्धं दाहिं न तामहा पू नू यत् न क मे ॥ समलं क न म नी ला वा नू यं जने विना जित गा
जया मय ला रं क न सूर्य सहस्राग्निं कपुलं ऊ र्ध्वं ममिव वत् पृष्ठं न स म कृ ना रुद्र कं कृत्वा च ये न ॥ ये न ॥ व र्जं य सा द

२७१

मायत्र ॥ सहस्रास्त्रयमवात्स्य ह गवना र्थं आसुनं पृष्ठा पथं यं याह ॥ उरु गवा स्वागता निषी द उरु गवा नू रू फ व वा स
न ॥ सूर्यं यं स्या मा ना पि न वा व रु ॥ जन भ्रा द ह्य पूर्व पृष्ठा वट ह्य प न म वि स्य य मा प त्रा ॥ न ना कृ भी द सू न द दानक ॥ रु र्ध्वं विक सि
ता र्थानि य ना ला ह ग व ना पा दा हि व द नां कृत्वा पू न ला नि ष ॥ धर्म प्र व सा य न स्य ह ग व ना न क पु का वं को नि य स्या व र्धु ला वि
नं ॥ वी र्गो ग स्य वा नू स य न भू न द वा स्य य हि म नू प य रु नि ॥ सूर्यं सून द दानक य हि मा का ट य नि स ता मा का ट य नि मा न च ॥
॥ आ य सो य हि मा का ट य मा ना म ना रु न द य व र्धनं क ना नि ॥ वि वि धा नि व व त्वा नि नि धा ना नि य न्ध नि न स्य न द ह व न् ॥ महा व न

विचित्र

संवीर्यावहृविषयचहंरुनस्यामाज्यावीर्यमावहृयमि॥सुप्रवकास्यांयन्माधामसांसाथमाहमासनांसमुधायवा
वानमहासुमुजामवनीशुशान्तास्त्रिजगाममममहावत्संयहृरुत्वाहृगवदुनिर्वननंसुप्रवकसंधाहाजिनशुनूना
सम्यक्कवाधोपनिधानकन॥शुभहृगवाकूनीशानकस्यहृयनयनाकर्मयनयवाहृहृगवानूवाच॥इल्लहृपोय
मानूजन्मावेद्युदिवचहंभामीहृगुनयथा॥हृवसंसावयानमिहृयत्तकामकार्यहृहृगवतापुनः॥यन्मानूयनिर्वहृ
लहृवाचैः॥यानहृवात्प्रयात्तहृमयवाकोनथथावाधेवीजहृल्लहृयनाययमि॥विनामनीवनायधिकंशुभाधेशाम

२७८

नृचंपुन्रुपायवृषदवांविनामिनःसंजपतलाकवदृशानिविविधानीव॥शुस्माकावभाधर्मजिनःस्यमाकप
दमार्गउक्तकस्यवप्रनिहृवाहृवाकपयत्तमूनीहृयदमिहृना॥॥वमूकभाकनाजधीप्रार्थयामिचससत्वनंरुगव
नंकूमीदसूनन्दप्रहीनमानमहावत्तहृगवानधर्मजन्मजनामवगनामनं॥माकदंसर्वलाकानांसर्वहृज्ञानवर्धनः॥श्रीहृगवानूवा
च॥शुसूनन्दवकामिधर्मभाधर्ममूहम॥निष्कपमतीहृत्वासांसावार्धुवतावकः॥सायानंस्वर्गगामिन्नालाकानांवागहृषजं॥कव
दीप्ताकमस्यवहृवाचैःनवनीपूर्वा॥वियहृकालमहावन्मवीचाहुवावर्भा॥भवधर्मभवभाधेवमाक्रमार्गपदमकः॥प्रहृसहृमावा

विचित्र

चाविनामनकावधमात्मकः स्रष्टुमस्तदावा नावन्मिम कृत्वा विष्णुमहावाहा मुनिवत्सु सून दजना रुमठा परश्चाप हावा नि
यूजादिं मिष्टावा वः पूर्वसमावापित कृमल मूलं पुंथं ॥ सून दः प्रष्टिन लिनायम वाचनः ॥ श्रीसि पुंथन माहूमी कृम मरु पुंथ साधन
हमी ॥ सिद्धिदानानि हल स्रष्टुं सर्वस्य समाजलाधर्म ॥ स्रष्टुं स्रष्टुं कालाकाफा वरुकि न गंधर्वा सुवदं वताः ॥ नागमनुष्यादि सः
कीर्त्तुं सामा क्रमा मरिः ॥ कर्तुं मिष्टमि नृगता पूजा हर्तुं मिष्ट नृगां श्रुयं ॥ इष्टसं कंहिय सर्व कर्तुं श्रीपतायुना ॥ श्रुयेवं व
चनं स्य निमम्पः प्रष्टुं हृषयं ॥ सून दं प्रा कृवा हृया रवीन थी सविधान विन् ॥ नवाहा विन हृहा गयेन सा हृष्ट कथन ॥ नि

२७२

नामयमहाविहसमासा सिद्धिदायनी ॥ मृजादीला कथा उच्यते सा हृष्टा महाहवन ॥ यनमा गृहि नं का गृष्ट सफ हि स्रष्टु विहृथा
वा नायन वज्र स्रष्टु मरये व सगयां नुक ॥ के वलयन वज्र पाकां ग वज्र स्रष्टु नृदा ह मं ॥ व कालिका च नृक नाहियू ता स्रष्टु वच ॥
नाहिव काय वरये व मरु था रुष्टु व क के ॥ विन सि द्वा दभां उष्टु हृष्टा विना सि यूम के ॥ धनू ॥ सार्धं हि हृष्टन प्रा वा व ह ग वा नि नि ॥
क्रा मभ कं स्रष्टु स्रष्टु हि स्रष्टु या जनां स्रष्टु स्रष्टु हि स्रष्टु वां ज मृष्टी या ह व किल ॥ या व स्रष्टु कृलं मृष्ट किं ग व न ग ह व ॥ या न्या
का व ह वं नं गृहा गृह लो दय ॥ श्रुता स्रष्टु दजा वा उ क वा यू मा य या इ का ॥ सा व च उ वि द्या वा ना स कर्म ह ल क स्रष्टु ॥ वरुया

विचित्र

निपुणतायाः सावित्रस्य लक्षणं ॥ कृत्वा विकलां गच्छति सूर्योऽपि यावना ॥ जंबूद्वीपं पश्यन् पश्यन् जंबूद्वीपं
मिथुनं ॥ मन्थोजनमुद्राय चतुर्थीजनवैकुण्ठ ॥ पञ्चाभयोजनश्च नभस्वापहृलानिव ॥ यत्पूर्वभाषं मरुत्तुस्वाङ्गुञ्ज नि
यमानपदाश्च याम्यां पक्षीमृगश्रागममवकीर्ण ॥ कीवविककट्टमपीनवन् ॥ जोजनास्तस्यैव विभालभक्त ॥ यानिन ॥ शुद्ध
वडाकनिमोमपूर्वपूर्वविदहका ॥ नसिद्धिप्रमहावृकश्रापानामावमिष्टम् ॥ योजनानां भक्तुः स्यावसूनावदथाजने ॥ पञ्चानः
योजनानां वंभस्वापहृलानिव ॥ दमयोजनसाहस्ये ॥ इह न कृत्वा नृणां ॥ माहृदमशुलाकाव ॥ विभालमयक्रम ॥ कृत्वा मसहावृ

२१०

काकदम्बवावमिष्टम् ॥ योजनभक्तमूर्ध्वमवसिन्नादि योजने ॥ भस्वापहृलान्यवंपञ्चाभयोजनानिव ॥ नवयोजनसाहस्ये ॥ य
दिभमशुलाका ॥ मं ॥ वाजत्रयवल्गुदानी ॥ क ॥ भक्तप्रवर्हस ॥ प्रज्ञानाममहावृकनसिन्नवावमिष्टम् ॥ योजनभक्तसुपूजायवद
योजनवैकुण्ठ ॥ मं ॥ योभीनिसाहस्ये योजनानां भक्तम् ॥ सप्तवृत्तमयामेवृद्धननागामधिपवृत्त ॥ वडवाभीनिसाहस्ये ॥ शुवश्रक्त
सिन्नाशुधि ॥ योजनानां सुपूजयेत् ॥ येन वृत्तसहस्र ॥ नस्याद्यैर्नदीर्घायायासाहस्ये ॥ सप्तपर्वना ॥ मिनिधनयूगमवैभस्वानवदि
नास्तथा ॥ सुदर्शनविनीताश्च कर्तुं काश्चन ॥ नयामायूनवृत्तं ॥ प्रमार्गद्वीपवासिनां ॥ निभमयमहावाजमत्त्वमायवदामहं ॥

विविध

जम्बूद्वीपारुद्रामर्त्यारुद्रस्यस्यनायूषः॥ रुद्रयनाधिकानाजननिनायूषस्तदायूषविदहिकामर्त्यः॥ सार्धवर्षंभनायूषः॥ उरुनकोववा
वर्षसहस्रायूषउरुमः॥ रुद्रायनरुद्रादानीयः॥ यंत्रवर्षंभनायूषः॥ रुद्राययसिमानांभजीवीनामायूषः॥ कल्पस्यांनानकयानं
निनश्चामयिकल्पकः॥ दशवर्षसहस्रंरुद्रमाभनृपसहस्रः॥ स्वस्वकर्मवभाक्यनियनायूषः॥ निनाः॥ उरुवर्षद्वीपकथासामधि
नाजावसक्तिहि॥ धृमनासुविनूयाकोविनूयकाधनाधियः॥ वत्तमऊटिनः॥ स्वस्वायूषवर्षुध्वायनाकाभनृपयमानाः॥ विविधव्य
हस्यमः॥ अरुद्रायद्वीपकाश्रुष्टनसुहिनश्चिह्नितः॥ रुद्राकालेऽयुःकदधिकीनयथाकः॥ उरुवाउमहाचक्रंवादास्यांवेवमारु

मा॥ शुद्धिर्गुणिना दीपादीयादिगुणिना विहिता न शुद्धीयन्नु वा ऊर्ध्वं वृद्धीयन्नु संविता हिमाद्रिविष्णुमावृद्धः श्रुत्वा वरुणमा
 कद॥ गङ्गा पूर्वममद्वेर्विद्याधनमहावने॥ गन्धर्वसुवसिचायेऽसुविनामा ककापेहि॥ हिमालयद्विनेनामा जदियानप्रहमः
 नि॥ जागन्धर्वीवृद्धीयन्नु अमथा॥ कामाख्यानां कामवृत्तीनां दवीपनिहिता॥ रुद्र हिमालयाधर्मसिद्धिदा रुद्रिणमन
 जडियानाद्वयासिद्धिजालंगवीनिखववी॥ पूज्नीयवचवीर्या कामाख्या कामसिद्धिदा सहि कासूजनायना स्वयं सिद्धिप्रदायनी॥ न
 माभवयसुखा रूपावामसीनिविशूना विद्वज्जनसमाफी भुवनकदवा सुवर्णना॥ वायुपूज्यहमीदुपूज्यवीजनयनृप॥ सायमः

विचित्र

वंदुलंयायादी॥मिमानापसंकिला॥निमम्यनिववा॥प्रक्षधीमनाजिनवूधनरुगवनावउसंसि॥नन४सनाजावथमानूवाहह
सविभालाम्बुजपुनन४नाथागननंपुननानिषयसमूवलकडसिमानपड॥मूभाकनकांवनसमृदंगुंजा४वीभाऊमुंदाय
टइइहिभ्रमदाप्रजात४सुमनाहनादीवियएधियांसुपुनदिभासू॥ननसुनृत्यानिदिनससाकी॥भाननाददवर्षिन्दीनितांगि
न॥नवाप्रयंनारु४उदप्र॥नारिना४जिनात्मजस्यास्यजिनदुहागिन४॥ववाजवाजापुनिनाजसुनूऊनोघम॥धूमनि४मभीवज
गत्यनिजामयव४युतापिभनत्यसादाहन॥ननूकंपि॥मूभाविनासीनखलप्रुमरुमोसुहमिप४यघदलाउन४॥जिनात्मजना

[illegible]

विचित्र

सूक्ष्मीनिहिद्वगलेऽनुहानेने॥ प्रभस्वन्ममवदइहिः स्वनाः कृष्णवकर्मनाहूकानिना॥ स्यावडुलाकनवडवः
कयाःदिभःप्रसादाहवतासुभायहा॥ यवस्यनधमविवर्धयकृन्ः वचानधर्मधनिभांकलादिनः॥ मूआजगजगत्राथः
हिनाःगोहमंरुषं॥ कयास्यःप्रभुमिद्यपिवदवादीःउमाकदं॥ ॥हगवानाह॥ प्रभुसूनःप्रवमवकत्राहःउलाःप्रत्ययं
आगनायाहःकःसम्यक्कंरुषाःसिंहंआविकुर्वन्ति॥ यन्मानःप्रसूनःप्रनदावकनममेवंविधंसंकाबंधर्मकनं॥ प्रवहःकसूनः
दानकाःननकभलमूलनेधर्माद्यादेनदयविरुपनिष्ठाःगनत्रिकल्यासंशयसमूहानीनांवाधिसमूहानीयमहाकनूभासमूहनी

२१२

यवघावमिनायविपूर्यस्वववीर्यपवाकमानामसम्यक्कंरुषाःलाकहविद्यनि॥ दमहिर्वलेऽनुहिवेऽभावोऽपिहिनाकोवेऽपि
विवावंगकेःस्यःप्रसूनःप्रमहाकनूभासमन्वागनःप्रसूनःप्रधर्मममानिकविहूःप्रसाद्य॥ श्रीमनाःप्रकवाकनहगवनाप्रउभंसि
नं॥ यायःप्रसूनःप्रधर्मवीर्यपवायःप्र॥ ॥प्रदमवाःप्रहगवानाहमनाहःवहिकवासावसर्वावनीयवर्षःप्रदवमानूषास
वगवःप्रगधर्वःप्रहगवनाहःप्रिमत्यनःप्रविनि॥ ॥प्रनित्रीविचित्रकर्मिकावदानेऽकविंभानिकमाधायः॥ ॥मूआ
प्रकाःमहीयालःप्रभुमिद्यःप्रवाधियः॥ हिःकसूनःप्रनिनलासांलिपूवकहिःकः॥ उपउहावावः॥ प्रकसिःसमयकपिलवःप्रनि

विचित्र

महानगरीं चम्पकवनविहवनिस्म ॥ नानादृक्समाकीर्णं नानाद्रुमप्रभाहिने ॥ नानाद्रुमसंघं नानाद्रुलसमन्विता ॥ मृध
रूपमूर्तेस्तुर्वं संयुक्तं ॥ नानाद्रुमसंघं नानाद्रुलसमन्विता ॥ मृध
॥ ऊरुहिंसकलेस्त्रिहनिवन्मृगमानस ॥ मृगमण्डपं पत्रपूकवर्गीयं ॥ नानाद्रुमसंघं नानाद्रुलसमन्विता ॥ मृध
॥ मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान् विहवनिस्म ॥ सत्कृतागुर्वृक्षमामानि मृजिह ॥ दवनागमान् मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान्
सर्वमहासत्वाधिस्ताजिनात्मजा ॥ मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान् विहवनिस्म ॥ सत्कृतागुर्वृक्षमामानि मृजिह ॥ दवनागमान् मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान्

२१४

मन्यानापिलाकां चम्पकवनविहवनिस्म ॥ नानाद्रुमसंघं नानाद्रुलसमन्विता ॥ मृध
रूपमूर्तेस्तुर्वं संयुक्तं ॥ नानाद्रुमसंघं नानाद्रुलसमन्विता ॥ मृध
॥ ऊरुहिंसकलेस्त्रिहनिवन्मृगमानस ॥ मृगमण्डपं पत्रपूकवर्गीयं ॥ नानाद्रुमसंघं नानाद्रुलसमन्विता ॥ मृध
॥ मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान् विहवनिस्म ॥ सत्कृतागुर्वृक्षमामानि मृजिह ॥ दवनागमान् मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान्
सर्वमहासत्वाधिस्ताजिनात्मजा ॥ मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान् विहवनिस्म ॥ सत्कृतागुर्वृक्षमामानि मृजिह ॥ दवनागमान् मृधमन्त्रवचम्पकवनरुगवान्

विदिह

गामीन् ॥ नमः कनिष्ठापीनि ॥ ॐ निवि कयित्वा स्वपत्नीमूवाव ॥ अविनमगमि चामी शूकास्वजलदवमादि श्वसर्वदवास्मर्वयन ॥
मानयस्सकला लोका पूवानित्यं सुहा मितां ॥ एव ॥ अहर्जर्न कृत्वा जलधर्मा हि संवत् ॥ यथा कामं सर्वं दुष्का वधे विशावनूरुया ॥ नमानूवे
नयोवया पीठपूष्पांगिक ॥ कृदि ॥ नूनाधीवासमूलादीयवहाव विवकम ॥ मधवीसमूमावहासर्वविद्याविवकम ॥ यद्वयवान ॥
आत्मरु ॥ सद्यधर्मयत्नार्थरु ॥ यथा मूलो समादाय दयं दत्वा वनिजना ॥ सर्वविजयसंस्तु यास्व वसात्यनूमा दयन ॥ सर्वधाम
पिवस्तु नियनीकास्व विवकम ॥ सार्थवाहा वनिग्नाथानपि सर्वा चना दयन् ॥ एवं ससकला लोका धर्मग्री ॥ एव विजयेश ॥ जित्वा वाजव

२५७

संतीत्या विहव रुजगजम ॥ नखे रुजगसंयहिरुजस्व सर्वदा दना ॥ वहसि संसमागम्य सखा दवं समुवीन् ॥ साधवा च्यासि सुहिरु
॥ सर्वलोका हिनन्दन ॥ नकुला र्जिनवा निष्कं वनदिजी यमर्जयने ॥ ॐ नित्यादि मं पूवास्वा नवमि क्रि वकम ॥ का जला र्जिनवा
निष्कं नकुं मसहसि ॥ ॐ निमनादि मं पूवा ॥ ॐ श्रीसकृल्लिना सया ॥ जनकसुमहा रागसा र्थवाहा वनिष्कदि ॥ सदावत्ता कवंगलासा
धयमि सुसमा दशा ॥ धन्यास्व जवसत्पूजा यं कलकर्म वा विन ॥ मूयकिं पूवजास्व हि उ क्वव गृहवा विन ॥ पिड्डं यं समादाय दत्वा वि
हानमरुल ॥ स्वा र्जिनमव नदया यत्न धर्मार्थ सिद्धय ॥ मूलं कुलार्जिनं दयं दधान ग्री ॥ एव ॥ मूषीवत्ता कवदत्ता वत्तद्वानिसा

२७६

अथाधमवानयनम् ॥ स्वाकृत्साधवासाधोवत्साकवत्तुदिनि ॥ नद्युधुधामर्भूत्वायंवासासुनानिच ॥ नथावत्साकवत्तुनसह
 गदुंसमिष्टि ॥ नमेह्वानिजसर्वसंपीत्यसहसामुता ॥ स्वाकृत्स्यपूवागत्वायार्थयनवमादनाम् ॥ सार्थवाहवर्गसर्वसार्थवाहान
 मज्जुपे ॥ नत्साकवत्त्वयासार्धगदुमिष्टमहवत् ॥ यत्सर्ववानिजानेतासार्थवाहस्यजाहवान् ॥ नवोनूयहमाधयसमचाहदुमह
 मि ॥ ॐ निमिष्टार्थिनसर्वसत्त्वाकृत्समस्तमिष्ट ॥ सर्वाज्ञासमूपासहसम्यधनेवमवती ॥ होहदन्तमिष्टमिष्टयथागदुमयासह
 ॥ नत्सर्वपन्थमादायसमाधाकृत्तुजावहे ॥ ॐ निमिष्टादिमंभूत्वासर्वमसिष्टमिष्टा ॥ सहसास्वस्वगृहेगत्वाहर्मासर्वविनादयन् ॥ लघ्वान्

ह्यपि उर्माहृष्टास्वस्त्यनं प्रदा ॥ सर्वयन्त्रमादाय संप्रति मत्समा वन ॥ नदासापिमहासत्वाधृत्वास्वस्त्यनं प्रदा ॥ पिशापादां वृद्धन
 लायन्त्रमादाय संप्रति नदा ॥ ननु मां वानिजसर्वा दृष्ट्वा ससंयुया वन ॥ समित्यसंममं हृत्वा संप्रति न प्रदा वन ॥ ननु सानूगता सर्वा च
 चंद्रमिजसूक्तनाः ॥ संवाधयसमा ला कसं निवार्य यवर्हयन ॥ नमासे सर्वव्यं वनिष्ट ॥ ननु समाचि नदा ॥ प्रनके र्दिहि गीहि नृपे जलान
 वासके ॥ सामुद्रयन्त्रमादाहे ॥ भने ॥ संप्रति न कुमान ॥ ग्राम्या वन्धवनीयाननिगमय हनानिवा ॥ विलंघय न कसो न प्रनाजवानी पुनादिप्र
 ॥ चंचूर्यमाना श्रुता कसं प्रसाहे ॥ समा वन ॥ नमादभा न वनन्धकी मा वने लयवर्मा ॥ भने श्वर्वा विलम्ब्या पिसु र्वविधि नययो ॥ ननु

२११

प्राप्ता विमर्शुस्तु सर्वजा सा कुलामया ॥ ग्रथवपश्चमाज निव नि कृष्ण भनानिवा ॥ का ना वमार्ग प्रनि यत्रानि वाद्यु म क म हा वे लान ॥ इष्ट
 ससंममं नृपवायिष्य निवानिजान ॥ ननु बालूक हृत्वा प्रा ॥ ननु न प्रमनपविपीडिता ॥ की न यथा दग्ध प्रमथा कसं मये नी
 क्ता कवनसि संवादिना सम मा प्रिमा जेलाहे न ॥ ॐ वम क म ने वा प्रमार्ग प्रिधिया मा बर्ह न ॥ महा रुय हे व वा नि वि प्रं य न दा न सर्व
 इष्टवां कुं जा के र्द कामना या वि कली हृत्वा नानि दव नो सु ह्या नि श्रया य न ॥ कवि सि वदि ॥ कवित्वा वा य नानि ॥ कवि सम ह व नानि ॥
 कवि व नृ म क व व वा स वा दी नि ना मा स्वा व नान क शि ल्या वि ज ह म सम र्था ॥ ननु वा न्य न वा दू वा या स का वृद्ध भा स ना हि ह ॥ समा म्वा नि ज

आह॥ हव मा कूच धर्मसंघसवर्गगृहीति॥ आह॥ यवजाहसुगम॥ नमा कूचाय नमा धर्माय नमः संघाय॥ ॐ मि॥ ॐ दंवाचमुदी
 वयमः ८३ कववमसर्वनिर्वर्तिवत्तमवर्गमाः ८४ अजा नमना किं किं विद्वानां रुगवमानसुममविदिनमविहसंधर्ममाखलवेदानां रुग
 वनां महाकावुभिकानां लाकानूय हउरुहनां उकावकाभांसमर्थविषयानां विहाविभांतिदमेथवसु कुमलानां चहुना पाही शुनां वहुम
 द्विपादववमलपनिमिमानां चहुसुसुगहवसुपुदी र्धकउकनयविवर्थाभा॥ यंवाहविप्रहीभानां यंवेगनिसममिजा नानां यउमस
 मचागमानां यत्यावमिनायविप्रुर्धनां ससुवाधंगकुसुमाद्यानां सुसंगमार्गदिभिकानां नवानुपूर्वसमायहि कुमलानां दभदिक्कमायुधु

२१८

यमसांदमनवसुवर्हिप्रनिविनिष्पनां जिवाप्रुतिदिवसस्य वृक्षव रुपाला कं व्यवला क हानद ननप्रवर्हम॥ काहीयमकावर्द्धनकः
 ककुंजाफ ककुसुंफ संवाटपाफः॥ कायायनिमयाः कायायप्रवभाः कायायप्राह्वकमहमयाया इहत्यस्वर्गमाकं वप्रनिष्ठापययं॥
 कस्य कायकः निमयस्य हलाद्यावमनूपदया कमार्यधनविवनमार्यधर्मनेध्याधियस्य प्रनिष्ठापययं॥ कस्यानवनायिन कुमलमूला
 न्यवलायिनानियविवावययं॥ कस्यायविषकानिमावययं॥ आहव॥ अथवाहि कुमवलांसागनामकलालय॥ नहुवेनयवत्सानां व
 आवलानमि कुमन॥ यावत्यभानिहगवा सर्वरुलानां स्वा नुवनिजासंकेत यसनसंवाटपाफः ८५ नमः ८६ कसंयं कमाउ वमकवनः ८७

हिंसाहिंसागमपविदुः ४ संपदममनूजा ४ दद ४ सुखवनिजाहगव नोहे ४ संघं ४ सुउवेनादं ४ सुखव ४ ४ नोहगव नालाकिं
 विहमूत्यादिनं ॥ अहावनमजा ४ दद ४ वर्षमू ४ न ॥ भीमला ४ वायवावा ४ निसहविहात्या ४ नोहगव नोह ४ ममाह ४ ममलमू ४
 कभीमला ४ वायवा ४ प्रिमा ४ यन ४ वनिजाहवा विगनादाह ४ पुन ४ ना ४ नन ४ वनिहि ४ य ४ ननाहि ४ सं ४ उदिल ४ ॥ ४ गव नो
 ४ योमांमार्ग ४ म्वाय ४ यन ४ अवमीमनूजा ४ ४ ॥ नं ४ मांमार्ग ४ म्मि ४ निविना ४ यन ४ म ४ सु ४ का ४ म ४ का ४ म ४ य ४ स ४ जा ४ ना ४ न ४ वां ४ ग ४ व ४ ना ४ का
 ४ भी ४ क ४ वा ४ य ४ स ४ य ४ नि ४ वि ४ की ४ धर्म ४ द ४ न ४ ना ४ ना ४ य ४ पु ४ ला ४ के ४ नि ४ अ ४ व ४ वा ४ ४ वि ४ ह ४ मू ४ त्या ४ नि ४ नि ४ के ४ नि ४ द ४ नू ४ वा ४ य ४ स ४ म्म ४ वां ४ ४ य ४

२१२

यसासायर्षदूनिमाधर्मप्रवनासंप्रपाहानव्यवहि ४ ४ हिं ४ व ४ सं ४ म ४ य ४ जा ४ ना ४ ४ सर्व ४ सं ४ म ४ य ४ द ४ ना ४ व ४ न ४ य ४ ४ ॥ अ ४ य ४ र्घ ४
 गवनयदिमं ४ ग ४ व ४ ना ४ व ४ नि ४ ज ४ का ४ ना ४ वा ४ त्य ४ वि ४ ज ४ ना ४ त्य ४ वि ४ ज ४ न ४ ४ म ४ न ४ व ४ वा ४ या ४ त्य ४ वि ४ ह ४ ना ४ ४ स ४ ह ४ वि ४ हा ४ त्या ४ ना ४ वा ४ ह ४ उ ४ व ४ र्म ४ य ४ म्मी ४ न
 ला ४ वा ४ य ४ व ४ ४ ४ वा ४ ना ४ नि ४ मि ॥ ॥ ४ ग ४ वा ४ ना ४ ह ॥ ४ ४ अ ४ ग ४ न ४ ने ४ व ४ हि ४ क ४ वा ४ पूर्व ४ म ४ या ४ सु ४ जा ४ मि ४ पु ४ क ४ मा ४ नि ४ रु ४ ना ४ नि ४ य ४ वि ४ ना ४ नि ४ का ४ य ४ पु ४
 नू ४ वि ४ य ४ मि ४ न ४ हि ४ क ४ व ४ क ४ मा ४ नि ४ रु ४ ना ४ य ४ वि ४ ना ४ नि ४ वा ४ दे ४ व ४ थ ४ी ४ वी ४ ध ४ मो ४ वि ४ य ४ य ४ न ४ ना ४ दू ४ ना ४ न ४ जा ४ ध ४ मो ४ न ४ वा ४ य ४ मो ४ वा ४ य ४ि ४ या ४ न ४ ध ४ व ४ स्क ४
 ध ४ मो ४ य ४ त्म ४ पु ४ क ४ र्मा ४ क ४ मा ४ नि ४ रु ४ ना ४ नि ४ वि ४ य ४ र्म ४ न ४ ४ ४ ४ ना ४ य ४ पु ४ ना ४ नि ४ न ४ पु ४ न ४ स ४ नि ४ क ४ र्मा ४ नि ४ क ४ ल्प ४ न ४ ने ४ व ४ पि ४ सा ४ म ४ ग्री ४ आ ४ य ४ का ४ ल ४ व ४ रु ४ ला ४ के ४ व ४ ल ४ द

हिमां॥रुतपूर्वहिकवाःमीनधनिवन्दनोनामस्यकूबुद्धालोकउदयादिगथागताहंस्यकूबुद्धाविद्यावननसंपन्नसुगम
 लोकविदुर्नरुवपुत्रपदमसावधि॥भासादवानजिमनुष्याभावंबुद्धाहगवानथवन्दनस्यकूबुद्धाजनपदयोविकीर्तनन॥
 मृचनमवाजभानीमनुष्याक॥मृचनजाकडियमृद्धाहिकि॥थनवन्दनस्यकूबुद्धावाधिकनमो॥समादाययमि॥त्रे
 यकडियमृद्धाहिकि॥उत्थासनादकास्तपूरुवांसर्गकृत्वादिकेभजानुमधुर्लरपिवापिनिहायथनवन्दनस्यकूबुद्धस्यमना
 जलिंभमवन्दनस्यकूबुद्धमिदमवावन्॥मृधिवस्यपुत्रपदगवनस्यावाजभान्यामरुमास्यवासायसार्धहिकसंधिनात्यधि

२८०

वासयमि॥वन्दनस्यकूबुद्धावाह॥रुद्धीलावननमस्यसमयमहनीमृचप्रही॥प्रादूर्तनाय॥यानयूदकपानानश्लयसहितानि
 संवृत्तानिपूषारुलविपूक्तानि॥यादया॥मनावाजावन्दनस्यकूबुद्धमधुमिदुपेत्त॥रुगवकस्मिगवामममपूषनमी
 गध्यादकपविपूषकावपिचामि॥यजहगवास्तथावकसंपत्त्यस्यस्यथवंनमरुगवनस्यानादसिंधविजिहवावर्षनन्दिमृ
 धिवासयमि॥रुगवान्वन्दनस्यकूबुद्धावाह॥रुद्धीलावननसिन्धवक॥मनावाह॥कडियमृद्धाहिकि॥नामायाश्राद्धलोगि
 ध्यादकसक्तीकर्वन्॥रुगवकावत्तमेयापूकृन्नेर्वरुगवकस्तथावकसंपत्त्यापिचामि॥मनावाह॥मृमास्यगमपविह

मनमनंगनमूपगनयागाममर्कलक० न्नव्यवस्थयिनमूक्तिरधजपतामनानाप्रव्यावकीर्त्तुगर्भादकयविकिर्त्तविविध
धूपधूपिर्त्तावास्थयूक्तिविनीकाविनामनाहगवाचन्दनसम्यक्कूटसर्वानृगहार्थकविवनेकयूक्तविन्धाष्टिर्त्तनका
गहमात्मगमयविरुमनवन्दनसम्यक्कूटसम्भावकसंघानागर्भादकनत्रायिनसहस्रानात्मात्वादवन्दनसम्यक्क
कूटस्यमर्कमदवानामिष्टमनथाविधमाहृदवर्षमूर्त्तयनसर्वगस्यानिमिषेनानिर्दुर्कचमहाजनकाथनकूटहग
वनिष्ठप्राप्तिलिङ्गाः। शून्यकेशवन्दनदिव्यगन्धधूपप्रदिसापेक्षाथवन्दनवन्दनसम्यक्कूटमवर्गगमाहृदमयविरुनाम्

हमं कलं वामत्रनिष्ठस्त्याहर्हिहिकवां उवां निक्किनवां॥ यद्यस्तानं सत्कविश्यामः गुणकविश्यामः मानयिश्यामः पूजयिश्यामः
भास्तानसत्कृत्तुगुणकृत्तुमानयित्वा पूजयित्वा यनिष्ठविह्वयिश्यामि॥ ॐ धर्वाहिकवः निक्किनवां॥ ॥ ॐ दमवावन्तुग
वानाहमनाहं धर्वाहिकवासावसर्वावनी यर्षत्सदवमानूषासूवगवूडगधर्वधत्ताकाहगवभाहभिनमत्यनंदनिनि॥ ॥ ॐ निधी
विनिष्ठकष्टिकावदानं वाविंभनिनभाधाय॥ ॥ ॐ धुडयगुष्टावाव॥ विह्वनिह्वगवान्गुडकूटसूवालयः दवनागमनूषे
यककिन्नवनाकसे॥ महताहिकसंधनसार्धवादमहिः नने॥ सत्कृत्तुगुणकृत्तुमानयित्वा पूजयित्वा वान् कृत्वा महापुंभला

हीवीवनयिमुपाउभयनाभनलानप्रययहवकपविकानाभांसुभावकसंधावाजगृहगृहकूटविहवनित्वा॥सार्धद्वादशभिर्हि
 कर्मभिः॥वाधिसत्वगमे॥कर्मकृत्ये॥वभित्तु॥कीमाभमेर्जिमिडियेसुधा॥नयुवकसहस्रे॥नस्मिन्नवावसवे॥नदाकृजना
 गृहनगन॥धर्मनिर्धानामनाजाधर्ममनाकृकावयमि॥धर्मनीर्धामहाजाधर्ममयालययुजान॥नदात्म॥सहस्र॥काजाधर्म
 वमीनिविभूता॥सानगवीकीदमीवमकीमकुविदान्ववा॥भूतपीजज्जाकीभु॥सू॥कृ॥जनसमाभिना॥विभयमिमदावा
 सोयूक्तंकिमुनयावनं॥किश्वासाकंधर्महीनात्रमाकंधमभव॥यायकावीसखच्छसंसाववसगृहमि॥यथांमनूयानांवा

२८२

॥हेवसंसावयन॥आमाहु॥ऊकोयपना॥ममानादभमानपर्यमंधलाकधनप्रसूता॥भुक्तभानिनसंयुक्तादभमासात्यस्य
 निप्रथममासादिनीर्यहीयश्चुनीयकं॥यश्चमंषकमासंचसप्तमश्चाष्टमकथा॥नवमंदभमासात्रमाहुऊकोउवर्जित॥मास
 याष्टत्रुद्विजसर्वश्चदभमासकं॥कननामनवादीनिपांसवर्मास्थिसंरुवा॥दक्षिणऊट्टिमास्यपूर्वाहवनिनिश्चिनं॥वामऊ
 कीसमास्यप्रह्ववनिर्मनं॥उहयवीजगनंमश्चनपूसकंसदाहवन्॥श्राद्धाहुयेहकाहंथाहंजाभाहुश्चमाहका॥त्यग्मास
 चवहृश्चमाहजाहंमिसंमनं॥सापूमऊवभुजश्चयिहजाहंनिकथन॥उर्वधर्ममयदेहं॥येहृत्पांइ॥रवभाहव॥नस्मान्हात्वा

पिरुत्तां मानयत्पूजयत्सदा ॥ ॐ निमनसि सन्निधौ धर्मभीतामहीयानि ॥ अहंकारं निजी भूमिः स्थयमेव कियच्चिन्तां श्रुत्वा
 देवतागनया सायमेव न भूत्वा ॥ सर्वमनर्थं नाकं श्लाघ्यं विषयमेव वा मत्ता धावन्नेव भूत्वा ॥ असावश्च भू
 नित्यं भवतीति श्रुत्वा ह वत् ॥ ॐ निमत्ता स गजं उद्धागं वदन्ति न हि व्याकुलं धर्ममनसि वमनं नैव वा निन्दन् ॥ नदासनाजधर्म
 भीर्षः स्वपूजं पूज्यभीर्षमस्ति न वाह ॥ भूजाहं पूज्यभीर्षमस्ति पूज्यमनाह व ॥ जवसाजा न संसा वदं स्यात्कीर्तिमस्ति यथा
 नदा नो गतिरुत्ता वदन्त्यं मनो भूत्वा ॥ नदा वनश्च गच्छति यथा ॥ ध्यानं वर्हस्यना ॥ पूजाम् पूजि पूरुहं हि गृहं सवत्सवत् ॥ न

२८३

स्मात्संसावहीनाहं न वकारय संकया ॥ नाहं हं मनो वयं गच्छामि वृद्धमात्रं ॥ श्रुत्वा पूज्यं पूज्यभीर्षममपूज्यं नूरा वनः ॥ माया दवी
 सुमत्येव गेनमस्य हवानुगं ॥ न स्मात्सया यथा प्राकृतं भावति रुमहं सि ॥ मस्ति भासहं सीत्यमनया लयपुजान ॥ पुजानां याल
 नं कृत्वा धर्मनीत्यां समाव व ॥ लाका मोखं दयसा येऽकुलधर्मसमाव व ॥ यवच्च पिदया पूरुहं दानं हि उद्धवा ऊव ॥ प्राप्ता नि याना दह
 दान काममिथादिमा ऊव ॥ मृषा वाद पि भूतं यथा नृणां हि त्रयं व ॥ मोहि या या ददा ये मिथा द ॥ पूज्यं स पूज्यं ॥ जगानि नानि सर्व
 मिथ्यं वदन् वत्सा ॥ पापानां मूलं जगानि सुगमं न हि दमि नः ॥ ॐ हं कृत्वा यि नृपतनी नयानूह विच्यति ॥ श्रुत्वा वत्सा सि सर्वं प्रांता क

१८४

कनिवाय, यदा देवदहून पुनर्धन, हगवांश्च सुनार्थसहस्रानि, नवभक्तिं, हगवन्नावायश्च नमैः किं ॥ नदावाजानमजानमज
मामकिनवान् ॥ कीयन्तां नजगृहक्रियाकार्वा, नवकनविदुः, वगस्य (गोनमस्या) यसंजमिन्यां पितृकनवाप्रयादयिन्यां ॥ नवमय
लघलाहलघुसमाननियमन्यप्रद (नसंजामनं कविष्यन्ति) ॥ वाञ्छन्ताकावेनं जयं उयासकादृष्टसत्त्वां स्थितादिनं पुरुष
॥ हासकष्टं मुनार्थरुतं, नजगृहमहानगवयजहिनामा, इम्वलपूषवइहहं वृद्धं हगवन् श्रासायनस्य नमः कनसंगहक ॥
श्वभनदभुनियनं पदयारिहरि ॥ नमो नजाधर्मभीषयथाभुनं हगवन्निबदिन ॥ हगवानाह ॥ नदावहगवांश्च साधर्म

भीर्षमहामर्तिं न भस्मासावूरु नं वा धिं वं यकनाम वरुणक ॥ धर्मकन निवृत्तं ह वि धानि न सं भय ॥ श्रुत्यात्सूक्तं च त्वमान दनया
 गता उवाच काल क्षापि दुया वस्तु सनभं नाश्रय वका मां उ यकन मेव कल्पेन ह वि धानि ॥ जग व दानि मया कन व भ कुस्य दवाना
 मिन्द्र साधका हान दर्म नं प्रवर्तु ॥ स य न्म मि र्ग वं स स न स्ये वां वि ध क नं स ह द र्म ना द व दाय क दान य मि ना उ त्सा ह सं ज नार्थ
 वृक्षा त्या द स्य मा हा त्यां सं ज न नार्थ मू जा न भ र्द व द ह स्य च म द द र्थ सि द्ध र्थ मा स न व य सा द र्म ज न नार्थ सकलं वा ज गृ ह मू दाना
 ब्रह्मणा सां च ४ न द मू दान य नि स्या ॥ उवा ह म या य न र्ग व र्म स श्र व क सं वां दि वे श्री व न वि सु पा ज म य ना स न हान प्र य र्ह

२८५

वक्त्रयनिष्ठा वे नू प स्या मि न्द्रु त्का य न र्ग वा स्त ना ऊ ली प्र न म्या प सं ज म्य र्ग व ना पा दो नि व सा हि व दि ता वं व काः
 न सि द्ध ॥ ४ ॥ श्रु य भ का द वे उा र्ग व र्म मि द म वा च न ॥ श्रु धि वा स य र्म र्ग व र्म सि त्र व वा ज गृ ह न ग वं ह र्ग व र्म मू य स्या
 स्या मि दि वे श्री व व वि सु पा ज म य ना स न हान प्र य र्ह वक्त्रयनिष्ठा वे वि दि ॥ ॥ र्ग व ना ह ॥ श्रु लं को नि क क र्म म न
 या व द वं वि रु म हि य स त्र व ह वा हि ला क य म्भ का मां दि ॥ न क ज्ञा ह ॥ श्रु धि वा स य र्म र्ग व र्म श्र व वा नि क भा ग न स्या
 र्थ य श्र वा र्ध कं क वि श्या यी नि ॥ र्ग व ना ह ॥ श्रु लं को नि क क र्म म न या व वि रु म हि य स त्र व ह वा ला क का मां दि ॥ न क ज्ञा

२८६

[illegible]

निवासिनः यो नाः सयविवा नाः ह हू उ हू उ मू दि न उ द य प्री मि सो मनस्य जा नाः पू ष्य ग भ मा ल्या मा दा य ह ग व नं द र्भ ना था य स
 जा नः ॥ न ना द वे र्भ नू यो भू ह ग व ना म हा नं स का न रु नः ॥ ह ग व ना भू न द धि कानां दे व म नू ष्या नां ना द भी न उ ना र्थ स स्य सं य नि व
 धि की ध र्म द न नां रु ना यां भू वा न के र्द व म नू योः स स द नि रु नं ॥ अ थ हि क वां ह ग व ना पू जा द ह्य सं भ य जा नाः ॥ ह ग व नं य उ क् ॥ २८१
 श्री भू य ह ग व न य ह ग व नः ॥ स न उ वं वि ष ड स व ः मि ॥ ॥ ह ग वा ना ह ॥ न था ग न ने वं ना नि हि क वः ॥ पू र्व म न्या सू जा नि भू
 क र्मा नि रु ना नि उ य वि ना नि वा के र्प वि वी ध ना वि य य न ना ज्ञा ना न रु ना भ ना न वा पू वा ना ॥ अ पि त्वा नं च व रु च धा ल्या य न

न भू क र्मा नि रु ना नि वि य य न भू रा भू रा नि व न उ म स्य दि क र्मा नि क ल्य का टी ग मे व पि ॥ सा म यीं ज य का ल भू ह ल नि स ल द
 हि नां ॥ ह न पू र्व हि क वा नी न ध नि र्दी पं क वा ना म स य कं नू वा ला क उ द या दि न था ग ना र्ह स य कं वू धा वि या च व भ सं य न स ग
 ना वि द नू रु वः ॥ पू व द म्य ना व पि ॥ ॥ स द वा ना भ म नू ष्या ना भू वू धा ह ग वा न स अ न्य न म ज न य द वा नि का भू व न भू न य न मा
 ना ज भ ना म नू या क ॥ न स्या च ना ज भ नां भू वू धि र्ना म ना जा वा कं का व य मि ॥ की द भी न ग वी वा सी दि नू नी स मा नि व ॥ मं
 जी म उ वि दां वि रु ॥ वि रु न स मा ज ल ॥ वा या म स ह रि ॥ य किं प वि वा न स ह रि र्वा ॥ ना वी ग भ स मा की भू नू य वा व भ

१॥ नाहिना ॥ राजपत्नीसुभीलाचकूलंगमृगवाचना ॥ कस्यांच राजकायायां प्रजासर्वसुखावगा ॥ दयावाधर्मवान् यो नानुम
 वाज्यवा कथा ॥ मृनूली जजना कीर्ति वरुजमस्तु विना ॥ नरकनयसमहं गवा रुनास्तु अत्र कसंघस्य पंचवार्षि
 कस्तु मासं हस्तापनिमदिन ४५ या मां मासानां मृत्युयन सां नि ॥ प्रभातमना राजा मास्यो वा ४ सर्वजना ४ स्वस्वराचं गृहीत्वा मृ २८८
 दना ॥ अर्जुनमानस ४ दीपंक वन आगनस्तु अत्र कसंघस्येवं विभायं वार्षिक पूजा कर्तुं ॥ ग्राह्य ॥ राजा हननान ददीपंक
 वमलायुनि ४ मृषिस्तु ४ न कथायन मृकापीन पंचवार्षिक मिदि ॥ किमया ॥ अहिक वार्षा सोमन कालन समयन राजा वरुवा

हंस ४ यमया दीपंक वन आगनस्तु पंचवार्षिक कर्तुं ॥ मनमसंसा वसुखमनू हनं न कर्तुं कर्तुं ॥ न्दानी कथा गनस्येवं विभा ४
 सत्काव ४ पविनिर्तु नस्य वमं भासन मृनू कानियं वार्षिक कर्तुं मनमसंसा वसुखमनू हनं न कर्तुं कर्तुं ॥ न्दानी कथा गनस्येवं विभा ४
 ४ सत्काव ४ पविनिर्तु नस्य वमं भासन मृनू कानियं वार्षिक कर्तुं मनमसंसा वसुखमनू हनं न कर्तुं कर्तुं ॥ न्दानी कथा गनस्येवं विभा ४
 ॥ प्रवृत्ती ४ हं गवन प्रवृत्ती ४ हं गवन ॥ स राजा धर्मभीर्ष्व विप्रय राजका निंयत्ता ऊरुगन ४ लाघनीयं धर्मवा युताय वान पुं न्दानी
 मृ ४ स राजा चं य कवे ४ लाक वानो वृद्ध कर्तुं ग्राह्य वान ॥ न कर्तुं कर्तुं सुप्रहना मवे ४ म क म सि म ना व म दर्भ नी या प्रा सा दि कं ट्ठा

पवमप्रीममनामस्याप्रममुवाप्रिनवान॥ पर्यक्रमकुक्रमरुकायंउनिधायध्यानागवसि॥ न॥ नमाननकर्त्तव्यंवाहिरुत्तंपासु
 क्रमंनधर्माकवानामनथागमार्हसुमाकंक्रुपाप्राःरुन॥ यस्तुकावंसकविधायम॥ गुवूकविधायम॥ मानेयिधायम॥ पूजयिधाय
 म॥ नास्तुवंसकृत्पुवूकृत्मानयित्वापूजयित्वापनिप्रित्यविहविधायम॥ ॥ एवंहिं कंवाभिकिनवमिदमवावहृगवानाह २८२
 मनाहिकवासावसर्वावनीयर्षसुदवमानुषासुवगवूडगधर्वप्रलाकाहृगवंशोहमिदमत्यनन्दनिनि॥ ॥ ॥ निजीविनि
 उकृष्टिकावदानउथाविंनानिगमाध्याय॥ ॥ मूधखलूश्रुभाकहिंरुसकृममंनदवावन्॥ हृगवन्मवसवानिंश्रु

महाप्रभादंउपवाना॥ नथाकनविद्विभोपूजाधर्मयवायनानाजालिवाकथाउहिमहिंरुसकृम॥ उपगुष्टावाव॥ मूधमहावाज॥
 उकृष्टिसमयसेरुगवा-मरुमाहिरुसंघगमसमूहयविहनापूवस्तुननमगेधपूजनयदपूवाविकाववनगंगाभीविमनूष
 पृथनानिहृव॥ पश्चानांयुधकक्रुभमानामेकउकगभाभयथाःरुपहिनामधियहनंरिंरुहिंरुहृगवानपृष्ठम॥ कस्यरु
 गवन्विपहनं॥ हृगवानाह॥ चन्दनानाममत्स्यापहिनामाहिनाममि॥ ॥ ॥ ययूयैरिंरुवर॥ अहंयथावन्देनस्यापहिनामा
 मम॥ अमि॥ साधूश्रुश्रुश्रुवमनसिक्रुवूलाधिध्या॥ रुमपूर्वरिंरुवाःनीनधेनिवानामस्यामहानगयींउकृदहानामवाजावाकं

कावयनि॥ मर्द्धिं वस्त्री मं व क मं व स हि कं जा की र्धु व रु जन म नू यं उभा रु क लि क ल ह डि वं उ म्ब व न स्त व वा (ग) य ग मं भाली
 रु (ग) म हि षी सं य त्रा ध र्मि का ध र्म वा ज्ञा ध र्म म वा कं का व य नि॥ न स्यां न ग र्था ना नि इ व न स्यिं व न र व (उ) वि वि षा ना म मृ ग वा ज्ञा ण नि
 व स नि। स ह्य मृ ग मू थ य नि ॥ न स्य व द्यो पू णा सि सु वि भा र व श्र वि भा र व श्र ना म। न न स म य न मृ ग वा ज्ञ न। उ के क स्या पि पू ज स्य यं व २२०
 मृ ग न ना नि द ह्या नि। न दा उ क द ह्या का नि वा ज्ञा मू र्ही रुं मृ ग यं नि र्वा व नि नं व न र व (उ) प वि स्या म न न। न उ व मृ ग। नि ध र्मि न न ह
 का मृ गं स्य यं उ य जी व नि। य ह का नि श्र ह न का नि व न गु ल्म मू व व न य ह न मू व न उ क स्य व मू व क श्र क स्य व मू व प नि वि नि त्वा म म

नि॥ न रु उ का क सं कू ट हि त्वा य नि सु वि भा र व मृ ग वा ज्ञा नं वि भा र व मा ह॥ वि भा र व यं नं का नि वा जं रुं य म न न ह कां लं मृ गं स्य य
 मू य जी व सि। य ह का श्र ह न का य ह न हि य द (म) हि य नि वि नि त्वा म व नि का क रु रु हि त्वा य नि। व यं ना रुं उ कं मृ गं दे व सि कं द
 स्या म। या न व स्य यं म हान सं य वि नि श्र नि। न्मं व मृ ग मू थ नै वं मू न व स न मा य यि श्र नि॥ न स्य ल ना वि भा र व श्र ह॥ उ वं रु व उ वि
 स्र य म स न द वा ज्ञा मृ गं सु वि भा र वं नि र्वा वि न ॥ न हि मू थ य नि हि मृ ग न ज हि स उ क द ह्या वा ज्ञा द श ह न रु उ वा ग रु का स र्व व ल
 वा ह ना मू नि ध नू न हि ना म व ध व हि स्यं य वि रु न ॥ न दा नि नं वा ज्ञा नं द ह्या य न वा ज्ञा न ना हि मू र्वा उ लू म ना मू नि ही ना मू नू उ लू म

स्मानं यवित्तिवा । न दाम् कानि वाजा दृष्ट्वा मृग वाजानो ह वरुणं वा हि मुखा मृग दृष्ट्वा ॥ न न स्वकस्य वलायस्य श्रम हि दिना ४
 न कन विदम मृग ग दृष्ट्वा विदं ० यिन व्या ॥ का जानानि किं मृग न वयं ये वरुण वलायं दृष्ट्वा न प वा य किं । म मा हि मुखा मृग दृ
 किं । वलाय म न म्रं मृग म म न वा दि वा वा म द किं म ह मा ता वलाय ॥ न न मृग य न वा जा न ना प क मि त्वा ना क्ष ना नू हि सर्व हि श
 नि प मि ता ४ ॥ वा जा न म्रं मृग वा जा नं पृ दृ मि ॥ का वा वि दं मि ४ वि ह य य यं वा का र्यं ॥ न दानि मा नू पा य वा वा या वा च ॥ य नं वा जा नं
 वि ह य य मि म हा वा ज वि ह य य मि । व यं न व रू ह वा र्क मृग व न व रू ह वा र्क मृग व न व रू ह वा र्क मृग व न व रू ह वा र्क मृग व न व रू ह वा र्क

२२१

मृग वा जानां दं जान नो मृथ य नि नो रू ह म हा वा ज स्य वि जि नं पु नि व स म ४ ॥ य ये वं म हा वा ज स्य न ग वा त्य रु ना च य म च न य दा च
 जन न रू ह मि ॥ ग म व ली क र्द हि च मृ न य क्ते पि शानि स ह स हि दि प द व रु श्य द हि ॥ उ व म ना नि व न रू ह नि श्रु वा नि व म दी यः
 व पु श व नी य च उ रू हि मृ ग य क हि रू ह मि ॥ उ वं म हा वा ज स्य उ न स्य मृ धि क्ता न स्य मृ लं का व ४ ॥ सर्व म म हा वा ज द्वि प दा व रु श्य दा
 य रु का म हा वा ज स्य वि जि नं व स मि ॥ य म ग न वा व म ग न वा य र्क वा म हा वा ज स्य म व र्ग ग ना ४ सर्व म हा वा ज चि क्नी या य वि या
 ल नी या ॥ म हा वा जा व न म्रं पृ ह व मि ॥ मृ न्य वा जा न ४ यं व लं म हा वा जा मृ ग वा नि क्ता स मि । न मा व रू नि मृ ग म ना नि श्रु न य ना

अस्मन्माययन्ति ॥ मननरुका महा राज उ पजी आह वन्ति । यह का भवति आह न का भू उ वन ख ॥ भू वन दी य ह ॥ भू भन हान भू
 वपव भियम वन्ति का क भू भू खो य न महा राज भू धर्म गति यन्ति ॥ यदि महा राज स्य यसा दाह वया वयं यथ य निना महा राज स्य
 देव सि कं उ क मृ ग वि सर्ज यि च्या म ॥ य स व म सान स स्त यं उ वि मि यन्ति ॥ उ का ना यू था ना उ कं दि व सं दि नि या ना यू था ना दि नी यः २२२
 दि व सं उ कं मृ गं वि सर्ज यि च्या म ॥ महा राज स्य मृ ग मा सान भू वि क न क वि यन्ति ॥ न न ४ स मृ ग ध नू र्वा न म ह ह्वा ना जान भू वा च ॥ भू
 ल म न न ना ज ध नू र्वा न ह्वा ना भू ग न ह्वा ॥ भू ह्वा य उ जा नि न भे द ह्वा ना ज ह्वा ना सि ॥ भू थ स ना ज मृ ग क भू व न नं थू वा ह ॥ मा उ व

ब्रह्मि मृ ग सत्यं सत्यं उ सत्यं । यथा यू ध्या कं ब्रह्मि या य न आ ह व ड ग ह्वा थ ॥ भू थ मृ गी उ वा च ॥ मा ख दं ज नू ह्वा ना ज न सं ता नं भू भू
 सा व क ॥ ह ल या ना य ना धि स्या क थि नं व पि ह्वा य न । सं क ड जा ह्वा का लं भू थ ध न पि न य न न ॥ भू न न पि न ह्वा य न न स्या यो
 कं म दि ध न ॥ भू भू ह्वा न २ वि उ हा नं भू ४ क भू वि त्वा नि भू व यं ॥ स मा धान न ना ह्वा ना जी य नं ह्वा व न सो ॥ क स्या भू भि नं ॥ ४
 भू वं ह्वा य न भू न ॥ भू का नं भू ग नं आ १ भू भू न वि यन्ति य दि ॥ य थ या जा नि ना न न उ ला यं क द न न ॥ भू न ४ य थ य न न न
 य भ ल्या हि जा य न ॥ भू हिं सा य न मा ध र्म भू हिं सा य न भा ग नि ॥ भू हिं सा य न मा धान भू हिं सा य न म न य ॥ भू हिं सा य न म न न

मृहिसा यनमंपदं॥ मृहिसा हियणु जा निस्यात्स न ह्यन हीन हर्बल॥ मृहानमे थूनं निजाः पञ्च हिरु आनृय॥ नेक ध
 माधिका ननु धर्माधर्म विवा नरु॥ सुपालं न्नि विवा मोर्या सर्व लोकं ये स निमा॥ मृवना वल हीनां भो दीनानां भव नं प
 ला॥ न्द न्द महा राज न वा भव न मे मा ग ना॥ महा राज स न्द मे व मृगाः मृन वा स न न ड प दि च्छा नि॥ न दा ना नि ना ह्य न मा
 मृग पूथ पनी मृह द ला॥ यथा पूथ्या कं मृहिया य न आ ह व ड र्ग च्छ न॥ मृही ना मृनू क ला व स थ स म य व कं मृग दि व
 स दि व स वि स र्ज थ॥ राजा न मां वि हृ धिं द ला मृमा स्या ना ह न क न चि मृग वि ह ० यि न वा॥ ए व मा ह्य द ला स ना ग व क द ला

२२३

न ग वं उ वि ह ॥ न न ॥ पूथ प नि रु मृगाः सर्वान समानी ना मृमा सि ना च मा ही य था॥ ए व म मा हि ॥ राजा वि ह्य पि न ॥ य था
 राजा न रु था मृग वां नि च्छा वि च्छा नि न क न चि मृगे वि ह ० यि च्छा नि ना जा च दि व स ए क मृगा वि स र्ज यि न वा ए क दि व स ए
 क ना मृग पूथ ना॥ मृय न दि व स मृय ना ना पूथ ना न हि मृग हि स र्वा च र्गा मृगा इ ह थ मृग हि ग ए ला पूथ ना ग स र्व क ना ए
 क ना पूथ ना ए क दि व स मृग ग च्छ नि॥ राजा म हान स ॥ मृय न पूथ मृय न दि व स ग च्छ नि क दा वि दि ना वि स्य पूथ ना ग न व कि
 गु वि नी य मृगी य वा ना हि राजा म हान स ग म ना य सा मृगी य मृन य क न मृग न वृ च्छा नि न वा य ज स ना ग च्छ ना ह्य म हान स नि॥

॥ सा आह ॥ ए विनी वं म पा न का ऊ कि लिं श्रु न्य मा व द म य हियं व लं उ सू ना ह वि श्या मि ॥ न मा ग मि श्या मि न दानिं उ क स्या र्थ
 डि व र्ग उ वि श्या मि ॥ यू य्वा कं उ क वि व न के नै न वा ना ह वि श्या मि ॥ म द्र था यो न व क जा न हि न न श्रान ह न मृ ग ने नं का र्थ यू थ य
 नि स्त्वा वा वि नं ॥ ॥ यू थ य मि आ ह ॥ श्रु न्य मृ गं श्रु न हि था उ न स्या मृ गी थं उ श्रं मृ ग मृ गी उ सू ना य श्रु मि श्या मि ॥ ह म श्रु म य
 क न मृ ग न नां मृ गी म मि क मि त्वा था न स्य मृ गी थं श्रु न व न सां श्रु म हा ग द्वा ना क्ष म हा न स नि ॥ सो पि आ ह ॥ न म मा य ज स वं श्रु मृ
 का य मृ गी थं श्रु य ज स वं उ वं ना व द न र्जी वि श्यां उ व म य वा श्रु य व हि नू य नि न व श्रु ना स वा ग द्वा नि ॥ सर्व ज ल्य नि ॥ श्रु मृ का य

२२४

मृ गी थं ज स वं सा ग द्वा रू मी सा मृ ग वू य मि रु ड न का वि रु द्वा नि श्रु ना स व न ग द्वां न व ज स वा च म व ग द्वा हि ना क्ष म हा न स ॥ सा दा
 नि मृ गी थां व लां न मृ य नि ॥ सा नं था न का नां म मा स नि वा न न उ न पि थां उ पि श्या की नि ॥ नं वि नी यं मृ ग यू थं ग ना ग द्वा य न स्य यू थ नि
 स्य प्र नि य मि ना सा नं यू थ य मि ॥ ए द्वा मि कि म नं रु ड कि मा य सि किं का र्थ ॥ सा आ ह ॥ श्रु य न ना यू था ना म म वा ना ना क्ष म हा न स ग
 म ना य म म व दान क कू कि लिं श्रु न्य थं थ हियं व लं उ सू ना ह वि श्या मि न न ॥ ग मि श्या मि ॥ न न व यू थ य नि ना य श्रु न्य श्रान पि श्या मि
 न पि न द्वा नि ग द्वा ना स्या क मा स वा श्रु मृ का य मृ गी थं ज स वां सा ग द्वा रू मि ॥ सा ह न हि न मृ य नि ज स वा ना वू य नि ग द्वा हि न व ज

सुवनिमृगवाजंनश्रुतामूर्हनिमृगंविस्सर्जमानंयंवलंश्रुहंउत्तमाहविष्णाम॥नम॥गमिष्णामि॥सामृगवाजातांमृगी
माह॥नावत्प्रांर्याहिश्रुयन्निस्सर्जयिष्य॥नमृगवाजंनश्रुतामृगमाश्रुनयनां॥नायूथमायस्यमृगस्यजसमानंश्रु
मयंहिजनायमृगीयमयाश्रुहयौदित्रं॥ननश्रुनयकनयस्यमृगस्यजसवर्नश्रुनयनिगच्छनाक्षमहोनर्त्त॥॥सावि २२७
श्राह॥नास्माकंयूथस्यश्रुयनाश्रुविभास्ययूथमासाश्रुनकाश्रुगमाश्राह॥श्रुयविभास्ययूथयनिस्समृगीयसागुर्वीनी
वयानकाकृकोनहिनयूयनिनवजसवर्गगुहीनि॥यचमृगीयनम॥श्रुयनिनय॥श्रुयमागसाविभासायूथ

यनिविष्णुसाविभास्ययूथयनिनामस्यमृगीयदित्रं॥यूथयनिनाश्रुनहं॥यस्य॥नायूथमाजसमानंविस्सर्जहीनि॥
नव॥नायूथमाजसमानंविस्सर्जहि॥नव॥नाजसवाहंगच्छहि॥साश्राह॥विनीयस्ययूथयनि॥श्रुयसनाहंश्रुन
सदमाह्यं॥उवयायाश्रुनयनिसासायेनकृनिश्रुनासवंगुं॥ननश्रुनयकनमृगमाश्रुविभास्ययूथयनिस्सावाविर्त्त॥न
म॥मृगवाजंनकनविदीष्टनिश्रुनासवंगुंजल्यदि॥नास्माकमयजसवदिनीयस्ययूथयनिस्सायासव॥॥मृगवाजाह
मिस्सहिमय॥मस्यामृगीयहयौदित्रंनकासि॥याहयाहमहानर्त्तविस्सर्जयिष्य॥श्रुहयंगमिष्णामि॥सामृगवाजातांनावन

खरुपयत्तुनमारुविवावागसिगचमि। यथपूनुधानंमृगवाजंयन्धिगिगुक्तंसासाउवममनंगुक्तिमृगादर्जनं। यानुयम
 विजायविशानरुहिगुनहिगुजनहिगुक्तिमाउहास्ववदर्जनहि। महताजनकायपूयमाकुतागदुक्तियावदत्यक्तवंगवउवि
 हानगवहिदृष्टाहेस्त्रासासागवाजासमहताजनकायस्यनतंपश्चि। सागवाकमूकगुक्तिगानंमृगपूथंसर्वकमापिनं। मृयंपूथय
 निःस्वयमागमागसुमनागानंविह्वयय॥ यथेधामृगवाजापूवयनरुययागुलंकाताम्मस्याधिकानस्यवक्तुवमभीधातामानि
 शिवभाउधानंनजगलवमनंमृगपं। सावक्तुपीदिमनूरुवक्ति, ननवसापहृवकासमहताजनकायनसावमृगवाजस्यमूनृ

कृत्वा राजकुलं उपविश्या मृगवाजावमहानसं उपविश्या ॥ महिषनेगपदिवाजा मूर्धकावगमिउं यविष्णु विरुधामहा राजन
हकं मृगयूथं सर्वजीर्णं गृहं यकां कुक्काजानिहमानिहकयानि ॥ नकस्य चिदयवाधनिर्गये सर्वपिना ॥ मृगं साधूय य
मिस्वयमागतं नादुर्लभं महा राज ॥ ७ ॥ मृगवाजायासादिकादर्भनी राजनस्य च कुरुमनीयानगवाभाजनानि जावनि ॥ ८ ॥
नं वा नजगं वा श्रावामं वा पूकवीनी म्वाचरुयिनं मृगवाजं यमिषापीनाहवनि मूलं कावहकनमृगवायनस्य यदि महा राज
स्य उसादाहवशा ॥ ९ ॥ मृगवाजाजीवनामूर्धवावाक्षामासाश्रमहा गच्छथ ॥ नमृगवाजमहानसा ॥ १० ॥ शान्तिश्रुमा

विचिउ

सहिगला महानसा नाह्म श्रुतीना महानसा नासका भं॥ राजानं मृगनाजं पृच्छुनि॥ किं वंस्वयमागमानासि ह्युवाच नृपः॥
गमयन्तु वंस्वयमागमानि॥ सापि राजा श्रुत्वा॥ नहि महा राजमृगानासि मृगवृत्तम्॥ किं तु मृगजस वा नाह्म महानसंगुं॥ दिनी
यस्य मृगयुथस्य जस वरुण मृगी वा वा श्रुत्वा पयसि॥ सायुर्विनी इव धानका ऊको सामृगी वृत्तम्॥ गच्छ महानसं मृगवा वा विभासय
धयसि नासि॥ सा नः॥ कुनि गच्छुं जल्पयि॥ उक्त्या मृगी यजस वरुण गच्छुं नहि मृगीन मृगयसि॥ त्वंगं ह्यसि नासि नहि मृगयसि॥ मम
मूलमृगनाहं विहृष्टो ममाययुथा नादया धानका ऊको ययत्र नहि मृगनामि मृगनाजनं॥ नायुथा ना श्रुत्वा ययत्रुसा नाह्म महान

२२१

संगच्छा यना नवभाहं पृच्छुता हविष्यं नस्य मृगी यमृहयं दिना॥ सापि मृगाना नयसि मृगानां दिनी ययुथस्य वंसाया श्रुत्वा
यसि नासि नाहं॥ कुनि॥ नृनासु वस्मि गच्छुं उक्त्या मृगी यमृहयं दिना॥ गच्छुं ययसि मागना॥ सुवाजानस्य मृगस्य वचनं श्रुत्वा विस्मि
ता॥ सर्वजनकाया मृहहृष्यामि कामृगनाजानस्य कानि वा श्रुत्वा नहि॥ उवाच मृगाना यवस्य काना नसा त्यानं पविश्य जनि॥ धर्मजान
नि विनयसि वयं धर्मज्ञानाम्॥ यं धर्मं वा उवाच नृपा नां सत्यवतानां मृह० काना ह० मृत्युयय॥ साहं मृगं नाह॥ उवाच सापि नव
सका नासि ह्युवाच महामा वलया मृगहृत्तनस्य मृहनी यन मृहयं दिना॥ मृहयि न वागमात्त वचनात् सर्वमृगानां वमृहयं

विशिष्ट॥

दधि॥ श्रुत्वा यमयव रुड उदं ॥ नमो सर्वेषां मृगानामहयं ददायि ॥ गच्छ हिवत्थलीना ॥ श्रुत्वा ॥ वासनगवद्य आवधाषयि
नाममजीविनमृगाविहोयिनया ॥ नमो वासनमृगाभां श्रुत्वा दानं उदानाम ॥ ॥ नदावुक्कदक्षनाम वाजामनेत्येवं विदुय
नि ॥ श्रुत्वा हंशानिजी श्रुत्वा हंशस्य मवं किल विवं ॥ श्रुत्वा हंशदेवया गमयास्यापिमवर्णं ॥ सर्वमनर्थवाक्यं विषयापहागं मला
धावरुयं कवमृत्सूर्यहया जलमनिघ्नमसानकमिनि विविद्यागवमथावनिहं मनानेवमम ॥ नदावाजा पूरुदवदहं चमदिन
मामहं वमाह ॥ पूरुदवदहं श्रुत्वा हंशलसो जा मानूनस्या क्रीडिभेदिय ॥ नदावागा हिरुनापि उजयं मनर्णं ॥ नदप्रजिह्वयि

२२८

श्रुत्वा यमयव रुड उदं ॥ नमो सर्वेषां मृगानामहयं ददायि ॥ गच्छ हिवत्थलीना ॥ श्रुत्वा ॥ वासनगवद्य आवधाषयि
नाममजीविनमृगाविहोयिनया ॥ नमो वासनमृगाभां श्रुत्वा दानं उदानाम ॥ ॥ नदावुक्कदक्षनाम वाजामनेत्येवं विदुय
नि ॥ श्रुत्वा हंशानिजी श्रुत्वा हंशस्य मवं किल विवं ॥ श्रुत्वा हंशदेवया गमयास्यापिमवर्णं ॥ सर्वमनर्थवाक्यं विषयापहागं मला
धावरुयं कवमृत्सूर्यहया जलमनिघ्नमसानकमिनि विविद्यागवमथावनिहं मनानेवमम ॥ नदावाजा पूरुदवदहं चमदिन
मामहं वमाह ॥ पूरुदवदहं श्रुत्वा हंशलसो जा मानूनस्या क्रीडिभेदिय ॥ नदावागा हिरुनापि उजयं मनर्णं ॥ नदप्रजिह्वयि

विक्रिड॥

जानीयुः॥ नृपकसमथरुगवा-सुहृपधारुणानामसम्यक्कृद्भजनपदवाविकाववत्र-यममजनपदवाकः॥ नृपकमहाजनप-
 दवीधिसिखालाकानां धर्मादिभिरुवाच॥ नृसिंसमथदकिमायथः॥ द्विजार्हमः॥ द्वाष्टिंभनाहिः॥ निष्ठागरेणार्हपविवरुः॥ पूर्व-
 नृपकगुणवर्धनांशुवागृहकूटपर्वतधर्म-प्रवर्णार्थसमागच्छकि॥ अथनृपदधुवृद्धरुगवर्धनाष्टिंभनामहापूर्वमलकलोः॥ सम-
 कृमनीत्यानृवांजनैः॥ विवाजिनगाडयामप्रललंकनसूर्यसह्यानिवकप्रहंजममिववत्पर्वतसंम-ननाहृदकंदृष्टवपूनः॥
 सादजाताः॥ रुगवर्धनाष्टिपदकिनीहृत्परुगवर्धनावादाहिवदिताः॥ काकनिष-र्जः॥ अूननकनमनसायिनप्रभापिक॥ रुगवर्धनाः॥

गवमंजिउदकिनीरुहगवनायाहाहिवदिवाउकाकनिषर्जु॥मूननकनमनसापिनउमापिनाहगवमिपूदनमनपसत्र
नाहृ॥किंवित्यायलषे४कूदकूलपूषवेलषूश्रुविलविहसुउदीस्थिर॥मून्यमांवूधहगवमिपसत्रविहास्थिता॥पउ
कायहमनत्यनविहाहगवाचिदित्वेवमाह॥हउक्रमदिगीरुमकनारथनागनासिससहायेर्मयिउच्यतां॥वाकलावावा
हगवन्प्रउमिच्छमिबूधानांधर्ममूरुमं॥श्रुविनयवादिबूधाहिसत्यवादीकथागन॥ननागलिपूनवदषलिपूनमाहलिपूय
थउचकाय॥सर्वभूमीर्थकथगंगवावी४यविहृताकलूपेद्विहीन॥धर्मावकाभंददस्वहिमकंवयंहिमूणयविमूकल

विविध

ना॥ सभाधिष्ठानं जिनदक्षिणपूरुषं नवेव सुखाय विभावययं॥ ॥ हगवानाह॥ साधुसाधु धिक्कृतं साधुसाधु सुखाय विभावययं॥ नय
नय रुधर्मरु० नीलधनुः साधुसाधु॥ दिक्पुत्रादिदानेन दानलाहं प्रवर्हन्॥ मृगययइ० खविभ्रमं सर्वसत्त्वं० कर्म० गुरुं॥ मृ
नूमादुभादनसुखनिष्ठुइ० विना॥ संसानइ० खवेमाकं मृनूमादमनीविभा॥ वाधिसत्त्वत्तुवृत्तमनूमादवमितायिनां॥ वि २०१
हात्पादसुपूजां सर्वसत्त्वसुखावहं॥ सर्वसत्त्वसुखानां मृनूमादवमायिनां॥ सर्वादिहसंस्कृताया र्थायामिहनां जलिं॥ दमध
र्मश्च जवकुमाहाइ० खपुत्रादिनां॥ निर्विकृतायां धिनां च यावयापि हनां जलिं॥ कल्याणकल्यादिष्ठुमाह दधमिदं जगत्॥

उवं सर्वमिदं सुखाय नमया साधिनं गुरुं॥ ननास्यां सर्वसत्त्वानां सर्वइ० खपुत्रादिनां॥ हानानां मस्तिहं च कृत्ययं वेद्यमवव
॥ नरपस्थायकश्च नयावजं गमनहं वत्॥ इत्येवासाव्यथा हत्या नमया नाउवर्षमे०॥ इहिका नवकल्पे गुरुवयं पानरु
जनां॥ दविजनां च सुखानां निधित्वा मरुमं कये०॥ नानावकवेमेः कावेइपदिष्ठयमयन०॥ आत्मला वासुधा हागा सर्वं ध्वगमं ग
हं॥ निवय कात्याजाय सर्वसत्त्वार्थसिद्धये॥ सर्वपागधुनिर्वानं निर्वानार्थिचममन०॥ यत्कर्म च नमया सर्वमवसत्त्वपूदीयनां
॥ यथाह निरुखी वात्सा मृगययं सर्वदहिनां॥ पुत्रुनिद्रुवानि यमाकि नरुवयां गहि०॥ कीद्रुममकायनहसुद्रुविनसुद्रुव॥

विशिष्ट

दहसंस्काराकारं विदुषा किं मानयः॥ कावयः कुचकर्मनियानि न्यां सुखावहः॥ अनर्थकस्य विना ह्यन्यामालंभम
हिरवन्॥ न चां कुचकर्मनावा मा मालंभकदावन॥ सेवक चां हिरवन् नित्यं सर्वार्थसिद्धये॥ अस्यास्यास्य किं पीयवथ वाच्यं
यकावमिः॥ उपासका न्यायवा सर्वसुखाधिगतिनः॥ अहो ह सर्वजन्तुनां कर्मणा मनसा गितः॥ अनृप ह्य धन धन मन
दिगाह मः॥ नवद्वयसमं धाय नव का किं सम कयः॥ न स्यात् कामे प्रयत्न नरावय दिवि धिर्नयेः॥ कर्मणा स्वर्गसन्नासं स्वर्ग
गामी स नित्यसः॥ लक्ष्मी महासमासा य सहर्वैयर्मा कगापिनेः॥ कदा सहा वयं ध्यानं यवमात्मा दिगाह मः॥ यथा य किं प्रयत्न

२०२

न्यादि यवमां गतिं॥ माहाधकावसंस्तुय वृद्धिस्तुय उका न कः॥ वृद्ध पदसमाप्ता निसुतनं भा कगापिनेः॥ उरु या पूषा प्रा
दि उरु या धर्मसं पूरुः॥ अनृप ह्यनसं ज्ञाय वृद्धिस्तुय उका न कः॥ यवायकावजर्व किं यवना धृमानसः॥ सुखदुःखं पर्वह
त्वा सुखमाप्ता निसुतनं॥ सुदुःखं यवदुःखं यवदुःखं कदुःखं अकावयन्॥ सुदुःखं लघुनां ज्ञाय यवदुःखं गवीयसि॥ वकम्ये
नदुःखं नमदीकं पाडि न दिव॥ धर्मकार्यसु कार्यसु विहन्तु पदमयन्॥ कायः प्रगर्भकाले यस्य विहन्ति वरुथन॥ कश्चि यमान
वाः ज्ञानि पत्नी का कीटकादयः॥ सुदुःखं सुखया हल्येन कथं दुःखं दुःखं॥ यवायकावकं हं यं न त्यव पूषा वो हवन्॥ न

विचित्र॥

पञ्चायकावमधर्ममस्तुमाप्यन॥ सुखनधर्मसाधकधर्मममाकसाधन॥ यद्यकार्यसंप्रत्यनरुकार्यसमावहन्॥ पञ्चायकाव
कं हयं वाग्विलनमवाप्यन॥ उरुहृत्वावांक्रमरुगवक्रमवमाह॥ कविधुमानवाग्वाभीकैपेयूकीटकादयः॥ स्वइष्टं स्वसु
खदुल्यं कनसुधवसुवि॥ रुगवानाह॥ रुगपूर्ववाक्रमकस्मिन्विज्ञानाभ्यां उक्तदक्षानामवाजानां कंसावयनि॥ यनमविस्मा
नीमनाहवा सर्वलाकाहिपुर्णमविस्तीमासुहितावदर्भनीयाव्ययगनमवमस्तकावागपगनभालीकृत्वा मदिषमस्यसंपन्नान्
स्मिन्नगवैवक्तदक्षानामवाजानिकनूनाभ्यां सर्वप्रदनिःसंगत्वा गजकनिमेषावीसाधूसूनीलमृगभद्रकटिलव्ययगननागइमः

२०२

मास्तान्त्रिकाकामलप्रधुनस्त्रिधवावा॥ मूनिधीवनीयकपीनिसर्वलाकपियदर्भनः॥ नृत्पाहस्यमाहः॥ उभसासर्वलाकप्रविद्याः
ना॥ सर्वलाकानामासाधुविद्विज्ञानमिहाहः॥ ससर्वनाकं विषयगर्भसंसावमसावंहृत्वा उक्त्वा उभमानवमम॥ सवहिकवः स
त्वाजानीयूः॥ नदानस्यरुलंदानविरागस्यरुलंदानविपाकं॥ यथाहं जानामिदानस्यरुलंदानविरागस्यरुलंदानविपाकमवदानं याममेव
प्रिमकः॥ कवजध्रवसुश्रवायः॥ नमानादत्वाः॥ संविहकपविर्जितः॥ सवलहृदकिमीयंप्रतिग्रहकं नवेमापूत्रमास्यचिहंपय
दायमिष्टम्॥ यस्याहं सत्त्वान्नजानमि॥ दानस्यरुलंदानस्यविरागस्यरुलंदानविपाकं दानरुलंदानविपाकं नृत्पाहं मूदत्वा संविहक

विदिजं॥

पविहंजं॥ आगृहीतनवेनसाडत्यत्रममांसं सुखादायनिष्ठमि॥ ॐ दमवावरुगवानिमुक्तासुगमाकथापनमनइवाव॥
भासाजवंहिसत्वाजानयुःयथाप्राक्तंमहर्षिभाविपाकःसंविगमस्येथाहवनि॥ महार्थिकनादत्वापविहंजंनमत्सुविभक्त
थानवेधामायहविहमृत्यधनकदावन॥ यस्याहमपुजाननिवालाभाहार्थिकनादत्वापविहंजंनमत्सुविभक्तथा॥ नवेधामाय ३०४
हविहमृत्यधनकदावन॥ यस्याहमपुजाननिवालाभाहार्थिकनादत्वापविहंजंनमत्सुविभक्तथा॥ नवेधामाय
सूर्यविहपर्यादायनिष्ठमि॥ यदाहगवमाजमत्सुहंलाभिर्न॥ नदार्हिकवःसंभयजानाःसर्वसंभयहृदववृद्धहगवमपपुष्पा

आश्चर्यहृदमयहगवानदानस्यवर्धुलाभन॥ दानसंविगमरुलविपाकमिनि॥ ॥ हगवानाह॥ किमजहि कवःश्च
र्ययहृथागमस्यदानस्यवर्धुलाभन॥ नानसंविगमरुलविपाकमिनि॥ यन्मयानीनधनिवनकहंताःपुत्रदानगमासक
वजःपविहकुरुकुभूसाधुवमनसि कवृत्ताभिर्धनं॥ हृदपूर्वाहिकवाभूनीनधनिभूयनमजनपदेवाजासूवाकृमाकंकोव
यनि॥ मर्धिवर्दीनधनंमभाकीधुवृज्जनमनूयधुपभाकलिकलहडिचमनकवनागपगनभलीकः॥ गमहिपस्य
पत्रमविलमकठकमकपूडमिववाकंकावयनि॥ सवाजाअवाहः५४कल्याणभयश्रास्त्रहिनयवहिनपनिपत्रःकावूनिनाय

विशिष्ट

हात्माधर्मकामः पुजावत्सवः सर्वपदसर्वयविद्यागवमहनीत्यागवर्हः॥ यावदयवमसमथनमहर्हिकं जाइहर्हं॥ इहिकाः
मनकल्पसदृशं॥ नमस्कृतजनकायाः इहिका कालयमहिताः इहिका मर्कथकपालाः पुनास्यसदृशः॥ सगमसमागमिकसमूहिनः
जानमूपनिहृद्यजननायूषावर्धयित्वा उवू॥ अस्या इहिकरुमायेउकः॥ जीविनमिदि॥ नमः राजाकाकागाविकपूर्वमामहिता ३०७
वान्॥ अस्मिन् पूर्वमकाकागावमूत्रपानयदस्याकस्योदधौजनकायोमिदि॥ अस्याकाकागाविकश्राह॥ पविगभववमस्यायाव
व्यास्यामि॥ इति॥ नमः गनिनऊमलेगमनाहनासर्वपाविषयनिवासिनादिवसुककवजनाहोकोकवजोवियनं कालहविष

नीनिसमारब्धं॥ नमः राजाजनकायानाहृमाहृवान्॥ नमः हिरुवनादिवसान्दिवसमागयवजऊलकवउमचवहृगहृम
नि॥ नमस्कृतपुनिदिवसमागयउथकंकवउमचवहृमयथहृमिहृमि॥ अथान्यनमोवाक्कमानामासीत्॥ पवस्यअथान्नाजाः
नमूवाव॥ देवजनपदगमनयथानागमनादीयनाममापिकवउहृमि॥ नमो राजाहृकाकवउदयादकंकवउंजाकमायदहृवा
न॥ उकंकवउंजनसामान्यमहृवहृमंपरहृ॥ यचयहृउनमिमांसदित्यर्थमजादवानामिडावाक्कभवममात्मानमहिनिर्माय
जनेकालवाजानमूपहृद्यजननायूषावर्धयित्वा उवाव॥ वूडकिनाहंऊनूषस्वकवउनानूहमिदि॥ नमः राजाकवूमागयसं

विद्रिष्ट

दृष्ट्वा सत्त्वमनिष्टं पवनमपीत्याख्यं कंदमानं ॥ सकवडं श्रुमिदं हया ऊलाजाभा-
 कृमि वदं कं पं न स्थितं ॥ श्रुत्वा न कवं न जादवं च
 वाक्कभनूयमहिनिर्मायनत्समीपमूयभावनिसिद्धि ॥ ४४ पवनमयविश्रममिव महा-
 आसपवर्हकं ॥ वृद्धकिनापीडिता अनंष्टि-
 वान् ॥ दहिलमकवडमहाकष्टनागनाहं ॥ श्रावमया न्नप्राप्तं कथमन्नजीवामिवाजानं ॥
 नाजावात्र ॥ कथं यजामि नरुडं म-
 यि नवतमागनं ॥ सुखदुःखं सर्वथा कथं न ह्यसंखवान् ॥ मयि नवभागकवडं कथं
 दुर्लभं कागददामहं श्रुत्वा यथा गधमन-
 ॥ यदि श्रुयमसौ कवडमयजसंममास्तवनददनवमं वमनिष्पामिसायं दत्तं नि ॥
 अवभृत्सनाजावाक्कभनूयमहिगन

२०७

[illegible]

विधिः

वसायकावृक्षात्स्वकवर्चवंगकभायदत्तानाहवतांप्रतिपन्नं॥यावत्तुष्टंमयशूननभक्तमश्रुनिर्बंदत्वाभंवमहाजनकायं
उंगानंददृष्टायवाप्रीनिमाधद॥श्रुथमजादवदुस्तंवाजानिइक्षुनवावसायंदृष्टावाकमुवंभमकर्त्तव्यस्वनूयमस्थित्वा
वानसंवक्ष्यामास॥साधुसाधुमहावाजश्रावर्जितावयंरुगवतानिनइक्षुनवावसायंश्रुसनार्थवायंजनकायं॥ॐहमनप्रजापतकः
नइक्षुनवाविबर्जितसर्वविजानीवास्यतामहंससमदिवसमथाविधंमाहृदवर्षमूंचामि॥यनसर्वभस्याभिनिष्ठास्य॥
नाहमथाकाविनं॥भक्तनायिकाविधंमाहृदवर्षमूचमयंनइक्षुनवाविनिवर्हिमसूरिकंउाईरुतं॥रुगवानाह॥केमन्य

३०१

(अहिकवायोसोमनकालनवाजावरुवाहंसनायाडसूय॥समयानाचवांविप्रइर्हिकवर्हमानस्वजीविनयवित्तागदवांविध
निष्पादानानिदहोनि॥मस्याहर्हिहिकवठ॥दानिसंसावमहसूखंउक्तामथागमहमनसस्वधर्मादभिमहा॥श्रुथमयूक्तलभाह
लियमूखानवाकगनिष्ठाकावाहिमनाहिकेयागनवचनमाकेभूप्रीनिसोमनस्यजानाहगवममूच॥रुगवहवसासनपुव
जिष्णामपुसत्रंरुव॥श्रुथरुगवानमामानयभाहृउकनिंवस्त्वानवाभंवमाह॥सर्वदाकांरुसिनिषीदनि॥नषांचनहिहि
कव॥पूक्तयस्तिविनिधिकलिंगंस्वांसोहन्कममवाकवधान्॥उत्तिववंपाउंचपाइवहन्॥श्रुथादिनाकभास्यभायि

विचित्र

नामासंख्ययपर्वनायसंपन्नस्य हि कोनिर्यायथ॥ सुसंरुहास्तैव नवांपुत्रकास्तु नसायसंमत्सहि रुलावोसैकस्य नथाग
नप्रमासूर्यविहस्य हि कोवी वनं जादुर्न च॥ अथ विलुहिक वस्तुत्यां वलायां नथाग नस्य वनमयो निपत्य विस्तपय निस्या॥
नथाग नस्या निक कभास्तु संस्तुमं वपुसा दगो ववंचा त्या दय निस्या॥ अथ चैकस्य वी वनन जादुर्न न पुनव विन नवी उ या न
थाग नस्य वनमयाऽप निपत्य विस्तपयामास॥ कथमन रुग वम मेकस्य वी वनं नो त्यादिनं॥ रुग वानाह॥ रुग पूर्व नथाग न प्र
पुभा मकालमा सूर्य क्षा प्रादिनि॥ उ व मूक्त निस्तस्य क मार्य नो क्त्वा नथाग नं पुभा मि न॥ नदा रुग वमानू शा वन वी वन जादुर्न॥

३०८

मंद हू वी जा मूर्ति नमना सहि रुर्न गव रुम वमाह॥ रुग व कन रुना मे मेकस्य वी वनन जादुर्न॥ क रु उ रु क रु पु स्य य॥ रुग
वानाह॥ रुग पूर्व हि क व रु नी न ध न्य संख्य थ क ल्य दी यं क व न पूर्व य शा रु व नाम स म्मा कं रु धा स सं ध न स रु ज न य ना वि का च व
न न्य रु म ना ज धा नि शा पु॥ रुग व रु धा न्यां म हा रु न य द वी धि म् स्थि ता ध र्म द मि रु वान॥ रुदा सर्व ना ग ना न ना य सं जा ना ध
र्म क थां पु न व रु॥ अथ भाली नाम उ क म म हा वि दान नि षा ग र्मे रु सार्ध ना र्ही पु ला थ न दी यं क व स म्मा कं रु ध रु ना य सं जा ना
य सं रु म् रु ग व रु पु न म्मा पु व ना स्थि ता ध र्म रु न्द्र नि रु दा पु सा द जा ना सर्व न न था ग ना स न पु व कां य रु र्म च का व या मा सा न

विचित्र

नथागरस्यानिकभासुसंस्तुमयागोववमजावनरुगवनधुवनमथानृपयनिस्य॥ननसमयनवाक्यमस्यमिधोलेवननभा
गरुपुभासकालमासयविहृनहृमिहापिनसुप्रवभवदननमस्तुननकिहृविधमिहृमि॥ननमासुयकर्मनमूनकवर्षसह
अनलाकेऽनीदनीयजयतुत्वामहानोभीविधाययत्रऽश्रुयापिनवाभिविधकावमसीमि॥कालंजलयवर्मस्यकन्दनायांमहा
कुयप्रभासंयवर्ममिमिमिहृमि॥ननऽननवर्षान्यनयादविडकुलजानऽ॥नत्यश्वाहीर्थिकाजनाधनीहिकुकाहनऽ
॥कश्चिहृहृननीर्थिकाजनाथवसावसाऽप्राथमंवाहोवेसर्जीरुयनीर्थिकायाकूप॥ननयादलिपूजनगवनीर्थिकानला

३०९

[illegible]

विचित्र

नवार्हत्वं ज्ञातमिति ॥ ॥ ॐ दमवावरुगवानाहमनाहं वरुहिकवः सावर्वावनीपर्वतसद्वमानुषासूवगवूठकिन्नवमहाव
गाहगवमाहाविनमत्यनन्दनिमि ॥ ॥ ॐ निविचित्रकशिकावदानपुष्पविंनिममाधाय ॥ ॥ ग्रुथबलश्रुभाक
नागाहगवन्मनदवावन् ॥ ॥ हगवन्नेत्यविम्वस्यहजनाहवकिंरुलं ॥ ॥ नसर्वं बुद्धिवादीऽसर्वलाकाहिवाधनं ॥ ॥ ॐ स्मिन्नव
कालहगवानहिकसंधनसाधमगधेपूवजनपदपुष्पनूविवनगंगाभीममनूषासू ॥ ॥ कजकपिलवसुमहानगवस्याचमम
भाकश्रुधामहाधनामहालागाविहीनुविभालपविग्रहोवैश्वमेधनसमूदिनावेवमधनस्यनिपदीमनमहभाकलउरु

३१०

लाभानीहं सनयासाधं डीउनिवमनियनिवावयनि ॥ ॥ नस्यकीउतावमनऽयनिवावयनऽपत्नीश्रुयन्नसत्वासरंकासासूनांवा
नवानांवामासानामस्ययात्पुसूमाकावकाजानाहिनूपादर्गनीयजासादिकारमिजाकमानुषावर्षुसम्पाप्तश्रुदिवानिसूदनव
वानेकभीमपुहयासर्वकपिलवसुनगवपुलसिर्ममाभापिकवान्यवक्रुहलात्यागनासूमेकदहवदिमहागाऽजलवदुसलावा
गजकश्रुसहभाश्रुनित्याश्रुधुवाश्रुनाश्रुसिकावियनिनामधर्माऽयश्चगेऽसोधावभाऽयचहसावलाहागस्यऽसानमायानि
मि ॥ ॥ मनग्रीश्रकालपुसूनाऽसत्वायनंविस्मयमागनाश्रुनयनिवजुनऽयमीहर्नसत्त्वविभमं ॥ ॥ नस्यजानीजानिमहंरुत्वर

1. विधि

नामधेयं वावस्थापितं किं ह्यवदन्त वक्तव्यं नामनि ॥ ह्यनयडवृ॥ यस्यादनं नजाननभीनलवर्धुपुलायासर्वकपिलव
नगवजलवर्धुमिवपुलासिर्न ॥ नस्याहवदन्त वक्तव्यं भीनलपुलानामनि ॥ नन४भीनलपुलादावकभूषणधाम्नीस्थानूपद्वारा
स्थामन्नधाम्नीस्थान्वासांकीवधाम्नीस्थान्वासांमलधाम्नीस्थान्वासांकीडनिकास्थान्वासांहीवृत्रीयमवर्धनकीवमदधाम्नवनीननस
र्धिवसार्धिमरुतानोश्वाहृष्टापध्वनूपकवर्धनविर्धनध्वनोवर्धनकदस्थमिववर्धकजं ॥ सवपन्निभाव्यहामधवीधाम्नीह
डः कल्याणनयश्रीमहिनयवहिनपुनियन्न४कावृनिकामहात्माधर्मकाम४यावदयनमसमयेननूपमदमहादधाम्नीहिव

३११

विस्थानस्य की उति ॥ न नरुस्येव मार्गसंवरुताश्च यो नरुता न्यथा ॥ नामं गच्छति ॥ न नरुनभी नरुनदृष्टाश्च कुरुगव नरुगच्छ
नीति ॥ न नरुकां न्यथा ॥ नामं गच्छमरुगव नरुवृद्धं नरुमिति ॥ नी नरुस्य वृद्धनाम नरुनि भूत्वा भूतपूर्व सर्वनाम कृपा न्या नरु
नियवमं वकी नरुलमाश्चर्यं भूत्वा नरुस्ये नरुदहवन् ॥ यच्च नरुगव नरुद नरुनाथा यसंक्रमेयमिति ॥ साधिन्याश्च नामं गच्छति ॥ न
नरुस्येव नरुदर्शन ॥ वृद्धं नरुगव नरुवादि नरुनामहा पूरुषलकने ॥ समलं कुरुमनीत्या नानूवां जने ॥ विनाजिनगा उवाच यप्रहलं कुरुस्य
यसं कुरुमिति नरुक उरुं नरुममिव नरुत्व पर्वनं सम नरुनाह कं स हृद नरुना न्यास्य नूययदे ॥ नरुगव नरुपा दारिव नरुद नरुत्वा पूरुषान्निम

विधि

॥ अर्धधर्मप्रवणाय नमः ॥ गवनाधर्मादभिर्धर्मप्रवणाय नमः ॥ यावन्मायायिनो नावन् ह्यहगवन्सकाभप्रपसं
जाभापसंक्रम्यहगवन् ॥ यावन्मिनावन्दिवायनहगवाभिनोभ्रतिष्ठमयहगवन्मिदमवाचन् ॥ लहयाहगवन्मिदमवाचन् ॥
यमधर्मविनयप्रवकाप्रपसंपदाहि कृतावचनयं ॥ अहगवन्मिदमवाचन् ॥ नमोहगवाभिनोभ्रतिष्ठमयहगवन्मिदमवाचन् ॥
यमीनप्रवकाप्रपसंपदाहि कृतावचनयं ॥ अहगवन्मिदमवाचन् ॥ नमोहगवाभिनोभ्रतिष्ठमयहगवन्मिदमवाचन् ॥
यमधर्मविनयप्रवकाप्रपसंपदाहि कृतावचनयं ॥ अहगवन्मिदमवाचन् ॥ नमोहगवाभिनोभ्रतिष्ठमयहगवन्मिदमवाचन् ॥
यमीनप्रवकाप्रपसंपदाहि कृतावचनयं ॥ अहगवन्मिदमवाचन् ॥ नमोहगवाभिनोभ्रतिष्ठमयहगवन्मिदमवाचन् ॥

३१२

हमप्रवणानां मधमाधर्ममानसा ॥ अथमत्यल्पप्रवणानि नवकादिभूजाय नमः ॥ द्वादिचविनालाकानवीविचयिजाय नमः ॥ माहवर्हि
वयसत्वाप्रवणप्रवणाय नमः ॥ नागदिचविनालाकानि र्यग्वानि उजाय नमः ॥ मृदुप्रवणमनूयादिचवर्हिभूजाय नमः ॥ श्रीर्थादिचविना
लाकाप्रवणप्रवणाय नमः ॥ अथमत्यल्पप्रवणानि नवकादिभूजाय नमः ॥ द्वादिचविनालाकानवीविचयिजाय नमः ॥ माहवर्हि
हमप्रवणानां मधमाधर्ममानसा ॥ अथमत्यल्पप्रवणानि नवकादिभूजाय नमः ॥ द्वादिचविनालाकानवीविचयिजाय नमः ॥ माहवर्हि
वयसत्वाप्रवणप्रवणाय नमः ॥ नागदिचविनालाकानि र्यग्वानि उजाय नमः ॥ मृदुप्रवणमनूयादिचवर्हिभूजाय नमः ॥ श्रीर्थादिचविना
लाकाप्रवणप्रवणाय नमः ॥ अथमत्यल्पप्रवणानि नवकादिभूजाय नमः ॥ द्वादिचविनालाकानवीविचयिजाय नमः ॥ माहवर्हि

विचित्र

वदेगनेऽपनेऽनिर्यजने विकलद्विधे वमनगुहः ॥ १८ ॥ पत्युः कृते ॥ १९ ॥ काका कला विकृतः ॥ मुनिस विरु विप्रसुला कनवान्दिन
जिनमंनवविबुधैः सङ्गं पाहुं मूनीन्ववामृत्तं ॥ मोनीहं वत्तवाकं जनयमिसुधियामनदा दोषमादं ॥ आनायामननश्च प्रवय
वृषनश्च कृत्वा नितिहं ॥ विनाशानावसानसूटयमिसकलं जन्मवज्रं प्रवर्ध ॥ २० ॥ भाषा कं कय किं घटयमिचसदा सर्वसम्य
त्रिधनं ॥ हवनीमिबुहवप्रववा दयददिभमिनिर्वृमिसौख्यमनूहवं ॥ नदिदमवमवत्तमूनववनमृगूहः संप्रमिनिर्मलमान
सा ॥ २१ ॥ गृहीत्वा सुदृष्टं कवर्चभीरुप्रका ॥ निष्ठाभा मदि कर्मयत्तं कर्वात्रिभमनद्विधः ॥ सह्यायत्तमानित्यसम्यग्धदविना

३१३

नयः ॥ २२ ॥ कृत्वा नवत्यं प्रमिसुयापिपुविन ॥ विवाविनरुयद्वेर्महाप्रोहं च नसूनेः ॥ मयापिवयथाभक्तिरुद्रकिंपविलंवि
न ॥ यदिचेवंप्रमिसुयाधयत्तवकर्मभा ॥ २३ ॥ नासर्वविस्मयायकागनिर्महविष्यमि ॥ मनसाविनयित्वा रुथानदयान् पुनर्भुवः ॥
सुप्रमाहवनीयूक्तमत्यमाधुविबुद्धिनि ॥ किमुमानूहवं सौख्यमूखेवृष्ट्यलवनः ॥ जगत्सर्वमिस्वायकागनिर्महविष्यमि ॥
वहिसर्वरूपं नमविद्याकर्मभागदि ॥ यथाधिरुत्थागापिमावयत्तवमानंनवः ॥ धर्मसत्यस्य ननेवसर्वापरिगवीयसि ॥ य
स्यादायमानोसोसर्वसत्त्वार्थहानिरुद्र ॥ याप्यन्यः कर्मनयस्यपुन्यविप्रकविष्यमि ॥ नस्यद्वर्गमियर्गं ननास्ति सत्त्वार्थघाति

विचित्र

न॥॥॥कस्यापि हिसुखस्य हि न हंसा हंसा हंसा ॥ अथवा का मय र्म न वा सिनां किं पुं दहिनां ॥ उवमा य हिवल ना धर्म विह वल नव
॥ दाला य मान संसा न हंसा ॥ अथवा विना जम ॥ नत्मा यथा पुनि हंसा धनी यं समा दना ॥ ना यत्र क्रिय मयत्र कल ना पि नल वज्र ॥
श्रुप मे या ग ना चू चान सर्व सुख ग वष का शा ने प्रा म हंसा धन वि किं सा ग म वं ग न ॥ अथवा यि वरु ये वर्या य ये वा हं पुन ॥ पुन ॥
इग नि म न मं हंसा दिव समा पु या न ॥ कदा न था ग ना या दं उ च मानु य म व व ॥ ऊ म ला या स या ग्धु र्ज वं ल य नि इ र्ल हं ॥ अ
ना ग्ध दिव सं व दं सह कि नि पू व उ वं ॥ अथवा कर्म वि स वा दे का था वा चि न का य म ॥ न ही द र्म म व वि र्म म नू यं ल य न पुन ॥ अ

३१४

लक्ष्मण मान मानु य पा प म व कृ न ॥ सुखं ॥ यथा ऊ म ल या ग्धु य ऊ म ल न क ना म्प ह ॥ अथवा य इ ॥ वि सं भा ह क वि था मि श्र ह न दा ॥ अ
ऊ र्व ल न ऊ म ल या प म्पा य नू चि च न ॥ हंसा सु ग नि म धा र्पि क ल्प का टि म न व यि ॥ अथवा वा ह र्ग वान मानु य म नि इ र्ल हं
॥ म ह र्धु व य ग्धि ड क र्म य वा य ना य मं ॥ उ क ऊ म ल ना या या द वी वी क ल्प मा स्य न ॥ अना दि का ला य वि ना या या का सु ग ना क था ॥ न
व नं मा उ म वा सो वं द यि ला मू किं च न ॥ यथा हंसा द यं न व पा प म न्प ह य म ॥ ना न ॥ य वं वं न ना नि न व मा ल य न ॥ य दी द
नं क र्म आ य ना ह्म कृ न ल म्प दा ॥ यदि चे व वि मृ था दि पु न ॥ सी दा मि मा हि न ॥ अथवा वि था मि चि र्ल था य म इ ॥ पु वा दि न ॥ वि

विशिष्ट

धवे कृमिपकायं नानका निसूइइसह॥ यथा हायानल निहं विनंध कापि नि किनं॥ कथां विदयि संज्ञा हि न ह मिसूइइल हं॥ जा
नं न पिवनी य हं ना न व न न का पुनः॥ श्रुत म न न न ना सि म न व पि वि भा हि ना॥ न जान क न मु का मि का पा न म म नि स मि॥ ह स या
या वि न हि ना ह स्या द वा दि भ ज वः॥ न भू ना न व न पा ह क थं क सां रु ना सि ने॥ म चि हा व स्थि ता उ वं घृ नि मा य व सू स्थि नः॥ न जा
प्य हं न कृ या मि धि ग ल्य न सा हि मृ नां॥ सर्वा द वा म नू षा श्र य दि स्य म म भ ज वः॥ न पि ना वी वि कं व क्रि स मू दान पि ड क मा॥ म ना व
पि य सा स ग न ह स्या यूप ल य न॥ क भा न् कि य नि मा रु ज व लि नः क न भ ज वः॥ वं क्रि सर्वा भ भ ज् मां दी र्घ मा यूप पी ट नं॥ मू ना यं नं

३२१

महा दी र्घ यत्न म कृ भ वे नि नां॥ सर्व हि ना य क ल्प न श्रु नि कृ ल न स वि ना॥ सु वा मा ना हू मी कृ नः॥ सु ग नां इ इ त्वा का व भा न्॥ ॐ नि सः
न नि दी र्घ ये वि पू य स ने क व ध ह उ भू॥ ह द य नि व स त्पु नि र्ह यं म म सं सा व न निः क थ ह व न॥ ह व वा न क पा न का ॐ ध ने व का
दि ध पि व ध घा ट का॥ म नि व भ नि ला ह यं ज ल य दि नि स नि कृ नः॥ सु र्व म म॥ न स्या त्र ना व द ह म श्रु वं कि या मि या व त्र न ज व
ॐ म नि रु ना स म कं॥ स ल्प पि ना व द य का वि र्ग व द्वा वा मा ना त्र ना स म नि ह स न या नि नि जां॥ पु कृ नि म व भ इ इ ति नां व वा का व ल
सि प स हं नि ह उ मृ शः॥ श्रु ग नि रु भ व न् कि धा न इ इ त्वा न वि मृ ख ना मृ य या स सा ध यि त्वा कि मृ न न नं सर्व इ इ त्वा ह उं कृ नि

विविध

विपुनूपडउंउंयनस्याहवनिममविषाददेन्यमयवसनभनेवविकनहनुदे॥ मूकावरभनेवविपुनूकयायगपुचलंकावव
इवहनि॥ महार्थसिद्धिसुसमयनस्यइ॥ नानिकस्यात्ममेवाधकावि। स्वजीविकायाजनिवद्विहा॥ केवहवाअलहवीवनाद्य
॥ गीताकयादियसनसहमंजगदिनार्थनकथंसह॥ दनदिगयायपर्यमंजगत्कमविषाचन। पुनिसयपदासापिह
लस्य॥ विषाचिन॥ मूत्पस्थानमस्यावृत्तंनूहमकसुत॥ मूनिवर्हिहविषाचिनस्याहकमवसुत॥ मून्यहहविषा
मिक्ववेवविगह॥ मून्यहहविषाहकमहकधाननूवधिन॥ गलत्तजानिमकायनिवयेहुनामना॥ नत्वेवाचननिना

२१७

मिसर्वथाहकमवेविभा॥ निवानिमस्यादिहनामभजदभाहवस्थानपविग्रहस्याह॥ यन॥ पुनसुहगनाकिननिनकमग
गनिनीदनीउ॥ कासोपायात्मनमस्यायानिवसु॥ स्थित्वायसिंमद्वमार्थयनसुत॥ नाद्योगमकवलमेदवृद्धकमपुकाहिसा
आवलाका॥ नक्तमविषयपनदियगरभनायकनालस्थिता॥ मानाचक्रहस्येना॥ पुनविममप्रकिहसुजगत्॥ मायेवव
यममंविमवंवहदयजानहयस्यायमा॥ पुनार्थकिमकापुवनवकत्यात्मानमाधम॥ पुनविनिश्रेयकनामेयत्वंपथ
हधर्मापनियहिहना॥ वेद्यायदभाहवक॥ जनासिहवयसाधस्यनिनामयत्वं॥ पुनसंकपनपुन्यहवयवकवाविभाह

विशिष्ट

मित्रां हं गवान्भीमपुत्रकृमानं सन्ध्यागमनमूत्रसंघानि पवीरदहस्य ४३ नाकसि यत्र स्थानयथास्थिनावृद्धमना
वचन ॥ यावत्सुहोर्हवनापि नृकं न भूयादभवर्थाय सम्यन्नयाय ४४ यात्रकनयग्रहलाहगवनं पुनस्तस्थि ४५ नस्य हगः
वमं मनसि काशोदहं नूनं पुत्रकृमानं न व्यायक्तृमानं न घटमानं न दमवपश्वग ४६ कंसं सो वचकं ॥ चलावलविदित्वा सर्वसंका
वगमिभनविकलनविधं न धर्मनयाय नाहस्य सर्वक ४७ उहामादहस्यं सा काह नमस्तस्य ह ४८ नजाधुवी न नागसमलोह
काश्चन आकाशमयानि कलसमविष्वासी वचनकल्या विद्याविदाविनाशुका ४९ वद्याहि ह्यप्रतिस्विता प्राह वलाहलोहसका

३११

नयनाद्युव ४९ अथ उहामादवानां प्रकाशान्याहिवाद्यसंहर ४८ हि कवसंस्यक्तं वचं हं गवनं यत्र ४९ कानिह दन्भी न
पुनरुक्तं पुनानियनास्ये वां विधमसोहमरुलं ज्ञापिदि ॥ हगवानाह ॥ भीमपुनरुक्तानि कर्माणि यत्तत्तु सत्का नापि पविनमस्य
यायाद्यवत्सुपस्थिनायवभं हविमी ॥ भीमपुनरुक्तानि कर्माणि उपविनानि काय ४९ अथ नूह विद्यादि ॥ नहि हि कव ४९ कर्माणि
रुक्तानि उपविनानि वाक्कटिचिवीधमो विषय ननाज्ञानो न नृणां मोनवायूक्त्यावपि नूपाहं वचं धाय नूनं पुनरुक्तानि
विषय नृणां यत्र उहानिवा ॥ नपुनरुक्तानि कर्माणि कल्याणादिभवेवपि ॥ सामग्री ज्ञाय कालं वरुलनिबल दहिना ॥ हनपूर्वहि का

विविधा॥

व० श्रीगुरुभक्तिसंघेयकल्याणाय नमः सत्यं कुरुष्व कालाकडयादिविद्याचवनसंपन्नं सृष्टिगालाकविदगुरुव० पूनमदम्य
सावधि० भास्वदवानाश्रमनूयानाश्रकृष्णहगवानसुवभूमनीनाजधनीपुपनिहृत्यविहवनि॥ यावत्कायपस्यकुरुष्वका
यैकला० धनकयादिवापिनिवृपविभक्तानिर्वानधनोपेविनिह० ननावाहवभूमनाहगव० नवीनपूजांकलासमेनायाः ३१८
जनं वसुपुत्रमयं पुनिस्थायिह॥ वेत्यमहहवभुशुहफ० यावदन्यनभाहृयानिहृसिधैत्यविधमहनावहमानेनिर्गम०
ननमस्यावेत्यविचंसोवभुवलीश्रुदन्पनिभाहृसमनावनसंककावयित्वा॥ नृपकुरुपश्रुतायिह० गधपूषधूपावर्नकला

यादयान्त्रियस्यपुनिभनंकनं॥ गुरुमयवंविधानानां पुमानां लोहीहविद्यापि॥ उवांविधमवंभास्वदवानागययमिनि॥ ॥
हगवानाह॥ किमन्य० धरिहृव० यासो ननकालनननसमयनगृहपनिवासीदुर्जनीनृपुहनामयहनुकाय० स० स० कुरु
यस्यवेत्यविधकायापिनास्नोवविधवृपविभक्तानिर्वानधनोपेविनिह० ननावाहवभूमनाहगव० नवीनपूजांकलासमेनायाः
व० का नृपुहनानिकर्मान्ययास्ययानिमिभानिर्वानका नृपुहना वस्तालंगकवनीयमित्यवां हृव० निहृनय० ॥ नृदमवा
वहगवानाहमनास्वहृकवासावर्वावनीयर्षसुदवमान्वासुवगवूडकिन्नवमहावगाहगवकाहाधिनमयननन्निनि॥

विविध॥

॥ ॐ मित्री विविध कर्तुं काव दानं षड्विंशति नमो ध्याय ॥ ॥ अथान नमस्तु नमो उच्यते मुवाच सः कृष्णानां वेत्त
विद्यानां त्वान दानं कथं हलं ॥ उच्यते ॥ ॥ अनीनं भूनाजं दत्तान दानं हलं मूहं ॥ वेत्तानां कृष्णधर्माणां व कला का थं हलं वा ॥
नानासु गच्छेत्स्वायय निसुगमं पूष्यधूया मूनागे र्था वा पूजा कवा नि प्रपूदि न मनसा ॥ अथ वा दिव्य भवे ॥ मन्दाकि न्यां विह ह २५
कनक मय स वाजं स्य किं कल व भूया हाया त्वा नि सा न स कल कलि मला कालि ना या नि मा कं ॥ ह ग वाना ह ॥ उच्यते ॥ अथ महा
नूनं सा न था ग म पूरु न पूष्म नि स्वल्प मा ये व ह हलं ॥ अथ ह सि सम य ह ग वा सर्व स ह वि न ला कानां कां का द दना थं उच्यते

का ना ह विव ना थं व व सि समुत्स र्ज ॥ न सि समुत्स र्ज पी न वा सि ना व दाना र्चि व ह विव ना त्रि श्रय का शि द ध स्ता न
हृ मि या ध स्ता न हृ मि ना स जी व का ल सू र्ज सं घा न नो व र्ब न य नं ना य नं भू वी वि म र्ब दं मू ट टं ह वं ह ह व मू न प लं य घं म
हा प घं ना व कं ग ला य उ च्यते न व का थ नी मि ह ला य नी न न व का ल मू र्चि रू ना नि य न कि ॥ न न न वां स त्वा नां का व मा वे भ वा उ चि
प्र उ च्यते ॥ न वा म व ह व मि किं पु न र्ब यं ह द न ह न मू ना मू हा सि द न य उ च्यते य त्रा ॥ न वां प सा य म्जन ना र्थ ह ग वा त्रि मि नं
वि स र्ज य मि ॥ न वां नि मि नं ह ह व ह व मि ना र्थे व व यं ह द न ह न मू ना ना य न य श य य त्रा मू पि स य म पु र्व द न न ह स त्वा स्या

विविध॥

नूतनवनास्या कंका वनविभवाः ४३ मिपुत्रा ४४ मिमिननिर्मिनि विहमिमिपुत्रा यमं नवकवदनीयं कर्मकपयित्वा दवपुत्र
मिसभिं गृह्णन्ति ॥ यत्र मया राजनानि हनानि वदि ॥ याऽप्यविस्मय कृदिना ४५ कर्महा माजिस्त्राय सिंभा यामासु विना निर्मा
वदिपवनिर्मि नवसवर्हिना वक्रका ॥ येका वक्रपूना हिका मलवक्रा ४६ पविहारा नपमाना नाना राखनायवीह भुला नपमाना २२०
राभुहृत्ताननका नूतनपुत्रा चरुहृत्ताननका नया सुहृत्ताननका नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा
घाघयदि ॥ श्रुवहृत्ताननका नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा

विश्वमिपुत्रा यजानि संसारं स्वस्या कंका विश्वमि ॥ श्रुतमावर्ति वडी साहजमहासाहज गलाया वरुग वायव्यं नूतनपुत्रा य
मिसा ॥ ४७ कपुद्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा
पविवा नाधनवा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा
नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा
नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा
नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा नूतनपुत्रा

विविध॥

सर्वप्रयत्नवृद्धरुक्तिप्रियां ऊर्ध्वं कृद्ध मनविजानीहं सुखानां भा कदायकं। हवा हा धिनिमना नां कं न जाल विभाचनं। भव
 नमना यद्गुणानां भाग। भा क विना नन। भाव नं सर्व सुखानां संसा न इ ४ ख सा ग वा न॥ यमान वा कृद्ध मनू स्य व नि कृद्ध नि कृद्ध नि न
 आगमनि। ॐ व वा का स पू दी व य नि. वि मा हि ला ष रु ल मा प्र व नि॥ कृद्धा य न सौ प्र ग व नि य न. कृद्धा य ना भा य न आ ग ना
 य। स त्या व न नि व न व क व र्णा ह मा स दा सा व रु र्जं प्र पू क्ता॥ य पू षा धू या दि हि पू र्ज य नि. कृद्ध वि कृद्ध भव नं स म यं। ने वि य ग न
 व सो धू य कं. स्व र्ग स दा रा ग स म वि ना र्क॥ ॐ दं सु सा नं व ल कृद्ध पू जा. ह वा शु वा स न व न भि ध न न। ऊ र्ध्व ह र्ध व न भा क क र्ज न

३२१

आगमस्य हवनं प्रया नि॥ ॐ सु क्ता व स्य य रु ग व र्जं डि प्र द कि नी रु स्य स्व न वी व प्र वि न्ध न हि ना र्क न॥ अथ य सु म स म य पू ष
 म नि. अ हि स मू य य प न मा ध यो दि रु रु ज ऋ ४ आ ध्या यं स ग न कृद्ध रु ग व नि प्र स त्र पा मा य जा न न पू जा प्र व सौ व न प्र षा धू या दि ना पू र्ज
 र्घ दत्ता पू षा ऊ लि रु ग व न प्र कि फ वा न॥ न ना कृद्धा नू ला व न सर्व पू षा मि पू षा म शु प व न स्य ४ धू पां ऊ र्ध्व व स्यं स्थि नं। नी न नी ल
 पी न ह वि ना व न वि वि ष मि व नि व सि ले रु ना र्क न॥ अथ स र्वा हि कृद्ध रु ग व न ४ वि रुं प्र सा य न म स्का रं रु त्वा कृद्ध मनू स्य व न सु
 ख न नि रु नि। न न रु स्य र्वा हि न शू ल्या यू ला का लं गे ला. न स्य पू षा प्र ला व न जा य डि। न प्र य प न ४। न न ४ शू ल्या ना हि ४ स रु म उ।

विविधः॥

किं चांस्त्राययित्वा, सुखलीलया निष्ठानि। न नास्व पूज्यविद्याकनसुवर्णमया लयनिष्ठयस्वर्गस्वर्गद्वयमनिवमित्वा कीडित्वा जम
नश्च सुसुवर्णमनी निर्या नवान्॥ न नश्च भूजादवानामिदं सुधर्मया दवसुहायां वृद्धसुवर्णं नृणां नृणंददन्॥ अथ भूजादवान
मिदं दवपूजं कृपाकागवसुर्गं जेभलमूलं दृष्ट्वा वगथया प्रत्यक्षम्॥ गणकं न विप्रहृकां वनमिव नृणां त्पलाह नृवागणं हन
कुलाह नृयमिह नृदहा प्रहानिह ना॥ वकुं कन निर्मलय घसद नृजाम्। उहा व नृव नृहिलं मम दव नृहल पिदं यत्पूज्यं नृजं नृजं॥
सुवर्णमनिदवपूजं वाच॥ स आ व का वृद्धधर्मश्च पूजयित्वा सुहृदि नृ॥ तान पूजादिकं हत्वा, न नृनृयधिकं हल॥ यश्चाप्यना

३२२

दिसं पूकं चेत्यविच प्रनित्यसः॥ पूष्यपूयदीयश्चने विचं वापि पूजितं यश्च नृथागने आपि वृद्धिं कृत्वा वस्थिना॥ मरुत्तवेना
वन आपि, पूर्वपूकाय क नृथा दकिं नृवत्तसुहृव आपि, मुनिनाहं पन्निम नृथा॥ उहवमायसिदि नृ॥ नृयश्च नृथागना॥ ज
लज्जं द्विभुजा नृवदने का नृद नृनृ॥ पूर्वपूज्यविद्याकन नृह नृहलमायना॥ भूजाह॥ मृहायु नृमयं नृह, सर्वशच विवर्जितं य
उच्यते त्वया वीजमिह स्वर्गं यय हृय॥ कनार्चयत्पुवनका वनमिवा गोर्वं वृद्धं विभुश्च कमलाय नृवान नृजं यजाधिका वज्रनिना
यमवीपूजस्य वरुत्तमानि गगनां चैव पूज्यं च॥ धर्मनास्वत्तदवपूजस्य मृविनाय पत्रस्य की निचिह नृयय नृ॥ कनश्च नृ

विधिः॥

कृणोत यत्र ४ कनकर्म (मनि) ॥ स पन्थनि मनुष्यस्य ॥ अतः ४ प्रमीन सुदव पूजाय सिं (म) ॥ प्रपयत्र हगव नानि कवि हं प्रसाधनि
॥ अथ न स्य दव पूजस्य वनस्ये न दहव न ॥ नमम प्रनि वृ पं स्या य दह पयू म न य निवा (म) ॥ हगव न दह न यो य सं ज म यी ॥ न्नि स द
व पूज सर्व म विवा जि न ग न व ल सु व भु वे ज स ग आदि स ह सु द ह अ न क द व पूज स ह स म य वि र ने से ने व स व भु ज द ग न व न
स ह ह ग व न ४ स का स मू य स का न ४ न ना ह ग व न दि वा पू य न व की र्य ह ग व न ४ पू न स्या नि ष भु धर्म भव ना य ॥ ॥ अथ स
ल ह ग वा स द व पूज स्या म यानू न य धा ४ उ रु नि व ह्ना त्वा व रु ना र्य स त्य प्र नि व धि की धर्म द भ ना क न वा न् यां भू त्वा न स्य द व पूज स्य

३२३

विं न नि नि त व स मू ज न स का य द ह्ने (म) ॥ ल ह न व ज न हि त्वा (म) ॥ ना य हि ह लं सा का ह न स द ह्ने स्या डि वृ दान मू दान य नि ॥ ४
म स्या क ह द न न मा ज न द व ना हि ४ न वा ह न पू ज न वं धू व र्ग न क मं ॥ य ह ग व ना वृ धि वा भू स मू ज लां यि ना भू स्थि प र्व ना यि हि ना भू
पा य द्वा ना नि र वि ना र्ग द्वा ना नि उ नि का यि ना स द व मा नू य धि मि श्रा ह ॥ न या नू ल वा यि हि न स्या ना क पा य मा र्ग व कू द ष पू क
४ ॥ अथ द ना र्ग ग नि स पू न्ना नि र्वा न मार्ग भू म या प ल द्वा ४ ॥ ल द ग या द्वा म य न द ष म या य भु दं सु वि उ द व रु ४ ॥ अ न व ना
नं प द मा र्ग का नं की भु व ४ ४ वा भु व पाल म सि ॥ न व व व न व व व पू जि न वि ग न्ज न्ज ल म ल ना क रु य ॥ ह व स ह्ने स ह्ने स ह्ने स ह्ने स

विविध

नरुलमहायमूनदर्शनं॥ ॥अथद्वयपूजाहगवमध्वनमथाऽपुनियत्यसंजानहर्षसूत्रलाकारिमुखदिवंजगम॥अथसद्व
पूजवनिगिबलपुलाह॥अस्यसम्यत्र०वकर्मक॥भूत०वजिनसंश्रम॥सर्वगगयविमूक्त०वाहुन॥यथाविरुपाहगवसका
भमागन॥नयेवविरुपाहवर्नंगन॥यंष्टुसंदिग्धमनसहिकवाहगवर्नंउपयुक्त॥कानिकर्मानिहनाभूयविमानिसद्वयपूज
सहमीविरुमिनामीन॥अवलकनकभलमूलनसमनागनसद्वयपूज०नि॥अथहगवानकर्महृदीमास्थायसर्वावर्नंयमर्दग
नंष्टुहिकगामामहोवमाह॥हिकवाव॥किमाश्रयहृत्कर्मकंउपयुक्तमिभूत॥उपवीजंश्रुंरुलसात्पिथाधवमीननाश्र

३२४

सूत्रप्यान॥वर्गीभावावरूपशरुलायालाकवर्धहृयमवंपुकावावीजाहिववावीजांकुलाहिमस्तन्यभावीजांकुलापिब्यानसा
वर्हीसुलनानाप्रजाना॥यभवाभयसुजानानावरुभावापगसूत्रप्यानानावरुलंउसिजासुवकप्रकावान॥पूनश्च॥न
विरुवर्तयहमायसम्यकदानकनाधधनभागतानां॥सुधर्मदानस्यचनिर्मलस्यवृद्धात्मजानांवदधादधीनां॥यावकिदानानिरुल
निवेवहेषकजानानिचयानिसन्नि॥पूजानियावकिवसकिलाकजलानिवसहृमनाहवानि॥महीधवावत्तमयास्तथेववन
उदभाधविचकवया॥लमासूत्रप्याहवगहृत्वाश्रमाश्रयसहृलानप्रभावा॥दवाश्रलाकभूवगधधूपा॥कल्पमावत्तमः

विचित्र

याश्चरकाः। सना सिवाङ्गं ब्रह्म विष्णुनि, हंसं स्वनाम कवमना हनाति ॥ गुरुसंज्ञाना निबन्धस्य ज्ञाना न्यन्या निवा प्रकृतिरुपमा
नि। आकाशमभ्युपगमना वधीनि सर्वा न्यपि मान्यपदियहानि ॥ दानानि कृत्वा मुनिपुंगवस्यः। निर्वन्धना भवस्य पूजकस्यः। दानकृत
भवत्त्वदकिर्णायामहाकृत्यात्पावनकंपदाना ॥ मुदहवानस्मि महादविद्वान् पूजार्थमन्यत्समनास्मि किंचिन्। श्रुता मनार्थमयवार्थ
विना गुरुकुलात्पुत्रमात्मनका ॥ दद्यामि दानं ब्रह्मजिनस्यः सर्वमसर्ववन्द्यं तस्यैव ॥ ऊनूयहं ऊनूनायसत्वा, पूष्पासूदास
त्वमूयै निहत्ता ॥ पवित्रहनास्मि हवत्कृतं न निहीह वत्सत्वं हि तं कनामि। पूर्ववदानं समर्पिकमन, नान्यं वदानं प्रकनामि ह

[illegible]

विचित्र

सुगर्भेर्जसूमेमनोहे॥ अथर्वयामि अथर्वयामूनीऽन अहि अथर्वयामनानमाहि॥ अथमनूया॥ वल अथर्वीजं
सुपाउकुरुपुनिवाययनि॥ अथर्ववृकननीवकश्चिन्मयनयानिसनमंरुलानि॥ अथर्वकस्यविहितावीजांकुलमह
रुवं॥ सर्वेषांवेववीजानांयुग्मवीजसूवीजकं॥ अथर्वहो॥ अथर्वविहितावीजांकीनरुध्वन्यसंस्थयकल्पमज्ञानामजा
नयदकृन्निनगवयहनवर्गगवनापुहवनत्राहंमस्यनथागमस्यवदुवेत्यविश्वमकमस्मि॥ अथर्वनगनविरुवविहि
नमहादीनयवदविडभाक्रममिर्त्रामअसिपुनिवसमिस्म॥ अथर्वनूविभाक्रममिर्त्रामयामिलित्वा॥ अथर्वमनकयत्न

३२६

[illegible]

विचित्र

[illegible]

यिषु पाउसूपाउंदही सूकायाविर्तां नंदं शुभीप्रमंव गृहं उविभाजनीन् ॥ किञ्चिदसुं न विद्यन् ॥ आत्मना हा नायय विनानि
 न शुलान्मवसा निसहसा गृहीता न त्ये जाय क्कन् ॥ हि क्वन विद्या न न दहन् ॥ गृहीता उवाच ॥ दविज विव पुष्पात्मा दविजयाः
 गइल्लहा ॥ न त्यात्पुष्पानूलावन ना विजं लत्यन स्युः ॥ रुडं हव न रुडना मय रुडकं ॥ वृद्ध ह किं प्रसा दसु मनस्वर्गा यय रुय ॥
 ॐ सूका नर्हि ना रुन् ॥ मूयस द विजये न दहवन् ॥ किं कर्ह य पिदानीं मुहा धिक्क जमं वजी विदं ॥ विहव स्या विहान नमव नर्त्ता
 रुनं हवन् ॥ पून वा पे न त्ये न दहवन् ॥ य विजु द्विना मो या सकसका भाधर्म शूनं ॥ मये क वित्या धि म काले सर्व य हल मा उंदं य गन

विशिष्ट

[illegible]

नाडनवप्रजादयानित्य। नत्यमनसिजनदहवन्॥ नममप्रनिनूयंसाथदहकथागनकाडरूपडयासिनव। यानीयमाडन
 त्रानंकर्हवां॥ निमत्तामृन्मयघटंगृहीत्वाकोनिकोनध्यानीवत्तात्वापविशुद्धिमानसाजलमादायमसिंरूपत्वाययनित्य॥ न
 नादिनमासात्यकयादकस्मिन्दिनवेद्यविमत्तानायजलमादाङ्गगृहीत्वाजलमादायमदागत्वात्रानंवायिपुंकल्पितं। नदाघटाद
 पनितानिन्त्रानिबिबिधानिच॥ नमःसभाकमनित्कानिदृष्ट्वापुसादजातामनसीनारून्॥ नमस्तनानित्कमायवेत्त्यायधर्म
 नदावेनावननमस्तुयंश्रुकात्यायनमानमः॥ नमःवत्सहवायमूमिनालयनमानमः॥ श्रुमायसिद्धिनमस्तुयंवागीश्वरमय

विधिः॥

नमः॥ स्वयं कृत्वा यनमस्तु॥ कानि नूपा यनमस्तु॥ निर्यान्त्यामि नत्वा निवेद्या यन्त्रं वनसा॥ नमः॥ सप्रति निर्वृत्य नद्या नीव
पुगच्छुनि॥ ददर्भस्तद्विडम नत्वा निवसमा कृत्वा॥ वज्रवेद्यं यन्त्रं यानि मुक्तामानि कवा कृतं॥ कर्कटन नीलानि पुष्पा नागाः
दिना नद्या नद्या प्रवाहं काहिला॥ उत्तसा वनिकना स्थवं॥ वृद्धपुष्पा नूला वनदविडभा विन नत्रा॥ मृदा गुणमयं कृतं सर्वदा ३२२
विवर्जितं सर्वपापविन न्यानि सर्वकेशिषना ननं॥ सर्वापदवा विना न्याय सर्वदृष्टनिवा ननं॥ इति नमस्तु गे निसदा सो
र्यां रुत्तपदं॥ नवया स्वयं मातृ वजा हाहं सर्वसम्पदं॥ स्नानादिकृत्वा मातृ न्या हाहं सर्वलपदं॥ नमः॥ नमः॥ अहि रुधिरं

रुद्रि नवाचन॥ नमः॥ समस्तानां कृत्वा कृत्वा दनी नगा नवी सप्रति निर्वृत्य वनिकामि व पू॥ पुनः कृतं॥ नमः॥ पुनः निर्वृत्य
स्नाना मातृ वजा कृत्वा न्यामानि नमः॥ हाहं कृतं ममा रुद्रं॥ साधु सत्यं वृत्तं वली कयद्या नवान॥ मृथ सत्यं विदुः सति
नमना रुधिरं मनस्य जागो वृद्ध विरुत्तसा दया मास॥ नमः॥ देन मासात्य नव नमस्तु दहवत्॥ मृदा वृद्धे प्रवाहि अचिंत्यं संपदये
दं॥ हि को वा नि प्रसज्जा दा विद्युद्दृष्टं नगं॥ मृथ सत्यं विदुः सति कृतं सत्का वनसु पेषु नत्र मयं कृतं मस्तु॥ नाना गे न्या द
कनत्वा यनं कृतं॥ सर्ववत्सविनं सर्वं न्यापितं कृतं॥ सर्वं न्यापितं सर्वं न्यापितं॥ सर्वं न्यापितं सर्वं न्यापितं॥ सर्वं न्यापितं सर्वं न्यापितं॥

विदिउ

धर्मश्रुत्वात्स्वरुवनंगन॥ हनपूर्वाहिकवपुहववत्तोरुमत्यनथागनस्यकाउरुपतानकनपूरुग्ननमहाधमाहन्॥ न
नयश्चात्सुवर्धुमयकमानिर्जनैवपुनिभानवभात्सुवर्धुकटाग्नवमसहस्रगपुपयेन॥ यवाहिकवःभिकिनवा॥ ॥
ॐदमवाचरुगवानारुमनाहवहिकवासाश्रुसवावनीपर्वसदवमानुषासुवगवृद्धगधर्वश्रुगवनागविनमत्यनदत्रि
नि॥ ॥ निश्रीविदिउकधिकावदानंस्तुविभानिनमाधाय॥ ॥ उपगुप्तावाव॥ भृगुवाजमहावाहोस्वपं
गधर्वनंरुलं॥ वृक्षानांवेत्यविमानां॥ वकलाकाथहेनव॥ वृक्षानांवसर्त्तपानांकंकुमादिप्रदानन॥ ॥ हलाकसुखंडकाह

३२१

निष्ठासिस्वरलीलया॥ काभीवनीलादिकवन्दनानि॥ ददकिनसोसुगमाहमाय॥ नञाप्रवकिश्रुमनादिसुलयसुसुगधद
हाखलममनूया॥ अथकदाविहिकवाहृगवासकृमायवृक्षामानिन॥ पूजिमावाजाहेवाजमाये॥ धानिहियेव॥ सार्थवा
ह॥ दवेनारिगेगेवृउमहावगेविदि॥ अथविनावृक्षारुगवानुनामहापुष्पलाहीवीववपिपुपाउभयनासनलानप्रत्ययसेषक
पाविकावाभांसञावकसंधनमहमासकावमपूजिनवाधर्मप्रवमाथ॥ नदावृक्षारुगवास्वंप्रहावंददर्भयेनयमापूत्रमनस्त्रि
नामानमददपुहानार्थपर्वसाधर्मदनिनवान॥ नहुत्वासहाप्रिनरुना॥ समादवक॥ नस्तित्रवसवमदाकृवाजगृहमहान

विविड

गवः नमसो गन्धनीर्धनामवनिगभीनः समस्तधनामहाकाशाविस्तीर्णपवित्रानकाशास्त्रुपूर्वावविद्यानादिद्विजनसमाधि
नाहादवनागमनूयैश्वर्यमानामहीयसिोक्त्यादित्युक्ताहृन्नाधर्मयातामहीयसि। महिषीनस्यमहाभीला। नाम्नावृषवनीसु
ना॥ नसिन्नवपुर्ववस्यसूगन्धनीर्धुवाभिजहामहाकाशांमहाभान्यामहाजनामहापनिहा॥ सुवर्धुमभिपूजादिसर्ववत्समचिन्त ३२२
हाभीनपीनवक्तादिनानावक्तादिसंपूना॥ महीषीणाकृतापन्नवाभिजावनिजोहमहावर्धुनालासमूहादृष्ट्याकृष्टग
हाधिपहा॥ दवाभिगुवमानिथापिहयकृष्टयेववनिह्यमवार्यनदनवेत्यविचार्यनपूना॥ जयविजयकार्यपूनामादानकर्म

सु॥ वनिकृषिकाथेपुपुयाल्यशूनित्यसमाश्रुयेनदहवहस्येकालनरात्मजसहभकृताकृतमाननीन॥ न्यासहस्रविन
मिष्ठमि। नालावन्धपत्नीनस्यगुह्यश्वीसन्निहा॥ वृषजोवनसम्पन्नदककामिन्यवदुर्वा॥ उर्वमवचिवन्धपिलीनयासु
खमिष्ठमि॥ नदासविहयनयानपूकांकिरुपिनावासाकंकिधर्मरुलापजीविश्रुतीन॥ गृहमपिहथाकविश्यामीदिजाना
पिनावासाकंसमूडवनिगसीन॥ न्निविहयिवास्वपत्नीमूवाव॥ कादमकर्मभाउर्ववागेगुलंजानास्मिनाहंवनाक
नमहासमूडगुंमिष्ठमि। त्वागृहावावंकृत्वादिष्ठमिहाहीनमि। श्रुविवन्धगामेधामिममावदेवपूजाकृत्वावेवमालं

विचिउ

मासाहसंकुवु॥ नकुवायसुवाव॥ महुहिनायहर्हात्वंकथांमिसाम्यहंनन॥ विरभेववलाजामि॥ कावकदिगृहमव॥ कसे
साधयमडयपूजावाहनविधेन॥ ययसिपूर्वउयन॥ ननभाकाहवउहा॥ केमववकहिउवो॥ लंभजवयइहवम॥ कमीत्य
हिसदाइ॥ वंसंसावसुखनाकुक॥ वरुडयवमानितुंलंभइ॥ वमहहय॥ ननिवयवकडयसाधयमाकुवयमा॥ हर्हाउवा
व॥ गूल्मावदसिका॥ नकुलधर्मपूययम॥ नीवनमहमावायेकुलधर्मनवर्जयन॥ विरभेवगृहस्थानाधनमूलकुदहिनां
धननायेविहीनस्यकुमामिउंकुन॥ सुखंउयनेववभासर्वपूमानययिधननवा॥ धननलोकसत्कावयासुनरसाधयधनं॥ पून

३२३

पुनपूजाक॥ कोभांविहीनविद्यामापूवीचासीत्मनावमा॥ नसिनवपूववभसूवआगृहनायक॥ दावोवआवनीनामनूय
जीवनमसिमा॥ महाधनामहालग॥ महाआन्यामहामा॥ वरुहसावकपूजासर्ववत्समाचेन॥ कयविजियकार्यपूउदा
दावकर्मसु॥ निधाजयसार्थपूजावानिकायमहामनि॥ मध्यमंनगृहदकंवावहावकानेपूकं॥ निपूकपूजयोजायवायालपूय
थावलं॥ किंविवाजानिसंपत्रा॥ सदावानिलयाथिन॥ श्रूयेनदहवहसि॥ कालइ॥ वस्यहृकं॥ नस्यपूजामहाहृकं॥ कनिशम
दमाहि॥ उदावदानसंपूकदमादमा॥ नवउयं॥ कानवसुंमाहुय॥ केउयविनापून॥ वउं॥ किलनायकआ॥ नकुस

विविध

सदा भग॥ वृद्ध किं ता हं हं विम॥ आह दीन इव ल॥ वृद्धं वृद्ध विलापं विलापलापस्तु नाहल॥ हा माताधिक विना यस्या
दृक्कर्मानि याजिनः न सुखि जातव किं भय दत्ता॥ सर्वत्र च वृद्धा॥ दंभा ईमं स मन्त्रा न गना न गव्यून॥ पुनः पुनः गृहा मृहं
मृक्का रं प्रमिती क नृणां मृत्वं॥ दही लूदी विनं धन वचनं विना यमं॥ कवि दीना भूतं ही ना॥ कवि ना दी विनं कृ॥ स मृत्कु ३३४
यद्गुणं कवि कवित्विष्टु वकर्कभयं॥ यक विगुण कवा कं च कवि कलह विग्रहं॥ ॐ सुयालं हं यामास देवा ना यनि हं कुना
वनि कृष्ण महात्मा ना नि सुभाल सुलेन व॥ म सा च देव संयाग स मा गे कुनि देह क॥ मृत्कु ह्य महा पायी का दीभी का

पित्रं वृक॥ निवी कृमदिनं नृनिर्जनं जनवं विडं॥ यनि कस्मिन् महा क ह्य वृद्ध व्याहिला हि न॥ किं कनामि क ग दृमिका
जुमा मूर्धना ह वृत्॥ ॐ निमन सिस्त वि सुभने सं च न वचनं॥ का वं च न मया वाड किं हं ना मि धनं कृ न॥ विरभे दे सिं कृ ना या न
भूनां वाड दिभं मम॥ विला कृ न वृत्ता सीनं सर्वा लं का न ह्य विनं॥ वनि कृष्ण महा ज क दिनी यम क व ध ज॥ किं चि द्रय नि ह्य
पून न वला क या मा स॥ कथं दीन भूमा स्य वि नि जा नि हं व वा कृ लं॥ भूत्मा हा ग उ सा द ने जा हा हं धन वा धन॥ भू वा न त्म द म न्त्रे
वनि कृष्णं स ना वनं॥ जा ग र्हि नां महा हा ग कि म का की न मान स॥ न न हं स य वि क्रे न न व नि कृष्ण ग वी म ना॥ क ह्यं कृ न स

विधिः

माया न ४ कनवा प्रविष्ट पुनः ॥ डिह कडवा ॥ हस्त पदं तया आर्चं हीनदिना कलं पुनः ॥ नवक श्रयनादाय विधिना प्रय
त्यये ॥ वनिक पूजा वा ॥ उरु इदी विनं मह चनं च न स्य प्रवा विना भिन मुख ४ स नने मूवा ॥ सत्य नवा सि कनू भा मयि न च
नी प्रं लल समो दिन उका नू निकारु मन ॥ डिह कडवा ॥ कथं इ ४ व म वा प्रा नि महा दा वधन स्य ॥ किमे नि मु क न विरु बू हि
हा वयिन नन ॥ वनिक पूजा वा ॥ वरु न वधने न न का व का शा दिसं पू नं वरु न ल स न ह स्या न कला क प्र वा न नी गृह पानि कू
लं य श्र वार्थि का य सू चे आ वन पानि उ नि स्या र्थि न स्य पू जा सि इ ४ र्वी ॥ पुन न वि न ना स्य कू न न उ दा ना दा व दान पु नि पू ला ह

३२१

नया नया यि प्र नि दिनं पूर्वी पल न न ग वं पु ग हं प वि प र्य प ट न उ दा ना दा ना दान वा कल स न नि स्य म व इ ४ र्वि ना हं ॥ इत्या क न्
डिह कडवा ॥ हस्त वा धि मा इ ४ र्वि ना ह व न ॥ न स्या या य सू र्वं ये न इ ४ र्वि ना ह व न ॥ न स्या या य सू र्वं ये न इ ४ र्वि ना ह व न ॥ न स्या या य सू र्वं ये न इ ४ र्वि ना ह व न ॥
कं गाय य नि रु म ति रे ॥ अथ व नि कू उ न स्य व व न मा क न न न द मान स न व रू न ल क न का लं का ना दि ना सं पू क व नि कू उ न स्य गृ हं ग
त्वा य था क वा हि न ४ ॥ अथ सू च आ ना म गृ ह प नि वि रु या मा स क थ म या यि पू ज वि लं वि न न ॥ अथ क न वि न नी स मा ग ल्य उ न मा य
वि ना नि ॥ अथ सू च आ ना म या यि दि न क नि स मा य न ॥ पू जा वा ॥ अथ सू मा गृ ही नं सू व नु ल क ड यं ल क म कं द रु चा वं रु न ल क व

विचित्र

संग्रहनां॥ वत्ससूनदमाश्वंकुहिसंपदकावर्गयथा॥ संपदंकीयनयनइस्वमवदिनदिन। महत्कसंवसादयं यदि वाहूनिमि
हृदि॥ विनाइस्वमसंपर्हिमाकांकादिचयनवा॥ जथाजलनिधेयलपूइयनमहत्तवं॥ नदनननेसुवइगृहयनमागनेम
हावियहिवहू॥ गृहकलहात्यादविनाधहस्ययविजनयनस्यवंइमंवनधन्यादिभस्यादिकंविनामिहमहाइहिकेदविडमहत्त
॥ काकमूहमयिकथादविडाहविचयीनित्यामहंवकामि॥ पत्युवाव॥ स्वाभिंविनाकथंनयनिकामिवाहमेककी॥ चडमवाहना
नाडीवधकावगृहयथा॥ पुनश्च॥ यस्यास्मिधाविनाहर्हानकयनयनंययि। हूमोयनिकमास्यानिविभुनिभकनीयथा॥ हवपू

२३७

लाहवृहन्निनानीपूष्यरुतानिच॥ कस्यास्मिनागमचिरुंदृष्टीपूविमादिना॥ मृदाकविहमानंग॥ सत्ययनकथंउज्जनाकू
यथनयदागच्छुपयननावकाहिस॥ विभजनस्मिमाधर्मप्राप्यनवसुदत्तह॥ नस्यात्संजासिमांस्वामिमांमाहजउजस्वयं॥ क
कस्यहना॥ मृगूकककभंस्वामिपूहमममानविकविह॥ मनसाविकयात्यायेवन्धहवदिप्रदिउता॥ हर्हउवाच॥ क
थंवेन्धहवकाकस्वामीहकिस्ववाविनी॥ मनसाविकयामाणेनिदमाधर्ममहत्तं॥ पत्युवाव॥ मृगज्जनगववासी॥ द्विभालप
विभाहिना॥ विदकूनसमाकीकुसूजनयविवासिना॥ मृगामहाधनामहाहागसाथवाहनिवासिना॥ प्रदिउतासहिगयासी

विधिः

वसन्तसुखलीलया ॥ नमो दत्तात्रेय गणेशाय नमः ॥ विहाय प्रविशता दत्तात्रेयानि विरुवा निव ॥ रुडुं नाननूत्तु वसु
रुदत्तसुखलीलया ॥ मुक्तस्याभवी नात्यहिक्रमं यविपीडिता ॥ उपचा विनसुनसुखवेद्यमाहूय दर्शनं ॥ वेद्यनहसुसं पृथग्धमनीवीकृ
नपुनः ॥ नागदंष्ट्रा विवायो सोपत्याग नसुखं गृहं ॥ भूवेननास्मानि याना नीपू स्यामिनासु मन ॥ भीतली सर्वकायानि सावहा मनेमने
॥ कन एषं मेयिहसं कन एषा मनेमने ॥ अहह पोदूधसुं पृथग्धमनीवीकृ ॥ उपचा विनसुनसुखवेद्यमाहूय दर्शनं ॥ वेद्यनहसुसं पृथग्धमनीवीकृ
नमो दत्तात्रेय गणेशाय नमः ॥ विहाय प्रविशता दत्तात्रेयानि विरुवा निव ॥ रुडुं नाननूत्तु वसु

२३१

सा नूपलावम् ॥ अहिना ॥ अविनभावका मभूकन्दर्यमदगर्विना ॥ नमो दत्तात्रेय गणेशाय नमः ॥ विहाय प्रविशता दत्तात्रेयानि विरुवा निव ॥ रुडुं नाननूत्तु वसु
कामवनी पंचत्वमूयगमानवकपदिना ॥ स्वामित्रहमयिन आह विद्यनी ॥ नमो दत्तात्रेय गणेशाय नमः ॥ विहाय प्रविशता दत्तात्रेयानि विरुवा निव ॥ रुडुं नाननूत्तु वसु
हामिनं ॥ नह विद्यारुधा त्वहि सदिष्टदत्तवसा ॥ ॐ सुखासोगधनी भुवनिजा पत्नी वचनमकृत्वा यन्ममादाय वरुहि नमः
सहस्रवनिभूते ॥ सार्धं महासुपुडमवनी भुः ॥ नमो दत्तात्रेय गणेशाय नमः ॥ विहाय प्रविशता दत्तात्रेयानि विरुवा निव ॥ रुडुं नाननूत्तु वसु
पूजा र्थं स्वामिना ॥ ॐ कृष्ण उपाविनस्यानवा सूरुर्ग्रागदुदि ॥ साउवाच ॥ हर्तुने वागनकसा दीर्घकालं गमावनि ॥

विचित्र

कदा ऊजविना संगनवपूजा दयं मम वयसि गत विमोक्षं वं नृपान संभय ॥ न स्यात्तु सो गन्धर्वा नृना गतसु विभग
वददयं नमः कर्मलपं नमिषु निदीनमानसः ॥ अथ सो गन्धर्वा नृवनिजः परमासक्तं नमः विदमिजः पुत्रागः ॥ वनिजं
सूगन्धर्वानि नथा गता यनिर्या नयसु क्ता यदुल्लसं नान्य वनिजः हस्तदत्ता प्रथमं ॥ न ता वनिजा न स्य पत्न्यो हस्तपदं समय २३८
यनिः न दानस्य पत्न्यो गृहीत्वा लवं कृमलं वारु प्रपद्य ॥ कृमली हस्तमहर्त्ता सो कृमलं सर्ववस्तु कः सिद्धानि सर्वकार्यानि मा क
श्चिद्गुणाय वपूः सा वाच सर्वकृमलमोहं पीत्वा स्वगृहं गतः ॥ अथ सा न स्य पत्नी हर्त्ता अगमिष्यतीति विना गताऽक

नि नमनाऽनिष्ठानि नमः पुत्रा गतं वासि न स्यात्तु देवया गतः न च वलनो का वरु वलनया नृपः न च नृपः नृपः नृपः नृपः
मउदी विदं कृमलं नमः यो हस्तमना सो गतं गतः ॥ अथ विमोक्षं नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः
मुनिजीवं वापि प्रमस्यति ॥ वारु पिना गतः स्य मृता पिजी विना यवा ॥ अगम विमोक्षं नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः
सूजमनश्च वरुणाधर्मा नृपः कृका वसा हस्तः नथा पि न स्यात्तु हानन नृपः निवान क दव स्य वलन नि हर्त्ता ॥ अथ सचि नृपः मा
सखा मिनाऽहिना निवाऽसूगन्धर्वा निवृत्ता यसूगता यवा ॥ पूजया मी कथं वाऽनृपः कृवाऽनृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः नृपः

द्विविध

स्मवृक्षपूजानिवाविमं॥ अथ सावित्रीयामास पूजयामि नथा गच्छ॥ आसादभित्तवस्थित्वा च दननविलपयन॥ नानापुष्पधू
 पादिसृग आदिपुलकने॥ नानापटविमानेषु नानाकल्पविरुषिणं॥ अथ चामवसंयुक्तं मूनक यशुवादिने॥ अथ चैवर्चनिप
 त्तु अदिमालाहिपुलकिनां॥ मूनके॥ पुष्पसंयुक्तं ममलेषु पुष्पविनं॥ वलादिदानमालाहिनलंका वंययेकिनं॥ पुनरुमापुहः
 धनरुक्ते पूर्वचयैमसा॥ अविमं॥ च दननं वक्रं कर्मसहलं विनं॥ ननासा अंजलिं रुत्वा नत्वा रुसा दने पुनः॥ रुर्हामाये मृत्तानापि
 जीविमावायहि पुनः॥ वार्हायिना गच्छत्य कथं हं गव मून॥ सर्वरु सर्वदभित्तं सर्वलोकहिना र्थकभा दयासिन्धुमहात्मा त्वं

३३२

[illegible]

विविध

रमयपयत्ररुगवगासुगन्धादिदानादिनिःकृतासुगन्धमृतादवयुज्यनविमलकृत्तललमार्चलवविरुषिमगजवत्तूजकंकुमन
मालयजादिलंकनगाण्डमानवनाडिसुगन्धगरुधनसर्वजिह्वविद्यायजयजयगन्धस्वर्गलोकादवनीर्भुष्टलार्थाकाशागन्धयुग्म
न॥ नमोसांमंस्वप्नमययाधन॥ रुद्रोडवाच॥ काकजानीहितरुद्रोममेवमवर्णं पुर्वं नजानीहिमाहीनास्वत्वाकादिसागमहावृक्षपुत्र
वानाधनसुगन्धादिप्रदानमहा॥ दिव्यलोकसर्वरुद्रादिष्ठा॥ मिसूखलीलया॥ कस्तुरीलादिकवन्दनानिददन्तिस्मैसुगन्धाहमाय॥ नृपाश्रव
न्निष्कमलालयसुसुगन्धदस्तवत्प्रमनूया॥ वृक्षधर्मप्रकथनसंयुक्तसन्निविहृष्टवकाप्रमहा॥ नथाहवन्धममनाय॥ हर्षकल्याणमा

३४०

गमविवन्धनं॥ निजिनानुसन्धनस्वयत्नीधर्मपदमस्वहवनंगन॥ ननस्तुयाकथाविधिस्रष्टं ह्यप्रवृत्त्यनिमहाकुनवसत्सुजा
भाकाकुलानमानसा॥ नमोस्तुयासनास्तावदमिधमनसापुनः॥ सत्यस्वप्नमिदं कृत्वा इष्टवात्सुहृन्मनूवृह॥ वयधूनस्यनू
नूनमप्रवर्तिलाभना॥ नमोस्तुयासमाधनंननामसुगन्धायवे॥ वक्रमानरुगवान्भासाः ऊवृमार्थमूनग्रहः॥ सुखासुप्रसन्न
नरुगवान्सुगन्धाहमः॥ पूर्ववत्सुलंकृत्वा सुहोदिनानिभुजिह्वः॥ नमोस्तुयाकालवभासापियंवत्सुप्रसंगमा॥ उनीनजायजिह्व
यपत्रादवकंचका॥ नमोस्तुयाधिनीनामदवकंचाहवहथा॥ रुद्रासनसुखनेवस्वर्गनिष्ठनिष्ठात्रिवी॥ ननस्तुयामंलविह्वसुगन्ध

विचित्र

सनादवलाकप्रपयत्रारुत्माहगवनसकाभंगद्यय॥पर्याप्तनायवन्दनायमिन्ददासुगधमृतादवपूङ्खीपूत्रोसुगधगंध
नसर्वावकंरुलित्वात्वमेववाडिसर्वजंनवनमहाविलावमैदावभावहास्यरुगवन्दनदिसुगधवर्षेयूवयित्वाहगवन्दपूवला
त्रिषरुधर्मप्रवमायव॥अथखलुहगवानुगधमृतादवपूङ्खीपूत्रोसुगधगंधपूङ्खीमिन्ददासुगधनीचउवायसुप्रमिदधिकीधर्मद
मनाकनवानुयांश्रुतामोडीपूवोविममिनिखवसुमृतादवपूङ्खीपूत्रोसुगधनीचउवायसुप्रमिदधिकीधर्मद
सदसुसुधाडिबूदानयमित्वा॥रुदमसाकंरुदकनमाजमकनानपिजनकनानवाहनदवकाहिठनसुगनवपूवगनिसुपूर्वध

३४१

ननप्रवमजाकननयहगवनासाकंकनं।श्रुयायवावानिविदिनानिस्वर्गवानानिप्रमिदसापिनानि।नवानुलावात्येहिदसुधा
नकपायमारगवकदाप्रयुक्त॥श्रुयादमास्वर्गगानिठसुपूवनिर्वमिलप्रमयायलसु॥त्वयादाप्रयाचाफमयनदाभनावय
लसुंविप्रवक॥मनसुभाकंपदकाकवानंमीशुप्रसुसावाभुपावगमि॥श्रुवनम्यहगवन्दनभावावसुहिवयसुहोर्गमि
यामठसुवलाकाहेमृतादिवजंमृ॥श्रुयाहहिकवायेपूर्वकजगानिकायागमनूयूताविहवदि।नदहाहगवन्दिकसुदियधुम
नाहगवन्दुप्रयुक्त॥हगवानाह॥प्रवमवहिकवाउमनाहलप्रययहिकवठनयागनाहकसम्यकंयूवासुगधादिमनूलेयनेवंग

विविध

कुमनूतययावदन्यमभाऽप्रहिपूजकस्य दानिकाहकल्याभासयासुगन्धचन्दनार्थिकमहिहगवाच्छ॥ ननाश्नेन कुमलमूलनयन
कांवाधिसाकाहूर्वमिहनाहगवदनधर्ममाखल्यसिनेदेवचयंहिकवाह्मन्धुमानान्यथायनामपिस्वयमवशुपूर्वदर्शनसुख
स्यानूलवनासाकं कालनविभाषाउमिउभवाह्मि॥ यायस्मिधर्मविनयशुभमहन्नावेशमिहवमहहिकवाश्नेनोदानिकयामम
वीवेधसकालकर्म॥ उवहृदयध्याननन्दप्रदाविकयाश्नेन कुमलमूलनविहास्यादनदयधर्मयवित्पागेनचसुगन्धमृत्वनामदवः
पूजहविशमि॥ नस्यपत्नीसुगांधिनीनामदवकन्याहविशमि॥ श्रयमस्यदयधर्मयाममानिकविहृत्साय॥ महानूससाहिकवहसुग

२४२

आदिदानस्यहलानूसंसाहसाहर्हिहिकवाभिकिनयं॥ ॥००॥ दमवावहृगवानाहमनाह्वहिकवासाधसार्ववनीपधसुदवा
मानुषासुवगवृजगन्धर्वधृगवभासाधिनमत्यनन्दनिदि॥ ॥००॥ मिश्रीविविधकलिकावदानेशुभाविभमिहमाध्याय॥ ॥
वाजावाव॥ श्रयवंप्राउमिद्यमिपुश्यामालाहर्नहलं॥ कुजायवधर्मायहावस्वकसुमंहलं॥ हिकवावाव॥ श्रुनाजप्रवकामिपुश्याल
हनयहलं॥ उमसिन्लकालकल्यासिंहसंरुहं॥ श्रुधेवंनगनवासीधर्मविजमयार्थिवहा॥ नहं वकावयामास्यत्तीधर्मवनीस
हमचहलं॥ नवकर्मवश्रीकीर्तिजनपूविमं॥ वरुमानयाससंपूर्णसर्वमहलसंपूर्ण॥ सुखइहवमहहस्यधर्मात्पागुनवायजान

विचिउ

दयावांधनवांविधानमहर्षिकमहाजनानां नस्याधर्मावनीदवीपूज्यवनासुमंगली॥स्त्रीलकमशुभांगमीवृषवावभयो
वनीययथायस्यश्रुतवापिउजानांप्रदियावेकानावीवक्रसमाकीर्तिस्वर्लिकावक्रवर्गीनगवीलकभाष्यमावक्रपाकाल
मावक्रा॥नस्यानगर्वाभावाभममकमसि॥नामापूष्यसंकृताऽलजस्थलजानिचामन्दाववानिपूष्यामियाविजानानिसानिच ३४२
यथास्यवादिहिपूष्येनानासुगधगधिनिनानालताहिसंकीर्तिनानापूष्यसुभाहिनानावक्रसुभासुनामयुवशुकसा
लिहि॥कृष्णसंक्रुजिनेआपियद्यदमूर्कमूर्कनागकमलपूष्येनानापूष्यसुभाशुभावनिलेपीनेहविनेधरधनवक्रसुव

शुक्रऽसुगरेधेकमलेयुक्तविविधानिचसपूने॥सुगरेधेकमले॥पूके॥पूष्यवक्रसमाचिने॥नसिनेवमावामंश्रुवामिकास
गच्छति॥नदावामिकयाप्रदिनंनस्याधानपूष्यात्रिचित्वायविरहकालमार्गंनथागतस्यकमनखसूयकवलेकानिपूष्यान्वव
वाहयकि॥सागत्यधर्मविक्रमवाहस्यदवाचनोयपूष्यानिविदाददानीनि॥प्रवंसाश्रुवामिकयाप्रदिदिनंनद्यावावनिथाजिना
ननाधानवाविनीहवनि॥नदनकवेकालेलकसंख्यागच्छति॥नदावेस्यदवनाप्रसत्रीरूप॥नयाप्रसादप्रदिलद्वन्द्वेवरुल
माप्यन॥साडधानयाविकायवमसुन्दरीरूपसुगीलस्वरावाहू॥शूनवपिकस्यागृहधनकन्यसमृधानानालकाववश्रादि

विविध

यविपूजनिहवदिहदासुखमनूययन। नदासुधर्माविक्रमनाह॥ यवमाहुनजाह॥ कथंमउयानयाविकया॥ सुहृकलवव
रुमंकाह॥ क॥ उयय॥ नयेवाचलाकापूला॥ कविदाह॥ नवहाकथंश्रुनामिकयावदिकायाविविधवफालकाववन
अन्यविहीर्षुविभालयवियह॥ वेप्रवमभनसमुदिनाहवदि॥ उवमवाचजनानाह॥ श्रुयप्रहाह॥ नभनस्यह्यायुंफाली
रुवाभावसांमहानगरींश्रुचममपूष्यभीलानामप्रजायसाजकोपयना॥ ननादभमासाययादाविकोजाना॥ श्रुहिदूयाप्रासाः
दिकायनमसुदनीसर्वमिवयवभवीनासर्वलकनसंपूजह॥ क्रमनासामहनीप्रवृत्ता॥ नदाहमवसुप्रवकसुध॥ अव

२४४

त्याचिहवामि॥ नवनश्रुनाथपिधुदसावामननखलपून॥ समयनभलप्रहजिकानाममावापस्थिरं॥ नजानकानिवाजापास
थोवजनपदग्रामनिवासेनजनानेकानिप्रामिभनसुह्यामिसनिवाह॥ नदाभलपूष्यामिश्रदायकीउदिवमदिपविवावय
दि॥ नदासा॥ श्रुहिदाविकासावपूष्यायादायप्रवदिप्रविभनि॥ रुगवानेहत्वामहापूष्यलाहीवीववपिधुयाहुनयनाभनल
नप्रययहमकयविकानाभासुप्रवकहिहसंघपविवृत्त॥ अवनीमहानगरींपिधुयववित्वानिर्गहृदि॥ ददर्भवृद्धरुगव
नंकाजिगनामहापूष्यलकने॥ समलंकनमभीत्यावानूयंजनेविवाजिनगमउवायप्रहलंकनसूर्यसह्यानिवकप्रहंक्रम

विविध

मिव नत्पर्वनं समनगाहृदकं दृष्ट्वा च पूनः प्रसादजा नासावपूष्ये नवकीर्यं बं विविधं पूष्या-समागृह्य सदा विकासमाया ना
वरुवजि सर्वं च जसमादयः। चंयकादिहि सर्वं श्रवणं मृगं मृगान् केशपाविजाने श्रुद्धं श्रुद्धं वाक्कुसुमके नयि। मृकं गुलीहि मृ
धीहिः कृदवीने सुधाश्रुपिसृगाश्चेमावामीहि श्रम-दावपाविजाने केश। कनकीहि मल्लिकाहिः कर्मुकाले श्रुद्धिं कुकेशा नागकं
लज्जमे श्रनागपूष्ये सुधाश्रुपि। पश्चात्पलादिहिः पूष्येऽलज्जमे लज्जानि च॥ नूतं नानाविधेऽपूष्येऽलज्जमे लज्जानि च॥
पूजयामास ससंबुद्धं सर्वं च अवकादयः। नृपदकिं नीकृत्य उदि निवृत्त्य ॥ नृपदकिं नीकृत्य उदि निवृत्त्य ॥

काहि नूत पमि नाह ग व न रु क ना प स्थाना सा काल ग ना । या व नाना लं क ना ख ग र्ज म कि की ड कि व म कि ॥ उ व हि क वा सा दा वि का म्र
ह र्म मार ग ना ना पू धो व न की र्म स आ रु हि हि क वा मि कि न य ॥ य रु धा ग न म्र काला प यि न वा स क र्म य गु व क र्म वा मान यि न य पू र्ण यि
न या प व स य वि स्र व म स उ का म यि न या ॥ ॐ ह र्म रू ल मा य न ॥ म्र य रु ग व ना व व न उ नि म्र स्र प सा द जा म न हि क व ४ रु ग व न म न द
वा व न ॥ रु ग व की द मी ना थ उ क पू य स य रू ल ॥ ५ उ का मा म ल वा हा व द लं ह न सा ग व ॥ रु ग वा ना ह ॥ उ व का मि स मा स न ला
का ना हि न ह न वा ॥ उ क पू य उ क न न स्र जि ना ल य म्र दा । ध र्म र्थ का म मा क व स ल रु दि वि ह न ल । द म्भं म यि न क न द म्भं म्र मि न

विचित्र

रुच्यन्तः सहस्रं न कक्षादि यरुहल्लं पल्लयन् ॥ भजाधिया प्रहागिस्वात्य धन्दुकादि सन्दनं ॥ मृगप्रपुष्पजलज नस्येन पंचवर्गकं ॥
विनालं सम्यदं वं भं ज्ञानुवा नैव सम्यदं नाना प्रपुष्पकीर्णं नैव जलजं स्थलजं नैव ॥ यत्प्रसन्नचित्तस्यैव प्रपुष्पं वाग्निं प्रजै किन्तं दवलाक
मन्त्रं वपुष्पं वंधारुवा नैव ॥ स्थलजं विविधं प्रपुष्पं दयारुहं जिनालयं ॥ श्रवागंधं सम्यदं तोत्वां ज्ञानुवा नैव मानवा ॥ काटिप्रपुष्पं
नैव स्थलसंस्थानं विधन् ॥ वांश्चधिकरुलं क्षाधि ज्ञानुवा नैव मर्त्यजा ॥ ऊर्ध्वमांजं त्रीहिसंस्थे जलजं स्थलजं किं यन् ॥ नभाकमधिः
गच्छन्ति मानवा दयमर्त्यजा ॥ मूकप्रपुष्पास्त्वानी यत्प्रदक्षीवसंघं क ॥ जाम्बूनदसमालं गकर्षाधिकरुलं लल्ल ॥ वरुप्रपुष्पं विधया वि

कलजसूत्रादिकं॥ दवलाकमनूधपूवाजाहवनिनिधयं॥ मालाहिविविधेसुसोडदोवेधुजिनालयं॥ सोरगानिलसमनूनंदवला
 कमहीमले॥ जाचूनदमपूवाचननाधिकरुलंलरुन॥ पूवाचविविधेनूनंदवलाकडिलाकिपू॥ विद्यार्थिदंडत्यलेश्वकामंजमूद
 वपियसोरागंमालनीहि॥ अजानीहि॥ कलरुदिकं॥ सूत्रयकनवेपूषंक्रुअदिहि॥ सुखदंड॥ विपूकयंवमयकेश्वनागपूषेविल
 यक॥ श्रीपदकमले॥ अपिउदपदं॥ कलमये॥ लालकिपूषं॥ वसुदं॥ चपये॥ अधनकथा॥ नागकमले॥ अरुदं॥ वपूना॥ ग॥
 निदं॥ वं॥ मय॥ मय॥ वाजि॥ न॥ विद्यादं॥ कलादे॥ सिद्धिदं॥ कथा॥ भाकदं॥ कववी॥ न॥ धयी॥ नादी॥ वलदं॥ कथा॥ वं॥ श्रीपदं॥ वापिका

विदिउ

किलके ४ प्रवर्धनं वरुदंग भके आयेरुवा ऊसुमे भूमा कदं ॥ पालिजा न भउ वार्ग भूयुदं या विरुदं ॥ भूमा के ४ ॥ ना कहवर्ग
ऊसुमे पद द नथा ॥ मा कदं कटकी हि भूयान लिहि भूयुहि दं ॥ भूयिहि ग भिदं ॥ आयि मही का हि भूयु नदं ॥ का वि दा नी ना नि
कं व ऊ ऊ मे स्वर्ग द नथा ॥ व भू दं माल नी ॥ हि भू म भू दं म भू व व पि ॥ दो म वे ग भू दं वा पि का नि के का नि व सु दं ॥ कलं जे कल हं न था किं ३४१
भू के ४ व रु व रु दं व रु दं क भि का वे भू क द नी क द क नथा ॥ किं जल क ग भि हि ४ भू के ४ भू य व मे सु ग भि के ४ ॥ ग भि हि भू के ४ भू योः
किं जल के व पि ना सि के ४ ॥ बा र्वां गु मे र सु सं भू के ४ जल जे रु ल जे व पि ॥ न सो भू यो प ठी क न म भू मं व रु लं ल हं ॥ न ग भि हि न किं ज

ले भू यो द या किं ना ल य ॥ सर्व द वा भू मा नू यं भू य मं ल हं रु लं ॥ भू य वां वि वि ले भू यो ४ जल जे रु ल जे व पि ॥ ना ना भू यो प ठी क
न ना ना रु ल प द ल हं ॥ एक भू यो प ठी क न क र्ज जा भू न द स व ॥ न सो भू ४ रु लं या य सर्व व मा न वा द य ॥ प द ४ भू व य पि
न मा क म भि ग द ॥ ना ना भू यो प ठी क न ना ना रु ल प द ल हं ॥ ना ना वि ले भू यो ४ ना ना रु लं भू ल हं ॥ एक भू यो म रु लं हो
भू यो व न भू यो ॥ भू क वे न भू मं द या ॥ काल के म भू मं न था ॥ क सु मे भू रु मं वा पि रु ल दं व जि ना ल य ॥ भू रु ल प द कं द या भू क भू
यं न था भू यो ॥ न सो जि ना ल य भू यो नि ४ रु लं य रु लं ल हं ॥ स्व क वी ज सं ज न ना ना भू यो द नो जि न ॥ ध र्मा र्थ का म मा कं व ड रु मं ल

विचित्र

त्वमरुलं॥ त्वहस्तनसमागृक्षत्वरुस्तनप्रक्षकिं॥ उरुमंरुलमा प्राहित्वयंरुवप्रसादका॥ ऊयपूष्यंउद्येकमध्यमंलक्ष्मरुलं॥ विजि
 र्घंउद्येकनश्रुधमंलक्ष्मरुलं॥ त्वहस्तनदक्षीपूष्यंस्वर्वाद्यलक्ष्मरुलं॥ पूष्यहस्तप्रक्षकनरुवर्धिनसंवर्कं॥ श्रुधहस्तप्रक्षकनजल
 जहस्तजमपि॥ पूष्यवीजमनूष्यमहत्मासाकंचगच्छति॥ पूष्यविमानयमस्मिदद्यात्पूष्यमूसावक्रवर्त्तेप्रहंगीत्यादिपूलाकमू
 सर्वध्यादिगालाविविधहस्मिदद्यावर्जिनपूगवं॥ पूष्यमालेवलंकृत्यसर्वज्जुवनपूष्यप्रवर्जमेविनिर्हृत्तश्रुधंवांवरथकथका॥
 नानाविधानिपूष्यामिश्रनकज्ञानिरुलं॥ नाभ्याकं वमयाकवित्सामान्यपूष्यकस्यव॥ कथिर्नजिननाथस्यपूष्यानां सर्वनकिल॥ से

३४८

[illegible]

विधिः

इति विधिः प्रथमः नदीर्हि प्रस्ताः मन्त्रा विहितं नरुतासु नंदं हनि वृक्षस्य यत्सु क्रमेण ४३ किं नदि पूजां ॥ उवच कुरु मं मत्वा सुखाम हा
रुलं पुनः ॥ वृक्ष पूजां उवाह नि विविधे क्रमेण नय ॥ नयथा ॥ हि जय हिं ॥ मधुवनं मधु पूषा का मिनी नाम दकं न्यासा पूषा मानमा नूक्तस
गं सगा ५ मम नि ॥ पश्चम नय विवा वा दव क न्यासा हा यय विरु ४ न ना कम ४ सा मूषा का विभी दव क न्याना नानी लरु नि न पी न व का व द
न पूषा विमाना नूक्त मजा दव उ स्य सु धर्मा यां दव सु हा यां समी य मूषा सं जा ना ॥ अथ इ वा द दर्भ मजा दव उ सां दव क न्यां पूषा विमाना लं क
ना मूळ क क मला दं हा गा यथा यत्सु म न ॥ मूला मूषा अथ मला नूला व क मल मूला नं ॥ अथ ममा हिला म नि म ज नो या ॥ नि ॥ ॥ रुग व

३४२

नाहा ॥ उवमवान देव म न ना रु उ य य को नि क न ग ना र्ह ४ स म क मूषा सि नं जा वि कुरु र्नि य म्भ दव उ न न क सुं का वि नी
दव क न्याना मे वं वि धं स क्तार् व क नं रु ग व ना उ वा द व उ क सु म का वि नी ना माने न ज मल मूल न द य ध र्म य वि हा ग न वि हा त्या द न च
डि क त्या सी य य स मू दानी नां वा धि स मू दानी य म हा क नू म य नि हा वि ष या व मि ना ४ य वि पू र्य दि य पू षा य त्र ना म स म क मू षा रु वि
या नि ॥ द ग हि व ले मू रु हि र्वा व धे हि वा का ने ४ सु पू उ स्या न म हा क नू म च मू य म स्य ध र्मा या म मा नि क वि रु उ सा द ४ न च य क
व नं म जा द व उ द व ला क य वि वा वि का ४ प्र ला च य नं वि स म मा य वा ४ हि क वा सं ग य जा ना ४ सर्व सं ग य रु ला वं वृ षं रु ग व नं उ

विधिः

॥ हृग्वन् आह मिच्छामिच्छामिने विप्रदानस्य यत्कृतं न सर्वत्र हि वादि च कथासु गतस्य राज्ञां । उवमूकं हृग्वानमेव वाधि
सत्त्वं महासत्त्वं भवमाह ॥ अथ मेव यज कस्मिन् न वं कालसु आवकस्य ४ राजगृहं विह्वामि । आवल्यां महानगं यद्विभूनेन कवभुनि
वासं ॥ यदा वाह ४ विधिसा वमानं कपो वज्रनां मात्य पविजनसार्थं वाहमहाजना नैकजान पदग्रामवासि नैकजानि गतसहस्रयनि
वानगस्य निहृष्टानि नयानन कृत्य यत्कालं सन्दर्शनार्थं वृक्षा यने विप्रयूजा सर्वरुनार्थं गृहं विह्वन सन्दर्शनार्थं वृक्षात्पादवक्रमा
न सन्दर्शनार्थं च हृग्वन्सु आवकस्य ४ राजगृहं हृक्ता नायनि मरुति ४ माधेग कानां यो वागमाह दहो हृग्वानग नैव वं नै विद्यादि

३५१

पूषगन्धमाल्यविलेपने ४ पूजा कर्तव्या । सर्वत्र राजगृहं नगवमपगतया वागमसर्कवक ० न्नयवस्थापयितव्यं ॥ नानाप्रोथे ४ नाव
की ॥ मुक्तिरुद्ध ५ ध्वजपताकं यावच्च वं भुवनं यावच्च राजगृहं मजा न व सर्वमाणा विधि ३ ४ वं ४ नानाप्रकाशानि दिव्या
रुद्रियमिमिनि ॥ शुभाले ४ पोने ४ सार्थं वाहे ५ सर्वमनुक्तिरं नको राजा विधिसा व ४ स्वयमेव हृग्वाना मुद्रि भन मलाकं ५ ५ धा
वयमि ॥ यवि ॥ यापो वा ४ हि कृतसहस्र ४ शूनैक वाधिसत्त्वं महासत्त्वं ४ शूनैक ये आवक भन सत्त्वं स्यात् ॥ शुभ हृग्वानदा नादा
नयविवा ४ भा का भा नयविवा ४ मूला मूला यविवा ४ श्रुत्वा श्रुत्वा यविवा ४ विनीता विनीत यविवा ४ श्रुत्वा श्रुत्वा

विचित्र

नयनिवाव४वीननागमवीननागयनिवाव४आसादिकाआसादिकयनिवाव४वृषह००व०गमयनिवाव०गज००वकलहगमयनि
 वृन४सिंह००व०उ०गमयनिवृन४वजह००व०ह०गमयनिवृन४सूर्य००व०य०गमयनिवृन४विष००व०नि०गमयनिवृन४मृ
 ध००व०न०गमयनिवृन४भूव००व०पू०गमयनिवृन४द०निक००व०३०ध०गमयनिवृन४सार्थवाह००व०व०नि०गमयनिवृन४प्रसीव०
 वजनयनिवृन४काटवाज००व०म०दि०जनयनिवृन४च०ज०व०ही०व०पू०स०ह०स०यनिवृन४व०३००व०न०क०गमयनिवृन४सूर्य००व०व०स्मि०स०ह०
 य०यनिवृन४ध०न०वा०हू००व०ग०ध०व०गमयनिवृन४वि०वू०ट०क००व०ज०हू०गमयनिवृन४वि०वू०या०क००व०ना०गमयनिवृन४ध०न०द००व०

[illegible]

विविध

अहवनि। यनिपूषडियविकलाब्धियानिपूषानिपुनिलहक। मदमदाकिज्ञानिमदाहवनि। विषपीजनिर्विषीहवनि
। मूयान्यवेविस्मयेडिपुनिलहक। पुर्विभस्वस्तिनायजायक। वधनवंधामयक। मूधनाधनानिपुनिलहक। मूधवीका
धदवाइसुवगवृद्धकिन्ननमहोवगमदिव्यपूषवर्षमूत्सुजनि॥ मूधरुगवानवीविधयाविहूया वाजकुलपुवमूलमालमालाजा
वविमिसा नस्वयंजर्ववर्हिवावसावसं। ममोर्ववदनादकनयायगृहीताहगवमहापादोहिकरुसंयत्रावकवाधिसत्वस्यच
पुकावयमिनेविद्यादिदानंददकिस्वोपनिषदुबूधपुमूत्वहि रुसंयविदिवाभनवसननेविद्याहवमपुनिपादयामासउक

२१२

वर्कपिमुपाजादिद्यदिनवान॥ रुद्धकं वावर्जिनामागधकाहोवास्तुमाहिकवसंयत्राताहसर्वसंयत्राहववृद्धरुगव
रुपयद्धुद्धमानिहगवनाक्रमलमूलानियनारुगवनाजर्वविधनेविद्यपूजाहिरुसंयस्यवनि॥ रुगवानाह॥ रुमपूर्वहिकवाइमी
नधनिमूधमा। अहिरुहयनिपुनिवसाने। आधामहाधनामहाहाला। विस्तीर्णयविग्रहवेप्रवनधनपुनिस्यधिनी। अहिरुपसनावस
आपूषतामहामोहल्यायननावर्जिहमसुनसावमाविनाहगवत्यह्यमहिरुपसत्रसचगहपनिवृद्धावाधिमूक्तमनापूषा-महा
मोहल्यायनमूक्तसहायामरुगवकब्धमि। रुगवमहनेविद्यादिपूजाकडुमिषाधिवासयसापूषा-महामोहल्यायनसुखरुहयन

विचिह्न

हृष्टीलावनववलिहृष्ट॥ श्रुत्वा श्रुत्वा महामोक्षलयायनसंगृह्यनिमाकां कनयनरुगवा कनयसंज्ञा कायसंज्ञा मरुगवदृष्टया दो
निवसावदित्तेका कनिष्ठ॥ श्रुत्वा श्रुत्वा महामोक्षलयायनरुगवदृष्टमिदमवाच॥ श्रुत्वा हृदयगृह्यनिमाकां कनिष्ठवदृष्टया व
कसंज्ञा जयिमिमि। नदस्य रुगवानाधिवासयनरुगवदृष्टया श्रुत्वा दायव्यधिवासयदिनि। रुगवानस्य गृह्यमहृष्टीलावन॥ श्रुत्वा सगृ
ह्यनिरुगवदृष्टीलावनाधिवासनां विदित्वा नवसमस्तानसने विद्यसंज्ञा कायरुगवदृष्टया प्रवद॥ प्रवृत्तधूयने विद्यादिश्रुत्वा श्रुत्वा
महामोक्षलयायननभजादवडाभिककीयता मस्य गृह्यमहृष्टीलावनमिदमवाच॥ कनयवदवानामिदमसर्ववधूयनं

२१४

चन्दननिर्मितं वा वदस्यमिदं कनागसह्यानिवातयंजनसह्या मृत्तानिथविचिह्न वा यस्य पियपं वनिष्ठुचूचूहृदिनी
वा स्य कानिगधर्वसह्यानि उपनीतानिथविचिह्न वा येषामेषा येषा कर्तुं निदिद्यं चने विद्यहाजनं॥ नदस्य गृह्यनिदिद्यमानूषेय
कवलेरुगवदृष्टया स्य सर्वाश्च नरुगवदृष्टया दयाप्रनियस्य प्रनिभनं कर्तुं मालस्य॥ श्रुत्वा नकुमलमूलनाहृष्टीलावनदयच
र्मपविद्यागनवाचलाकनायकं यविनायकवृक्षारुयामिदि॥ ॥ श्रुत्वा रुगवानस्य गृह्यमहृष्टीलावनवधवाकर्मपर्वयवाच
हावालिहृष्टीलाविचूवदि॥ नस्यिस्मयश्रुत्वा मृत्तानावात्रिधवदि॥ निधुनिवा श्रुत्वा उर्ध्वहवायपयं नमवलास्य॥ श्रुत्वा श्रुत्वा

विचि

वीकीहिनसर्विन्मि॥हगवानाह॥नथागनेवतानिकर्मानिकृताभूयविनानिकान्प्रत्यनूहविष्यनिनहिहिकवाक
र्मानिकृताभूयविनानिगुहानिनकदाविप्रमस्यनि॥हन्पूर्वहिकवाकनीमधुनिपू॥अनामसम्यक्कृच्छालाकडदयादि वि
यावननसम्यक्न॥सूगमालाकविद्वन्लव॥यूयुधम्यभावाधि॥भास्वादवानांचमनूयानाश्रुवृक्षारुगवान॥अथपू॥अनामस
म्यक्कृच्छजनपदवानिक्तावनमन्यनमनाजधनीमनूयापू॥अथपू॥अनामसम्यक्कृच्छजनपदवानि
कावनस्वनाकाश्नूयापू॥अथपू॥अनामसम्यक्कृच्छजनपदवानिक्तावनमन्यनमनाजधनीमनूयापू॥अथपू॥अनामसम्यक्कृच्छजनपदवानि

३७७

कृच्छमनाचोमिनसाहिवंयउकाभनिषर्ग॥वाजानंकडियंपू॥असम्यक्कृच्छावाधिकेनेमेसुमाचययदि॥नदासनाजा
कडियंकृच्छरुगवानि॥विद्वत्सादजातापू॥युयुधसंकृच्छसत्रावकसंपंचीववाये॥उपाडसयनाभनप्रत्ययहे॥वकपविक्तावे॥
उपल्लयरुगवक॥संप्रत्य॥नानाउकाभानिनेविद्येनाना॥नेददानि॥नकडकंप्रत्ययंवर्॥हगवानाह॥॥महानूसंताहि
कव॥नेविद्येनानाजनस्यपू॥न॥काभायानिस्तनाजपडविष्टनासवर्ग॥अकवा॥सादस्यर्गसंवांस॥ना॥सुनपू॥वर्गदव
दन्नावक॥साहिवंनरुजनपू॥निहितामभनिदिवां॥अ॥कृच्छपू॥वायसंघविषयेविद्येनानाह॥नेविद्येनदोन

विचित्र

विविध
स्वमानवा दयमर्त्यजाः कृतीनः सुनीलाधीनाः आसादिकश्च रागिनः ॥ भाल्यने विद्यमाना ये न स्वेष्टमानवा दयः ॥ मर्त्यचक्षुषमवा
नसो स्वर्गेषु भूभृन्विवन्तः ॥ पंचयज्ञेषु पकवा दयामनूजा दयः ॥ मानवाः पंचगवित्वं लयं स्वर्गं लयं पदं लहन्तः ॥ ननु वेदादि
दं वापि पुष्टिं दं ननु कस्य केऽऽशिकारोऽवश्यं दं वापि शुजादि हि नन कदं ॥ लाङ्कयुपकादि वेश्य दयावजिनालयः ॥ स्वर्गमहिगच्छन्ति
भूभृन्महाजनं लहन्तः ॥ उरुमं गेयं च विष्टं मध्यमं च कृषिं च केशं ॥ भूधमं नलं च चक्षुषं च लयं च नाशं च यशः ॥ पूषं च श्रुतं च दं च कं च
नपिष्टं च दं ॥ भर्तृन्मं ज्ञातुं मध्यमं च विष्टं ॥ नानाविष्टं च दयात्मानवा दयमर्त्यजाः ॥ उरुमे नूतनं च भूधमे नव

३५१

[illegible]

विचित्र

लंघोदयादिउभं हवन् ॥ ज्येष्ठयादिउभं च लघुमानवा दयः ॥ हलप्लुतादिकं दया न्नं उवहृत्तिमानसा यथ हलमात्रा
निनिवागी सुखवा सदा ॥ हलं च हलहागीत्या सुने च मूलकं तथा ॥ यजुश्च यजुहागस्यात्क धक ॥ ४३ ॥ उल्लस्य ॥ वलाहविन
की ॥ अजीवून् वपनसादिकं ॥ दं वदो वयं न सो यथ दं लस्य न हलं ॥ विप्यलीनाग वं वि विप्य वी मूलकं तथा ॥ वे वि कं वि कं वा
पि ह वं वल वं म्रुपि ॥ म्रु कलं यजु कं वे वं हं ग वज क यं तथा ॥ जानि समहाग निउ उवधा उभ पुनः ॥ हे व कं ददो न सो निवागी
सुखवान् हवन् ॥ ति आनना सुव भूहा वाजाह वनि गो वं ॥ वा न पि ह ॥ लघा दि वं ना म य नि सदा वृजा ॥ दीर्घा म्रु का ॥ निवागीत्यात्

३५८

सहवदिविहृत्तल ॥ हं ग वजं म्रु कं वं श्रीख शु व क व दनं ॥ त्व वं वं म्रु क मूलं व म्रु ग वं ह विन की म पि ॥ उभीतं म्रु कं वा पि
दिष्या हलं न स तथा ॥ क म्रु लं क म्रु वं वे व जलां व जा नि हल क का ल्यं वल वं ग व र तथा म्रुपि ॥ खदि ना उ डि का मि हं या द या व ल यं
उ व ॥ सग ध म्रु वा न वी वं ज प्य न स म ही उ ज ॥ सग ध ले पि न म्रु गं च वी ज म ही ह व न ॥ स्व र्ग म र्थ व या ना व वा जा ह व नि स र्व च ॥
म र्क व र्व शु म वि वे ॥ पान द या जि ना ल य ॥ ४४ ॥ आ ह व नि द व न ॥ म्रु म्रु न ह ज न क र्क ॥ वि प्य ले ॥ म र्क वे ॥ पानं कृ ता दि या क्रि ना ल
य ॥ वा जा ह व नि ध र्मा त्मा म र्थ ॥ म र्थ म भु ल ॥ ए उ भु शि क र्क पानं या द या व ल यं उ व ॥ पान हा गी ह व चा सो स्व र्ग म र्थ डि ला कि म्रु ॥

विचित्र

ॐ सर्वं विविधं यानंदो नमो जिनालया। नागध्वसुभाहादिस्तुत्यापि नित्यं वाच्यं ॥ मे आयं सह किं करोम्यस्मिन्निपुणैर्जिह्वका
सुने, कृष्णवीनविद्याइव न विषयानरुधनाइर्जनान। स्तुत्यागामिभयिउसकसुगमामृपुं वनीत्वावर्ग, अप्रसर्ववसायरागवमि
नां जाप्यन्नदानादयन ॥ सुपुं सुवर्गसमचिद्व, श्रीमेस्तुत्याय ४ उक्तिनयुक्तं। अपूर्वतं व शुभदावतुप, अप्रानि विद्वानम
नउदानात् ॥ निर्जिह्वमेव लवीर्ययुक्तानलकीं समासाद्य वयनवजा ४ स्वाइनिहका निस्माप्रवर्दि, नेविद्यदाना द्वियदास्तुदम
न ॥ नेविद्यदानं व वं प्रमृ मन्नदानात्यव नहि। रुद्र ४ वार्हात्यव नहि, नत्मा नेविद्यगनीयसी ॥ अननवहिनायध, वववीर्यम

३१२

वास्तव। कार्यकावगउत्साहं, नत्मात्साहं विद्यन ॥ उरुदवावर्नवान्य, वदिजीजविनस्यनि। कालेउक्तं विहीनस्यकथास्तनं व
हीयन ॥ यथा मन्नविहीनानां, सर्वधर्मानिधीदनि। नत्मात्सर्वयत्ननेनेविद्यदानं उच्यते ॥ नत्माहृदिहि कवाउवांमि किं न वं
यस्तुत्सवंसकविष्याम ४ पुनूकविष्याम ४ पूजयिष्याम ४ भास्वावसेरुत्सपुनूकत्तमानयित्वायनित्साविहवविष्यामविद्यवंहि
कव ४ भिदिनयं ॥ ॥ ॐ दमवावहृगवानारुमनास्तुवहिकवासावसर्ववनीयवत्सुदवमानूवास्तुवगवूडगधर्वश्रुहगव
भाहाभिदमत्यनन्दनिदि ॥ ॥ ॐ मिश्रीविचित्रकभुक्तावदानं हि नहि नमाधाय ४ ॥ ॥ अथापुफावाव ॥ उरुसि

विविध

न नवकालमेव वा धिसुत्व महासुत्वाह गव नं प्रमये न द वा वरु ॥ हग वं अह मि अ पि दी प दान स्रुं ह तं ॥ वे ह वा वृ ध
म वा व द म ह न सा ग न ॥ न ना ह ग वा न क र्म रु द्धी मा स्रु य प र्ध दं त से मा ला क मे उ य मा म ह्ये व मा ह ॥ नृ नृ मे उ य व क्रा मि ला का
ना हि न ह न वे ॥ य नृ नृ न क अ ह वां नृ वा उ मा य जा य न ॥ ह न पूर्व हि क वा र्ही न ध नि मृ स र्थ ये क ल्य का न्ध पा ना म स्रु क व
हा ला क उ द या दि वि धा व न ग स प त्र ॥ सृ ग ना ला क वि द नृ ह नृ नृ प द म्प सा व थि ॥ सा स्रा द वा ना व म नृ या ना च कृ द्वा ह ग वा न वा ना न
सी ना ज वा नी मृ प नि ह स वि ह वा न स्य ॥ या व क्ता न्ध प स म्प क वृ द्ध स क ल कृ द्ध का र्य ह वा ॥ न न क या नि नि नृ प थि न ध नि वा न ध

३७०

नो य वि नि र्द न स्रु वृ द्ध ग वी न ग वी व पू ज्ञां कृ त्वा स र्ग मा कृ प वा य ना नि रु व नि ॥ नृ ह स्रु प म हा स्रा ह व र्ध न अ ज्ञा वा क म क र्ति य वे
अ नृ डा दि ना ज्ञा मा ह्यो वा ॥ जान य द य म्प सा र्थ वा हा गृ ह प न्था न्ध वां ज मि न स्रु ह्यो वि वि ध दी प दान ग न्ध मा ल्य वि ल य न र्द न
अ ज प ना का हि ॥ पू र्ण हि ॥ कृ र्वा नि स्य ॥ अ नृ प न म स म ध न र्द न व वा ना म स्यां नृ नृ म प द न म स्रु द ॥ म हा द ॥ वी म हा द वि ज्ञा कृ द्वा वि पू न
वी ना कृ न कृ प म क व व न वि ही न ॥ कृ ज पि ग म न म स्रु म र्थ ॥ ना म व वा र्ति य नि भू त न स्रु न द ह व न् ॥ अ हा वा क म गृ ह प न य न्म
वे ह्यं उ नि पू र्ण य नि ॥ न न्हा ह म व पू र्ण य यं या द या नि वि ही न कृ द्वा वि पू न वी वा व ग म स्रु म र्थ क र्थ ग ह्य मि स्रु क्ता न स्रु म न सि वृ द्धि वृ न्

विविध

पत्रं॥ म्रय नो जो सु काय विरुव वल ल्हा मं व सृं न र्थ गृह्ण त्रि काम य य नि कु म्भ य यदि स म र्थ म स्ति ना ब ह स्ते रू पा य प्र भा मं च य
द कि र्म म न स ह स्त की य न ॥ न स्ते रू पं नि हां प्र भा मं व की य न मू द ॥ प्र भा मं की य त्वं व मा कं स प द न न ॥ उ ह्मं व नि व सी नि त्वं स रू न
म म्भ म ह लं ॥ इ व भा पि प्र भा म स्य रू लं व वि य न न न ॥ म्रु ल मं ड प्र भा म स्य क न पा दं प्र ल त्व न ॥ स ह स्य न प्र भा म स्य रू लं स रू न
वि य न ॥ न्नि म त्वा व मा नू य प्र भा मं की य न म या ॥ ज ग मं स र ग र्म न स्य रू लं स रू या न वि य न ॥ वा धि स त्व प्र भा म स्य ॥ नि मं ल त्व
न रू लं ॥ हे कं व हि क नी चा पि श्र व का जि न स व का न् ॥ न म ह्म त्वा प्र भा मं द न व रू रू लं प्र ल त्व न ॥ न्नि म त्वा व मा नू य प्र भा मं की य न म या ॥

३७१

लो व वं ॥ न स्ते र्जि ना ल य रू पं प्र भा मं की य न म या ॥ वि रू न भा य नं रू त्वा वा का उ वा न नी य त्वा ॥ ह स्ता म रू लिं क्त्वा ज्ञा नू
रू पं पि वी व ह न ॥ नि व सी व न म ह्म त्वा प्र व य म्रु प्र भा म क ॥ न ड ग त्वा न म ह्म त्वा य श्र त्प द कि र्म न ॥ प्र द कि र्म या ह प्र व न ॥
ना रू ल प्र म य ॥ य द य द स व रू क क र्म न रू लं ल ह न ॥ ज म्भू न द स व रू ना रू लं व ल त्व न न व ॥ ना ल स्य ना पि य ह क र्म त्व य
उ व प्र द कि र्म ॥ उ क वा वं डि वा न व म न स ह्म क र्म ॥ म्रु रू लं क का टि व प्र द कि र्म नि की य न ॥ न्नि म न सि स वि स ना ज व
उ व व डि का ॥ वि वा ज मा न प्र ल त्व न का य ल्हा म व ल सृं न क ह्म प स त्व स मी र्थ व ला धा न ना नू य प्र ह स त्वा न मि च य थ या पि यी डि

विचिउ

नमो नित्यस्य ह्यमो नित्यादि न॥ नाना यीज सहि न्स्व नवी व क न पा द वि ही न मा व र्ह य वि व र्ह न न म स्ता व र्ह ता द कि मा व र्ह न
यथा म कं उ द कि मां र्ह ता ॥ अथ स पू व प्र पू न ४ पू न ४ ॥ वे ल न म स्ता व र्ह स स्व य म व म मं य वि व र्ह न न उ द कि मां क र्मु मा न स्ता ४ ॥
न म स्ता म व ना डि स पू र्ण ना श र्ह व न म उ द कि मां व का वा ॥ ॥ अथ स पू व प्र पू न ४ पू न ४ ॥ वे ल न म स्ता व र्ह स स्व य म व म मं य वि व र्ह न न उ द कि मां क र्मु मा न स्ता ४ ॥
ला ग न ४ ॥ न था क व प ल व ल का र्ह ॥ न वी न क र्ह वि स्य उ नि उ प्र चा पू र्व क मां व व मं य न म वि धू यो ॥ अ न न र्क व व न क म ल स
ल न मु च न वी ना र्ह ॥ अथ स पू व प्र पू न ४ पू न ४ ॥ वे ल न म स्ता व र्ह स स्व य म व म मं य वि व र्ह न न उ द कि मां क र्मु मा न स्ता ४ ॥

३७२

इह न ४ य वि मू क ४ स्व र्ह द हा रा ग्या नि स य स्य का मं यो ये व पू न र्ज न म र्ह ये व प्र पू न ४ वे यो म धी न स स्य ४ क न ऊ र्ह उ मू य न ॥ स
आ र्ह ॥ वे यो म धी क र्ज य न म हा ना ग य मा न य ॥ वृ च मू क न पू र्ण न म स्ता यो यं उ मू व नि ॥ अथ स पू व प्र पू न ४ पू न ४ ॥ वे ल न म स्ता व र्ह स स्व य म व म मं य वि व र्ह न न उ द कि मां क र्मु मा न स्ता ४ ॥
द कि मां र्ह ॥ न था क न स वि न य नि स ॥ यं व र्ह र्ग व न स र्प न था वि स्य ४ पू र्ण या स र्च कि म व न व प्रू ना नू न य था स र्हा व य वि स्या ग
न दि ॥ अंगी क र्म मि नि ॥ न द न क व मा स मा स मु क्ता र्ह या अ र्ह र्ह यां य अ द स्यां यो म ध उ न व र्ध म कं य था वि धि ना पू जा क ना ४ ॥ न म
का र्ह क पू र्ण मा स्या मा ल या अ पू र्ण मा सी य र्ध न मू य वा स उ न दी य य र्मा व च्च वा न ॥ न मा आ का ना च्च यो नि आ वि न ४ ॥ ०० दं वा र्

विधि

मृदीवधम् ॥ उवमात्मलुवंपविष्ठागं ऊ नमहादक वयनमइ क नं ॥ त्वत्सर्वसुखप्रियदर्शनवाधिसुखसद्विमानहवनि ॥
कल्याणानेसुकना क ॥ सुश्रुह ॥ कथमंनम् ॥ नमः ॥ गवानूवाच ॥ कार्त्तिकपूजनं पुष्पं पुष्पां हि नमानसा ॥ मुनिवनेयथा ॥
कर्मयोगकामिकयम् ॥ कार्त्तिकदीपयदीयेयथाविधिविधानविद् ॥ पूजयत्सदनं चैव दीपादिर्विविधैः ॥ सर्वयज्ञादि
धर्मैश्च लक्ष्मणसो न संभ्रमः ॥ निनामिवागुविदुष्कास्तु भूलक्ष्मा भनः ॥ उकरुका भनः ॥ की नहागी सुवाससः ॥ गवानिवोज
लपामीनिमाहा वी उरुव नम् ॥ पूजयत्सदनं चैव दीपादिर्विविधैः ॥ सर्वयज्ञादि धर्मैश्च लक्ष्मणसो न संभ्रमः ॥ निनामिवागुविदुष्कास्तु भूलक्ष्मा भनः ॥ उकरुका भनः ॥ की नहागी सुवाससः ॥ गवानिवोज

३७२

पानः ॥ त्वत्सर्वसुखप्रियदर्शनवाधिसुखसद्विमानहवनि ॥ कल्याणानेसुकना क ॥ सुश्रुह ॥ कथमंनम् ॥ नमः ॥ गवानूवाच ॥ कार्त्तिकपूजनं पुष्पं पुष्पां हि नमानसा ॥ मुनिवनेयथा ॥
कर्मयोगकामिकयम् ॥ कार्त्तिकदीपयदीयेयथाविधिविधानविद् ॥ पूजयत्सदनं चैव दीपादिर्विविधैः ॥ सर्वयज्ञादि धर्मैश्च लक्ष्मणसो न संभ्रमः ॥ निनामिवागुविदुष्कास्तु भूलक्ष्मा भनः ॥ उकरुका भनः ॥ की नहागी सुवाससः ॥ गवानिवोज
लपामीनिमाहा वी उरुव नम् ॥ पूजयत्सदनं चैव दीपादिर्विविधैः ॥ सर्वयज्ञादि धर्मैश्च लक्ष्मणसो न संभ्रमः ॥ निनामिवागुविदुष्कास्तु भूलक्ष्मा भनः ॥ उकरुका भनः ॥ की नहागी सुवाससः ॥ गवानिवोज

विचित्र

रुलप्रलखन॥य४महादीपमालां च उदयोच जिनालय॥भावभाकावसंयुक्तं लखनं भवर्लं गृहं॥एतद्दीपदानं नलखः
नडहमंपदं॥माहीषचर्ममं च भूधर्मच भूजाचर्म॥भक्तिदंष्ट्रनिलधूपैर्दनीलनीलके॥वधदं वक्रनीलध
प्रगंभाडहमंरुलं॥उहममसूनीहिसिवाथमधमंरुलं॥भूधर्मनरुहिरुवायिनिलस्य॥६॥मंरुलं॥दीपनं लखं एतद्देवाइह
मंलखनंरुलं॥मधमंनिलनेलस्यधर्मसर्पयनेलकं॥नेलाकादिउदीयध्यादयाजिनपूंगव॥निजहिनामकोलागी॥देव
वक्रमवाधूयाग॥यकासूवमनूयाभां नागगधर्वनाकसा॥भूयशांइहृहृनांहर्यनासिकदावन॥कृष्णदियायेवागध

३३८

[illegible]

ननु गवः॥ सर्वपापकर्मकृत्वा हिमले भुविलियम॥ सुजात्मा सोमहाहागी सुखावनीमवाप्नुयात्॥ श्रोतुं सुकृत्वा न्यस्यता
 नः सप्तकृतानि च॥ दीपदानेनैव मा कं या निनसं नयः॥ लोकानां मंजुलं वैववा हांचापि सुमंगलं॥ एतां सर्वरुतानां मंजुलं न
 उमा लहेतु॥ उक्तं पुरुष उक्तं न सर्वरुतं नृणां हि दं॥ या यानि विलयं या निरुदं हि प्रलयं उक्तं॥ रुतात्पत्रमहात्मा नृणां प्रम
 र्हयं प्रहाति न॥ रुतं प्रमपि नृणां च य का सुवमहावगा॥ ग चर्वा॥ केन वा इहा ना कसा विप्रका वेका॥ वा ना इहा गुणा॥ वेवा
 हा सिहा दि इहा कवः॥ श्रुपत्मा वादि जा कि या याधयः॥ मा वि का दयः॥ उक्तं वा नृया इहा खेव ना रुतं ना दयः॥ नसा नवव वा यत्र

३७७

नेव वेव विहर्षिका॥ उक्तं वा उक्तं विहर्षिकं नृणां विघ्नं॥ कल्याणं स नृणां कवलिहर्षिकं विघ्नं॥ कालवर्षं उक्तं वा उक्तं
 रुतं सवनीमही॥ उक्तं पुरुष रुता इहा॥ वक्तुं वक्तुं की वक्तुं॥ सर्वसत्त्वे विवर्षं न वक्तुं निवर्षना निवृत्तं॥ उक्तं पुरुषा विघ्नं
 नृणां कवलिहर्षिकं॥ उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥ उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥ उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥ उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥
 रुतं वा यिमान यत्र उक्तं नृणां॥ हिमलेः स विघ्नं जात्मा हागी प्रोक्तं रुता कवः॥ उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥ उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥
 वस्तु सदानं रुतं सदानं नृणां॥ या उक्तं वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥ दीपदानं॥ उक्तं कालि नृणां वक्तुं वक्तुं कवलिहर्षिकं॥

हि कवावावा हगुव सर्वविनाथ पुनर्वहुंत्वमर्हसि॥ कार्हि कपिह्नमं कनदीय नानस्य किं हलं॥ नृणां कर्मावचनं पुनर्वचनं
 हाविनं॥ हनपूर्वो हि कवाहग वा सूर्यपरास श्रीनाम नथाग नाहं सस्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 दनूह व४ पुनर्वचनं वधि४ नाहं दवानां वधनूणा नां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 निश्राप्यमानमहं॥ नवां ववाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां सत्त्वानां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 निमनसहं मन्त्राणां नृणां सर्वसत्त्वानां निदर्शनानां मन्त्राणां सत्त्वानां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि

३७६

यथावदवापयन्ती कनी कामदा वमहा मन्त्रा ववानां पूजा नां महा नृणां वधनूणा नां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 नमिष्य हग वा नृणां वधनूणा नां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 यं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां सत्त्वानां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 मूर्धनि॥ नवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां सत्त्वानां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि
 महादीपं प्रकालयामास॥ नवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां सत्त्वानां वक्त्रो हग वा नृणां हग वनास्य स्य कृत्वा ला कउदयादिविद्योव वनस्य नाहं गालोकवि

कृष्णालाउलाहिगंगानदीबालकसुमालोककाउरुपायकृष्ण॥नमोलाककाउरुगंगानदीबालकसुमानथागनासाधुकावंददनि॥
 साधुसाधुलपुत्रद्वयवमहादीपदानदीबालकसुमानथागनपूजाकृष्ण॥ॐदंशुलपूजायंदाननथावाकप्रियपूजकायदियविज
 नत्यागदान॥ॐयंशुलपूजविनिशायपूजाकृष्णायवमचनार्त्त॥नि॥नमो॥ॐमंत्रात्रंशुप्रिवाहृष्टीमहन्॥नमो॥यानस्यसम्य
 कंवेदस्यपुत्रवनेवाक्षधर्मदुरुषवाजगृहेउपयन्नरूपपादकोसर्वलक्षणपुत्रापातासंगयेयकीनपादेहनाहृन्॥उर्वरूपेन
 त्वयावीर्णलहंसूकनाक॥नमो॥सुमात्यरावानूपेनमनसात्रिहस्यमात्यउरुनिर्तसाकदियवदुमयविषयपुत्रवत्या

कृष्णालाउमानमहादीपकालया॥उर्वरूपेनहृगवान्स्वरूपनायाउरुया॥नथापिदीपमालांउकालय॥नमामानपितामह
 दवनामूपिउरुवाच्युवादायेवकर्मापविशयंगन॥॥मूलायुभयंकुं सर्वशेषविर्वर्जितं॥मूयेवावापिर्नवीर्जंमूयेवज
 यसम्पदं॥नमो॥हृगवन्स्वर्ज॥विर्नमूगनायित्वास्वात्मरावंपविदीपयहृमालववान॥पुनर्हृगवानाह॥साधुसाधुपूवृषर्षहृवहृ
 उमिस्त्रमयायदहृनथाकृन्॥नथाकृन्वकीर्हृयावसूसावाविष्ठनिनावहिष्ठयु॥नथापिकृन्मानेनयस्यापिचिहृस्वालेउंसम
 र्थनस्यान्॥ॐ॥पूकृहृगवाच्यवलाकयमित्थ॥सपन्थाविर्वृविर्वृकृन्नाकृर्हिनाहृन्॥मूयसपूवृषहृसत्यमवानिषिहृस्वात्म

विविध

हवनासुखं नृपविनिर्वाहसमं प्रमाणात् नृपसूयं नृपलिया महादीपदानं उक्तालिप्तं ॥ काभ्यानामनथागतसुखं प्रपुकात्
यामास ॥ नृपेवंदीपमालां वपुर्ज्वलितं कर्हि कमासमं कं कं कं वासुका वया मास ॥ नृमासु पूवृषस्तनूना लभूतनदयं नृपविनि
गनवाभ्यलोकनायकं यकिनायकं वृक्षान्द्र्यादि कल्याणविसेयसमूहानीनां ॥ वाधिसमूहानीय महाकवूपापविहाविना
षघावमिनायविपुर्ध्वं प्रणिधानवसादीयार्चिप्रलोकधामो दीपवाजानामपुष्पकवृक्षाहविष्मिपश्चिह्नं जगत् ॥ नृगस्तपुष्पक
वृक्षस्तानमसानमिनिहात्वा विष्मदिव्यानिहार्थं कृत्वा विष्मदिव्यानिहार्थं कृत्वा विहाय संसृजालमाजं प्रहृष्टं नृपजाधरं स

३७८

मयथं कवपविनिर्वाहसमं ॥ यामस्य पिहृष्टं नृपमानास्थित्वा यवृधिवत् सर्वभूसापर्यवसानं नमगच्छत् ॥ शुद्धमवीनां नृप
॥ एवं वृषेण संसावेदनं नृसुखमनूपायानिर्वाहं नृमीमनूगच्छत् ॥ हि कवदीपदानस्य महानृसंगाप्रमिलस्य नृनेर्विविधाकारि क
वः पुनर्विस्तृवं नृप ॥ ॥ लोकप्रकाशिमल्लोकां वल्लयनयनात् नृवाहमवभूषा नृजायदेवलोकां देवमनयनात् ॥ नृ
दिव्यासनसमं ॥ यदुक्तं वीरवागप्रववसू नृपजाकिदिवा विमानं देवानां दीपदानाप्रववदिसंस्तुतां नृवेधनमाभां ॥
जित्वा विष्मयेन धनवा हि यस्तान् एषीसमं नृपाद नृपासयानि ॥ दीपाननाहमविहृषिगामे ॥ उक्तालिफाहृलवर्धमां ॥ कारि

कलुक्कमूहपांनिलमलेऽपदीयधन॥पूयविमानधिमानीयनीयमस्वर्गवाहिनः॥धनाधननिवस्तुनयनमदमहवसीसि
 म॥मूकमायिवस्तुवाहिमिवस्तुवमोदक॥कलायमिवसीसि नयननिवस्तुवाहिमिवस्तुवमोदक॥कलायमिवसीसि नयननिवस्तुवाहिमिवस्तुवमोदक॥
 लं॥इवमूकवसि नयननिवस्तुवाहिमिवस्तुवमोदक॥कलायमिवसीसि नयननिवस्तुवाहिमिवस्तुवमोदक॥कलायमिवसीसि नयननिवस्तुवाहिमिवस्तुवमोदक॥
 नीलायनाजाऽदवायदवलाकवदकनकनिराहासयनिसकाहा॥नाजायवृजवहिममिदिवनमनर्हस्यंगंययादि॥नस
 र्वदीयसनाहवनिमनूहनांवृजहृदाविकाया॥उर्ववस्तुनयनमदीयसनाहवनिमनूहनांवृजहृदाविकाया॥उर्ववस्तुनयनमदीयसनाहवनिमनूहनांवृजहृदाविकाया॥

३३६

सुनूयाहवनिनयनाहिवमनानीननाममहिविकनीयाहवनि॥उर्ववस्तुनयनमदीयसनाहवनि॥उर्ववस्तुनयनमदीयसनाहवनि॥उर्ववस्तुनयनमदीयसनाहवनि॥
 दीयेऽसुहकर्मकहृवा॥दवावर्नहाजनस्यकपादुप्रकालननत्र॥दवागहृप्रवमचमयनभूमिथेवव॥गीलाहवमसंयुक्त
 नसर्वकर्मप्रमस्यनाश्रुत्यालोवपूनऽहृवावाये॥मचंचलाकि कलाकाहृवलाकयऽकनादिप्रवेदमान॥ॐ हलाकयमस्विन
 ४यवलाकयनसुर्व॥हिकवागिदिवमानीलाकमहानसुर्वमनीयं॥ॐ दमवावहृगवानाहमनाहृवाहृकवासावसर्व
 वकीयवस्तुदवमानुवास्तुवगवृजगधर्वचलाकाहृगवानाहमनाहृवाहृकवासावसर्व
 ॥ॐ निश्रीविदिउकार्मुकावदानेउ

विविध

कश्चिन्मनिममाय ४॥ ॥ अथ खलु राजा ॥ कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
॥ कसुर्वगदनां वीनलोकानां पुनरुक्तय ॥ उच्यते ॥ वाच ॥ अथ राजा ॥ अथ कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
समयमहता हि कसुर्वगदनां वीनलोकानां पुनरुक्तय ॥ उच्यते ॥ वाच ॥ अथ राजा ॥ अथ कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
त्यर्चिन्मनिममाय ४॥ ॥ अथ खलु राजा ॥ कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
हगवान्निवृत्तमित् ॥ कदाहगवानोह ॥ हि कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥

३१०

वलाहकपवनसुखं प्रकाशवर्तमानसुखं ॥ सुखावाधपनिष्ठापनयनंदानं सुखं वाहनंदानेनेकसुखां पुनरुक्तमय ॥
कं ॥ विरुवसुमुदयं वादिफिमा कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
विगानिनाथकानदानादिदानात् ॥ अथ राजा ॥ अथ कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
आसुखमनिकवप्रहृष्टसुखं ॥ विरुमिहियं कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥
वनसुगमागमं कुरुगव रुद्रमुपयुक्तमद्वैतवाच ॥ हगवन ॥ अहमिच्छामि यत्पुनरुक्तमय ॥

विशिष्ट

मंजु कंदविडम्बनिः ॥ नयि ॥ सुपाण्डवसूक्तं च विः ॥ मंदनसूक्तं ॥ अथ मय्युपस्थानि ॥ अथ मय्युपस्थानि ॥ इति ॥ इति ॥ इति ॥
लोकात्रयकूपजायते ॥ मातृवर्हि च यस्त्वापमं च वमनूह वं ॥ नागादिव विनालाका ॥ निर्यका निपजायते ॥ मृदुपुष्पमनुष्याव
वडवरं पुजायते ॥ ॐ स्वां दिव विनालाका ॥ अस्मन् वपुजायते ॥ यजुर्वाह विष्वादि यजुर्वाह मय्युपस्थानि ॥ सर्वेषां पापपुष्पमनुष्यं
वाविक कर्म कृतं ॥ अस्मिन् विनालाका ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥
हं जिनात्मजः ॥ पुष्पमनुष्यं मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥

३११

ह्यदानसूक्तं विना ॥ विना विना ॥ यदानं महाप्राह ॥ अथ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥
ययत्तु कर्म ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥
मातृवर्हि च यस्त्वापमं च वमनूह वं ॥ नागादिव विनालाका ॥ निर्यका निपजायते ॥ मृदुपुष्पमनुष्याव
वडवरं पुजायते ॥ ॐ स्वां दिव विनालाका ॥ अस्मन् वपुजायते ॥ यजुर्वाह विष्वादि यजुर्वाह मय्युपस्थानि ॥ सर्वेषां पापपुष्पमनुष्यं
वाविक कर्म कृतं ॥ अस्मिन् विनालाका ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥ उह मा मय्युपस्थानि ॥
हं जिनात्मजः ॥ पुष्पमनुष्यं मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥ मय्युपस्थानि ॥

विचित्र

सहिमं हं साहिमं हं वं ॥ अरुणमादानपर्यन्तं पुण्यानां हं लभुमं ॥ अवमायहि वलनाधर्मविह्वलनव ॥ दोलायमानं संसारं हं मि
जात्राविचार्यन् ॥ नृणां धर्मापत्तिं सन्साधनीयममादनात् ॥ नायवत्कीयन् पुण्यानां हि यत्नं समानवत् ॥ श्रुतमयागता चूडां सर्वसु
खगर्वेषकां नानेवामहं स्वपुण्यनविकित्सागायवंगमः ॥ श्रुत्यापि वहेयेवामहं पुनः पुनः ॥ इगंतीमवर्तं दद्याधिहं दद्यादिवाश्रुया
न ॥ कदा न भगवां यादं नानामानुष्यमवव ॥ कुमलापुण्यात्मदहं उर्वजं किं इह ॥ श्रुताग्यादिवसं पुण्यं स्रुवमिने नूयदवी ॥ श्रु
पुंरुमं विसृज्यादिकायायाविचित्रं ॥ नहीहं लेमं विनेनान् चालत्यनपुनः ॥ श्रुत्यमानमानुष्यायमव कुरुहं ॥ यथा कुमलः

२१२

याग्यापि कुमलं न कनाम्यहं ॥ श्रुत्याय इह वसं भाहं किं विद्याम्यहं नव ॥ श्रुत्तुर्वनं कुमलं पापं वापुपविचनः ॥ हनदानस्य
पुण्यापि कल्पकाटिभने वधि ॥ श्रुत्तुवाहं हगवा-मानुष्यमहिहं ॥ महाभुवयुगकिं कुर्मग्रीवापनायमं ॥ दीनाकुर्वीसु
मा नूपाः कपालां हनयानयः ॥ दर्भयस्य कलाकस्य कदाहं मीहं ॥ दधस्य नासमूह्ययः ॥ श्रुतिहं उभायमा ॥ हि कृपां सर्वान्
रुषिहं रुमनिपदवीदहीदिवागुं थिनाः ॥ इवापे नृणां वमवनिवस्यारुष्यनिवस्यपि जायात्यसुहृदयमी ॥ हिवमनंदहं न
कथेवन ॥ यदहं ज्ञाप्य कल्पभनेमनूष्ये श्रुता कुमविमूर्तिं दार्ज ॥ नृणां पुण्यं ज्ञाप्यमनाहं वहिः ॥ कथाहिधर्मप्रवभाहिपुण्यायः

विविध

लवायवि द्रव अलं कल जाल पवित्रि न॥ हव यान वि कथं निसृत्य र्थं न स्य ज-म हव नी ह नि सृतं॥ न न न के र्ग मे ये मे नि र्थ म न
वि कलं डि ये न म व गु नू हि ४ प्र ह न ह ४ का टा का कला वि क न ४ मु नि स वि न वि उ ह ला क न वा नू ह दि न जि न स न व वि वू ध ४ स म
का ४ मु नी उ व वा म न॥ मो नी उ पू न वा कं न य नि सू धी या म न दा दो उ मा दं आ ता य हि न म प्र व व गु नू ध न धा न ह न द नि ह नि॥
वि मा धा ना व सान सू ट य नि स क लं ज म व ऊ प्र व र्ध॥ नि ४ ल म न क य कि वि घ ट य नि स दा स र्व स प नि धा न॥ ह व र्ग मी व ह व प्र व
द उ दा दि न नि नि र्द नि सी र य म नू ह न॥ न दि ह म व म व स मू न व व नू न ४ स उ नि नि र्म ल मा न सा॥ उ क क म ह ना या या द वी चो क ल य सा

२१३

स्य न॥ मू ना दि क ला य वि हा या का सू ग नो क था॥ न व र्ग पू न म वा सो व द यि ता कि मू च मां॥ न स्या ह द द र्थ न वं या य म न्य त्र
सु य न॥ ना न ४ प र्ण वं व का सि न च मा हा ह्य न ४ प व ४॥ य दि ह न क र्ग प्र य ना स र्व क म ल म था॥ ॐ नि म र्था न ना न स्या दाने व उ ध
नां ज नू॥ म न दा ना स र्व व धू न धा ना सि ह वा ल य॥ ॥ रु न पू र्व हि क व ४ क सि वि काल म ह ना हि क स ध न स र्व आव स्या
वि ह ना मि॥ य दा व नि जा मू नि द म व कू र्ण मू वा य हि क स धा य ज न व नी नि र्वा नि क ज म का टि न र्ग ग व स स न दा न द ह॥ न द
न स्य वू चि व ह व न॥ कि म ज आ ह दा ना नि पू नानि क वा पि॥ य च ह द वि ड ज ना नू य स र्थ आव सी नि वा सि ना ज न का या कू द क हि

विचित्र

कर्णकृत्वा हगवन्सुप्रवक्तुं यमुपनिष्ठयमवर्धमस्तजनका यानुयस्तु कृत्वा हविषादि॥ वक्तुं च भनपुत्रं उह्वरं हविषादीनि॥
नमावागिजनगृहपतिना वृक्षना नास्ति निवदिता॥ वास्तुसर्वस्वा जन्तवने अवस्थां महानगर्यां च अवधाय भांका विना॥ मृग्युक्तव
मा अवनी निवासिनः पो वजना मूयसु फमादिव सुनिन्दमा गृहपति मूक्तिकु आह्वितुं दम आगमस्य सुप्रवक्तुं यस्या थय च्छन्द
कहिकर्णकृत्वा कामयस्य वाचमाज्यपवित्रकृतं दत्तुं यदा नयमिति॥ मृग्युक्तवर्क हे वा वाजानं मूनिन्दम गृहपतिगम थय उह्वरं य॥
नवाजा हय आहवनिधर्मका यनवप्रिय॥ यो वधर्म उयस्तु कमना धर्म नवानव॥ समाजा हय आहवनिधर्मका निरुमयमाये न॥

२१४

मृग्युक्तवर्क हे वा मूनिन्दमा गृहपति वाजानं गम थय उह्वरं य॥ कहिकर्णकृत्वा सुवर्णमय दिवनया रस्मिन् वा हय॥ कथमव
विहव मा उकाफी वमसु नय॥ कथं हगव कामयुपविद्यामान विप्र॥ नका मनवर्मा विह्वि मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ उक्तस्य व
मवाजन के धमा र्क कविष्यसि॥ यथमवर्क मधनस्य मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ नका र्क विह्वि मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ यथमव
छानि यो ना निनया निरुवाव नी॥ यथमवर्क मधनस्य मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ नका र्क विह्वि मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ यथमव
गमानिव॥ मृग्युक्तवर्क मधनस्य मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ विही र्क मधनस्य मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥ निरुवर्क मधनस्य मृग्युक्तवर्क नयो पिना॥

विविध

अनपटकासावि कयिहुं पटह ॥ यद्यहमिहले ववपंकं पदास्थामिननाह विष्णामि ॥ यचहमवगएकमहिनुक पटकाकिय
यमिनि ॥ नन४साभवगएकमहिनुक स्वगवीनायठकमयनीया मुनिन्दमगृह्य कोणाकिर्क ॥ नन४पटकहृष्टगृह्यमिनास
लकिना ॥ नूनमस्याधेव विहवादनूपागवमसंस् याकिमिनि ॥ ननस्वोदूषयामास्रनूपदहा ॥ गच्छुहगव मावलो कयहुक
नायं पटका केफुं नि ॥ नेववलाकिना यावत ॥ इकलकानिषु ॥ ननस्व४पृष्ठुनयावो कांयाम विहव आसीत्समरुवहुनानूकी
हृन्पनिष्पदाविजं हृयहीनयान यागनप्रेह नवाहि कसंघदहमिनि ॥ ननस्व निन्दमायनिवदिनी ॥ ननो निन्दमनगृह्य

३०७

मिनायवमविष्णयजा ननसासाविका विविधे नने वाहवने वाद्यदिना ॥ ननासावात्मा पूका कालगता उनी नपूदव भूपयत्राउ
ययत्रमाजायास्तस्या नसाविष्णानिवस्तानि पाइहृमानि ॥ ननस्व विदयस्य दव पूजस्य वादवकं न्यायाव ॥ धर्मनाखल दव पूजस्य क
दवकन्यायाव सुविनायसं पत्रस्य डिनिविहानूत्यय ॥ ऊन अना ४ ऊनाय पत्रा ४ कनकर्म ॥ निसा पन्थमि मनुष्यस्य अना ४
उनी नपूदव भूपयत्रिं ग भूपयत्राहगव न४पटक पशनादिनि ॥ नना वस्तुदायिका दवकन्यावलदिमल ऊलहावाह हावेवि
हसमगा ४ मनिक्त्र विहूज ऊं ऊममाल पजस्य कादिसं हृगान नव वाहिं दिवाना मूत्यव पञ्च ऊमूदपू उवी कमदावना

विचित्र

नां प्रच्यानां मूलां गपू वयित्वा सर्वं जगत् न मूदान भावहा सं ना वहा स्य ह ग व र्ग पुष्ये व व की र्य ह ग व न ४ पु न स्ता त्रि म भ्रु धर्म व
माय ॥ मू थ व लू ह ग वान पट प्र दायिका या द व क न्या या मू न यानू म य म ह प्र कृ मि च स्र वा ना द जी व ड ना र्य स्यो मि ख नि व धि की धर्म
द म ना कृ न वान ॥ या मू लो य ट प्र दायिका द व क न्या या वि भ मि मि ख व स मू न र्ग स का य द ह्मि र्गे नं ज्ञान व र्ग म ही त्वा आ ना य हि रू लं सा
का कृ न ॥ सा द ह्म स त्या हि नू दान मू दान य मि ॥ ०० द म स्मा कं न द ह्म न मा णा कृ न न पि ज्ञा कृ न न वा ज्ञान द व ना हि नं स्र स्व जन वं धू व र्ग नि न पू
व प्र मे ष्ठ व म वा क्त र्गे र्थ ह ग व ना स्मा कं कृ न मू द्या पि ना नू धि वा मू स मू ज ली धि ना मू स्थि य र्वा ना नि पि हि ना न य पा य द्या ना नि वि रू ताः

२११

निस्वर्ग मा कृ द्या ना नि पि दि सा पि ना नि द व म नू थ चा ह च ॥ न यानू ला वा रि हि न सू या ना कृ या य मा र्त्त व कृ द्या म मू कृ ॥ मू पा र्त्त ना स्व र्ग
ग मि ४ सू पु आ नि र्वा न मार्ग ध म या प ल व ॥ त्व द्या म या वा क म य न द श र्ध म या य सि च्छ सू वि षु च्छ व र्ग ॥ पा र्त्त व म नं य द मा र्थ का र्त्त नी
कु म्भ २ ० वा कु व या व म सि ॥ न व व नं न ना य न पू जि न ४ वि ग न ज न ज ना म व म म य र ह व स ह्म स्र द ह्म द र्ग नं स ह्म ल म य मू न न व द
र्ग नं ॥ मू व न म म न ४ प र्त्त व हा म र्ध व न ले द्या व हि व य ज ना ह र्ध या पि ग म्भ व द कि ना जि ना वि स र्त्त ला का हि मू र्त्त ज ग म ॥ मू थ प ट प्र दायि
का द व क न्या वा नि गि व ल वृ ला ह ॥ स त्या स प न व कृ षि क ४ मू न व वि जि न स ग्रा म ४ स र्वा ग य नि मू क ० वा ड व ॥ ज या वि रू ता ह

विद्विज्

[illegible]

३१२

कृतानि सर्वमहा॥ सर्वकर्मविनिर्मुक्तपुण्यादिहि सुखावर्णि॥ यस्तत्त्वावधकावाचनमसकृजानि विदुः॥ अथ यथासिद्धाः ॥ सर्व
 इष्टवनि प्रीतिना॥ मनपूरणमनसर्वसर्वसुखसुमन्विता॥ विविधभागसुखं कालरुदुमाकस्यदं॥ अष्टगनिभूयसत्वाः मन्त्राः ॥
 निजवाक्यं॥ न सर्वदानपूरणमनहवदुवाधि मार्गमा॥ यस्तत्त्वावावकादीयास्तद्वर्णविवर्जिता॥ याथैश्वर्यमनागताः नागद्वय
 मादिना॥ न सर्वदानपूरणमनहवाक्यानि स्मृतसदा॥ दाननीलादि संयुक्तावनदुवाधिविवर्जिता॥ नाजानुवदुक्कमावानवदुमदिना
 नय॥ वीवाहवदुस्तनसंश्रमजिनमजुवे॥ कालवर्षदुमयाश्च नस्य पूर्यमही सदा॥ अष्टवर्णनिधाननयत्पुष्पं जायेत नृणां॥ मन

222

